Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

* ओ३म् *

संशोधित

आर्य्यगायन

(इस में सब आर्य्य गायनों से जो आज तक छप चुके हैं ... भजन हैं)

मैनेजर भारत ...

ऐंड फिज़िक ...

लिमेटिड आर्य ...

ने

मुद्रित कराकर प्र...

सन् १६...

अरोड़ वंश ...

जाप ....

.... १८

...हुं मैं तेरी ५६

.... ७४

.... ६५

... ९१

... ९७

...वे १२१

...भक्ति ११६

...ाह्लादत १४१

...ोया १५७

कोई उत्तम पुरुष १६...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सूचीपत्र ॥

अ पृष्ठ

ओ३म् अकार उकार मकार १
अग्नि में भी रहे सदा ७
अमृत रस हरि मोहे पिलाओ २७
अपनी उपासना अपना ही जाप ३६
अन्त समय में हे जगदीश ३८
अब तो प्रभु दया करो आया हूं मैं तेरी ५६
अपार ब्रह्म गोविन्द नारायण ७४
ओ३म का अर्थ विचारो यही है पूर्ण ६५
अद्भुत है जिसकी प्रभुताई ... ९६
अवसर बीतो जात रे प्राणी ... ९७
आत्मा में गंग बहे क्यों नहीं मन न्हावे १२३
अरे मतिमन्द अज्ञानी जन्म हरि भक्ति १२६
अमोलक मानुष जन्म प्यारे, शहादत १४१
अहो अन्धे मूर्ख तु कैसा है सोया १५७
अपनो विगार को ... कोई उत्तम पुरुष १८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

	पृष्ठ
अजब है क़ुदरत इस ईश्वर की	४७५
अन्त नूं पछतांवन्दे जेड़े ईश्वर दे गुण नहीं गांवदे	४७८
धनी एह नर देह प्यारी एह नर देह अति उत्तम	२६१
अगर देश हितैषी हमें न जगाता	४१०
अब आया बसन्त तिन के घर माँहि	४३९
अवगुण नाहीं विचारो	७१
आदि गुरू हम शिष तुम्हारे	१९
आर्य भूमी में समाजिक कल्प बृक्ष लगा गए	११९
आज घर शांति होई	५२७
अन्न प्राशन संस्कार कहता है तुम्हें सुनाके	३४०
भारत की रक्षा करो कष्ट और क्लेश हरो	१७
आया है समय कठिन मन में लगी बुरी गम्र	१८
आज आनन्द मंगलचार गावो जय २ करो	२७०
आज्ञा में जिनके जहान था उनकी कुल में हमीं	३६६
आपनी विगार करो	२०२
आकर हमको कोई बतावे ईसा ईश्वर कैसे कहलावे	३८९
...न्त हिये उमगो री	४४०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

383

पृष्ठ

आर्यों ने ऐसी होली मचमाई — ४४३
आदि देव यह विनय हमारी ४४४
आर्यों ने कैसी होरी मचाई ४४५
आज पिया संग होरी मैं खेलूं ४४७
आर्य भाइयो को यह कार्य मुबारक होवे ४४९
आज मिल सब गीत गाओ उस प्रभु के धन्यवाद ३२४
आज घर बालक जन्मा तुम्हारे ३३३
आनन्द से आज गावो बधाई ३३४
आज शगुन मनावें घर के सदा सुहाग रहे बनरी को ३५०

इ

इस ओंकार अक्षर का ५९
इस जग आया वे अनुआं झूठ बोलन लगा.... २६५
ईश्वर तू अपरम्पार है २
ईश्वर तेरी दया का नहीं पावे कोई पार ८६
ईश्वर का जप जाप रे मन बृथा काहे को जन्म गवावे १२४
ईश की भक्ति में तन मन लगाना चाहिये ४८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उ	पृष्ठ
उठो नीन्द से अब सहर होगई, उठो रात सारी बसर	११६
उस बाल्मीक भंगी के गुणगाते विप्र	१९६
उठ मुँह धो डालो बहुत ही सुलाया नींद ने	२०६
उत्तम जन्म है उत्तम जन्म है	२७१
उपज्यो दण्डी छुपे पाखण्डी	४०८
उदय भयो है भानु भारत में	४०६
उठो अब बांध लो कमर को क्यों करते हो देर	५६४
ऊंचा कर्म संसार में उपकार कहिये	२८७
ओंकार भजो अहंकार तजो	१२८

ए	
एह गायत्री मन्त्र कहीये	९
एक घड़ी तब सेवा न कीनी	३६
एक दिन भारत यह सब देशों के सर का ताज था	३७३
एथों चलना अगर जरूरी है	३६१
एह पलक झलक दां मेला है	४६२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

ऐसी आर्य्य रची समाज वेद ध्वनि साज बाज १९१

ऐ दिल हो कैसे देश में सत धर्म का प्रचार २११

ऐ पुरुष ! भारत में तुमने क्यों पाखण्ड रचाया २६५

ऐ हिन्द तू भी था कभी दुनियां का आफताब १०४

क

क्यों दीना नाथ मुझ पै तेरी दया नहीं ४१

कैसी २ सृष्टि रची सर्वाधार ईश ने ५४

करो नैया पार मेरी शरण गही प्रभु तेरी ६४

कर उपासना श्रद्धा भक्ति से ७८

किया पैदा जिसने जहान है ८२

क्या कोई गावे सुनावे ८६

कर कृपा पार उतारियो मेरी टूटी सी किश्ती ९५

करनी का ढंग निराला है १९१

कैसे अमूर्त की मूर्ति बनावें १५७

क्यों सोया उठ जाग समय चला जाता है भाई १७

क्यों पड़ी है स्वप्न में भई भोर निद्रा त्यागरी....
Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

करो अग्नि होत्र चित्त लाके जो सुख पहुँचे संसार १९४
कैसा ये आश्चर्य्य ज्ञान है तुम्हारा ७०
कर्म वही अनुकूल जो धर्म्म के, धर्म्म वही जो २१५
काया मांहि देखिया कलेश का खजानो भरो २१७
कहा कियो सम्पति कुवेर के समान पाय.... २२१
कबहू मन रंग तरंग चढ़े कबहू मन चाहत धन को २२५
कहू मन की कथा क्या मैं मति कुछ इसे की न्यारी २२५
कोई मन मेरे नूं आ समझावे सैय्यो २२६
कोई मोड़े दिलां दियां वागा नूं २३१
काया कैसे रोई चलत प्राण ४८०
कहां से आये मियां मुसाफिर ४८०
किस की शादी गमी मनायें २८२
करसां मैं हार संगार जिस विच पिया मेरे वसआवे १५०
कैसा उलटा है तुम्हारा नारी धर्म २८२
[illegible]र बिध उतरांगी पार नी मैं २८९
[illegible]नी हो गंवारी [illegible] २८३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

कर याद प्रभु कर याद प्रभु नो सारे जगत नूं तारे ३१८
कोई है वे लोको जागदा ३२२
कभी हम बुलंद इकबाल थे तुम्हें याद हो.... ३६३
कीकन दाज रंगावां सैय्यो नी मैं मूल न कस्या २८६
किस बिध उतरांगी पार २८९
कैसा उलटा यह थारो सनातनधर्म १८१
कहें तो कुछ आर्य्य सुनों प्यारे भाइयो ३८२
क्या अजब दीन इसलाम है, तुम ज़रा गौर ३८८
क्यों खुदा कसम खाता है तुम सुनों मुहमदी भाई ३८९
क्या किसे खबर थी स्वामी दयानन्द ३९७
कहां है वह गुल जो देश भारत को ४०१
करो सज्जन वेद प्रचार तुम मित्रो देर लगा.... ४१३
क्यों वृथा समय गंवाओ करो गुरुकुल की तैयारी ४३६
कैसे पिया संग होरी खेलूं ४४८
करो शुद्ध रीति निष्क्रमण छटा अब मास आया है ३३८
कर्म उपनयन जो कराये वेद मार्ग यह बतलावे ३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

कोई अन्त समय का यार नहीं ४६४
काल की आज्ञा में कैसे २ जोरा वर चले ४९५

ख

खेलन में नफा नहीं है पेशा बुरा जवारी का २००
खेलत फाग भले विधि सज्जन ४४३

ग

ग़ाफ़िल समय क्यों खो रहा उठ देख क्यों है १३०
गृहस्थ वड़ा उत्तम है सरदार आश्रम चार का १५७
गावो मंगलचार नी तुसी आनन्द रहियो ३११
गोओं पर होता है सितम हम से सहा जाता नहीं ४५९
गृहाश्रम दूसरा करना धर्म्म सन ३५६

घ

घड़ सुनारियां मेरे हत्थ दा चूड़ा वे २३८

च

चापलूसी चोर है सत मित्रता मुझ और है २१४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

चाहे नीति निपुण कोई निन्दा और स्तुति करे चाहे २११
चल रे मनाँ हरि दर्शन पा २२६
चलना है मुसाफिर रहना नहीं ४८६
चलो कलुकाल सत्य अब आया ३६८
चार वर्ण और चारें आश्रम ४५७
चार आश्रम चार वर्ण का ४३७
चिरजीव हो तुम्हारो बाल प्रभु जी की शरण रहे २३६
चिरञ्जीव और बली हो यह पूत २३५

छ

छोड़ो नं तुम धर्म को चाहे जान तन से निकले १५१

ज

जिस मन में सच्चा ज्ञान है २१
जो जन शरण तेरी में आवे २३
जो सोते जागते है दूर जावे ३६
जो हरि गीत प्रीति संग गावे ४७
जगत पिता हम तेरी ही नित ६५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

		पृष्ठ
जिसका ऐश्वर्य महान् है	....	६३
जय २ सच्चिदानन्द ज्ञान प्रद	....	७५
जय २ पिता परम आनन्द दाता	....	७६
जय देव जय देव	....	५०१
जय जगदीश हरे	....	५००
जगत की जननी जगत की माता	....	७९
जय महेश जय महेशं	....	८३
जप ईश्वर को जपे ईश्वर को	....	९७
जप जाप प्रभु को कभी न भूले	....	१०८
जन्म जात ज्यों रेल समान समझ कर	....	१०८
जिस गाड़ी में जाना तुझको इक पल छिन में		१०९
जादू टूने के फन्दे न फसियो	....	१५१
जो शुद्ध आत्मा होवे सैन्यों कर	....	१९३
जब तुरीय पद को पावे सत्य पुरुष	....	१९८
जिस से सब रोग कटे हैं एक जड़ी हमारे पास है		२०३
जिसको तू फिरे तलाश में वह सदा पास रहता		२०४
... से छोड़ी बान ...	....	२०१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

जुती नारोपाल दी वे सतारयां जड़त जड़ी २२६
जन्मत ही प्रथम अनित्यता की गोद बैठे पीछे २१५
जौलों यह शरीर हृष्ट पुष्ट शुद्ध रोगा रहित जोलों २२१
जिया को सोचं भई अब किस विध उतरेंगे पार १७६
जितने जग सब अनित्य छाया भयंकुर है ४८९
जय बोलो महाराज हरि दी जय बोलो २४१
जे तैनूं सच्चे सुखां दी लोड़ वे २५१
जग में आकर सो रहियो वे मन वेपरवाही २६०
ज्यों जो हम से बनेगा सुभ्र्य जायेंगे २७९
जिन दश इन्द्रियों को जीता है वही बलवान १५५
जरा कान धर कर इधर ध्यान दीजे २९६
जिसने चरखा यह मेरा बनाया ९०१
जब से बाल विवाह भारत में होने लगे ३०८
जो नियम अनुसार चले ईश्वर के वह व्रती.... ३३०
जो है सब जग की माता कैसे बच्चों को खावे ३७७
ज्योतिष का जाल फैलाये लोगों ने ३७८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

	पृष्ठ
जब घोड़ा पक्क मुसाफिर को रहे था	४२१
जल्दी बनाय लो गुरुकुल	४३७
जब हरि सिमरे सो वसन्त काल	४३९
जगत मै वैदिक धर्म्म फैलाओ....	४४१
जे तैं सृष्टि रचाई वे रचाई वे	४५३
जन्म से ग्याहवां दिन जो आवे नाम करण	१२७
जी अब लेओ बधाई	३८४
जिन्हां घर झूलते हाथी हज़ारो लाख थे साथी	४९७
जगत में झूठी देखी प्रीत	४९८

झ

झूठा विश्वास गंगा से मुक्ति का	११३
झूठ को जिस ने त्याग दिया और सत्य को मित्र	१३४

ट

टूटते जाते हैं बन्धन झूठ और पाखण्ड के	१६४
टके सेर मुक्ति दिये को इसे खरीद	३७८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

ढ

ढूंढा सारे शास्त्र पुराण में पद हिन्दु कहीं पाया १७६

त

तुमरी कृपा से जो आनन्द पाया ८
तुम हो प्रभु चान्द मैं मैंहू चकोरा १५
तू मेरा करतार है तूं जगत सृजन हार है १६
तेरा नाम ओंकार कौन पाय सके पार १७
तेरो ही ध्यान धरत ब्रह्मा शिव व्यासपाल १८
तुम पापियों के परित्राता हो ४४
तुम बिन जगदीश कौन जगत में हमारे ६१
तुम सुनो दीन के नाथ विनय यह मेरी ६१
तू प्रभु सर्व ब्रह्माण्ड के स्वामी.... .... ६१
तुही है सनातन तुही है अनुपम ६२
तू निराकार अकाल है तू न्यायकारी ६६
तुही तुही नाम जपत और वे अन्त ७१
तुही तू आदि अन्त ....

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

	पृष्ठ
तुम्ही हो सहायक सृष्टि के नायक	८०
तू मेरा प्रभु स्वामी है	८१
तु कुछ कर उपकार जगत में	१०७
तुम शरण प्रभु की आओ	११५
तन में से काम जाये लोक में से नाम जावे....	१४७
त्यागेगा जो असत्य को सुख वोही पावेगा	१५०
तुम्हें इन्साफ करने को प्रभु ने नर बनाया है	२०६
तिरिया पतिव्रत को धार लो	२७५
तुम अपना धर्म विचार लो	२७८
तुम सुनो सुशीला नारी क्यों विगड़ी दशा तुम्हारी	२८१
तुम सुनो पुकार कन्या विनय करें हैं	२९०
तू सुयानी गुणा वन्तिये बीबी —	३१७
थ	
थाम चतुर चंचल मन को	२२४
द	
दो कर जोड़ विनय करूं तोरे	१४

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

दीजे २ प्रभु मुझे बल बुद्धी ४७
दया करो जन पै मेरे स्वामी ५७
दीन दयाल नाथ हे प्रभु पतित ७२
दुलारी जनक की जाई हठ छोड़ चलो ४६६
दिल्ले शाद दुनियां के लगाना नहीं अच्छा.... १५२
दश नियम धर्म के भाई जिन को आर्य २०३
दुर्दैव घटा घिर आई २११
दूर ते पतंगं दौर २ परत दीपक पर मोह २२१
दयानन्द स्वामी की कृपा से ४१२
दयानन्द दया ऐसी कीनी १८७
दयानन्द आनन्द कन्द भये ४१३
दुनियां में चारों वेदों का प्रचार करेंगे ४६१

ध

धर्म की डूबती नैया को तराने वाले २३
धर्म के चारों लक्षण लीजो पहचान ....

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

		पृष्ठ
धन जन यौवन संग न जावे	....	१२९
धिक्कार जुआं खेलन को	....	२०१
धन से क्या लाभ जो न खावे	....	२१४
धन प्रभ प्यारे दीयां वे परवाहियां	....	२४६
धर्म्म वीर का जब कि जनाज़ा लाहौर के	....	४२१
धन्य २ ऐसी माता को जिस लेखराम सा जाया		४२३
धन्य लेखराम से वीर को	....	४२७
धन्य दीन दयाल प्रभु	....	३१३

न

नमो जगत कर्त्ते नमो विश्व भर्त्ते	....	३३
नमो सृष्टि कर्त्ता नमः हो विधाता	....	६०
नारायण दीन दयाल दीन बन्धू....	....	७४
नमो सृष्टि कर्ता नमस्ते नियन्ता	....	८४
नख विन कटा देखे, जोगी कनफटा देखे	....	१३३
नाम जपन क्यों छोड़ दिया	....	१७६
नमः हो नमः हो नमः प्राणदाता		२५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

	पृष्ठ
नक्कारा धर्म्म को बजता है आए जिसका जी चाहे	१७६
नेक कमाई कर कुछ प्यारे जो तेरा परलोक सुधारे	१७७
नारी नैन बान जाके चित में न वेधे कबो क्रोध	२२०
नर ओंकार का ध्यान कर जिसने यह जग रचाया	२२२
नार तन पाय के यत्न कर	४७१
नर शरीर को पाय के लियो न हरि का नाम	४६०
नरतन पाने वालया वे कोई नेकी टोल	२६८
नी सुन मेरिये जिन्दगी प्रभु ने की फरमाया वेद में	२७३
नारियों के धर्म्म मैनों सुनोरी सुनाओ	२७९
नर दोज़ख को जाते हैं वे खा जीव को मार के	३६४
नाम प्यारा है स्वामी तुम्हारा....	३९५
नख और केश कटाए औषिधि जल में धुलवाया	३५०
न जाने कौनसी विरियां बजेगा कूच का डंका....	४९०
” ” ” ” नक्कारा	४९१

प

पालन कर्ता दुख का हर्ता	३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

	पृष्ठ
पिता जी तुम पतित उद्धारन हार	४
प्राणों का भी प्राण	५
प्रभु जी तू मेरे प्राण अधारे रे	५
प्रभु पूर्ण ब्रह्म दया सिमरण करिये	६
पवन पानी पृथिवी अग्नि बसे प्रकाश सारा	७
प्रभु मेरे शरण तेरी मैं आया	४१
प्रभु मैं दीन हूँ इक तेरा	४२
प्रभु दया है अपरम्पार तुम्हारी	४३
प्रभु मैं सब पातितन को नायक	४४
प्रभु मेरे हाल दा महरम तु	४४
प्रभु दुख सागर संसार में	६१
पिता परम सुनियों विनयें इक हमारी	६२
प्रभू जी कर देवो अमृत बारी	७४
पापी मन सोते पड़ा उठ जाग धर्म पहचान	१०३
प्रभु को सिमर २ मन मेरे शांति हृदय में तेरे	१०४
प्रभु के मिलके यम ... हमारा है	१०५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

	पृष्ठ
प्रथम जगदीश को कीजै नमस्ते	११०
प्रभु को छोड़ कर तू ने लगन किस से लगाई है	१२२
प्रभु चरणन में आजा तू बोहो तेरा हितकारी	१२५
प्रभु दया है अपरम्पार	४३
प्रीति करो हरि सो मन मेरे	१२६
प्रथम दानों को मारो हैं दुष्ट बड़े दुःख दाई	१५४
प्रीतम तेरे पास बसदा ढूंडन किथे जावना	१५८
पक्षपात और अपस्वार्थ को छोड़ सरल होकर तू	१८१
पड़े क्यों ख्वाब गफ़लत में समय अनमोल सोते हो	२०७
पढ़ो २ रे वेद सत्यग्रन्थ चलो अब आर्य बनो जो	२११
प्यास लगे सुखे कण्ठ शीतल जल पाय मिटे भूख	२२०
प्रभु पूरण तुमरे द्वार याचक आय खरे	२४०
प्रभु लै २ नाम तेरा मै दियां चरखे नूं फेरा	२४७
प्रभु ऊंचासिया पार वे हरि नाम सिमर लै	२४९
प्रभु जप लै नी भैनां एहो सफल है कमाई	२५१
प्रथम जगदीश को	२५५

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

पाति अपने में राखो ध्यान कि बढ़कर धर्म नहीं २८०
पूभु निबाहे बचन ब्रत धारण करो २१४
पुंसवन रीति शुभकारी है २२१
प्रभु प्रीतम जिसने विसारा हाय जनम अमोल १०६
परम पिता कि प्रीत से यश गावो सदा ११४
प्राणनाथ तुम जगत के पराण २०
प्रसूता पूत जाया है बधाई है बधाई है.... २३२
प्रथम स्नान करा बालक को सूर्य्य दर्शन करवाओ २४४
पतिव्रत धर्म को री पालन किया नार सीता ने ३७०

ब

बुद्धि विकासिक दुःख विनाशक.... .... ८७
बनो आर्य्य वेद मत पर चलो.... .... १००
बिना ज्ञान जीव कोई मुक्ति नहीं पावे ९१
बीत गये दिन भजन बिना रे १००
बृथा क्यों जन्म खोता है और मतिमन्द नर तन का ११८
बन जाना बन जाना मेरे भाई के आर्य्य बन जाना २३१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

बन्दे तू अपना आप पछान १४१
बान्धो न गठरिया अपयश की १८७
वृत्ति तेरी वे मना सोहनी २ .... ११०
बिन वेद पता नहीं पाया मैं प्रीतम प्यारे लाल का ३८५
बागों न जाना तेरी काया में गुलज़ार ४४७
ब्रह्मचर्य्य व्रत को धारन करो १४८
बनरा बनरी व्याहन आया ३५१
बिहनो है फरयाद सुनियो ज़रा हमारी २८५
बिना ज्ञान जीव कोई १८७
बाहर चरखे ने घूं २ लाई ३०५
बाल तीजे वर्ष में आया कीजे शुभ चूड़ा.... ३४२
बिनती सुनो महाराज हमारी बिनती सुनो महाराज ३५२
वानप्रस्थ कठिन है बाबा ३५९

भ

भाई मत वृथा उमर गंवाओ रे १०१
भक्ति करो जन जन्म सुधारो ओम २ पसं देखन १०२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

भरे भयो पर्व्वागन बांके, उठो जन प्रभु गुण गाओ १०३
भाइयो जगत में वृथा हुआ है जीना १४६
भक्ति भगवान में दिल अपना लगाओ ता सही १०८
भारत हमारा देश है हित उसका निशदिन चाहेंगे ११३
भारत में सब पुरुष स्त्री पचीस करोड का किया १६६
भारत तेरे भाग खुल गये, भाग खुल गये १९६
भक्ति पुष्प खिले सो वसन्त काल ४४०
भूले क्यों परदेशियो यह नहीं देश है तुम्हारा ४९३

म

मैं हूं दीन मलीन प्रभु ३५
मोरी नाव कैसे उतरे पार ७१
मैं उन के दर्श की प्यासी ७७
माथे पै नही टीका तेरे हिन्दू पन का ७७
मुख भजन करने को दीना, नर छोड झूठ तुफानको २०१
मुंह से कही बात पशु पक्षी हुं पिछान लेत २१६
मेरा मन मुझे कैसे सतावे २२३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

	पृष्ट
मेरे मन ने मुझ को दिवाना किया है	२२८
मन ने मानत नहीं ऐसा उत्पाती है	२२९
मेरे मन ने मुझ को बहुत ही सताया	२३१
मन मेरा मद माते हाथी की न्याई	२३३
मन मूर्ख को समझ न आवे वृथा अपनी उमर	२३३
मैं तेरी मैं तेरी वे प्रभु जी	२४२
मोरे प्राण पातिसों जाय कहियो दर्शन की लग	२४३
मेरे राणा जी भगवत के गुण गाना	२४४
मैं घुमलड़ी औगुनहारं कोई मैंनू दसदेओ....	२४४
मैं सैं २ रातां गुजारियां प्रभु दे भजन बिना	२४६
मैं तेरे वारे जावां वे तरखाना तु है मेरा परम	२४८
मेरियो नी सैय्यो मन नूं केओ समझा	२५१
मैं तैनूं आखिया जिन्दे, नी लगजा सचदे धन्दे	२५१
मेरी बहनों अकल कहां गंवायदई	२७७
मेरी आयु निष्फल गई मन सुध न लई	४७७

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

	पृष्ठ
मन कहां कहां तु डोलता	४७८
मुए हज़ारो लोग जहां में खुदी का दम भरते २	४८१
मेरी प्यारी बहनों सोई हो पढ़ी गाढ़ी नीन्द में	२८४
मैं जिन्द जान तुसाथों घोला	३०७
मित्र और वरुण उर्वी यह सदा शान्त रहे	३२६
महाभारत के बाद पोप ने ऐसा जाल बिछाया है	३७६
मन में आया अभिमान क्या बन बैठा ब्रह्मअनाड़ी	३८०
मिल सज्जन सभी विचारो	३८३
मत चला नास्तिक जैनी जो विमुख रहे करतार से	३८४

य

यह कर्म की गति न्यारी रे ऊधो यह कर्म की	१८१
यह मन कब समझेगा बावरा....	२२७
यह हवन सुगन्धित पवन मेरे मन भावे	३२५
यह जलसा तुम को सालाना मुबारक हो २	४५९
” ” ” ”	४५१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

र

रहन सहन और चलन चितवन एक निद्रा भय	२१८
रजना बिन चन्द जैसे रदन बिन गयन्द	२१९
रामा पहलड़ी लांउ सत्य धर्म कमाइये	३१३

ल

लगे मोहि नाम निरञ्जन प्यारा	१९६
लगा दिल ईश से प्यारे अगर मुक्ति को पाना है	१७४
लगी जिनकी जगदीश से हो लगन	१७४
लेख राम जहे बरि जी तुसी बन दिखलाओ	४२६

व

वह वृथा जन्म को गंवाये हुये हैं	९२
वेदों के पढ़ने का सब को अधिकार	११२
विवाह आवे संसकार दिन में वेशया बुला	१४४
विशपाति के ध्यान में जिसने लगाई हो लगन	१०८
वेद प्रचार कैसे होवे ऐसी गाढ़ी पी लई	२६१

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ट

वेदोक्त विवाह करावो जी जो सुख पावें नर नारी.... १९५

विद्या बुद्धि शूरता उदारतादि ऐको गुणापायके २१६

विपत्ति काल में मित्र युद्ध में शत्रु परखिये २१८

विद्या का हम सबों को पिता दान दीजिये २६४

वाह २ एह वेला खटेनदा जिन्दडी एह वेला.... ३१२

वेदारम्भ समय शुभ आया ३४७

वर प्रतिज्ञा करता है प्यारी निस दिन रक्षा करूं मैं ३९२

वेद रीति से पुरुष नार मिलाया हमने ३५१

वेद विद्याओं की है कान वेद में है परिपुर्णज्ञान ४२९

वेदका प्रचार करना जगत का उद्धार है ४३०

वेदां दा प्रचार करो तुसी आनन्द रहियो ५३१

विद्या जैसा दान न कोई विद्वानों ने माना है ४६०

श

शरण पड़ा हूं मैं तेरी दयामय ४८

शरण हम प्रभु तेरी आये हुये हैं ६८

शरण अपनी में रख सबको ६०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

शरण प्रभु की आवोरे यही समय है प्यारे ११७

शुभ रचो स्वयम्बर शादी, सुख सम्पत प्रीति आराम ११६

शान्ति नहीं जिस के चित में मन इन्द्रियन पै.... २१७

शुभ करियो करतार काज यह शुभ करियो ३१६

शुभ काम कुड़े कर मेरी बीबी कन्त तेरे वश आवे ३२१

शरण पति की रहिना बहिन! शरण पति की रहना ३५५

शोक है भारत में चहुं दिश व्यापत और मातम आया ३६८

स

सर्व व्यापी अन्तर्यामी सब का देखन हारा २४

सुनो जगदीश बिनती को ६०

सुनो तुम अब वैदिक गाथा १२०

सनातन वेदों की बानी १६६

सदा धर्म करते रहो जब लग घट में प्राण १५२

सांय समय और प्राता काले छोड़ आड़ कर पव १६१

सारी आयु बीती जाय भाइयो अब चेतोरे १६२

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

	पृष्ठ
सिमर प्रभु दिन रात रे मन	१७०
सदाकत के लिये गर जान जाती है तो जाने दो	१७०
सूर्य्य वैदिक निकला भाई क्या अब नहीं चेतोगे	१९३
सब सज्जन करो विचार वर्णों के कर्म सुनावें	२०५
सागर में तारिबे जहाज बहु भांन्ति रचे अधिकार	२१६
सुखां दी खातर मन ते धर्म्म करावना	२६१
सेवा में उसकी तुम तन मन लाओ	२७६
सीता की ओर निहार लो जो थी सतवंती नारी	२८५
सैय्यो नी मैं मूर्खे नें कत्या कीकन दाज रंगावा	२८६
सैय्यो नी मै कितवल जावां नाहीं किते मैंनू ढोई	२८७
सदमों की चोटें सीने पै खाई नहीं जाती	२९१
सीमन्तोन्नयन छटे मास में कीजे नियम अनुसार	३३२
सज्जन सब गावो मिलकर गीत	३३९
सब मुनियों ध्यान लगाय के इस संसार को प्यारे	३४१
सुनते हैं यह देश सब देशों के सर का ताज था	३७१
स्वामी के वाया रड़के पोपैं दिलन में	४०६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

सखी वाहू संग खेलूंगी फाग सखी वाहू संग खेलूंगी ४४२
सदा खुशी हो सदा हो मंगल ४५०
सिया दुःख वन में उठाना होगा ४६७
सुन पति के बचन सोच सीता के हुआ मन में ४६७
सीता बोली जोर से ऐ पापी सुन बात ४७१
सब ऐंट निकल जावेगी क्या फिरते तिरछे बांके ४७३
सम्भल के बैठो ऐ सोने वाले। देखो तो दुनिया का ४८४
सिर बजे काल का डंका नर डर मरघट के ढोल से ४८८
सूख गयो गात बात बूझत नहीं कोई ४८९

ह

हे आनन्द मय सर्व व्यापक २१
हमें दान ज्ञान का देओ प्रभु ५०
हे दीना बन्धु हे करुणा सिन्धु ५१
हे हरी हम दीन हैं निर्गुण ५१
हे दया मय हमें सबों को शुद्धताई ५३

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पृष्ठ

हरि समान दाता जग में दूसरा न कोई ८४
हरि सम को हितकारी रे ८५
हे जगत स्वामी प्रभु जी भेंट धरूं ९१
हे पतित पावन हे दुःख निवारण ९४
हरि का ध्यान लगावो १२८
हिन्दूमत से धोय हाय अब परमेश्वर १४३
होता बरबाद घर रंडी बाज़ी से १४५
है जिसने सारे विश्व को धारण १६०
हर जगह मौजूद है पर नजर १७५
हृदय में हरि को जान भजन कर १७९
हरि गुण गाओ रे साधो १८१
है प्रभु वही सब पर है १८८
हरि सों प्रीति करो मन मेरे २०६
हरि बिन और हितु नहीं कोई २१२
हर गुण गाईये माये, हर गुण गाईये माये.... २३५
" " ऐसा जो हमारा स्वामी जी सैय्यो २३६

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

	पृष्ठ
हरि नाम जपो धर प्रीति मना हरि नाम जपो	२४२
हाय कैसी यह अविद्या भूली हो अपना पति व्रत	२७१
हमें दान विद्या का दो आर्य भाइयो	२९२
हमारी विनय को सुनो धर काना	३०८
हे कृपालु हम सबों को भय रहित कर दीजिये	३३१
हे सुत तुम्हे यह मिलता यज्ञोपवीत है	१४६
हमारी है दुआ प्यारी सुहागन हो सुहागन हो	३५९
हे दया सिन्धो दुःख मोचन करुणामय कृपा करो .	३६४
हम से धर्म का राज छपाया नहीं जाता	३८७
हुये भारत के भानु प्यारे अन्धेरा दूर हुआ सारे	४१६
हुआ है नमुदार अब फिर गुरुकुल	४३४
होली खेलो समझ के रे भाई	४४८
हम न भोगे भोग भोगोंने हमें भुगता दिया .	४८९
हटड़ी छोड़ चलो बंनजारे	४९८
हे त्रैलोक पति हे त्रैलोक पति....	५०३

ज्ञ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लाभदायक पुस्तक

हमारी मातायें—इस में इन २१ स्त्रियों के वर्णन हैं, इस के अतिरिक्त इस के आदि में लाला गोकुल चन्द साहिब एम० ए० की एक अति लाभदायक भूमिका है और अंत में एक भयभीत दृश्य है ॥

१ सो कन्या २ विदुला ३ कमला ४ भोगवती ५ मरीची ६ कलावती ७ सलोचना, ८ रेमुका, ९ सत्यवती, १० चन्द्र कानता योगणी, ११ बिजया, १२ द्रोपदी, १३ महाराणी दमयन्ती १४ अर्गल का राणी १५ सीता और उस का प्रेम, १६ तारामति शिवया, १७ कर्म्म देवी, १८ महाराणी सती १९ पारवती २० गेंदा बाई २१ साहिब कंवर। मुल्य दस आने रियायती ।≡)

राजस्तान—इस पुस्तक में भारत के सच्चे सपूत वीर वीरांगओं के ऐसे अद्भुत और सच्चे बृत्तांत है कि जिनको पढ़ सुन कर शरीर रोमांच हो जाता है और यदि पुस्तक का आरम्भ कर के बीच में छोड़ना चाहो तो कदापि न छोड़ सकोगे, १०० सफे हैं मुफ्य १)

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

* औ३म् *

अथ आर्य्यगायनम्

ईश्वर स्तुति और उपासना ।

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि । धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

ओ३म् अकार उकार मकार । तीन मात्रों का एक ओंकार ।
परमेश्वर का उत्तम नाम । जानते हैं इसे खासो आम ॥
अर्थ विचार करें जो जाप । क्यों न कट जायें उनके ताप ।
'भू' है प्राणों का भी प्राण । 'भुवः' सब दुख छुडावन हार ॥
'स्व' है आप सदा सुख रूप । धर्मियों को करे मुक्त स्वरूप ।
'तत्' उस ईश्वर से हम लोग । भक्ति भाव से करें *संयोग ॥
'सवितुर' जग का †सृजनहार । ‡रवि §शशि हैं जिसका चमत्कार ।

---

* मिलाप † रचता ‡ सूर्य्य § चांद ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'वरेण्य' ग्रहन करने के लायक। 'भर्गः' शुद्ध पवित्र सहायक ॥
'देवस्य' ज्योतिमय और ज्ञान ! 'धीमहि' उसका धरें हम ध्यान।
'धियोः' बुद्धियोंकेअपगुणहरे 'योनः पूर्वोक्तहमारी सहायताकरे ॥
'प्रचोदयात्' का प्रेरणा अर्थ शुभ गुणों की देवे सामर्थ्य ।
प्राप्ति करें हम धर्म और अर्थ, बीत न जावे जन्म व्यर्थ ॥
तन मन धन से करें उपकार, गायत्री का अर्थ विचार ।
अमीचंद सन्ध्या कर दो काल, सत्य धर्म के नियम पाल ॥

---

२ भजन

ईश्वर तु अपरम्पार है, तेरा ही सब संसार है ।
इस में तूही इक सार है, तुझ को सदा प्रणाम हो ॥ १ ॥
सर्व जगदाधार तू, है सब का पालन हार तूं ।
हम सब का इक करतार तू, तुझ में नं कोई विकार है ॥
एक तुं अनूपम है प्रभु, त्रिकाल में है एक तु ।
है तुझ में नाहीं रंग बू, तुझ को सदा प्रणाम हो ॥ २ ॥
तू सत चित आनन्द है, तू नित्य शुद्ध अखण्ड है ।
बल तेज व प्रचण्ड है, तुझ को सदा प्रणाम हो ॥ ४ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सब विश्व में है समा रहा। आकाश में तू रम रहा।
है जीव में भी बस रहा। तुझ को सदा प्रणाम हो ॥ ५ ॥
तू धर्म्म पालक है सदा। है न्यायकारी तू पिता।
है दुष्ट नाशक सर्वदा। तुझ को सदा प्रणाम हो ॥ ६ ॥
तू धर्म्म में हम को बढ़ा। शुभ कर्म ही हम से करा।
दे पाप से हम को छुड़ा। तुझ को सदा प्रणाम हो ॥ ७ ॥
इक तेरे ही हम दास हैं। तुझ पर धरें सब आस हैं।
तुझ से करें अरदास हैं। तुझ को सदा प्रणाम हो ॥ ८ ॥
हम दीनों पर तू दया कर। ले सब की तू भी खबर।
निज ज्ञान से कर बहराव। तुझ को सदा प्रणाम हो ॥ ९ ॥

रागनी भैरवी] ३ भजन। [३ताल

पालन कर्त्ता दुख का हर्त्ता। सकल विश्व आधारा।
दुगर्ण नाशक ज्ञान प्रकाशक। मुक्ति देने हारा ॥ १ ॥
दुष्ट जनों को दण्ड का दाता शिष्टों को सुखदाई।
ऋषियों मुनियों विद्यावानों। भक्त जनों का प्यारा ॥ २ ॥
नस और के नाड़ी बन्धन में। कभी नहीं वह आता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हर्ष शोक और जन्म मरण से, रहे सदा वह न्यारा ॥ ३ ॥
संकट हर्त्ता दया का सागर, महां बली सुखदाई ।
बुद्धि उस की थाह न पावे, है वह अगम्य अपारा ॥ ४ ॥
चारों दिशा में नीचे ऊपर, अन्दर बाहर व्यापक ।
ज्ञान नेत्र से दृष्टी गोचर, उसका हो चमकारा ॥ ५ ॥
नहीं कभी वह गर्भ में आवे, नहीं वह काया धारे ।
जो उसका अवतार बतावे, वह बुद्धि का मारा ॥ ६ ॥
सब का स्वामी अन्तर्यामी, सदा एक रस रहता ।
'केवल' उस ही की कृपा से, होवे पार उतारा ॥ ७ ॥

रागनी आसा] ४ भजन। [ताल कव्वाली

टेक—पिता जी तुम पतित उद्धारन हार ।
दीन शरण कंगाल के स्वामी दुख के मोचन हार ।
इस जग माया जाल भ्रम में सूझे न सार असार ।
सत्य ज्ञान विन अन्ध सम डोलें करें असत्य आचार ।
पाप प्रवाह भयंकर जल में डूबत है मंजधार ।
तुमरी दया विन को समर्थ है करे दीनन को पार ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागनी भैरवी) ५ भजन (३ ताल

प्राणों का भी प्राण, तुही मनका मन में ।

तुही राजा अधिराज, तुही धन निर्धन में ॥ १ ॥

तुही अग्नि रवि चांद, तुही तारागण में ।

तुही बिजली की चमक, तुही गर्जत घन में ॥ २ ॥

तुही वृक्ष में बीज, तुही हरयावल में ।

तुही पत्ते फल फूल, तुही पर्वत बन में ॥ ३ ॥

तुही जग कर्त्ता सगुण, तुही फिर निर्गुण है ।

तुही है जल तरङ्ग, समुन्दर के फन में ॥ ४ ॥

राग बलावल] ६ भजन [महल्ला ५

टेक——प्रभु जी तू मेरे प्राण अधारे ।

नमस्कार दण्डौत बन्दना, अनेक बार जाऊं वारे ।

ऊठत बैठत सोवत जागत, यह मन तुझे चितारे ॥

सुख दुःख सब ये मन की व्यथा तेरे ही आगे पुकारे ।

मेरी ओट बल बुद्धि धन, तुम हो मेरे परिवार ।

जो तुम करो सोई भला हमारा। पेखि २ नानक चरनारे ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पहाड़ी] ७ भजन । [ताल चंचल

ठेक—प्रभु पूर्ण ब्रह्म दयालु सिमरण करिये।
तुमरा भजन करें निसवासर, कटे जो सकल जंजाल।
जो तोहे भावे काज हमारा, सोई करे निहाल।
मात पिता बन्धु तू स्वामी, तुही परम कृपाल।
सब को पाले निज करुणा बल, हम तुमरे सब बाल।
जीवन प्राण दान का दाता, सब का तू रक्ष पाल।
राजों के सिर छत्र चंवर धर, करे तिन्हें भूपाल।
चन्द्र सूरज सब रचना तेरी, कौशल्य स्वर्ग पाताल।
ऐसा कौन पावे तव पारा, हार गये कर भाल।
षट् ऋतु भेंट तुम्हारी लावें, फूल फलन के थाल।
प्रीति सहित तव गुण गण गावें, लोक पाल दिक पाल।
मधुर २ स्वर जग यश गावें, उडगन की गह माल।
सब ही ठौर सिंहासन तुमरा, क्या सागर क्या ताल।
दोऊ कर जोड़ तुझे हरि ध्यावें, सुन विनती भूपाल॥
तब सहवास के हों उपयोगी, दर्शन हो तत्काल।
धन्य २ करुणा कर स्वामी, मैं तुमरे बलिहारा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागनी देसी) ७ भजन (३ ताल

पवन पानी पृथिवी अग्नि बसे आकाश सारा।
बसे आकाश सारा तुझ में, बसे आकाश सारा ॥ १ ॥
चन्द्र सूर्य्य और तारागण लेत तव सहारा।
विश्व चक्र सकल घूमत, आश्रय ले तुम्हारा ॥ २ ॥
तुझ को आश्रय कर नदी नाला चले समुन्दर धारा।
प्राणियों की प्राण क्रिया के तुम हो प्राण अधारा ॥ ३ ॥
दशों दिशा काल चक्र तुझ में घूमन हारा।
तुम स्वतन्त्र, निरालम्ब, मुक्त, निराधारा ॥ ४ ॥

भैरवी) ९ भजन (३ ताल-प्रातः

अग्नि में भी रहे सदा, पर आग में कभी न जले।
है अचल निष्कंप, वायु के हिलाये न हिले ॥ १ ॥
मट्टी में रहकर है वह निर्मल शुद्ध दर्पण की तरह।
रहे सदा जल बीच, पर पानी में तिल भर न गले ॥ २ ॥
जैसे है आकाश व्यापक, वैसे वह आकाश में।
बिजुलीवत् हरतार में, न्यारी जगह कुछ न मिले ॥ ३
सब के ऊपर सब के भीतर, सब जगह व्यापक वही।
है तलातल के तले, बल्कि रसातल के तले। ४ ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागनी जयजय वन्ती)१० भजन (ताल धमाली

तुम्हारी कृपा से, जो आनन्द पाया,
वाणी से जावे वह, क्योंकर बताया।
नहीं है यह वह रस जिसे रसना चाखे,
नहीं रूप उसका, कभी दृष्टी आया॥
नहीं है यह गुण गन्ध, जो घ्राण जाने,
त्वचा से न जावे, यह छूआ छुहाया।
संख्या में आना, असम्भव है उसका,
दिशा काल में भी, रहे न समाया॥
तुझसा न दाता है तुझसा न दानी,
इतना बड़ा दान, जिसने दिलाया।
आतमोन्नति में, तुम्हारी दया से
मेरी ज़िन्दगी ने अजब पलठा खाया॥
सत् चित् आनन्द, अनन्त स्वरूप,
तुझे मेरे अनुभव ने, निश्चय कराया।
गूंगे की रसना के सदृश "अमींचन्द"
कैसे बतावे कि क्या रस उड़ाया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गायत्री भजन ११

ओ३म् भूर्भुवः स्वः तत्सवि तुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि धियो योनः प्रचोदयात् ॥

यजुर वेद अ० ३६ मंत्र ३ ॥

एह गायत्री मन्त्र काहिये ।
इस नूं जपन अकेले बहिये ॥
सान्झ सवेरे विच्च इकांत ।
इस नूं जप के पाओ शांत ॥
एह मन्त्र वेदां विच्च आया ।
ईश्वर जीवां नूं समझाया ॥
इस मन्त्र दा करो विचार ।
भव सागर तों उतरो पार ॥
पहले सुनो ओं दा अर्थ ।
जप के पाओ बरी समर्थ ॥
अ उ म तिन अक्षर मिलदे ।
सारे भर्म मिटावन दिल दे ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अ से जाने वराट और अग्नि ।
नाले विश्व जो है जग जननी ॥

उ हिरण्य गर्भ और वायू ।
नाले तेजस्य परम दयालू ॥

म से जान ईश्वर आदित ।
अते प्राज्ञ इस विच्च ला चित ॥

इहु प्रकार जग दा प्रकाशक ।
तद वराट ईश्वर दा वाचक ॥

अग्नि जानो ज्ञान स्वरूप ।
सर्वज्ञ स्वामी जग दा भूप ॥

जानन प्राप्त होवन योग ।
पूजा करीये करे संयोग ॥

सारे भुतां विच्च व्यापक ।
सब दे बिच्च रम रिहा स्वभावक ॥

तां ते यह ईश्वर दा नाओं ।
उस दे बिनां न कोई थाओं ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कोटां सूर्य चन्द्र तारे ।
सारे जिस दे रहन सहारे ॥
इन सब नूं देवे प्रकाश ।
सर्व व्यापक ज्यों आकाश ॥
ओहो हिरण्य गर्भ कहलावे ।
सारे लोकां नूं उपजावे ॥
जगत चराचर दा जो करता ।
जीवन दाता परलय धरता ॥
सब बलवानों से बलवान ।
तां ते वायू ईश्वर जान ॥
जो जग विच स्वयं प्रकाश ।
अन्धकार नूं करदा नाश ॥
सूर्य नूं देवे चमकारा ।
तेजस ईश्वर सब दा प्यारा ॥
जेंदा होवे सत विचार ।
शील ज्ञान अनन्त भंडार ॥
ओह परमात्म ईश्वर कहीये ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उस दे नित्य सहारे रहीये ॥

है आदित नाश तों रहित ।
चेतन सत ज्ञान दे सहित ॥
ऐसा है ईश्वर बिन कौन ।
ऐस अर्थ दा वाचक जौन ॥
जिस दा सत यथार्थ ज्ञान ।
भरांती दा नहीं सान विगमान ॥
जगत चराचर दे विसहार ।
जाने यथावत सब परकार ॥
ओ३म् प्राज्ञ ज्ञानी सर्वईश्वर ।
सतगुर बृहस्पति जगदीश्वर ॥
भू सब जग जीवन आधार ।
पुराना ते प्यारा कर्तार ।
है भवा दुःखां ते रहित ।
जिस दा संगि करो सुख सहित ॥
स्वः नाना विध जग विच व्यापक ।
सब दा धारण करें स्वभाविक ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है सवितः जग दा उत्पाता ।
सकल ऐश्वर्य दा दाता ॥
सर्व सुखां दा दाता देव ।
कामना योग सकल दा सेव ॥
अति स्वष्ट शुद्ध स्वरूप ।
करे पवित्र ब्रह्म अनूप ॥
उस चेतन नूं करीये धारण ।
ओह पित माता है जग तारण ॥
करे प्रेरणा साडी बुद्धी ।
उस दे कोलों पाईए शुद्धी ॥
बुरे कर्म तों दूर हटावे ।
विच भलाई चित लगावे ॥
हे सचदानन्द स्वरूप ।
हे परमेश्वर नित्य अनूप ॥
हे शुद्ध बुद्ध मुक्त स्वभाव ।
भव सागर उतरण उपाव ॥
हे अजर हे अमर निरंजन ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निर्विकार सकल दुःख भञ्जन ॥

हे सर्व अन्तर्यामिन स्वामी ।

हे प्रभु पतित उधारण नामी ॥

जगत पति हे जगत उत्पादिक ॥

हे ज्ञानी सर्वज्ञ व्यापक ।

हे अनादि विश्व के भरता ।

सर्व व्यापक मङ्गल करता ॥

हे करुणा अमृत दे सागर ।

सर्व प्रकाशं प्रसिद्ध उजागर ॥

हे प्रभु दीनन के हितकारी ।

हे जग पालक हे न्यायकारी ॥

जन्म मरन दुःखां ते परे ।

सकल कष्ट जीवां दे हरे ॥

हे घट घट दे जानन वाले ।

हे सब जग दे पालन वाले ॥

जगत पिता हे सब दे धरता ।

उत्पत पालन परलय करता ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सकल ऐश्वर्य दे दाता ।
हे स्वामी जग दे निरमाता ॥
शुद्ध मति दा दीजो दान ।
तव सेवा विचँ रहे ध्यान ॥
बोलें सच्च कमावें सच्च ।
पाप ताप ते जावें बच ॥
सकल सृष्टी दे हों हितकारी ।
प्रेरणा करियो बुद्धी हमारी ॥
ओ३म् शांति ! शांति !! शांति !!!

रागनी कल्याण] १२ भजन [ताल झप]

तुम हो प्रभु चांद मैं हूं चकोरा ।
तुम हो कमल फूल मैं रस का भौंरा ॥ १ ॥
ज्योति तुम्हारी का मैं हूं पतङ्गा ।
आनन्द घन तुम ही हो मैं बन का मोरा ॥ २ ॥
जैसे है चुम्बक की लोहे से प्रीति ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

* आकर्षण करे मोहि लगातार तोरा ॥ ३ ॥
पानी बिना जैसे हो ‡ मीन व्याकुल ।
वैसा ही तड़पाय तुमरा विछोड़ा ॥ ४ ॥
इक बूंद जल का मैं प्यासा हूं चातक ।
अमृत की करो वर्षा हरो ताप मोरा ॥ ५ ॥

भैरवी) १३ भजन (अढाई ताल

तू मेरा करतार है, तू जगत् सृजन हार है ।
तेरा ही सब परिवार है, बलिहारी तेरे नाम के ॥
चांद सूरज डोलते, तेरी ही महिमा बोलते ।
जन कुटिल जनुआतोलते, बलिहारी तेरे नाम के ॥
अग्नि तुझे है मानती, और किसे नहीं जानती ।
तेरा ही गुण है बखानती, बलिहार तेरे नाम के ॥
वृक्ष आदि जड़ी २, पशु कीट से ले नर करी ।
सृष्टी सकल है तैं करी । बलि० ॥

---

* तैंने ‡ मछली ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पवन जैसे डोलती, तव यश के दर खोलती
महिमा है तेरी बोलती। बलि० ॥
जल के जिते प्रवाह हैं, * तव गुणान के वे
तेरा न अन्त वह पाये हैं। बलि० ॥
धन्य तेरा नाम है, जिसका सकल यह काम
तुझ को सदा प्रणाम है। बलि० ॥
‡ कर जोड़ तुझ से § अर्ज़ है, औरों ¶ सेती नहीं गर्ज़ है।
पिनना मुझे ही फरज़ है। बलि० ॥
बिनती "बिहारी लाल" की ते चरण के है पास जी।
सिमरूं तुझे हर श्वास जी, बलिहार तेरे नाम के ॥

———

भैरवी ध्रुपद] १३ भजन [४ ताल

टेक—तेरो नाम ओंकार कौन गाये सके पार ॥
महामुनीश गए हार, गाय २ ध्याय २ तेरो नाम०
सत चित् आनन्द स्वरूप, बिना रंग रहित रूप।

* तेरे ‡ हाथ § प्रार्थना ¶ से ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भूप, निराकार निर्विकार । तेरो नाम०

य स्वयं ब्रह्म, अखण्ड अच्छय शुद्ध ।

अपार तू अपार । तेरो०

द, सर्व शास्त्र कहत वेद ।

हे प्रकार, कौन कर सके विस्तार । तेरो०

* आकर्षण करे मोहि

पानी बिना जैसे हो

वैसा ही तड़पाय तुमरा

इक बूंद जल का मैं

अमृत की करो वर्ष

...ल्याण) १४ भजन (४ ताल

तेरो ही ध्यान धरत ब्रह्मा शिव व्यास पाल नारद मुनि,

सनकादिक शेष सुरेश रटत रहत निशि बासर ।

चान्द सुर्य्य और तारागण धरा मेरु पशु पक्षी,

जल थल के अगम निगम को गुण कहत नारी,

तू दीनानाथ दयालु भवपोषक विश्वम्भर,

'माधव' को सुख संपति दीजे जयदेव अपार निराकार निर्विकार,

१५ भजन

आदि गुरू हम शिष तुम्हारे ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुम विद्या के देनन हारे ।

जो शुभ कर्म्म तुम्हें प्रभु भावे ।

उस ही में हमरा मन जावे ॥

तव आज्ञा को प्रति पल पालें ।

पाप पुञ्ज से रहें निराले ॥

प्रति दिन स्तुति तुम्हारी गावें ।

तव गुणग्राम का ध्यान लगावें ॥

तुम से ही कर प्रार्थना स्वामी ।

होवें कृतार्थ अन्तर्यामी ॥

तुम हो ज्ञान स्वरूप प्रभुवर ।

ज्ञान से शुद्ध हमारे हृदय कर ॥

तेज स्वरूप तेज अर्पण कर ।

हे बल रूप कृपा से बली कर ॥

प्राक्रम रूप प्राक्रम दीजे ।

सहन शील हम को प्रभु कीजे ॥

दुष्ट नाशक दुष्टन पर क्रोधा ।

हम से क्रोधी रहें सदा योधा ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाक् पते दे पावक वाणी ।
वेद सुशास्त्र स्मृति रस सानी ।
पावन सरल सुबुद्धि दीजे ।
मूर्खपन हमरा हर लीजे ॥
दुष्ट स्वभाव व हिंसा शीला ।
धूर्त कृपण जो मन के दुखीला ॥
परहित हानि जिन को प्यारी ।
उन से रक्षा कीजे हमारी ।
हे महाराज यथा हो नीति ।
फैले न्याय रहे न कुरीति ॥
जन॰ ॰ के मन में उपजे प्रीति ।
तू दीन॰ चन्द्र चकोर की ज्यूं शुभ रीति ।
'माधव' को ॰ पिता बन्धु तुम भाई ।
तुम बिन मोर न कोई सहाई ॥
केवल हमें इक तोर सहारा ।
तीन ताप से कर निस्तारा ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागनी भैरवी] १६ भजन [ताल मुग़लई

जिस मन में सच्चा ज्ञान है, वह निश्चय बुद्धिमान् है।
तेरा ही करता ध्यान है, तू सर्व शक्तिमान् है ॥

सूरज को दी तूने चमक, बिजुली ने ली तुझ से दमक।
कोई नहीं तुझ से अधिक, तू सर्व शक्तिमान् है ॥

तेरा रचा संसार है, सब कुछ तेरे आधार है।
नहीं कुछ तुझे दरकार है, तू सर्व शक्तिमान् है ॥

तू है अगोचर और अगम तू आकाश से भी सूक्ष्म।
होता नहीं तेरा जन्म, तू सर्व शक्तिमान् है ॥

तू है अमृत्यु और अमर, है सर्वव्यापक और अजर।
रखता है सब की तु खबर, तू सर्व शक्तिमान् है ॥

नहीं तू कभी अभिमानी है, तुझ में नहीं नादानी है।
भिक्षुक हैं हम तू दानी है, तू सर्व शक्तिमान् है ॥

तूने जगत् उत्पन्न किया, भक्तों के दुःख को हर लिया।
सब कुछ हमे तूने दिया, तू सर्व० ॥

तूने रचा चरखे बरीं, तेरा ही है फर्शे जिमीं।
तेरी कोई उपमा नहीं। तू सर्व० ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तू सब में है सब से जुदा, न्यारा भी है और मिल रहा।
बुद्धि लगाये क्या पत। तू सर्व० ॥
जिस ने लगाया तुझ से मन आनन्द है वह और मग्न।
दे ज्ञान का मुझ को भी धन। तु सर्व०।
है सब से तेरी मित्रता, रखता है सब पर तू दया।
जो योग्य था सब को दिया। तू सर्व०।
"केवल" कहे कर जोड़ कर, स्वामी मिले यह मुझ को घर।
मन मेरा हो विद्या का घर। तु सर्व०।

——:o:——

पीलो] १७ भजन। [ताल चंचल

जो जन शरण तेरी में आवे, धर्म भाव उस में बस जावे।
शोक मोह से हो अवतीर्ण, काम क्रोध सब ही विसरावे।
सब प्राणी आत्म सम देखे, दुख पराया अपना भावे।
परस्वार्थ में निज सुख जाने, परहित में मन तन को लगावे।
सत्य ही मानें सत्य ही बोलें, सत्य करें और सत्य करावें।
कष्ट सहे अरु निंदा [illegible] और [illegible] सिखावे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईंटें खावे फूल बरसावे, ज़हिर पिये अमृत को पिलावे।
पल २ में तेरा यश गावे, जन्म मरण उसका कट जावे ॥

खमाच] १८ भजन। [ताल कवाली

धर्म्म की डूबती नैया को तराने वाले,
दुःख के सागर से हमें पार लङ्घाने वाले।
चांद सूर्य तारे रचे और सृष्टि अद्भुत,
नाना प्रकार के फल फूल उगाने वाले।
पञ्च तत्व काल ऋतु और प्रमाणु भानु,
सब को नियम अटल में हो चलाने वाले।
रूप रस गन्ध विकारों से हो बाहिर स्वामी,
नाड़ी नस आदि के बन्धन में न आने वाले।
राग द्वेष और अविद्या के क्लेशों से परे,
ऐसे सगुण हो कि निर्गुण भी कहाने वाले।
तिमिराज्ञान में पड़े हमको कहां थी सुध बुध,
सत्य उपदेश के डंके से जगाने वाले।
आज्ञा पालन में तेरे रहते सदा हैं जो जन,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भक्त वत्सल हो उन्हें मोक्ष दिखाने वाले ।
तेरी भक्ति की लगन जिन को लगी है ईश्वर,
उन के आनन्द की हिम्मत को बढ़ाने वाले ।
शरणागत छोड़ तेरी और कहां हम जावें,
सर्व आधार हो, गिरतों को उठाने वाले ।
तुच्छ बुद्धि है "गंगाराम" करे क्या वर्णन,
अकथ अगोचर हो हर एक जगा पे समाने वाले ।

वज़न १२ मासा) ११ भजन (हिदायत

सर्व व्यापी अन्तर्यामी, सब का देखन हारा ।
सारे जगत को नियम में राखे, सबका एक * अधारा ॥ १ ॥
स्वयं प्रकाश सबका प्रकाशक, पूने सब संसारा ।
श्रेष्ट भोगों का देवन हारा, वस्त्रादिक सारा ॥ २ ॥
गन्ध पदार्थ का उत्पादक, शुद्ध करत परिवारा ।
वही परम होतों का होता, दया का है भण्डारा ॥
ज्ञानमय और ज्ञान का दाता, अन्धकार से न्यारा ।

---

* धारन करने वाला ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो जन शरण तेरी में आया, उसने जन्म सम्भारा ॥ ४ ॥
यह सृष्टि तव महिमा सूचक, क्या चन्द्र क्या तारा ।
यहां हाल है विश्व सकल का, तेरा सकल पसारा ॥ ५ ॥

तू अति सुन्दर और मनोहर, तू सबका *प्रिय भारा ।
ऋषि मुनि सब तुझको चाहें, उनका एक सहारा ॥ ६ ॥
सकल पाप का नाशक तूही, तुझ ही से निस्तारा ।
धर्म का सेवन जो जन करता, खुले उसे तव द्वारा ॥ ७ ॥

---

२० भजन

नमः हो नमः हो नमः प्राण दाता,
नमः हो नमः हो नमः प्रिय ताता ॥ १ ॥
तू आकाश सम हर स्थान में व्यापक,
सृष्टि का रचेता तुही है विधाता ॥ २ ॥
अकायम है तू तेरी काया नहीं है,
निराकार है तू नहीं जन्म पाता ॥ ३ ॥

---

* प्यारा ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अति सूक्ष्म से भी सूक्ष्म तू,

है प्रमाणुओं के भी अन्तर समाता ॥ ४ ॥

तू है नाड़ी नस के बन्धन से बाहिर,

सदा मुक्त और एक रस कहाता ॥ ५ ॥

तू शुद्ध और निर्मल तू है ज्ञान सागर,

अविद्या का नाशक तू विद्या बढ़ाता ॥ ६ ॥

नहीं पाप का लेश तुझ में जरा भी,

न्यायकारी है तू न्याय को जनाता ॥

सर्वत्र सर्वज्ञ सब का द्रष्टा,

सर्व साक्षी मन के अन्दर रमाता ॥ ८ ॥

ब्रह्माण्ड का एक स्वामी तुही है,

सर्वेश सब को नियम में चलाता ॥ ९ ॥

अकारण है तु आदि तेरा नहीं है।

निराधार तु सब में शक्ति बसाता ॥ १० ॥

सृष्टि के आरम्भ में वेद द्वारा,

परम सुख मोक्ष का रस्ता दिखाता ॥ ११ ॥

नहीं पार पा सकते तेरी दया का,

अभागी है वह जन तुझे जो भुलाता ॥ १२ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२१ भजन

अमृत रस हरि मोहे पिलाओ।

अशांत हृदय में शांति बसाओ।

संसारक तृष्णा मन में व्यापी,

चञ्चलता मेरे मन की हटाओ।

पाप में फन्स आत्मक बल खोया,

भक्ति दान निर्बल को दिलाओ।

विषयन से अतिरिक्त रखो सदा,

प्रेम प्याला हरि मोहे पिलाओ।

हर्ष शोक जग के से छूटूं,

सत्य मार्ग में मोहे लगाओ।

तव दर्शन बिन अन्धा भया हुं,

मंगलमय हरि ज्योति दिखाओ।

टूट जांये सब पाप के बन्धन,

विश्वास बाती में शर्णी आया।

क्षमा करो पिता कण्ठ लगाओ,

वैदक भान करो प्रकाशा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्योति मय अन्धकार मिटाओ।
यह भवसागर दुस्तर भारी,
सेवक को स्वामी पार लङ्घाओ।

भजन २२

पृथ्वी अप तेज वायू अकाशा,
जिस में पांचों करें निवास।
जिस का ऊंचा ठाकुर द्वारा,
सो ठाकुर है पूज्य हमारा।
इन पांचों के पांच सम्बन्धी,
शब्द स्पर्श रूप रस गन्धी।
जो इन दस को मेलन हारा,
सो ठाकुर है पूज्य हमारा।
सर्व व्यापक सर्व आधार,
जिस की महिमा अपरम्पार।
सब के भीतर सब से न्यारा,
सो ठाकुर है पूज्य हमारा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो है सब में ओत परोत,

* स्वतः ही जागे जिस की जोत।

जो है पावन पतित उद्धारा;

सो ठाकुर है पूज्य हमारा।

जो है जग का आदि कारण।

सृष्टि को रच कर है धारण।

अन्त में करे जो लय संसारा।

सो ठाकुर है पूज्य हमारा।

‡ प्रत्येक देश में जिस की पूजा,

जिस के § तुल्य नहीं कोई दूजा।

सब का मित्र और सब का प्यारा,

सो ठाकुर है पूज्य हमारा।

भजन २३

हे आनन्द मय सर्व व्यापक। हे ज्योति मय सर्व व्यापक॥

---

* अपने आप ‡ हर एक § बराबर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनो वाञ्छत सुख पूर्ण दीजे। परम आनन्द को प्राप्त कीजे ॥
हे कल्याण मय करुणा कीजे। सर्व काल सुख वृष्टी कीजे ॥
पाप के मेघ हृदय पै छाय। धर्म्म भान का तेज घटाय ॥
ज्ञान वायू को वेग चलाओ। पाप घटाओं को दूर हटाओ ॥
संसार सागर में डूबाहुं स्वामी। बीच भँवर बडा गहरा है पानी ॥
हस्त दया का शीघ्र पसारो। डूबत हूं नाथ पार उतारो ॥
पाप अग्नि से दग्द हुआ मन। होय रहा पीड़ा का कारण ॥
हे प्रभु करुणा जल बरसाओ। पाप ताप को दूर भगाओ ॥
धन्य हरि तेरी महिमा महान। वेद विद्या का दीया जिस दान ॥
सेवक नाथ मांगे यही दान। तव आज्ञा में तज दूं प्राण ॥

भजन २४

प्राणनाथ तुम जगत के प्राण।
चारों वेद हैं तेरो ज्ञान ॥
एक मात्र तू जगत आधारा।
सर्व जीव तेरो परिवारा ॥
नीयम अनुसार जो सूर्य्य जावे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नाम तेरे का डंका बजावे ॥

ऋषि मुनी तेरो यश गावें ।

तव भक्ति में चित्त को लगावें ॥

सर्व नियन्ता जगत बधाता ।

भक्त जनों के महो प्राता ॥

आत्मक बल प्रभु मेरा बढ़ाओ ।

जीवन मुक्ति का भागी बनाओ ॥

भजन २५

तू प्रभु सर्व ब्रह्माण्ड स्वामी ।

घट घट व्यापक अन्तर्यामी ॥

अनन्त भूमि और चन्द्र तारे ।

तव आज्ञा में डोलन हारे ॥

अद्भुत रचना दृष्टि जो आवे ।

धन्य धन्य कर्ता शब्द है गावे ॥

तू ही प्राण पति प्रभु प्यारा ।

सर्व सृष्टि का केवल सहारा ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तु ही आदि गुरू अवनाशी ।
जिसने वेद विद्या प्रकाशी ॥
जड़ जगत से जो प्रीति लगावे ।
तिस को तू प्रभु दृष्टि न आवे ॥
कारण के कारण का नाथ कहाया ।
नेचर के हर एक देश में समाया ॥
शुद्ध करो प्रभु बुद्धि मेरी ।
सेवक शर्ण गहे अब तेरी ॥

रागणी भोपाली] २६ भजन [ताल झप

तुही है सनातन तुही है अनुपम ।
तु राज्यों का अधिराजा सरकार उत्तम ॥ १ ॥
छोटा सा कमरा है ब्रह्मांड उसका ।
जो तेरा मुशैयरा है दर्बार उतम ॥ २ ॥
पवन देवता तेरा पंखा कुली है ।
वर्षा भरे पानी पनहार उत्तम ॥ ३ ॥
अंगीठी जगाने पै नौकर है अग्नी ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सूर्य का दीपक लगे द्वार उत्तम ॥ ४ ॥
फुलवारी का फर्श कोमल से कोमल ।
बना बेल बूटे का गुलज़ार उत्तम ॥ ५ ॥
पुष्पावली है लवंडर की शीशी ।
ऋतुराज है तेरा मज़यार उत्तम ॥ ६ ॥
तेरी लायबरेरी के पुस्तक मुकद्दम ।
मिले सृष्टि के आदि में चार उत्तम ॥ ७ ॥
ऐश्वर्य तेरा अपरामित है इतना ।
करें किस विधि से वस्तार उत्तम ॥ ८ ॥
अखण्ड एक रस की लगी हमको प्यासा ।
अमीरस पिला कर करो प्यार उत्तम ॥ ९ ॥

---

२७ भजन

प्रनमो जगत कर्त्ते, नमो विश्व भर्त्ते ।
हे दयामय दयालू, दीनन नाथ स्वामिन ॥ १ ॥
दिनमो दीन बंधू, नमो करुणासिंधू ।
नमो सर्व व्यापक, नमो अन्तर्यामिन ॥ २ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नमो प्रीति साधक, नमो नीति वर्धक ।
नमो सुख दायक, नमो अग्र गामिन ॥ ३ ॥
नमो विपद भञ्जन, नमो पाप गञ्जन ।
नमो मोक्ष दायक, आनन्द घन नमामिन ॥ ४ ॥

---

२८ भजन

दो कर जोड़ विनय करूं तोरे ।
सब अपराध छिमा करो मोरे ॥ १ ॥
मैं छलिया कपटी अति कामी ।
तुम हो पतित उद्धारक स्वामी ॥ २ ॥
तुम्हें छोड़ किस द्वारे जावें ।
मन की बृथा हम किस को सुनावें ॥ ३ ॥
हम सेवक हैं *अनुनगत बालक ।
तुम स्वामी रक्षक प्रति पालक ॥ ४ ॥
आन गिरे हम शर्ण तिहारी ।
जन्म मरन का है दुःख भारी ॥ ५ ॥

---

* सेवक ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विनय करें प्रति दिन उठ प्राता।
हमको कण्ठ लगाओ ताता ॥ ६ ॥

हे मङ्गलमय मङ्गल दाता।
तुम हो मात पिता *मम भ्राता ॥ ७ ॥
चारों पदार्थ आप ही दीजे।
दर दर का नहीं भिक्षुक कीजे ॥ ८ ॥

भजन १६

मैं हूं दीन मलीन प्रभू, मैं हूं दास तेरा।
तुही बाल प्रतिपाल, तू उपास्य मेरा ॥
मैं अल्पज्ञ तू सर्वज्ञ, देख हाल मेरा।
भक्ति मुक्ति दान दीजे, आश्रय है तेरा ॥
द्वारे तेरे पड़के स्वामी, ज्ञान दान पावां।
प्राण नाथ प्राणाधार, तेरा यश गावां ॥
हे सुरेश हे महेश, नाम तेरा ध्यावां।
दिव्यज्ञान द्वारा प्रभु, मोक्ष धाम पावां ॥

---

* मेरा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हे अनाथ नाथ मोहे, प्रेम सुधा पिलाओ।
प्रकाशमान हृदय मेरा ज्ञान से बनाओ॥

भैरवी] १० भजन। [ताल चंचल

अपनी उपासना अपना ही जाप।
सिखाओ प्रभु पूजा की विधि आप॥
शिक्षा हमारी तुम्हारे आधीन है।
मैं हूं बाल बुद्धि तुम हो ज्ञानी बाप॥
प्रीति की रीति बता दीजे हम को।
जिस विधि से होवे तुम्हारा मिलाप॥
ज्योति का सौंदर्य्य देखूं तुम्हारा।
करूं मिलके तुम से मैं वार्तालाप॥
तुम्हारी कृपा की नहीं कोई सीमा।
नहीं तेरी करुणा का कोई तोल माप॥
तन की तपत और मन की आपत को।
मिटाओ ऐ प्रभु तीन ताप॥
करें तेरी आज्ञा का पालन सदा हम;

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर न सकें हम कभी कोई पाप ॥
वृथा जाता है जन्म जिनका भजन बिन ।
वह चलते करेंगे महा पश्चाताप ॥
" अमीं " रस की वर्षा वहां क्यों न होवे ।
जहां तेरा होवे मनोहर अलाप ॥

राग बलावल) ३१ भजन (ताल ३

भारत की रक्षा करो, कष्ट और क्लेश हरो ।
तेरी एक टेक मोको, तेरो ही सहारा है ॥
हमारी दशा क्षीन, हीनन से हीन दीन ।
भारत निवासियों ने, रो २ यह पुकारा ॥
विनय कर जोड़े हाथ, सुनिये दीनन के नाथ ।
तूही परम मित्र मेरो, तूही रखवारा है ॥
'अमीचंद' वार २ करत है नमस्कार ।
कीजिये स्वीकार, यह तो दास तुम्हारा है ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागनी जोग] ३२ भजन [ताल चंचल

अन्त समय में हे जगदीश मुझ को ।
तुमरा ही स्मरण तुमरा ही ध्यान हो ॥
लवलीन हो तुझ में चित्तवृत्ति मेरी,
जब तक श्वासों में प्राण और अपान हो ॥
योगी के सदृश लगाऊं समाधि ।
ओंकार अक्षर का वाच्यार्थ ज्ञान हो ॥
न शोक हो न मोह हो, न ममता किसी में ।
न पीड़ा हो तन को, न कुछ दुःख भान हो ॥
जीवात्मा का निवास हो वहां पर ।
जहां तेरे सुख पद का उत्तम स्थान हो ॥

---:o:---

राग बलावल) ३३ भजन (४ ताल

आया है समय कठिन, मन में लागी बुरी लगन ।
अहंकार पीछे लगा, शत्रु बड़ा भारी है ॥ १ ॥
मन में अज्ञान छाया, क्रोध ने है आ दबाया ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विपता के सागर बीच, बेड़ा अब हमारा है ॥ २ ॥
जाता नहीं राग द्वेष, रहता है बहुत क्लेश ।
संकट है भारी, लिया आश्रय तुम्हारा है ॥ ३ ॥
प्रभु जी जगत पाल, हाल मेरा है निढाल ।
कीजियेगा कृपा केवल आप का सहारा है ॥ ४ ॥

पहाड़ी] ३४ भजन [ताल चंचल

टेक—एक घड़ी तव सेवा न कीनी ।
महिमा बखानी न अन्त की जानी ॥
रातों से नहीं लाभ उठाया, सौं २ उनको ऐवें गंवाया ।
तव सिमरण से मन है चुराया, आधी आयु की होगई हानि ।१।
जग धंधों में दिनें को विताया, झूठ से दुनियां को ठग खाया ।
पुण्य तजा और पाप कमाया, दूजी आधी भी हो गई कानी.२।
विषयन में धन आदि गंवाना, बल बीर्य का नाश कराया ।
धर्म गया अधर्म ही भाया, पशुअन से भया मन्दा प्राणी । ३ ।
पर उपकार नहीं कछु कीना, पर स्वार्थ का नाम न लीना ।
निज स्वार्थ में तन मन दीना, हृदय हुआ पूरा पाषानी । ४ ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जग में आ कछु नाहीं सँवारा, चंगा आया सी चल्या माड़ा ।
क्यों कर आगे हो निस्तारा, कौन सुने अब विरद कहानी॥५॥

रागनी जोगी) भजन ३५ (ताल

बज़न–सुनो जगदीश विनती को, तुम्ही से आशा भारी है ।
बिनां दर्शन किये प्रभु के नहीं दिलको करारी है ।
कमल जो नीर विन सूके पपीहा धुन पुकारी है ।
बिना जल मीन नहीं जीवे, सोई गति अब हमारी है ।
नहीं हमें और की इच्छा, तेरा ही दर्श कारी है ।
दीजिये तत्काल मोहि दर्शन, यही विनती हमारी है ।
विना दर्शन तेरे प्रभु जी, भई यह गती हमारी है ।
तड़पता है यह मन पापी नयनों से नीर जारी है ।
न देखूं जबतक तुझको, मुझे जीना भी भारी है ।
देओ दर्शन प्रभु जी मेरी सुध क्यों बिसारी है ।
नहीं हम मालके भूखे, नहीं दौलत प्यारी है ।
करो चरणों का दास अपने, 'निहाले' यह पुकारी है ।

—०—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३६ भजन

प्रभु मेरे शरण तेरी मैं आया, भजन बाझों जन्म वृथा गंवाया
तुही दाता तुही जगदीश मेरा, करोक्रश मैं लड़ फड़िया है तेरा
बिना तेरे नहीं कोई हमारा, तुही स्वामी तुही प्रीतम प्यारा
प्याला प्रेमका हमको पिलावो, पिता पुत्र हमें सचा बनाओ
हुकम सोर बजा लावें तुम्हारा, सफल जीवन तभी होवे हमारा
यह विद्या वेदों की घर २ फैलावो, ये मार्ग मोक्षका सब को बतावो
नहीं कोई बाहिन भाई है मेरा, भरोसा मुझको है केवल ही तेरा

राग जिला) ३७ भजन (ताल कवाली

टेक–प्रभु मैं दीन हूं एक तेरा, पापों ने मुझको आन घेरा
पाखण्डों में रम रहा किया न कुछ भी काम, वृथा जन्म
गवा लिया लिया न तेरा नाम, सोच है मुझ को बडी भारी
पाप में रहा मेरा डेरा । प्रभु० ॥१॥
धन दौलत को जोड़िआ उसमें ही सुख जान, परमानंद न
खोजिया मैं मूरख नादान, बुद्धि गई मेरी बहुत मारी,
ज़िकर सब छोड़ दिया तेरा । प्रभु० ॥२॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जहां धर्म की बात हो मन मेरा कतराय, बुरे कर्म में पाप मन दौडा २ जाय, हया और शरम खोई सारी, सभी कुछ नष्ट किया मेरा प्रभ० ॥ ३ ॥

विषय भोग में रमरहा, किया न प्रभु से हेत, चलती वारी मूरखा अब तो प्रभुको चेत, झूठे हैं यह सुख संसारी, लगाया तूने यहां डेरा । प्रभु० ॥ ४ ॥

आया था कुछ और को, करने लगा कुछ और, मन्द कर्मों ने आ लिया शुभ कर्म्म गये दौड़, उमर मेरी ऐसे गई सारी, काम सब उलटा हुआ मेरा । प्रभु० ॥ ५ ॥

भवसागर के बीच में, नाव पड़ी मंजधार, राखो दीनदयालजी सूझत वार न पार, विपत मेरे सिर पे पड़ीं भारी, किनारे लगे मेरा बेड़ा । प्रभु० ॥ ६ ॥

मृगतष्णा की तरह दुनियां का है हाल, जल्दी तोड़ो हे हरि मेरा विकट जंजाल, एक है तेरी आश भारी हटा, अब उस से मन मेरा । प्रभू० ॥ ७ ॥

तुही एक रक्षपाल है, तेरे ही तक दौड जैसे काग जहाज

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

में सुक्त और नं ठौर, देखूंगा ज्योति तेरी प्यारी रहें
तुझ में ही ध्यान मेरा । प्रभु० ॥ ८ ॥

भैरवी) ३८ भजन (ताल चंचल

प्रभु दया है अपरम्पार तुम्हारी, किस मुख से मैं सराहां ।
श्रद्धाप्रीति नहीं मन मेरे, जिस से तव गुण गावां ।
राग द्वेष मद दम्भ का मोहा सार असार न जाना ॥
शान्ति सुधा भरा धाम छोड़ तेरा, औझड़ बनको धावां ।
महा भ्यानक भवसागर में, गोते निश दिन खावां ॥
पाप प्रबल लहरों में जिसके, मुक्ति घाट न पावां ।
नहीं सुध लेवे मेरी कोई, व्याकुल हो कुरलावां ॥
जग झगड़ों जग झाझों में, वृथा जन्म गवावां ।
सारे सुखों के तुमही एको, मै तुम सो प्रीति न लावां ॥
कामी क्रोधी द्रोही लोभी, अमृत तज विषै खावां ।
तू सुखी करे मुझ को पल पल में, सुख की कदर न पावां ॥
तज आत्म परमानन्द सुधारस इन्द्रिय जन्य सुख चाहां ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुमे प्रेम भरे आते दर मेरे, मैं आंख उठा ना निहारां ॥
तुम स्वर्ग धाम को खींचो मुझको, मैं जग माया में उरझावां ।
इस उत्तम प्रेम और अतुल दया को, जब ही गुप्त विचारां ॥
नयनों से जब धारा बर्षे अपनी दिक जब आवां ।
मैं नीच कठोर अधम पापी जन, दयामय नाम पुकारां ॥
निष्काम प्रेम करो दान पिता, तेरे अनुगत दास कहावां ।
मद मत होय पी प्रेम पिआला, हाथ तेरे बिक जावां ॥

राग आसा)   ३९ भजन   (ताल

टेक—प्रभु मैं सब पातितन को नायक ॥
जानत नहिं कुछ गुण तुमरे, और नहिं कुछ लायक ।
पतित उद्धारन स्वामी प्रभु तुम, पातितन करन सहायक ॥
दास पतित अब शरण पड़ा तव, और नहीं कोई जायक ।
'सत' पतित पर कृपा कीजे, आति सुन्दर सुख दायक ॥

राग कौंसिया]   ४० भजन   [३ ताल

तुम पापियों के परित्राता हो, तुम जगत पिता और माता हो ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमें निज चरनन में लाओ प्रभु, हमें अपना नाम जपाओ प्रभु।
अब करत पाप मैं हारा जी, प्रभु राखूं विरद तुम्हारा जी ।
संसार विषय सुख छोड़ पिता, मैं शरणी तुमरे आन पड़ा ।
ज्यों जानों मुझ को तारो जी, भवसागर पार उतारो जी ।
जहां मात पिता न भाई हैं, तहां केवल तुम ही सहाई हैं ।
तुम धर्म राज जगदीश्वर हो, तुम सर्व सृष्टि के ईश्वर हो।
मेघ अग्नि तुम को ध्यावे हैं, जल वायु तव गुण गावे हैं ।
जग सकल तुम्हें है ध्यावे जी, कोई अन्त न तेरा पावेजी
तु करुणा हस्त पसारा है, तु सब का एक सहारा है।
तुम जगबन्धन जगस्वामी हो, तुम सबके अन्तर्यामी हो ।
तुम दीनानाथ दयालु हो, सब आश्रय और कृपालु हो।
आशीर्वाद हमें दीजे जी, मन भक्ति तेरी में भीजे जी।
अब दया का हाथ पसारोजी, हम सबको लेउ उद्धारोजी ।
अब चरण शरण हरि दीजे जी, सब अन्धकार हर लीजे जी॥

———

राग सिंधडा) ४१ भजन (ताल कवाली

जो सोते जागते हैं तुझे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो दिव्य गुण युक्त चारों ओर धावें।
प्रकाशित जिससे हो प्रकाश धारी ॥
वह मन मेरा होवे कल्याणकारी ॥ १ ॥
कर्मकर्ता मुनीश्वर जिस द्वारे,
हैं करते कर्म यह और यज्ञ सारे।
प्रजाओं की जो है आनन्दकारी ॥ वह मन० ॥ २ ॥
जो प्रज्ञानी धृतीचेता कहाया,
अमर ज्योति प्रजाओं में समाया।
असंभव जिस विना कृया है सारी ॥ वह मन० ॥
त्रिकालयज्ञ काम हों जिसके सहारे,
हों करत योग योगी जिस द्वारे।
सप्त होता कर्तव्य जो स्वीकारे ॥ वह मन० ॥
लगे होते हैं ज्यों नाभी में आरे,
है उसे मांहि प्रतिष्ठत वेद चारों।
बसे जिस में पूजा चैतन्यकारी ॥ वह मन० ॥ ५ ॥
ज्यों रथ के सार्थी इत उत घुमावें,
यह मन वैसे मनुष्य को डुलावे।
हृदय में जो प्रतिष्ठित वेगधारी ॥ वह मन० ॥ ६ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागनी आसावरी) ४२ भजन (ताल धीमा

जो हरि गीत प्रीति संग गाय, तिसके शोक निकट नहीं आए।
अमृतवत तेरो चरित मनोहर। मन की तप्त बुझाए।
उधरे पतित अधम अति पापी। जो तव शरणी आए।
हे प्रभु हम अति दुखिया हो, तव शरनण गत आए।
परम सुखदाता ज्ञानप्रदाता, तैं यह नाम धराए।
मांग रहे द्वारे पर याचक, अब क्यों देर लगाए।
विषयन से उपराम रहूं सदा, भक्ति हृदय में भाए।
पढ़ सुन वेद वेदांग 'अमीचन्द' संशय भ्रम मिटाए।

— —

रागनी बिरवा। ४३ भजन।३ ताल

टेक—दीजे २ प्रभु मुझे बल बुद्धि।
हाथ जोड़ विनती करूं, सुनिये दीन दयाल।
तुम लग मेरी दौड़ है, तुम ही रक्षपाल ॥ १ ॥
आप की भक्ति प्रेम से, मन होवे भरपूर।
राग द्वेष से चित मेरा, कोसों भागे दूर ॥ २ ॥ दी०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अति अनुग्रह कीजिये, सेवक अपना जान।
अपनी भक्ति का मुझे शीघ्र दीजे दान ॥ ३ ॥ दी०
हृदय में मेरे रात दिन, रहे प्रकाशित ज्ञान।
हरि भक्तों के बीच में मेरा होवे मान ॥ ४ ॥ दी०
कपट दम्भ मेरे चित्त के, कभी न आवे पास।
ध्यान आपका रात दिन, मन में करे निवास ॥ ५ ॥ दी०
नित्य शुद्ध और बुद्ध हो, जग के हो करतार।
नमस्कार है आप को, मेरा बारम्बार ॥ ६ ॥ दी०
विनय करूं हूं आप से, जोड़ के दोनों हाथ।
रखिये लाज कृपाल हो, शरण आया हूं नाथ ॥७॥ दी०
"केवल" पूर्ण ज्ञान का, घर मन में हो जाय ॥
घट घट व्यापक ब्रह्म की निश दिन होय सहाय ॥ ८ ॥

——

राग सिंधडा] ४४ भजन [ताल चंचल

टेक—शरण पड़ा हू मैं तेरी दयामय ॥

जगत सुखों में फंसकर स्वामी, तुझ से लिया चित्त फेरी।
पाप ताप में दग्ध किया मन, दुर्मति ने लिया घेरी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बहा जात हूं भव सागर में, पकड़ लेओ भुज मेरी ।
ओर कुकर्म गिनों मत मेरे क्षमा दृष्टि देओ फेरी ।
सत्य ज्ञान मधुर अपना, करो प्रकाश एक वेरी ।
पाप मलीन हृदय में मेरे, ज्योति प्रकाशे तेरी ।
प्रेम तरंङ्ग उठें मम अन्तर, प्रभु विनय सुनों मेरी ॥

---

४५ भजन

क्यों दीना नाथ मुझ पै तेरी दया नहीं ।
आश्रित तेरी नहीं हैं कि तेरी पजा नहीं ।
मेरा तो नाथ कोई तुम्हारे बिना नहीं ।
माता नहीं है बन्धु नहीं है पिता नहीं ।
माना कि मेरे पाप बहुत हैं पर है प्रभु ।
कुछ उन से न्यूनतर तो तुम्हारी दया नहीं ।
करुणा करोगे क्या मेरे आंसु ही देख कर,
जी का भी मेरे दुःख तो तुम से छुपा नहीं ।
जानेगा कोई क्या कि है दीनों का तुझको पक्ष,
दुष्टों को सर्व नाश जो तूने किया नहीं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुम भी शरण न दोगे तो जाऊंगा हाय कहां।
अच्छा हूं या बुरा हूं किसी और का नहीं।

भैरवी] ४६ भजन (३ ताल

हमें दान ज्ञानका देओ प्रभु। हमें अपनी शरण में लेओ प्रभु
रहूं दुष्ट गुणो से मैं न्यारा। सत्य शील मनुष्यों का प्यारा
मन मेरा तेरी शरणागत हो। मेरे हृदय में ज्ञान प्रकाशित हो।
दृढ़ योग का साधन बनूं योगी। हो अर्थ का ज्ञान न होउं रोगी
मुझे लोभ मोह से हो दूरी। शुभ इच्छा मेरी हो पूरी।
हो औं विचार एकान्त में। हो प्राण अपान भी शांति में।
मेरे नेत्र ज्ञान के खुल जावें। मेरे पाप मैल सब धुल जावें।
सब अपने सभासद ज्ञानी हों। हर श्रेष्ठ सभा में मानी हों।
और उन में परस्पर हो प्रीति। प्रचलित वेद की हो रीति।
सब वेद अनुसार हों शुभ कर्मी। हों सब सत्य नेमी और धर्मी।
'केवल' नहिं उनको कहीं भी डर। जो ईश्वर की ले शरण पकड़

—०—

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागनी देशी) ४७ भजन (ताल

टेक–हे दीनबन्धु हे करुणा सिन्धु, संसार सागर से करो पार बेड़ा।

चहुं ओरे जलधार सुझत न वार पार,
उलटी पवन नाव फंटी खाए गेड़ा।
राखो नाथ राखो नाथ डूबती को दीजो हाथ,
पीछा रहा दूर आया आगा नेड़ा।
अपने 'अधीन दीन' की देखो दशा हीन,
सुख से उतारो पार मिटे ये बखेरा।

रागनी बरवा) ४८ भजन (ताल झप

हे हरी हम दीन हैं निर्गुण विचार पुरखता।
पतित पावन नाथ तेरा कर दया हम पर ज़रा ॥१॥
है अविद्या छाई हम पै भूल गई सुध बुध सभी।
पाप के सागर में हम सब डूबते हैं ले बचा ॥२॥
छोड़ कर वेदों की रीति को करें अनरीत हम।
अज्ञान ने मझधार में हम को दिया अब है गिरा ॥३॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाप से भरपूर हैं उठ न सकें हम पाप में ।
हुई हमारी दुर्गति है हे दयामय ले उठा ॥ ४ ॥
रोज़ोशब तेरी तरफ़ मन को रुजू करते हैं हम ।
एक पल जमता नहीं है नागहां पड़ती बला ॥ ५ ॥
ऐसी कृपा और अनुग्रह हम पै हो परमात्मन् ।
पाप का नक्शा हमारे दिल से अब तू दे मिटा ॥ ६ ॥
आवें शरणागत तेरी मन को करें मजबूत हम ।
फिर करें न पाप को तेरे ही गुण गावें सदा ॥ ७ ॥
यह अरज़ हम दीन की सुन लीजिये अब हे हरि ।
वेद वाणी की तरफ मन को हमारे दे लगा ॥ ८ ॥

रागनी तैलिंग) ४९ भजन (तीन ताल

टेक—हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिये,
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिये ।
ऐसी कृपा और अनुग्रह हम पै हो परमात्मा,
हों सभासद इस सभा के सब के सब धर्मात्मा ॥ १ ॥
हो उजाला सब के मन में ज्ञान के पूर्कांश से,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

और अन्धेरा दूर सारा हो अविद्या नाश से ॥ २ ॥

खोटे कर्म्मों से बचें सब तेरे गुण गावें सभी,

छूट जावें दुःख सारे, सुख सदा पावें सभी ॥ ३ ॥

सारी विद्याओं को सीखें ज्ञान से भरपूर हों,

शुभ कर्म्म में होवें तत्पर, दुष्ट गुण सब दूर हों ॥ ॥

यज्ञ हवन से हो सुगन्धित, अपना भारत वर्ष देश,

वायु जल सुखदाई होवें, जावें मिट सारे क्लेश ॥ ५ ॥

वेद के प्रचार में, होवें सभी पुरुषार्थी ।

होवे आपस में प्रीति, और बनें परमार्थी ॥ ६ ॥

लोभी और कामी क्रोधी, कोई भी हम में न हो ।

सब व्यसनों से बचें और छोड़ देवें मोह को ॥ ७ ॥

अच्छी संङ्गत में रहें, और वेद मारग पर चलें ।

तेरे ही होवें उपासक, और कुकर्म्मों से बचें ॥ ८ ॥

कीजिये "केवल" का हिरदा शुद्ध अपने ज्ञान से ।

मान भक्तों का बढ़ाओ सबका भक्ति दान से ॥ ९ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भजन ५०

तर्ज़—परम पिता के प्रीति से यश गाओ सदा ।

जगत् पिता हम तेरी हो, नित आशा करें ।
जगत् पिता हम अज्ञानी जन, तेरी ही नित आशा करें ॥
टेक—-तूने अपना ज्ञान दिया, सूर्य धुति भानु दिया ।
आवश्यक सामान दिया, बुद्धि का फिर दान दिया ।
मट्टी पानी, वायु मानी, लाखों प्राणी है लासानी ।
ज्ञानी ध्यानी जान, तुम्हैं करते तेरा ध्यान ।
हम निर्गुण और वारे, तेरी शरण पर्रें ॥ जगत्० ॥

दोहा

व्यापक अन्तर्यामी हो, तुम प्रभू सर्वाधार ।
हम सब खल भूले हुये, स्वामी लेहुँ उबार ॥
सुधार ! पालनहार ! तु निराधार ! दुःख टार ।
हो संसार पार पाठक जन आनन्द भरे ॥ जगत्० ॥

भजन ५१

तर्ज़—कैसे २ रत्न भरे वेदों के हैं ज्ञान में ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कैसी २ सृष्टि रची सर्वाधार ईश ने ॥

टेक—पृथ्वी निराधार है, नभ ये निराकार है ।
जिस में सब संसार है, रचना वेशुमार है ॥
ब्रह्माण्ड कोटि अपार है, जीवों में बहु विस्तार है ।
अल्पज्ञ न्यून विचार है, हर्गिज़ न पाते पार हैं ॥
ज़रा गौर से दो ध्यान, कार्य उसके हैं महान ।
ज्ञान दिया जगदीश ने ॥ १ ॥

शेर—बीज से उत्पन्न होकर बढ़ते फलते फूलते ।
होके उन्नत आयु भर नर वृक्ष उखड़े मूलसे ।
आंख की कारीगरी से ज्ञान हो उसका बहोर ।
वृक्ष के एक फूल ही को देख हम चौर भौंर ।
सिन्धुगिरी ! पशुपक्षी ! तारे रचे ! रविशशी ! कै० ॥२॥
व्यापक सब स्थान है, सूक्ष्म वह महान है ।
वेदों में सब ज्ञान है, रचना द्युति मान है ।
विद्या का ये भण्डार हैं, गिनती में श्रुति सब चार हैं ।
अत्यन्त सूक्ष्म विचार हैं, ऋषि जन हि पाते पार हैं ।
हम जीव हैं अज्ञान, नहिं करते उसका ध्यान ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दया कीन्ही न्यायाधीशने । कैसे २ । ३ ॥

शेर—सृष्टि की उत्पत्ति स्थिति प्रलय मुक्ति अरु क्या बन्ध ।
कर्म के अनुसार फल दे न्यायकारी सत्य सन्ध ।
प्रकृति अरु जीव और वह है अनादी काल से ।
ज्ञान भी उसका अनादी मुक्त है जञ्जाल से ।
संसार के सुधार व प्रचार में तैय्यार रहो ॥ कै० ॥

भजन ५२

तर्ज़—विश्वपति के ध्यान में जिसने लगाई हो लगन ।
अब तो प्रभू दया करो आया हूं मैं तेरी शरण ।
तुम ही हो सबके आत्मा क्लेशों के टारो दुःख हरण ।
भूला हुवा फिरा बहुत मथुरा प्रयाग देखता ।
तू ही बसा है घट मेरे तुझ से मेरी लगी लगन ।
मुझ को मिले जो पादरी ईसू बताया सुत तेरा ।
कैसे भरोसा हो सके तुम हो अनिर्वचन ।
ऐसे ही मौलवी मिले कहते रसूल मित्र है ।
सोचा कि न्यायकारी हो विषयों में क्यों करे रमण ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एक समय थी भ्रांति अपने को ईश समझा था।
तुम ने मुझे गुरू दिये जिन से किया बहुत मनन।
जैनी कबीर पन्थिये लाखों ने घेरा था मुझे।
तेरी कृपा से ऐ प्रभु मेरे कट गये सब विघ्न।
तुम हो तो न्यायकारी हो तुम हो अजर अमर अभय।
'पाठक' अधम कृतघ्न है बनता न इस से कुछ यतन॥

भजन ५३

तर्ज़—हम अपनी बहनो से ये कहेंगे जरा तो अपनी दशा निहारो।

दया करो मनपै मेरे स्वामी तुम्हारा हमने लिया सहारा।
तुही है कर्ता तुही है भर्ता तुही है रक्षक हे सर्वाधारा॥
है सब में तू तुझ में सब जगत है, है तू असीमा भी और निर्भय।
क्यों खाक मिट्टी में तुझ को पावें जो सूक्ष्म दृष्टीसों न विचारा।
हे सच्चिदानन्द निर्विकार ये सारी सृष्टि रचाई तुमने।
हमारी हालत सुधारो स्वामी जगत् में भ्रम तुम्हें विसारा॥
हे न्यायकारी हे ज्ञान सिन्धो पिता हमारे हे प्राण दाता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न तेरा आदि न अन्त तेरा न कोई बेटा न कोई दारा ॥
अजर अमर हो अभय अनुपम व नित्यशुद्ध हो पवित्र ज्ञानी ।
नियम में चकित हैं सूर्य्य पृथिवी आकाश के लोग चन्द्र तारा ॥
तुम्हारी सत्ता बड़ी अनोखी क्या हम से जन उसका पारपावें ।
ऋषि ऋषीश्वर मुनी मुनीश्वर बताते पाकर समाधि द्वारा ॥
है इच्छा 'पाठक' की ये प्रभु जो तुम्हें ही ध्यावें जो भूलें भाई
हे जगदाधार अकाय स्वामी रहूं मैं आश्रित सदा तुम्हारा ॥

भजन ५४

टेक—जो परे से और परे है. अब गुन महिमा निरन्तर ।
निराकार निर्भय निर्वाणी, निर्दोषी निर्वैर निष्पाणी निर्गुण निरञ्जन निलगत जानी, निरख जोत निष्कामी की निर्गुर क्यों विगुर भरे है ॥ १ ॥ अलख अगोचर अदृष्ट करता अनन्त अनादि अजन्म अमरता, अखण्ड अद्भुत पाखण्ड हरता अचल कला अभीराम की, अविनाशी नहीं भरे है ॥ २ ॥ समदर्शी सर्वोत्तम सारे, सर्व व्यापक सर्व आधारे । सुगुण सुख दुःख देत सकल को तारे, सब शोभा सुख धामकी ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सब सृष्टि करे है ॥ ३ ॥ मद ममता माया से न्यारे। घट २ रम रहे प्रभु हमारे कहे 'चौसा' घट खोल पियारे। क्यों सब उमर तमाम की, क्रिया से काज सरे है ॥

५६ भजन

दोहा—ओ३म् नाम सब से बड़ा, ऐसा नाम न कोय।
जो इसका स्मरण करे, शुद्ध आत्मा होय ॥

टेक—इस ओङ्कार अक्षर का सद्गुरु ने भेद बताया।
बोध कराया सत्य ब्रह्म श्री ओङ्कार है ॥

अजर अमर अद्भुत अपार है, सर्व व्यापक सर्वाधार है ॥ नेति नेति कर गाया, जब हो गया वास अमर का ॥ अकार उकार मकार मिलाकर, विश्व तेज वैराट दिखाकर। आदि सृष्टि सब जगत् रचा कर, भेद किन्हीं ने ना पाया। वह स्वामी है घर घर का ॥२॥ चार वेद उपवेद इसी से व्याकरण पद छन्द इसी ते, उत्पत्ति प्रलय भेद इसी से ॥ मूल मन्त्र कहलाया, है परम प्रिय ईश्वर का ॥ ३ ॥ परम मोक्ष का है दाता यह, सब नामों से विख्याता यह ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घासी हित चित्त से गाता यह, और ना दूजा भाया ॥
स्वामी सब नर नारी का ॥ ४ ॥

---

५७ भजन

नमो सृष्टि कर्त्ता नमो हो विधाता।
नमो सच्चिदानन्द आनन्द दाता ॥ १ ॥
नमो दीनों का दुःख हर लेने वाले।
नमो विश्वभर्त्ता नमो जन के त्राता ॥ २ ॥
करो शुद्ध निर्मल मेरे आत्मा को।
यही मांगता नित्य सायं औ प्राता ॥ ३ ॥
मुझे तीन तापों में अब न तपाओ।
मैं तङ्ग हो रहा ग़म उठाता २ ॥ ४ ॥
तुम्हारे सिवा कौन रक्षक है मेरा।
जगत् स्वार्थी है न कोई मित्र भ्राता ॥ ५ ॥
भंवर बीच नैया पड़ी नाथ मेरी।
पड़ा काल के चक्र में चक्र खाता ॥ ६ ॥
दयासिन्धु हे दीन बन्धु दया कर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न क्यों शीघ्र सुखरूप रस्ता दिखाता ॥ ७ ॥
तेरे दर पै बलदेव व्याकुल पड़ा है ।
न क्यों उस के दुःख दर्द सारे मिटाता ॥ ८ ॥

—:o:—

५८ भजन

तुम बिन जगदीश कौन जगत् में हमारे ।
किन के अब द्वार जाऊं किन को निज दुःख सुनाऊं ।
कौन को कहाऊं लेऊं कौन को सहारो ॥ १ ॥
तुम ही सब से महान् दाता को तुम समान ।
तुम ही भगवान् सदा दीनन दुःख टारो ॥ २ ॥
मेरी बार हे उदार कीन्हीं अब क्यों अवार ।
लीजिये उबार नाथ दास हूं तुम्हारो ॥ ३ ॥
ये हो सर्व शक्तिमान् दीजे निज भक्ति दान ।
आपनो बलदेव जान कीजै ना किनारो ॥ ४ ॥

---

५९ लावनी

तुम सुनो दीन के नाथ विनय यह मेरी ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर गहो आपनो जानि करो ना देरी ॥
यह दास आप की शरणागत में आया ।
रख लीजे महाराज करिये अब दाया ॥
तव नाम अनन्त अपार वेद में गाया ।
गुण गावत शुक सनकादि पार नहीं पाया ॥
मैं क्या वर्णन करसकों अल्प माति मेरी ।
कर गहो आपनो जानि ना करो देरी ॥
तुम निर्विकार निर्मल पवित्र हो स्वामी ।
मैं महा मलिन मतिमन्द कुटिल खल कामी ॥
सच्चिदानन्द सर्वज्ञ सकल घटयामी ।
मोहि कीजै नाथ अब शुद्ध जानि अनुगामी ।
देवो आनन्द पद में वास त्रास निर्वैरी ।
कर गहो आपनो जानि करो ना देरी ॥
इस जग में जन्मत मरत बहुत दुःख पाया ।
लख चौरासी में भ्रमत २ घबराया ॥
अति दुखित भयो जब शरण आप की आया ॥
करुणानिधान जन जानि करिये अब दाया ।
काटो करुणामय कठिन दुःख की बेरी ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर गहो आपनो जान करो ना देरी ।

मैं किसे सुनाऊं व्यथा नाथ निज मन की ।

यहां अपना नहीं कोई आश करूं किस की ॥

सुत मात पिता परिवार प्रीति करें धन की ।

तुम हीं सबके सत्यमित्र पार हरो जनकी ॥

अति आरत हैं बलदेव कहत यह टेरी ।

कर गहो आपनो जान करो ना देरी ॥

---

३७ भजन

जिसका ऐश्वर्य्य महान् है, वह परमेश्वर कहलाता ॥ १ ॥

छोटा कमरा अनन्त प्रकाशा, रविशशि तारागण प्रकाशा ।

पंखा करें मरुत उनचासा, आतिश दान है ॥

सब काम करें दिन राता, वह परमेश्वर० ॥ २ ॥

अनादि प्रकृति सामग्री है, जो आकाश के बीच भरी है ।

इससे सारी सृष्टि करी है, जिसका काल दरबान है ॥

नहीं बृथा एक क्षण जाता, वह परमेश्वर० ॥ ३ ॥

अनन्तजीव प्रजागणसारे, सन्मुखसुखी अरुविमुखदुखारे ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर्म सब ही के रहे निहार, पूरा उसका ज्ञान है ॥
फल न्याय सहित पहुंचाता, वह परमेश्वर० ॥ ४ ॥
जिसका रूप सच्चिदानन्दा, काटे जीवों के दुःखफन्दा।
कर्म हीन ऐसे मतिमन्दा, ज्यों कहते पाषान है ॥
खुद उसके बने विधाता, वह परमेश्वर० ॥ ५ ॥
लाखों जिसके नैन और काना, उससे ज़रा नहीं छिपाना।
बिना मदद सब सृष्टि रचाना, वह मनुष्य नादान है।
जो उसमें शिर्क लगाता। वह परमेश्वर० ॥ ६ ॥
सब मिलके अब वेद विचारो, सुमति ज्ञान हृदय में धारो।
"शीतल प्रसाद" जन्म मतहारो, जो सुखका अमान है।
जोड़ो ईश्वर से नाता। वह परमेश्वर० ॥ ७ ॥

---

५१ भजन

टेक—करो नैय्या पार मेरी शरण गही प्रभु तेरी।
बिन कृपा ईश्वर तेरी नहीं पार बसावे मेरी।
कहूं तुम से हर बार। शरण०
अब पड़ी भंवर में नैय्या, तुम बिन ना खिवैय्या।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नाथ अब सुनो पुकार। शरण०
बिन कृपा तेरी जगराई, ना दीखे कोई सहाई।
मुझे तुम बिन करतार। शरण०
अब विनती सुनियो स्वामी हो सबके अन्तर्यामी।
भारत का करो उद्धार। शरण०
काम क्रोध को दूर भगावो, लोभ मोह से हमें बचावो।
मद कर रहा विकार। शरण०
दो बुद्धि दान मोहिं दाता गंगा सहाय अब सुनाता।

भजन ६१

कर कृपा पार उतारियो मेरी टूटी सी किश्ती है॥
तुम अविनाशी अजर अमर हो। सारे भूमण्डल के घर हो।
सब के भीतर अरु बाहिर हो। कारीगर बड़े भारी हो॥
रची अनन्त सकल सृष्टि है॥ मेरी०॥
सबका न्यायकारी जगराई। बिन वजीर अरु बिना सिपाही।
करो फैसला कलम न स्याही। ऐसे न्यायकारी हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं गलती पड़ सकती है। मेरी० २।
हमने दुःख भोगे हैं भारि। बहुत हुई दुर्दशा हमारी।
अब हम आये शरण तुम्हारी। तुम जग हितकारी हो॥
तुम ही तारो तो उतर सकती है। मेरी० ३।
बिन कृपा करुणानिधि तेरी। कुछ नहीं पार बसाती मेरी।
कहे तेजसिंह' भारत बेड़ी काट सभी दुःख टारियो॥
जो हृदय कुमति बसती है॥ मेरी० ४॥

भजन ६२

तू निराकार अकाल है, तू न्यायकारी दयाल है।
तेरी न कोई मिसाल है, अनन्त अलख ओंकार है।
तेरा न कोई तोल है, लम्बा न चौड़ा गोल है।
तेरा अजब एक डौल है। अनन्त०
नहीं रूप रङ्ग रस गन्ध है, नहीं नाड़ी नस का बन्ध है।
तू सत्चित् आनन्द है। अनन्त०
तू अचल और अकूठ है, तू अखण्ड और अटूट है।
"क सम नहीं कहीं झूठ है। अनन्त०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काला न पीला लाल है, नर नारी बृद्ध न बाल है।
एक रस तू तीनों काल है। अनन्त०

सारे तेरा स्थान है, तू ज्ञान का भी ज्ञान है।
तू प्राण का भी प्राण है। अनन्त०

इतना बड़ा आकाश है इसका भी तुझ में बास है।
सब में तेरा प्रकाश है। अनन्त०

तू मुक्त और विज्ञान है, तेरी न कोई समान है।
तू सर्व शक्तिमान है। अनन्त०

कारण जगत तेरे हाथ है, यह जीव अनादि साथ है।
एक तूही सब का नाथ है। अनन्त०

जितना यह सब संसार है, तेरे ही सब आधार है।
तू सबका रचने हार है। अनन्त०

नहीं आप देह धारता है तू, नहीं जन्मता मरता है तू।
नहीं दुःख में पड़ता है तू। अनन्त०

जग रचता बारम्बार तू, करता है फिर संहार तू।
रखता यही व्यवहार तू। अनन्त०

करता है पर उपकार तू, देता कर्मानुसार तू।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देखे है सर्व का कार तू। अनन्त०

नहीं पापियों को तारता, नहीं धर्मियों को मारता।

नहीं नियम अपना टारता। अनन्त०

जो युक्ति और प्रमाण से, सब कुछ यथार्थ जान के।

तृप्त होवे तेरे ध्यान से। अनन्त०

योगी जो दर्शों द्वारा को देखे है तत्व के सार को।

तर जाय वह संसार को। अनन्त०

जो कोई न तुझ को जानता, आज्ञा न तेरी मानता।

वह मुफ्त मिट्टी छानता। अनन्त०

इस 'नवलसिंह' के मन लगी, तेरी रहे नित्य धुन लगी।

बुद्धि रहे नित्य जगमगी, अनन्त अलख ओंकार है।

भजन ६३

शरण हम प्रभु तेरी आये हुये हैं॥

दो कर जोड़ सिर को झुकाये हुये हैं।

न भगती श्रद्धा में मन चित को लगावत,

बने पापी पुण्य को भुलाये हुये हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

त्याग पुरुषार्थ अंहकार में फंस,
कुसंगत से हरदम दबाये हुये हैं।
न बल है न बुद्धि न विद्या की शक्ति,
अधोगत पै अपनी लुभाये हुये हैं।
स्थिरता न चित्त की भटकता फिरे मन,
विषयों से बहुत हम सताये हुये हैं।
करो हम पै कृपा दयामय पिता जी,
उठाओ हमें जो गिराये हुये हैं।
प्रवृति हो शुभ कर्म और शुभ गुणों में,
मिले धर्म धन जो गंवाये हुये हैं।
हो सत्य विद्या अर ज्ञान से शुद्ध हृदय,
नियम पालें जो तू बनाये हुये हैं।
धर्म भूख हम को सदा ही प्रभुवर,
ढबे शांति जो हठाये हुये हैं।
गंगाराम प्रीती पर उपकार सीखें,
मिटे कपट मन में जो लाये हुये हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागनी देशी ६४ भजन (ताल झप

कैसा यह आश्चर्य्य ज्ञान है तुम्हारा,

जिसने मिटाया है भ्रम संशय सारा ॥ १ ॥

इसी ज्ञान के बल से कामादि जीते,

इसी से जितेन्द्रिय हो मन को मारा ॥ २ ॥

इसी ज्ञान शक्ति से जाना यथावत,

विषय भोग को काक विष्टा विचारा ॥ ३ ॥

अन्धेरे से प्रथम निकाला जो तुमने

यह ऋण जायगा हम से क्योंकर उतारा ॥ ४ ॥

कृतार्थ हुआ करते हैं निश्चय वाले,

जिनको भरोसा तुम्हारा है भारा ॥ ५ ॥

अनुमान से प्रथम निश्चय हुए हो,

अनुभव हुये अब हमें ज्ञान द्वारा ॥ ६ ॥

जीव ईश सम्बन्ध है व्याप्य व्यापक,

जैसे परस्पर अधेय और अधारा ॥ ७ ॥

प्रेम प्रवाह अथाह ज्ञान गंगा,

निकली अमी फोड़ पर्वत की धारा ॥ ८ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागनी भैरवी) ६७ भजन ताल

मोरी नाव कैसे उतरे पार, किस विध उतरे पार ॥ १ ॥

वार पार कोउ घाट न सूझत, आन पड़ी मंझधार ॥ २ ॥

बिजुली चमके बादल गरजे, उलटी चलत बयार ॥ ३ ॥

गहरी नदिया नाउ पुरानी, नावक है मतवार ॥ ४ ॥

ध्रुपद सुनावत सुनत न कोइ, हमरी कूक पुकार ॥ ५ ॥

तदिया जलधारा दुस्तर है, उठत तरङ्ग अपार ॥ ६ ॥

निज भुज बल से सृष्टि कीनी, सांई हाथ पसार ॥ ७ ॥

अमीचन्द की राखो नावरिया, पड़त भंवर मंझधार ॥ ८ ॥

रागनी षट) भजन ६८

अवगुण नाहि विचारो प्रभु मेरे, अवगुण नाहि विचारो ॥ १ ॥

कोटण कोटि पाप के मल से, अन्तःकारण है कारो ॥ २ ॥

चोर कृतघ्न मैं निमक हरामी, जीव हिंसक हत्यारो ॥ ३ ॥

गर्भी बेमुख कूकर सूकर, ईर्ष्या द्वेष भण्डारो ॥ ४ ॥

गंवार लबार कठोर कुतर्की, पर निन्दा को प्यारो ॥ ५ ॥

दम्भी कुटिल कुकर्मी लोभी कामी क्रोधी भारो ॥ ६ ॥

बगुला भक्त मैं जग का ठग हूं, जगत को ठगने हारो ॥ ७ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पर उपकार का बादक हूं सदा, स्वाथ में मतवारो । ८ ॥
अधर्म्म सभा का प्रथम सभासद, धर्म्म सभा से न्यारो ॥ ९ ॥
सभा सभाज न नाऊं कदापि, नींद आलस्य को मारो ॥ १० ॥
नहीं सूझत अब मुक्ति की युक्ति, जिसने हो छुटकारो ॥ ११ ॥
केवल है विश्वास का हेतू पावन नाम तुम्हारो ॥ १२ ॥
दया क्षमा की दृष्टि दयानिधे, मेरी ओर निहारो । १३ ॥
जैसे बने अब राखो अमी को, बच जाय कारागारो ॥ १४ ॥

——

रागनी मालीगोरा) ६५ भजन [ताल ४

ज्ञान मन वेद, वेद मन अक्षर अक्षर मन स्वर ।
स्वर मन नाद, नाद मन राग, रागन में भैरो राग ॥ १ ॥
बुद्धि मन ज्ञान, धर्म्म मन दान, दान मन सत्य ।
सत्य मन विद्या कर लीजिये अनुराग ॥ २ ॥

——

रागनी गंधारी) ६६ भजन [ठेडी चौताला

थेक—दीनदयालु नाथ है प्रभु पतित उद्धारण आप
अन्तरा ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दीनबन्धु नाम तेरा कृपा निधान तूही,
तेरो ऋषि करते जप जाप । दीनदयाल०
अजर अमर अविनाशी शुद्ध बुद्ध,
मुक्त नित्य अजन्मा अभय तूही ।
तेरो ही विस्तार अधीन है,
पिता बेनती करत हूं दूर करो मेरो पाप ताप । दीन०

राग भीम) ६६ भजन (चौताला

टेक—तूही २ नाम जपत जीव जन्त और बे अन्त ।
बृक्ष पक्षि पशु आदि तेरो ही धरत ध्यान ॥ तूही०

अन्तरा ।

आकाश पाताल तुझे जपत तिहारो नाम ।
सकल सृष्टि को तेरो ही मान ॥ तूही०
चहुं ओर दसों दिशा अग्नि पवन जल तुहार ।
निश दिन प्रीत सहत करत व्याख्यान ॥ तूही०
कहत अधीनता प्रेम भक्ति हृदय धारो ।
दीजो दयाल से प्रभु ज्ञान ॥ तूही०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राग कल्याण] ७० भजन (चौताला

टेक—नारायण दीनदयाल दीनबन्धु ।
पूर्ण करनकाज देत सभन सुख, दुःख निवार ॥

अन्तरा ।

आत्मा प्रकाश करत कर्तार सकल भूम ।
इच्छा पूरी करत धीर्य्यधार सब संसार ॥
अनकाज करन काज नमानयां के मान ।
दीनन के दाता सगरी के प्रतिपाल ॥
"अधीन" के सहायक नाथ कृपा निधान ।
तूही सकल काज सुधार नासयस दयाल ॥

राग कल्याण) ७१ भजन (ताल ४

तूही तू आदि अन्त,तूही जल थल,तूही जंगुल और खेला १
तूही सप्तद्वीप और नवखण्ड लाग डांट छाय रह्यो ।
चौदह भवन और पांचों स्थान तू नवल नवेला ॥ २ ॥
भरण भूषण सब जीव जन तन को ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तूही उधार सुधार सुधार सुहेला ॥ ३ ॥
तेहो ते रवि शशि ओढगण पवन पानी निश वास ।
तूही अलख अलबेला ॥ ४ ॥

रागनी समिधनासर ७२ ताल शूलफ़ाख़्ता

अपार ब्रह्म गोबिन्द नारायण,
गोपाल जगत गुरु पूर्ण हे हरे ॥ १ ॥
जाकी लीला कछु कही न जाए ।
दीन दयालु प्रभु शरण पड़े तेरे ॥ २ ॥
करण कारण जगदीश विधाता ।
निधनन की गत काज सरे ॥ ३ ॥
और सुख दाता सब दुःख भञ्जन ।
स्वामी बुझ बिन पल छिन सिमरण करे ॥ ४ ॥

राग बिहाग] ७३ भजन [ताल धमार

जय जय सच्चिदानन्द ज्ञानप्रद अधम उद्धारक ॥ १ ॥
जय जय दुष्ट सुताड़न गर्भ औ लोभ विदारक ॥ २ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जय २ आश्रमवर्या सनातन धर्म्म प्रचारक ॥ ३ ॥

जय "अमीचन्द" अनन्त विरोधी मत पन्थ सुधारक॥४ ॥

भजन ७४

जय २ पिता परम आनन्द दाता ।
जगदादि कारण मुक्ति प्रदाता । १ ।
अनन्त और अनादि विशेषण हैं तेरे ।
सृष्टि का स्रष्टा तू धार्ता संहाता । २ ।
सूक्ष्म से सूक्ष्म तू है स्थूल इतना ।
कि जिस में यह ब्रह्माण्ड सारा समाता । ३ ।
मैं लालित व पालित हूं पितृ स्नेह का ।
यह प्राकृत सम्बन्ध है तुझ से ताता । ४ ।
करो शुद्ध निर्मल मेरे आत्मा को ।
करूं मैं विनय नित्य सांयं और प्रातः । ५ ।
मिटाओ मेरे भय आवागमन के ।
फिरूं न जन्म पाता और विल बिलाता ।
बिना तेरे है कौन दीनन का बन्धु ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि जिसको मैं अपनी अवस्था सुनाता । ७ ।
" अमी" रस पिलाओ कृपा करके मुझको ।
रहूं सर्वदा तेरी कीर्ति को गाता ॥ ८ ॥

रागनी मध्यमसारंग] ७५ भजन (ताल ३

मैं उन के दरश की प्यासी ।
जिनको ऋषि मुनि ध्यान धरत हैं योगी योगाभ्यासी ॥ १ ॥
जिनको कहत हैं अजर अशोकी, आश्रय जिनके है त्रिलोकी ।
न वह जनमें न वह मरे, हैं अकाल पुरुष अविनाशी ॥ २ ॥
अभेद अछेद अनन्त अगम्य है, अक्षर और अनादि ।
अचल अमूरत और अनूपम, परिभू सर्व निवासी ॥ ३ ॥
अतुल बल जांको अटल राज है, सृष्टि सकल है दासी ।
'अमीचन्द' जिनसे होत प्रकाशक, रविशशी अग्नि प्रकाशी ॥ ४ ॥

—:o:—

७६ भजन

माथे पे नहीं टीका तेरे हिन्दूपन का ।
नहीं तसबी महराब निशां तेरे मोमिन का ॥ १ ॥
नहीं पत्थर नहीं धातु नहीं तू माटी का ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं गुड़ियों का खेल खिलौना लड़कपन का ॥ २ ॥
नहीं भोगों का भूखा नहीं प्यासा जल का ।
नहीं रिशवत का राशी नहीं लोभी धन का ॥ ३ ॥
नहीं साकिन मक्के का नहीं गिरजा घर का ।
नहीं काशी का बासी नहीं बृन्दाबन का ॥ ४ ॥
नहीं हबशी नहीं चीनी नहीं तू इङ्गलैण्ड का ।
नहीं रूमी नहीं रूसी नहीं तू जरमन का ।
नहीं तुझ में धड़दारी वे इन्साफी ज़रा ।
न्यायकारी तू मुनसिफ निर्धन धनियन का ॥ ६ ॥
आंखों के बिन देखे सुनता है कान बिना ।
सब का अन्तर्यामी वाकिफ है मन का ॥ ७ ॥
है वह शक्तिमान् बि ा कर कर्ता है ।
"अमीचन्द" साक्षी भूत सभी जड़ चेतन का ॥८॥

राग भैरो] ७७ भजन [ताल शूल्त

कर उपासना श्रद्धा भक्ति सों, हे उपास्य गाऊं तेरे गीत ॥१॥
सुतवत् तुमको करों आलिङ्गन, जैसे पुत्र पिता में प्रीत ॥ २ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दुगुनी चौगनी अधिक दिनों दिन, बढ़ती रहे सदा गाढ़ी प्रीत
"अमींचन्द" के प्रभु तुम हो नायक,
तुम ही हो सहायक तुमही हो मीत ॥ ४ ॥

— —

भजन ७८

जगत की जननी जगत की माता, नमस्ते पहुंचें तुम्हें हमारा ।
जगत के आधार विश्वकर्ता, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
तमाम दुःखों के दूर कर्ता, तमाम पापों के ताप हर्ता ।
तमाम खुशियों के तुम हो दाता, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
जगत के कर्ता तुम हो स्वामी, सुखों के भंडार तुम हो स्वामी ।
हरेक के रक्षक तुम हो हितैषी, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
तुम्हीं ने कृपा से हमको अपना, अतारी है मनुष्य योनि ।
तुमही ने दानश है अक़ल बखशी, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
हमारी ख़ातिर ज़मीं बनाई, हमारी ख़ातिर बनाई अग्नि ।
हमारी ख़ातिर बनाया सूर्य, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
हमारे कारण बनाई वायु, हमारे कारण बनाई खुशबू ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हमारे कारण बनाया माता पिता, दिया परवर्श का कर्त्ता ।
कारण मुक्तिं है वेद उतारा, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
हमारे चलने को पाओं बख़शे, दिये पकड़ने को हाथ तुमने ।
बनाई आखें कि देखें हर शै, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
ज़बां चखने को तुमने दी है, दिये हैं सुनने को कान प्रभु जी ।
तुम्हीं ने बखशा है नुत्क़ शंकर, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
हज़ारों खाने लज़ीज़ शीरीं हज़ारों चीज़े तलख़ व नमकीं ।
हमारे कारण बनाई तुमने, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥
कमर जो तुम से पति को छोड़े, जो तुमसे रक्षकसे नाता तोरे ।
कहीं ठिकांना लगे न उसका, नमस्ते पहुंचे तुम्हें हमारा ॥

राग भैरो] ७९ भजन [ताल ३

टेक—तुम्हीं हो सहायक सृष्टि के नायक ।
तुम्हारा कोई पार पाता नहीं है ॥
न जन्म और मरण के हो बन्धन में आते ।
तुम्हारा पिता और माता नहीं है ॥
सदा तुम विकारों से रहते हो न्यारे ।
[illegible]ीं तुम्हें कोई पाता नहीं है ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुम्हारी शक्ति काम करती है हरजा।
तेरा रूप दृष्टि में आता नहीं है॥
सिफ़ारश की तुझ पै जरूरत नहीं है।
और रिशवत तु खाता किसी से नहीं है॥
किसी खास घर में नहीं तेरा रहना।
मकां अपना तू कोई रखता नहीं है॥
तु सब का है प्यारा न शत्रु किसी का।
जोरू और बेटे का नाता नहीं है।
हम आए तेरे द्वार पर इस लिये हैं।
कि तुझसा और कोई दाता नहीं है।
कहे है "रत्न" वह सदा दुःख भोगे।
तेरे आगे जो सिर झुकाता नहीं है।

राग भैरो) ८० भजन (दाई ताल

तू मेरा प्रभु स्वामी है, तु मेरा अन्तर्यामी है।
तुझ को ही मेरी प्रणामी है। बलजाऊं तेरे नाम के।
तू जगत सृजनहार है, तू सबका ही कर्तार है।
तेरी ही नाम अपार है। बल जाऊं तेरे नाम के।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तु सबका स्वामी साथ है, तू पूर्ण पुरुष अगाध है।
तु ही मेरो इक नाथ है, बलजाऊं तेरे नाम के॥
तु ही सबका सहारा है, तुझ बिन सब की रुवारी।
तु ही तो पिता महतारी है। बलजाऊं तेरे नाम के॥
तू सत्य और भरपूर है, यकसां तेरा दस्तूर है।
तव यश विना सब झूर है। बल जाऊं तेरे नाम के॥
तु ही एक अनूर है, चेतन्य तेरा रूप है
तेरा ही अगम स्वरूप है। बल जाऊं तेरे नाम के।
देखत अनान को मान से, पावत जहान को जान से।
सब ही करत बखान से। बलजाऊं तेरे नाम के।
तुझ सों मेरा प्रणाम है, तुझ ही से मेरा काम है।
तेरा ही दाता नाम है। बलजाऊं तेरे नाम के।
सुन विनती अपने दास की, पूरी करो मेरी आस जी।
ठहरे हृदय निज वास जी। बलजाऊं तेरे नाम के॥

भजन ८१

क्रिया पैदा जिसने जहान है, वह महान से भी महान है
न वह [illegible] भी प्राण है॥ १॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न जन्म धरे न वह सुख भरे, न वह रोगी न वह कभी मरे।
उसे ढूंढो जहां वह वहीं मिले, न रहने का खास मकान है २।
न कोई रंग ह उसका न कोई रूप है, वह सदा से ज्ञान स्वरूप है।
वही एक सबसे अनूप है, नहीं कोई उसके समान है ३
वह अजर अमर है वह है अभय, वह अभेद है वह अछेद है,
नहीं शब्द स्पर्श का वह विषय, नहीं आंख उसकी न कान है।
नहीं खाली उससे है कोई जा, नहीं हाल उस से है कुछ छिपा
वह हरएक भेद की जानता, उसे तीनों काल का ज्ञान है ५
वह हर एक ऋतु में है रमा, वही देनेवाला है मोक्ष का।
करो उसी की सब उपासना, वही सारे विश्व की जान है ६

राग भैरो) ७२ भजन (ताल ३

जय महेश जय महेश जय महेश दाता।
पिता जांका कोई नाहीं, नहीं कोई माता ॥
जनक देव तूही जननी, तुही है विधाता।
जगत जीव साजे तूही, तूहीं एक पाता।
दान मान देवे तुही, क्लेश कष्ट घाता ॥
यह जगत किया तेरा, वर्ष मास साता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रैन दिवस काज तेरे, सायं प्रभाता ॥
सकल जीव तेरे दाढी ऊंच नीच जाता ।
हाथ बांध तेरे द्वार, यश पुनीत गाता ॥

रागनी जय २ वन्ति) ८२ भजन (ताल झप

नमो सृष्टि कर्त्ता नमस्ते नयन्ता,
नमो कष्ट हर्त्ता नमस्ते अघनाशी ॥ १ ॥
नमो दुःख भञ्जन नमस्ते निरञ्जन ।
नमो सच्चिदानन्द रूप प्रकाशी ॥ २ ॥
अविद्या करो नष्ट आर्य्यवर्त की ।
न कीजे विलम्ब अब काटो भ्रम फांसी ॥ ३ ॥
"अमीचन्द" का गान स्वीकार कीजे ।
करे प्रार्थना आर्य्य भारत निवासी ॥ ४ ॥

८३ भजन

हरि समान दाता जग में दूसरा न कोई ।
साधु और असाधू पाले, बोधाबोध दोई ।
राव राजा रंक पाले, जग में है जोई ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीव पाले जन्तु पाले, कीट किरम जो होई।
जड़ चेतन सब को पाले, पाप सब के धोई।
दुराचारी दुष्ट पाले, धर्म्म लाज खोई॥
तिस की दात भोगें निश दिन खांए फिरें सोई॥
प्रीति जिसकी दम के जग में, बल पुण्य सोई।
धन्य जिसकी ऊंची दतु, शरण उसकी "लोई"

भजन ८५

हरि सम को हितकारी रे

जीव जन्तु चीटि ले हरित बाल बृद्धि नर नारी रे।
भोजन दान कर सभहन को, जो लोग श्रेष्ठ सवारी रे॥
चातुर मूढ़ गुणी अज्ञानी, चार जार बटमारी रे।
गुण अवगुण को नहीं विचारे, दान की बांह पसारी रे॥
रावरंक तिसते वर पावें, तृण जल अन्न अहारी रे।
दान का अन्त न आवे साधो, चकित बुद्धि हमारी रे॥
जल वस्त्र इत्यादि अमोलक, मन्दिर महल अटारी रे।
और अनेक पदार्थ देवे, और हस्ति असवारी रे॥
रजनी समय जीव सब सोवें, तनकी सुध बिसारी रे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निज हाथन से रचा कारये, तिसके हम बलिहारी रे ॥
प्राण अपान प्रभु के कर हैं, किसने गिनत विचारी रे ।
जीव कुशल हित रचे दयामय, निसदिन जोति अधारी रे ॥
दान्त दिये वैसा ही भोजन, जिसको जो आहारी रे ॥
सो करुणामय परम दयाला, सकल जीव सुखकारी रे ।
धन २ हरि प्रतिपालक, महिमा गाए बिहारी रे ॥

भजन ८६

ईश्वर तेरी दया नहीं पावे कोई पार ।
अपरम्पार दया भण्डार तेरा ही सब संसार ॥
हम सब का इक कर्तार तूं है सबका पालन हार ।
तुझ में न कुछ विकार है तू एक रस अपार ॥
नहीं जन्म धरता न मरता है तू ।
अजन्मा निराकार धरता है तू ॥
सर्व दुःखों का नाश करता है तू ।
सर्व सुखों का दान करता है तू ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य्यमण्डली गुण गा रही है प्राण आधार,
वे अन्त हो भगवन्त हो नमस्ते ओंकार ।

ईश्वर तेरी........आगिज

७७ लावनी शेर अर्थात दोहा

बुद्धि विलासक दुःख विनाशक विद्याप्रकाशक हरि हरि ।
विश्वास प्रदायक सत्य उपदेशक शत्रु विनाशक हरि हरि ॥
दुर्गुण नाशक रोग विनाशक धर्म सुशिक्षक हरि हरि ।
परम सहायक राज विधायक शुभ बल दायक हरि हरि ॥
टेक— तु दाता मैं हूं भिक्षक तू है रक्षक अपने जनका ।
ज्ञान दृष्टि दे खोल हरि मैं अभिलाषी हूं दर्शनका ।

चौक १

काम क्रोध मद लोभ मोह और निग्रह कर इन्द्रिय मनका
शम दम धैर्य दान दया का भागी करो विद्या धन का
प्रार्थना स्तुति उपासना त्याग न हो एक पल छन का
सत्य धर्म में श्रद्धा रहे सत्सङ्ग रहे नित्य गुणियन का
श्रेष्ट सर्मो में राख, कभी होवे न दर्शन दुष्टन का
ज्ञान दृष्टि दे खोल हरि मैं अभिलाषी हूं दर्शन का.

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चौक २

दुग्ध घृत और अन्न मधुर रस भर भंडारा भोजन का।
वात पित्त कफ तत्व शरीरिक कोप करे नहीं विघ्नन का।
वायु वृष्टि शीत उष्ण सब दे समान हमें सुख तन का।
सिंह सर्प बट तस्कर का डर पड़े न पाला दुर्जन का।
रोग शोक रहें दूर प्रतिदिन रहे हृदय में प्रसन्नता।
ज्ञान दृष्टि दे खोल हरि मैं अभिलाषी हूं दर्शन का॥

चौक ३

गाय भैंस और भेड़ी बकरी बाधा कर सब पशुअन का।
निर्दयों को दया उपदेश कर प्राण बचे जो गोअन का।
विद्वान सर्व प्रीतिमान हों हनन करे धर्म्म शत्रुअन का।
उदय अस्त तक धर्म्म ध्वजा फिरे विद्या चक्र सनातन का।
प्रीतिमान सब लोग होयें गुण ग्रहण करें ऋषि मुनियन का।
ज्ञान दृष्टि दे खोल हरि मैं अभिलाषी हुं दर्शन का॥

चौक ४

वेद विरुद्ध जो जाल जगत में बिछा असत पाखंडन का।
पुरुषार्थ दे सत्य मराडन का और असत्य मत खराडन का।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो प्रार्थना हृदय में तुझ गुप्त भेद है भिन्न २ का।
अन्धकार मिट जाय फन्द सब कटे पोप के बन्धन का।
"नवलसिंह" तू राख भरोसा मन रंजन दुःखें भंजन का।
ज्ञान दृष्टि दे खोल हरि मैं अभिलाषी हूं दर्शन का।

---

८७ भजन

१ क्या कोई गावे सुनावे प्रभू महिमा तेरी लखी किसी से न जावे
ऋषि ऋषीश्वर तपी तपीश्वर मुनी मुनीश्वर हजार।
लिख २ के हारे वह सारे विचारे न पाया वले तेरा पार।क्या०
२ तेरी वेद बाणी कहे ऋषि ज्ञानी है प्राणी का इससे उद्धार
जो पढ़े पढ़ावे और अमल कमावे वह हो भवसागर से पार।क्या०
तुही सृष्टि कर्त्ता सकल दुःखं का हर्त्ता संतन ... प्रतिपाल
मुझे काम क्रोधं से खुदी लाभ मोह बचाओ हरि तत्काल।क्या०
४ तुही है भंडारी मैं तेरा भिखारी ... वरदान।
मैं तुझको ही ध्याऊं तेरी महिमा गाऊं कहे दास 'खन्ना'
नादान। क्या कोई गावे०।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

८८ भजन

शरण अपनी में रख लीजे, दयामय हुं तेरा।
तुम्हें तज कर कहां जांऊ, हितू को और है मेरा।
भटकता हुं मैं मुद्दत से, नहीं विश्राम पाता हुं।
दया की दृष्टि देख, नहीं तो डूबता है बेड़ा।
सताया राग द्वेषों का, तपाया तीन तापों का।
दुखाया जन्म मृत्यु का, हुआ तंग हाल है मेरा।
दुःखों को मेटने वाले, तुम्हारा नाम सुन कर मैं।
शरण में आ गिरा अब तो भरोसा नाथ है तेरा।
क्षमा अपराध कर मेरा फकत अब आस है तेरा।
दया "बलदेव" पर करके बना ले नाथ निज चेरा।

——:o:——

८९ भजन

टेक—कर कृपा पार उतारियो, मेरी टूटी सी किशती है।
तुम अविनाशी अजर अमर हो, सारे भूमण्डल के घर हो।
सब के बाहर और भीतर हो, कारीगर बड़े भारी हो।
रची अनब सकल सृष्टि है, मेरी टूटी० ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अबतक दुःख भोग हैं भारा, बहुत हुई है दुर्दशा हमारी।
अब आए हम शरण तुम्हारे, तुम ही देश हितकारी हो।
तुम्हीं तारो तर सकती है ॥ मेरी० ॥
बिन कृपा करुणा निधि तेरी, कुछ पार न बसाइ।
"तेज सिंह" भारत की बेड़ी, काट सभी दुःख टारयो।
जो घेरे को मत बसती है ॥ मेरी टूटी० ॥

भजन १० प्रभाती

हे जगत स्वामी प्रभु जी, भेंट धरूं क्या मैं तेरी।
मात मेरे नहीं सम्पत नाहीं, जिसको कहूं मैं मेरी।
इस जग में हम ऐसे विचरें, जोगी करे ज्यों फेरी।
धन जन योवन अपना माने मूर्ख भूला भारी।
तुझ बिन और सहाई न मेरा, देख लिया मैं बीचारी।
ये तन मन होवे न अपना, है सब माल पराया।
जब चाहे तब हो सब लेवे, नहीं कुछ जोर हमारी।
तुमरे दर का मैं कूकर स्वामी, लाज तुम्हें है मेरी।
अपनी शरण में मुझको रखकर, देओ भक्ति बिन देरी॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भजन ६१

वह वृथा जन्म को गवाये हुए हैं।
जो ईश्वर को दिल से भुलाये हुए हैं ॥

अमर सत्य विद्या का प्रकाश कर तु।
अविद्या से हम तंग आये हुए हैं ॥

नहीं हमको मतलब किसी मूर्ति से।
निराकार को सिर झुकाये हुए हैं ॥

दयालु हमारी तू कर शुद्ध बुद्धि।
कि पापों से अपने लजाये हुए हैं ॥

बचा दुष्ट आचार से हे दयामय।
किं हम धर्म्म दिल से लगाये हुए है ॥

जमाने में बदबखत हमसा न होगा।
कि भारत की गैरत घटाये हुए हैं ॥

हमें ब्रह्मविद्या का दान करदे।
कि मन को विषयों में फंसावे हुए हैं ॥

उसी का जो यश गाये जीवन सफल हो।
कि जिसके 'फ़िदा' हम बनाये हुए हैं ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri-Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१२ भजन राग भैरो]

पिता परम सुनिये विनय एक हमारी,
द्वार पै तेरे हैं आये भिखारी ।
अति क्लेश से हृदय पीड़ित हैं हमारो,
बिपद न हम से जाय सहारी ।
है अज्ञान का तिमिर हम सब पै छाया,
दिखाई न ज्योति दे तेरी प्यारी ।
असत्य और मिथ्या का लीना सहारा,
कपट औ दम्भ में सारी आयु है हारी ।
विषय भोग में रात दिन को बिताया,
स्वार्थ ने सुध बुध सभी है बिसारी ।
दुराचारी दुष्टों का ही साथ भाया,
धर्मभाव से सर्वथा हुये आरी ।
हे सर्वज्ञ ! तुझ से भला क्या कहें हम,
मुनीश हो तुम जानो अन्दर की सारी ।
तेरी आज्ञा भंग करते रहे हैं,
पिता मूर्खता हम से हुई है भारी ।
तेरी करुणा की पर न सीमा कोई है,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आप पापयों को दवे है तारी।
तेरा नाम है पतित पावन दयामय,
लेओ शरणा में हम को आनन्द कारी।
देओ सत्य विज्ञान अपना स्वामिन्,
धर्म्म की तरंगें हों मन में जारी।
तेरे यश को गावें सदा सारे रत्नमित्र,
कि हो अन्त को वृत्ति तुझ में हमारी।

जून पूरी] १३ भजन [राग टोडी

हे पतित पावन हे दुःख निवारन,
दुःख रूप सागर से शीघ्र पार उतारो ॥ १ ॥
राखियेगा मेरी लाज, बिगड़े हुऐ सारे काज,
कृपा की दृष्टि से आप ही संवारो ॥ २ ॥
हृदय शुद्ध मेरा करो, दुष्ट बुद्धि मेरी हरो,
काम क्रोध लोभ मोह चारों शत्रु मारो ॥ ३ ॥
दूर रहे अहंकार, मित्र रहे पर उपकार,
मन में से भक्ति भाव मेरे न विसारो ॥ ४ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शान्त चित्त 'केवल' हो मन बुद्धि निर्मल हो,
जो हैं क्लेश अभिनवेश आदि सब टारो ॥ ५ ॥

रागनी जंगला] ६४ भजन [४ ताल

ओ३म् का अर्थ विचारो यही है पूर्ण भक्ताई ।
ऋषि मुनियन की यही सदा रीति चली आई ॥१॥
बने रहें बलवान रैन दिन यत्न करो भारी ।
काम क्रोध और लोभ मोह हैं शत्रु दुःख दाई ॥ २ ॥
कपट दंभ से बचो, बैर मत करो किसी से भी ।
झूठ को दो सब त्याग सत्य के मित्र बनो भाई ॥ ३ ॥
पर उपकारी बनो, छोड़ दो अपरवारथ मन से ।
सुधरें बिगरे काम बड़ी प्रतिष्ठा हो जाई ॥ ४ ॥
इन नये मतों के कारण यहां पर फूट भाव फैला ।
सिर क्यों नहीं जावे फूट, फूट का मेवा जब खाई ॥ ५ ॥
जड़ वस्तु को सीस निवाकर, मोक्ष मांगते हैं ।
समझ सोच विचार करो, क्या मूर्खता छाई ॥ ६ ॥
कहीं कान से कर्ण, नाक से नासकेत जन्मा ।
उनको सच लिया मान, गई कहां उनकी चतुराई ॥ ७ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्री वैष्णव बने, बदन को अपने दगवाया ।
दाग चेले को लगा, गुरू के नकदी हाथ आई । ८ ।
कान में मीरा फूक गुरू ने चेला मूंड लिया ।
नकद दच्छीणा मिली ठग्गी क्या अच्छी फैलाई । ९ ।
मूढ़ कहें यह बात, जन्म परमेश्वर ने पाया ।
सब का जो है पिता, पुत्र वह कैसे बन जाई । १० ।
एक बड़ा अचंभा और इसमें है 'केवल' मनमें सोच ।
हर वस्तु का व्यापक क्योंकर हो गया इक जाई । ११ ।

राग कान्हड़ा) १५ भजन ३ ताल

अद्भुत है जिस की प्रभुताई उस से प्रीति लगावो भाई ॥
दसों दिशा में षट् ऋतुओं में उसकी बराबर व्यापकताई
तीनों अवस्था से वह न्यारा, बाल वृद्ध और तरुणाई ॥
बड़े २ गुणवानो ने भी, उसके गुण की थाह न पाई ॥
तीनों काल एकरस रहता, घाट बाध नाहिं होती काई ॥
महाबली बल देने वाला, विनय करो उसे सीस निवाई ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गायत्री का करो विचार, ज्ञान की बस हो पूर्णताई ॥
यह स्तोत्र पढ़ा 'केवल' ने, गावो प्रेम भाव से भाई ॥

राग बिहाग) ९६ भजन (ताल ३

अवसर बीतो जात रे प्राणी तेरा अवसर बीतो जात ।
इस काल की हेरा फेरी में, तेरा अवसर बीतो जात ॥ १ ॥
साठ मिनट गुज़रे गया घंटा, चौबीस में दिन रात ।
क्षण २ कर के क्षीण होत है, गई सन्ध्या आई प्रात ॥२॥
छः ऋतु मिल के बरस होत है, ऋतु २ में दो मास ।
मास २ में तीस दिवस हैं, इक आवत इक जात ॥ ३ ॥
बालकपन गया खेल कूद में, यौवन युवति साथ ।
बृद्ध भया कुछ बन नहीं आवत, कांपत सकले गात ॥ ४ ॥

रागनी पहाड़ी) ९७ भजन (ताल धमार

जप इश्वर को जप ईश्वर को आलस ने क्यों घेरा जीवड़े । जप०
कहां गए चक्रवर्ती राजे जिन के बजे थे चहूं दिश बाजे,
काल का सिर पर [illegible] ॥ १ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कीनी न तैने कोई भलाई, स्याही गई सफैदी आई।
बृद्ध भया बीती तरुणाई, पल २ होत अंधेरा ॥ २ ॥
दिन गया सेवा करते पराई, सो २ सारी रात गंवाई।
मूर्ख तैनूं मत न आई, अब तो जाग सवेरा ॥ ३ ॥
सुनों २ मित्रो प्यारयो लालो, ईश्वर की तुम आज्ञा पालो।
सत्य विद्या का दीपक जालो, आगे बहुत अन्धेरा ॥ ४ ॥
बाग बगीचे लगाये बंगले, शीशे लगाए रंगाए जंगले।
कौन चलेगा इन को संग ले, अन्त को मर्घट डेरा ॥ ५ ॥
करो दिल थीं दूर जहालत, ओथे नहीं कोई करदा वकालत।
सच्चे साहिब दी सच्ची अदालत, अमलीं होए नबेड़ा ॥ ६ ॥
सिद्ध सनकादक दश अवतारी, अमीर बड़े २ माया धारी।
विक्रम भोज दधीच से भारी, कर गए जोगी दी फेरा ॥ ७ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अथ उपदेशः

भजन ६८

टेक—बिना ज्ञान जीव कोई मुक्ति नहीं पावे ।

कली—चाहे धार माला चाहे बांध मृगछाला ।

चाहे तिलक छाप चाहे भस्म तु रमावे ॥ बिना० ॥ १ ॥

चाहे रचके मन्दिर मठ पत्थरों को लावे ठठ ।

चाहे जड़ पदार्थों को सीस नित्य तु निवावे ॥ बिना० ॥ २ ॥

चाहे बजा गाल चाहे सङ्ख और बजा घड़ियाल ।

चाहे ढफ डैरू चाहे झांझ तू बजावे ॥ बिना० ॥ ३ ॥

चाहे फिर तू प्रयाग काशी में जा प्राण त्याग ।

चाहे गंगा यमुना चाहे सागर में नहावे ॥ बिना० ॥ ४ ॥

द्वारका और रामेश्वर बद्री नाथ परबत पर ।

चाहे जगन्नाथ में तु भ्रष्ट भात खावे ॥ बिना० ॥ ५ ॥

चाहे जटासीस बढ़ा वोहर में चाहे कान फढ़ा ।

चाहे यह पाखण्ड रूप लाख तू बनावे ॥ बिना० ॥ ६ ॥

ज्ञानियों का करले संग पोपों की तज दे भंग ।

'नवलसिंह' मुक्ति का साधन तब आवे ॥ बिना० ॥ ७ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भजन ९९

बनो आर्य्य वेद मत पर चलो, रहो बेधड़क मत किसी से डरो १
अविद्या करो नाश विद्या पढ़ो, परम दान विद्याका लो और दो २
चलन वेद अनुकूल अपना करो, खुशी से रहो और फूलो फलो ३
करो योग और योगियों से मिलो, परम धाम मुक्ति के भागी बनो ४
परोपकार ही में लगा राखो मन, परोपकार करके हो हो मनमें मगन ५
न हो वैर बुद्धि किसी से कभी, रहे मन में व्यापक सदा शान्ति ६
हृदय के खुलें ज्ञान चक्षु अगर, तौ प्रकाश उसका हो नूरे नज़र ७
बदों से डरो और करो काम नेक, कि नेकों का होता है अंजाम नेक ८
जोवेदोंकेअनुकूलहोचालढालनचदख्वाहीकीहेकिसीको मजाल ९
जो रहना है मंजूर आराम से, तो भागो हमेशा बुरे काम से १०
वह नेकों का नेकी का फल देता है, बुरों को सज़ाए अमल देताहै ११
वही विश्वका 'केवल' आधार है, उसी को हमारा नमस्कार है १२

भजन १००

टेक—बीत गए दिन भजन बिना रे।

बाल अवस्था खेल गंवायो, जब ज्वानी तब मान किया रे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लाहे कारण मूल गंवायो, अजहूं न मिटी तेरी मन तृष्णा रे।
कहत 'कबीर' सुनों भाई साधो, पार उतर गए सन्त जना रे।

---

१०१ भजन

टेक—भाई मत बृथा उमर गंवाओ रे।
देवी देवता फिरे पूजता, उन में क्या रक्खा रे।
जो चाहो परलोक सुधारा, गुण ईश्वर के गाओ रे ॥ १ ॥
पत्थर ईंट को सीस नवाकर, मत मन को भटकाओ रे।
एक ईश्वर की हो शरणागत, इधर उधर मत जाओ रे ॥२॥
अपना कारज आप बिगारा, तुझ को होगया क्या रे।
समझाए भी नहीं समझता, क्या अनजान हुआ है रे ॥३॥
बगला भगत बहुत जन फिरते, अपस्वारथ के मारे।
क्यों उन की तू बात मानकर, बुद्धि हीन बना है रे ॥ ४ ॥
राग द्वेष से होकर न्यारा, गुण ईश्वर के गाओ रे।
सब झगड़ों को छोड़ के "केवल" हरि से प्रीति लगाओ रे॥५॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१०२ भजन

टेक–भक्ति करो जन जन्म सुधारो, रोम २ प्रभु देखन हारो।

तु प्रभु मेरे सर्वज्ञानी, कौन सी वस्तु जो तु नहीं जानी।

घट मठ मंडप तन मन राचे, उडगन पंडल तैं बलनाचे।

जो जन जगत में अगम विचारे, सो बल्ल तुमरे कर निरधारे।

बुद्धि बल ज्ञान सो तेरी रचना, जिस चाहे तिस करे सुबचना।

अग्नि पवन मृत मानन हारे, चन्द्र सूरज गुण वर्यों सारे।

क्यों कर वर्णों तेरी लीला, अन्त न पावे बुद्धि बल शीला।

तैं सम एक तुही जगकर्त्ता, और न कोई पाता दुःख हर्ता।

उपमय और उपमा नहीं जानों, आदि तुही मध्य अन्त बखानों

बृह्मादिक सब तेरी रचना, वर्णें किस यश निर्मल वचना।

जो जन प्रभु जी तुमको ध्यावें, अन्तकाल परमानन्द पावें।

सो वर मांगे संगत सारी ज्ञान अनन्त होत बलिहारी।

गावें दयामय नाम पुनीता, शांति धाम सुखधाम सुनीता।

धन जन योवन मित्र भाई, इन संग मिल हरि क्यों विसराई।

छोड़ विलम्ब शरण हरि लीजे, प्रभु चरनन में तन मन दीजे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दोउ कर जोड़ तुझे हरि ध्यावें, भक्तिदान तुझ से वर पावें।
देउ दयामय सुध हमारी, तैं दर यावें संगत सारी।

भजन १०३

भोर भयो पक्षीगण बोले, उठो जन प्रभु गुण गाओ रे।
लख प्रभात प्रकृति की शोभा, बार २ हर्षाओ रे।
प्रभु की दया सिमर निज मन में, सरल स्वभाव उपजाओरे।
हो कृतज्ञ प्रेम में उनके, नैनन नीर बहाओ रे।
ब्रह्म रूप सागर में मनको, बारम्बार डुबाओ रे।
निर्मल शीत लहरें लेले, आत्म ताप बुझाओ रे।

भजन १०४

टेक—पापी मन सोवे पड़ा, उठ जाग धर्म पहचान।

मुशकिल से ये तैं देहं पाई, जोकि तू ने सोय गंवाई।
तज गफलत नादान। पापी मन० १
वक्त गया फिर हाथ न आवे, पीछे से तू क्यों पछतावे।
मौत सिरे पर जान। पापी मन० २

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बड़े २ राजा माया धारी, विक्रम भोज दधीच से भारी।
काल ने मारे आन। पापी मन० ॥ ३ ॥
अर्जुन भीम से योधा भारी, जिन से कांपै थी सृष्टि सारी।
हैं कहां कर तू धयान। पापी मन० ॥ ४ ॥
मात पिता दारा सुत जोई, धन दौलत और लशकर कोई।
इनका क्या अभिमान ॥ पापी मन० ॥ ५ ॥
मनुष्य देह की नाव बनाले, कर्म धर्मका चप्पू लगाले।
जल्दी तर नादान, पापी मन० ॥६॥

राग असावरी) १०५ भजन (३ताल

टेक—प्रभु को सिमर २ मन मेरे शांति हृदय में हो तेरे।
नाम दान स्नान निरर्थक सो मन प्रीति न तेरे।
जात पात की बात न पूछे, पूछे काज भलेरे। १।
जिन करतार अकाल पछाता, सोई जगत उचेरे॥
दो दिन के सुख कारण मूरख, पावत उमर बखेड़े ॥२।
गंगा यमुना कांशी वन जंगल, हर घट में हर नेड़े॥
पर जो उसको ढूंड न जावत, औझड़ फिरत अन्धेरे ॥३॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सांच त्याग मिथ्या जिन पकड़ी अति उन दुःख सहेड़े ।
एक मात्र जो प्रभु को सिमरे, हम तिस के हैं चेरे ॥ ४ ॥

—o—

रागनी भैरवी] भजन १०६ [ताल झप

प्रभु के मित्र के यश गावें, पिता वोही हमारा है ।
वही है पूज्य हम सब का, वही सब का सहारा है ॥ १ ॥
न महिमा उसकी का पाया, किसी ने वार पारा है ।
सकल ब्रह्मांड को रच कर, उसी ने एक धारा है ॥ २ ॥
जो हो चुका होगा, उसी का सब पसारा है ।
सभी के वस रहा अन्तर, सभी से वह न्यारा है ॥ ३ ॥
वह ज्योतिमय ही केवल है, तिमर न अन्धकारा है ।
उसी के दान से सूरज, चमकता चन्द्र तारा है ॥ ४ ॥
वही है ज्ञान का सागर, उसी में सत्य सारा है ।
ज्ञानी सत्यवादी का वही मित्र प्यारा है ॥ ५ ॥
पवित्र शुद्ध है निर्मल, वही शुद्धि करने हारा है ।
धर्म्म का बल उसी है, वही बल का भण्डारा है ॥ ६ ॥
वह करुणा रूप है ...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अधम अति पापियों को भी, भरोसा उसपै भारा है ॥ ७ ॥
गंवाया जन्म को निष्फल, उसे जिसने विसारा है ।
लगा चरनन में उस के जो, जन्म उसने सम्भारा है ॥ ८ ॥
भुलावें काहे हम उसको, जो त्राता हम सभों का है ।
भजो निश दिन वही प्यारे, कि जिसका सब पसारा है ॥ ९ ॥

—:०:—

१०७ भजन

प्रभु प्रीतम जिसने बिसारा, हाय जन्म अमोल बिगाड़ा ।
धन दौलत माल खज़ाना, यह तो अन्त को होवे बिगाना ।
सत धर्म को नाहीं बिचारा, भूला फिरता है मुग्ध गँवारा ।
झूठे मोह में तन मन दीना, नाहीं भजन प्रभु का कीना ।
पुत्र पौत्र और परिवारा, कोई सङ्ग न चलनहारा ।
भ्रातृभाव न प्रीति परस्पर, कपट छल है भरा मन अन्दर ।
कुछ भी किया न पर उपकारा खोटे कर्मों का लिया इजारा ।
तेरा जोबन और जवानी, ढलती जावे ज्यों बरफ का पानी ।
मीठी नींद में पांव पसारा चिड़ियां चुग गईं खेत तुम्हारा ॥
धोखे बाजी के दाम फैलाए, विषय भोग के चैन उड़ाए ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुण्यदान से रहा है न्यारा, ऐसे पुरुष को है धिक्कारा ।
जो २ शास्त्र वेद बखानें, मूर्ख उल्टा हो उसको जानें ।
समय खोया है खेल में सारा, संत संग से कीना किनारा ।
ऐसे ज्ञान पे तू अभिमानी, टीला रेत का ज्यों बीच पानी ।
क्यों न गुण और कर्म सुधारा, मानुष्य जन्म न हो बारम्बारा ।
तेरे कर्म हैं नाव समान; जिस में बैठा है तू अनजान ।
गहरी नदिया है दूर किनारा कोई दम में तू डूबन हारा ।
'गंगाराम' तू जाग रे भाई, कुछ तो करले नेक कमाई ।
संग जाय नहीं सुत दारा, सत धर्म ही देगा सहारा ॥

रागनी भभास) १०८ भजन (३ ताल

टेक–तू कुछ कर उपकार जगत में, तू कुछ कर उपकार ।
मानुष्य जन्म अमोलक तुझ को, मिले न बारम्बारा ॥१॥
कर्म उपासना ज्ञान कांड को, कर्म अपकर्म विचार ।
जगत में सुख दुःख प्राप्त होवे, सब को पूर्व कर्म अनुसार ।
सुकृत अपना कर धन संचय, यह वस्तु है सार ।
देश उन्नति कर पितृ सेवा, गुणियन का सत्कार ॥ २ ॥
शक्ति संतोष परस्वार्थ रत, दया क्षमा उर धार ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भूखे को भोजन प्यासे को पानी, दीजे यथा अधिकार ॥ ४ ॥
कठिन समय में होवेंगे साथी तेरे श्रेष्ठ आचार ।
तांते इनका कर तु संग्रह, सुख हो सर्व प्रकार ॥ ५ ॥
होवे अज्ञानी कहे अज्ञासम, तिस को है धिक्कार ।
है कर्तव्य आवश्यक 'अमीचन्द' जो कहे षट चार ॥ ६ ॥

राग आसावरी १०९ भजन

टेक—जप जाप प्रभु का कभी न भूल ।
नहीं आदि अन्त है जिसका मूल । जप जाप०
दो दिन की गुजरान जगत में ।
काहे को इस पर रहा तू फूल । जप जाप०
सदा 'पेकस' कर याद उसी को ।
जो प्रभु दीन दयाल ।
घट २ का है अन्तर्यामी ।
दूर करे दुःख ताप सूल । जप जाप०

रागनी कौसिया] ११० भजन [ताल ३

टेक—जन्म जात ज्यों रेल समझकर, जन्म जात ज्यों रेल ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सांधी सड़क बनी दुःख सुख की, काल कराल ढकेल। समझ०
बरस २ का है स्टेशन मास २ ज्यों मील।
रात दिन दोऊ इञ्जन खेंचत, ना घोड़ा ना बैल॥ समझ०
नर शरीर उत्तम है गाड़ी, चलें छबीले छैल।
परम ज्योति सोई लालटेन है, बिन बाती बिन तेल॥ समझ०
ओं शब्द होत निसवासर, ज्यों लांग्रत कुल शैल।
नाड़ तार की खबर देत है, दशो दिशा रही फैल॥ समझ०
काहू ने टिकट लिया सुर पुर का, काहू ने यमपुर गैल।
'विश्वानन्द' रामकृल धारी, देखत है सब सैल॥ समझ०

राग कौंसिया] १११ भजन [३ ताल

जिस गाड़ी में जाना तुझ को इक पल छिन में वह आती है
कुछ देर नहीं बांधो बिस्तर, घंटी उपदेश सुनाती है॥ १
करे शंट और इंजन गरजे है, सुन २ जिया घर २ लरजे है।
कर तरक वतन उस देश चले, जिससे आती नहीं पाती है।
इक उतरी आन स्वारी है, एक चलने की कर रही त्यारी है।
दुनिया एक अजब स्टेशन है, जहां रेल चले दिन राती है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिसे जिस दरजे में जाना है, वैसा महसूल चुकाना है।
यहां टिकट ही देखे जाते हैं, नहीं पूछते कौन सी जाती है।
यहां घूमते चोर उचक्के हैं, जो दाव घात के पक्के हैं।
कोई गांठ कतर लेजाता है, कोई करता आत्मघाती है॥
जब होती रेल रवाना है, तब छूटत खेश बगाना है।
रो २ के पीछे देखे है, गाड़ी से पाकर भाती है।
जो ताज और तख्त का वाली, है अब जाता हाथ से खाली है
जो कुनबे का अभिमानी है अब सङ्ग न उसके साथी है।
कहो क्यालायासङ्ग तोश तू है, तेरा जिस पर इतना भरोसा है।
खानपान का संगसमान नहीं, लगी भूख और प्यास सताती है।
यदि कितना ही धन जोड़ेगा, उसे अन्त को इक दिन छोड़ेगा।
संग धर्म की बिलटी जायेंगी, और वस्तु संग नहीं जाती है।
क्यों लंबा पांव पसारा है, चन्द मिन्ट का यहां तो गुज़ारा है।
क्यों लड़े है साथ मुसाफिरों के तू अमीचन्द बड़ा उत्पाती है।

११२ भजन

प्रथम जगदीश को कीजे नमस्ते।
कि जिस के गर्भ में ब्रह्माण्ड वस्ते॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वही सूक्ष्म सभी जग में रमा है।
न जिसके अन्त आदि का पता है ॥
कृपा कर ज्ञान दीन्हा वेद द्वारा।
जिसे सृष्टि के आदि में प्रचारा ॥
बताये चार आश्रम उस में हम को।
मिटाते वे अविद्या रूप तम को ॥
प्रथम ब्रह्मचर्य आश्रम नाम धारी।
हुई जिससे गुरुकुल की तयारी ॥
करो दृढ़ व्रत नियम आज्ञा विचारो,
बताये ज्यों सभी चित मांहि धारो ॥
प्रथम कर शौच तन मन को सुधारो।
हृदय संतोष से अपना संवारो।
सहो सब द्वंद तप को धार लीजो।
परिश्रम वेदों के पढ़ने में कीजो ॥
करो सर्वस्व सब ईश्वर के अर्पण।
नियम ये पांच धारो नित्य निज मन ॥
न दुख दो चोरी त्यागो सत्य भाषो।
घृणा विषयों से रक्खो वीर्य राखो ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यही यम पांच मनु जी ने बताये।
सदा ब्रह्मचारी चित प्रभु में लगाये॥
रखो नित याद उपदेशों को मन में।
कहे आचार्य जो ब्रत वाले दिन में॥

---

११३ भजन

टेक—वेदों के पढ़ने का, सब को अधिकार

ईश्वर ने सभी बताया, ये मन्त्र तुमे दिखलाया।
जरा तुम करो विचार। वेदों के०

अध्याय छबीस में भाई, देखो मन्त्र दूसरा जाई।
यजुर्वेद रहा पुकार। वेदों के०

जो मनुष्य मात्र हैं सारे, ईश्वर के पुत्र प्यारे।
हक सब के इकसार। वेदों के०

अगिन जल वायु आदि, ईश्वर ने सभी बता दी।
एक के नहीं अख़तियार। वेदों के०

दो छोड़ पक्ष को भ्राता, 'गंगा सहाय' तुमे सुनाता।
वेदों का करो प्रचार। वेदो के०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

११४ भजन

टेक—झूठा विश्वास, गंगा मुक्ति का।

नहीं जल से मुक्ति पावो, क्यों बृथा उमर गंवावो।
मनु जी कहते खास। गंगा से०

जल से शरीर को मानो, और सत्य से शुद्ध मन जानो।
पाप नहीं होते नाश। गंगा से०

विद्या तप से शुद्ध आत्मा, यों कहते सबी महात्मा।
छोड़ दो मिथ्या आश। गंगा से

बुद्धि शुद्धि ज्ञान से भाई, ऋषि महर्षि रहे सुनाई।
क्रिया यही प्रकाश। गंगा से०

नहीं पाप छुटेंगे प्यारे, 'गंगा सहाय' कहे पुकारे।
करो चाहे गंगा वास। गंगा से०

भजन ११५

टेक—धर्म के चारों लक्षण, लीजो पहचान।

महाराज मनु बतलाते, सब को उपदेश सुनाते।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुनो मित्रो दे कान। धर्म के० ॥ १ ॥
प्रथम वेदों को जानो दूजे स्मृति मानो।
तभी होवेगा काम। धर्म के० ॥ २ ॥
ऋषियों का मार्ग भाई, तीजा सदाचार कहूं गाई।
चलो उस पै दे ध्यान। धर्म के० ॥ ३ ॥
चौथे संतोष को धारो, सत्य विद्या धर्म बिचारो।
जभी हो आत्म ज्ञान। धर्म के० ॥ ४ ॥
सब ऋषि मुनी यों गावें, 'गंगासहायें' तुम्हें सुनावें।
धर्म खास निशान। धर्म के० ॥ ५ ॥

राग सागर] ११६ भजन [दादरा ताल

परम पिता के प्रीति से, गावो सदा।
परम पिता के जग रचिता के प्रीति से, यश गावो सदा।
हमको इन्सान किया, अशरफे जहान किया, पैदा जो समान किया, सब हम को दान किया।
है हैरानी, पर यह प्राणी, करें नादानी, कुछ न मानी,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राह हक्कानी छोड़ दिया ।

ऐसी मत कर, अय ! नादान नर, निश दिन हर पर हित से चित धर, गावो सदा ।

दोहा—वह दाता कर्तार है, सब का पालन हार ।
पर हम कुछ नहीं जानते, मूर्ख सख्त गंवार ॥

दिल में विचार करो, पर उपकार करो, ईश्वर से प्यार करो, 'खस्ता' दिल शाद करो । गाओ० ३

रागनी सारंग बृन्दाबनी) ११७ भजन (३ ताल

टेक—तुम शरण प्रभु की आओ ।

धीरज मन में अपने धारो, मन पञ्चल ठहराओ ।
सारे जगत् का जो स्वामी है, उस से प्रीति लगाओ ॥१॥
एक उसी पर निश्चय राखो, मत मन को भरमाओ ।
हृदय नगर में करो खोजना, मत कहीं आओ जाओ ॥ २ ॥
काम क्रोध और लोभ मोह में, चित मत कभी फंसाओ ।
सच्चे भक्त बनो ईश्वर के, आर्य्यत्व को पाओ ॥ ३ ॥
विषय भोग से बचे रहो सदा, इन्द्रियें वश में लाओ ॥ ४ ॥
सत्यमानी सत्यकारी होकर, सत्य वक्ता बने जाओ ॥ ५ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भजन ११८

[आर्य्यवर्त्त की भयानक हालत पर गीत)

उठो नींद से अब सिहर होगई,
उठो रात सारी बसर होगई।
उठो कुल सभा मुन्तशिर होगई,
हुआ सब इधर की उधर होगई।
बगल में नसीबे को भी लेके सोये,
अजल को भी तुम आज दम देके सोये।
हुई सुबह और जानवर सारे जागे,
जनो मर्द हैं घर व घर सारे जागे।
शरारत के रसिया वशर सारे जागे,
उठे वह भी जो रात भर सारी जागे।
फ़कत ख़ुआब में बे खबर तुंम पड़े हो।
अजब नींद की नींद में तुम पड़े हो,
उठो अय बज़ुर्गों की पत खोने वालो,
उठो बाप दादा की मत खोने वालो,
उठो अपनी अक़्ल और सुरत खोने वालो,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उठो अपनी बाक़ी की रात खोने वालो।
ज़रा ख़्वाब ग़फ़लत से आंखें तो खोलो,
बही आबरू अब तो मुंह अपना धोलो।
वह चमका है नूरे सहर कुल जहां में,
नई रौशनी फैली है हर मकां में।
शबे ग़म ने चादर स्याह है उतारी,
खुली ग़फ़लतों से न आंखें तुम्हारी।
कमाऊ कमाई पय चलते हुए हैं,
मखट्टू पड़े हाथ मलते हुए हैं,
सब आरायशें लुट चुकी हैं तुम्हारी,
बहारें हुईं ऐश की तुम पै भारी।
यह चलने लगी इज्ज़तों को स्वारी।
बस अब है जनाज़ा निकलने की बारी,
गजब उमर सोने में तुमने गवांदी।
उठो बन गई और क़ौमों की चांदी,
लुटेरों ने लूटा है घर जागो जागो।
चला जाता है मालोज़र जागो जागो,
वह बाबा की जाती है ज़र जागो जागो,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह भाव। गई दर बदर सारी जागो
वह कुनबे की इज्जत चली अब तो उठो,
वह दौलत व हशमत चली अब तो उठो
तरक्की का दिन सारा ढलने को आया,
तनज्जुल ने यह दिन है तुमको दिखाया,
कीया तुम पय अदबार ने अपना साया,
मगर गफ़लतों ने न तुम को जगाया।
ज़रा अपनी करवट बदल कर तो देखो।
पड़े ही पड़े आंखें मल कर तो देखो,
ज़माने की रंगत बदलने लगी है,
हवा और आलम में चलने लगी है,
हर एक कौम गिर कर सम्भलने लगी है,
मगर आप की कौम नीचे पड़ी है।
बड़े बनेत जाते हैं छोटे तुम्हारे,
नसीबे हैं किस दरजा खोटे तुम्हारे।

भजन ११६

वृथा क्यों जन्म खोता है अरे मतिमन्द नर तन का।
लगा रह ध्यान में उसके जो स्वामी है सभी जन का॥ १॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यहीं के संगी साथी हैं यहीं के मित्र हैं तेरे।
न भाई बन्धु सुत दारा रिशवत भी चले धन का ॥ २ ॥
यही संसार की गति है कोई आता कोई जाता।
जो करना हो सो कर ले तू रहे न पछताव फिर मन का ॥३॥
ये वसुधा के भये स्वामी हज़ारों राजा महाराजा।
कहां यादव कहां पाण्डव कहां परिवार रावण का ॥ ४ ॥
ये बन्धन से निकलने का करो कुछ यत्न ऐ प्यारे।
करो उपकार तन मन से यही कारण मनुष्यों का ॥ ५ ॥

राग कमाल) १२० भजन (३ ताल

करनी का ढंग निराला है, करनी का ढंग निराला है ॥ १ ॥
कोई दिगम्बर कोई पिताम्बैर, पहने शाल दुशाला है ॥ २ ॥
कोई भूपत है कोई सैनपति, कोई गडरिया ग्वाला है ॥ ३ ॥
कोई अन्धा कोई लूला लङ्गड़ा कोई गोरा कोई काला है॥ ४ ॥
कोई भूखा प्यासा व्याकुल है, कोई मद पी पी मतवाला है ॥५॥
कोई मदकी भंगी चरसी है कोई पीवे प्रेम प्याला है ॥ ६ ॥
जब तक फिरे न मँनै का मनका, क्या तसवी क्या माला है ॥७॥
निसादिन भजे जो हरि को 'अमींचन्द' सोई करनी वाला है ॥८॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राग ज़िला) १२१ भजन (ताल तीन

सुनो तुम अब वैदिक गाथा ।
जिस से भाईयो जन्म मरण सब है कट जाता ।
यजु ऋग साम अथर्व चारों, वेद इनका है नाम प्यारे ।
इनमें जो कुछ लिखा है मैं तुमको बतलाता ॥ सुनो तुम०
प्रातः और सायं सब भाई करो सब सन्ध्या दिल लाई ।
ब्रह्मयज्ञ इसका नाम यह वेद है फरमाता ॥ सुनो०
दूसरे हवन यज्ञ प्यारे, देवयज्ञ कहते जिसे सारे ।
अग्नि में जो हवन करे, आकाश में पहुंचाता ॥ सुनो०
पितृयज्ञ नित्य कर्म तेरा, मान ले तू कहना मेरा ।
मात पिता की सेवा करता आनन्द वह पाता ॥ सुनो०
अतिथि जो साधु सन्यासी, नहीं जो एक देश वासी ।
इनका कर सत्कार, चौथे अतिथि यज्ञ कहलाता ॥ सुनो०
अन्न जीवन को गर देवे, पांचवां यज्ञ जो कर लेवे ।
भूत यज्ञ है इसका नाम, तू काहे बिसराता ॥ सुनो०
करो नित्य पांचों यज्ञ भाई, कि जिससे मुक्ति हो जाई ।
'केवल' यही वह पाले, कि मोक्ष मार्ग कहलाता ॥ सुनो०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१२२ भजन

टेक—ऊँकार भनो अहंकार तजो,
अभय न समझो जो भई सो भई।
अभिमान गुमान तजो मन से,
मगरूर रहो मत योवन से,
उपकार करो तन मन धन से,
जो गई सो गई, जो रही सो रही। ऊँकार०
दुःख देख दुखन पर क्षोभ करो,
और दीनन से मत विरोध करो।
पर धन तिरिया देख न मोह करो,
अभी न सुधरो जो भई सो भई। ओंकार०
श्रद्धा सत्कार के फूल चुनो,
पाखण्ड घमण्ड के फूल खनो।
उपदेश सुनो तुम आर्य बनो,
अब लों वश बेल भई सो भई। ओंकार०
धन धाम को पाय न मान करो,
अज्ञान तजो और ज्ञान करो।
यह बिनती 'हजारी' की मान करो,
जो बीती बिन अर्थ गई सो गई। ऊँकार०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१२३ भजन

प्रभु को छोड़ कर तूने, लगन किस से लगाई है।
हुआ नादान क्या ऐसा, समझ क्यों बेच खोई है।
जो है सब सृष्टि का पालक, भुलाया उसको तैं मूर्ख।
बुतों को पूज कर प्यारे नफ़ा क्या तूने पाई है।
जो है हर वस्तु में व्यापक, निराकार ईश अविनाशी।
बना कर जड़ मूरतें, मन्दिर जा बिठाई है।
वह है मौजूद सब घट में, हमेशा देखता सब को।
बदी नेकी का फल देता, वह ईश्वर सब का न्यायी है।
नहीं वह जन्म मृत्यु के, कभी बन्धन में आता है।
बताकर जन्म क्यों उस को बृथा तोहमत लगाई है।
छुटा नहीं मैल है मन का नहाया लाख त्रिवेनी।
लिखाया नाम सन्तों में, भरी दिल में खोटाई है।
राम और कृष्ण सत्पुरुषों की, क्यों निन्दा करे मूरख।
बनाकर स्वांग क्यों तैने, हंसी जग में कराई है।
हज़ारों दीन और दुखिया, न पाते एक टुकड़ा तक।
तैं देदे दान दुष्टों को बृथा दौलत लुटाई है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज़रा अब होश में आ जा; उठा गफ़लत के परदे को।
भजन 'बलदेव' कर उसका, जो सबका खुशनुमाई है।

कली १२४ भजन

टेक—आत्मा में गंग बहे क्यों नहीं मन न्हावे।

इन्द्रियों को जीत प्रीति ईश्वर से लावे।
पावे कहां परम धाम जो इत उत धावे।
दीनों को दे ले दान सज्जनों का करले मान।
तज दे अभिमान प्राणी अन्त काल खावे।
सत्य का तु कर व्यवहार, जन्म को तू ले सुधार।
धूर्त्तता का डाल जाल, पाप क्यों कमावे।
भाइ बन्धु मित्र यार, बन में तोहे आवें डार।
छूट जावे सब वारवार, एक धर्म्म साथ जावे।
'नवलसिंह' बारबार, ईश्वर ही को तु पुकार।
मनुष्य का शरीर, फेर हाथ नहीं आवे।

---

१२५ भजन

अरे मतिमन्द अज्ञानी, जन्म हरि भक्ति बिन खोया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिगाड़ा काम सब तूने, रहा अज्ञान में साया।
पड़ा परदा जहालत का, अकल का आंखों पै रे
सुधा को छोड़ करें मूर्ख जहर का बीज क्यों बोया।
क्रोध और काम के वश हो, जन्म बरबाद कर देना।
बिमुख निज ईश से होकर, कपट छल को जरा त्यागो॥ अ०
भलाई कीजिये सब से, तो तेरा भी भला होगा॥ अरे०
समझ 'बलदेव' निज मन में, न तेरा कोई यहां साथी।
रहा तू नींद में गाफिल, न उठ कर हाथ मुंह धोया॥ अरे०

राग आसा १२५ भजन

ईश्वर का जप जाप रे मन वृथा काहे को जन्म गनावे।
दीनानाथ दयालु स्वामी, प्रगट सब जा आप रे।
सर्वव्यापक की पूजा कर, दूर होवें दुःख ताप रे।
कुछ न बने पत्थर पूजन से, ईश्वर रखा जिस को यापरे॥
छोड़ असत् को सत् ग्रहण कर, नष्ट होवे सब पाप रे॥
खुश होकर प्रभु विनती सुनले, 'बेकस' करे विरलाप रे॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागनी पूर्वोक्त १२७ भजन ताल धमार

कीकन दान रङावां, सैय्यो नी में मूल न कत्या। कीकन०

नहीं सां मैं भुक्खी नहीं सां मैं नंगी, पर नहीं चोली चुन्नी रंगी

हुन बैठी शर्मावां, सैय्यो नी मैं मूल न कत्या ॥ १ ॥

पिछला कत्या कढ हंडाया, अग्गों कतने नूं हाथ न लाया

हुन बैठी पछतावां, सैय्यो नी मैं मूल न कत्या ॥ २ ॥

अमींचन्द ब्राह्मण लैन नू आया, रोन लगा मेरा मां प्यो जाया

कीकन सौहरे जावां, सय्यो नी मैं मूल न कत्या ॥ ३ ॥

कन्त सुचज्जा है मैं हां कुचज्जी उसदे कज्यां मैं जावां कज्जी

जे कन्ते मन भावां, सैय्यो नी मैं मूल न कत्या ॥ ४ ॥

भैरवी ताल] १२८ भजन [प्रातः

प्रभु चरणन में आजा तू, वोही है तेरा हितकारी ।

समय अपना गंवा मत तू, न रोवे अन्त की वारी ॥ १ ॥

कुटुम्बी और सम्बन्धि, अटारी और फुलवाड़ी ।

सभी ही पीछे रहजायें, चलन को होवे जब त्यारी ॥ २ ॥

यह कोमल देह जिसको तू, सजाता रात दिन रहता ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न जाय साथ रह जावे, भस्म की ढेर हो सारी ॥ ३ ॥
यह मिथ्या ज्ञान चतुराई, जिससे जगत को छजता ।
न आगे काम यह आवे, प्रभु है परम न्यायकारी ॥ ४ ॥
समझ ले सोच ले सब कुछ कमाई धर्म की करले ।
धर्म्म है आज्ञा ईश्वर की, यही है अन्त सहकारी ॥ ५ ॥
भले पुरुषों की संगत से, आचारों को सुधारो तुम ।
ऋषि आप्त की सेवा में, लेओ तुम सुखकारी ॥ ६ ॥
दमन सब इन्द्रियां करलो, रहे मन सर्वदा वश में ।
माता, भैना पुत्रीवत्, सदा देखो हर इक नारी ॥ ७ ॥
द्वेष औरं विरोध से भागा, सभों से मित्रवत बरता ।
सकल पर कृपा दृष्टि कर, बनो सब के तुम उपकारी ॥ ८ ॥
यह अद्भुत सृष्टि में प्रभु की, विचारो देख कर महिमा ।
पढ़ो तुम विद्या उसकी, वह विद्या है परम प्यारी ॥ ९ ॥
उसी का नाम दिन २ लो, उसी के ध्यान में रहते ।
पुराणों को तजो प्यारे, वह देवेगा तुम्हें तारी ॥ १० ॥

जय २ वन्ति] १२९ भजन

प्रीति करो हरि सों मन मेरे ।
जिन २ प्रीति करी हरि पद से,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तिन के दुःख दारिद्र कटे रे। प्रीती० ॥ १ ॥
हरि सिमरत आनन्द होते अति,
स्वप्न क्लेश न आवत नेड़े प्रीती० ॥ २ ॥
काम क्रोध मद लोभ सकल तज,
हरि के चरण में प्रीती करो रे। प्रीती० ३ ॥ ॥
निर्विकार निर्वैर निरञ्जन,
अलख अरूप नाम जिन के रे। प्रीती ॥ ४ ॥
वोही पिता "बलदेव सिंह" के,
उनके चरण के हैं हम चेरे।
प्रीती करो हरि से मन मेरे।

---

१३० भजन

शरण प्रभु की आवो रे यही समा है प्यारे।
मत करो फ़रेब और झूठ को त्यागो, सत्य में चित लगावोरे।
उदय हुआ ओ३म् नाम का भाइ, आवो दर्शन पावो रे ॥
पान करो इस अमृत फल को, उत्तम पदवी पावो रे।
हरि की भक्ति बिना नहीं मुक्ति, दृढ़ विश्वास जमावोरे॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मनुष्य जन्म अमोलक है ये वृथा न इसको गवावो रे।
करलो नाम हरि का सिमरण, अन्तको पछतावो रे।
धन्य दया जो सबको पाले, मत इसको विसरावो रे।
छोटे बड़े सब मिलकर "खुशी" से यश ईश्वर के गावो रे।

कली १३१ भजन

टेक—हरि का ध्यान लगावो समाजा, हरि का ध्यान लगावो
विषय पाप सब मन से त्यागो, प्राण पवन ठहरावो।
सतचित आनन्द स्वरूप में, प्रेम मगन होजावो॥ सम०
ईश्वर के गुण चितवन करके, वैसा ही चित्त बनावो।
वही बर्ताव करो जग भीतर, तब आनन्दपद पावो॥ सम०
मन का मनका सत्य का धागा ज्ञान के चक्र घुमावो।
ओं शब्द को अर्थ सहित भज, इत उत क्यों भ्रमावो॥ सम०
घर को छोड़ बाहर कहां जावो, क्यों मन को भटकावो।
नवलसिंह कहें घटके मठमें, हरि सों प्रीती लगावो॥ सम०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागनी भैरवी) १३२ भजन (ताल तीन

आर्य्य भूमि में समाजिक कल्प बृक्ष लगा गए।
उचित वक्ता सत्यवादी सत्य धर्म्म बता गए॥ १ ॥
हो गए थे लोप चारों वेद ही इस देश से।
कर के देशाटन महाशय उनको फिर फैला गए॥ २ ॥
देश हितैषी वह महार्षि दयानन्द सरस्वती।
अपने शुभ उद्योग से वह मोक्ष पद को पा गए॥ ३ ॥
न्याय युक्ति है टपकती उन के सत्य सत्यार्थ से।
भूल न जायो कदापि जो तुम्हें समझा गए॥ ४ ॥
आज जो उत्सव हुआ यह उनका ही उपकार है।
दूर दूर से आर्य्य गण मिल इस नगर में आ गए॥ ५ ॥
सैकड़ों विद्वान् कवी जन उनकी स्तुति लिख चुके।
तुझ से गायक कितने अभीचन्द्र श्रेष्ठ भजन सुना गए।

भजन १३३ पहाड़ी

टेक—धन जन योवन सङ्ग न जावे, यह सब पीछे रह जावें।
रैन गवाई देह निसारे, खा कर दिवस गवावे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानुष जन्म अकार्थ खोया, मूर्ख समझ न आवे ॥ १ ॥
धन कारण जो होवे दीवना चारों दिशा को धावे ।
राम नाम कभी न सिमरे, सो अन्ते पछतावे ॥ २ ॥
जो ठाकुर सब को प्रतिपाले, सकल उपाय बनावे ।
नमस्कार उन्हें बारम्बारा, उन्हीं की महिमा गावें ॥ ३ ॥
प्रीति सहित मिल आओ साधो ईश्वर के गुण गावें ।
जिस के किये सदा शुभ होवे, तिसको काहे भुलावें ॥ ४ ॥

—०—

खमाच] १३४ भजन [ताल मुगयी

गाफिल समय क्यों खो रहा, उठ देख क्या है हो रहा ।
किस नींद में तू सोरहा, कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥
ले सुबह से ता शाम है, विषयन में तेरा काम है ।
और होरहा बदनाम है । कुछ ईश० ॥
लालच से तुझ को प्यार है, और झूठ का व्योहार है ।
दिन रात यही कार है । कुछ ईश० ॥
धन का तुझे अभिमान है, लिया धर्म्म इस को मान है ।
उस में ही तू गलतान है । कुछ ईश० ॥
कहीं मित्र गूढ़ बनावे तू, कहीं वैर को ही कमावे तू ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लाखों फरेब बनावे तु, कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥
तेरा जो महल और बाडी है, सामान लाख हज़ारी है।
आखिर को यहीं खाक सारी है, कुछ ईशं का भी ध्यान कर ॥
यह उमर बे बुनियाद है, नहीं मौत तुझको याद है।
गफ़लत में अब तु शाद है कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥
सज्जन को दुशमन जानता, सत्य धर्म को नहीं मानता।
ऐसी हुई अज्ञानता, कुछ ईश का भी ध्यान कर ॥
जान और की बरबाद है, तेरा मज़ा और स्वाद है।
सुनता नहीं फ़रयाद है, कुछ ईशका भी ध्यान कर।
खावे शराब कबाब तू, रक्खे उमीदे सवाब तू।
आखिर को देगा हिसाब तू, कुछ ईश का भी ध्यान कर।
काफिर बना आ द से, प्रीति करी पाखण्ड से।
हरगिज़ न खौफ है दण्ड से, कुछ ईश का भी ध्यान कर
वेदों में जो विस्तार है, आर्य्य करे प्रचार है।
करता न तु स्वीकार है, कुछ ईशं का भी ध्यान कर।
मूर्ख तुझे भरमावे है, सब गप्प शप्प सुनवावे हैं।
खुद को ब्रह्म बतावे है, कुछ ईश का भी ध्यान कर।
भक्ति को जो सिखलाते हैं वह और भी जतलाते हैं।
ईश्वर को जड़ बतलाते हैं, कुछ ईश का भी ध्यान कर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत संग से तुझ को आर है, नहीं सूझ नाही सार है।
तू भूला फिरे गंवार है, कुछ ईश का भी ध्यान कर।
नित्य कर्म संध्या छोड़ कर, पत्थर से माथा जोड़ कर।
क्या होगा माथा फोड़ कर, कुछ ईश का भी ध्यान कर।
यह देह न बारम्बार है, क्यों करता नहीं सुधार है।
आलस्य तेरी पै धिक्कार है, कुछ ईश का भी ध्यान कर।
आर्य धर्म्म प्रकाश है, करता पाखण्ड को नाश है।
सत पुरुषों को विश्वास है, कुछ ईश का भी ध्यान कर।
आर्य्य समाज की ले शरण, सुधरे तेरा जीवन मरण।
देदे इसमें मन तन और धन, कुछ ईश का भी ध्यान कर।
'धर्म' की विनय को जानकर, और सत् धर्म्म को मान कर।
सत् चित् आनन्द का ज्ञान कर, कुछ ईश का भी ध्यान कर।

दोहा

वेदों को छोड़ कर हिन्दोस्तान ने।
हैं दुख उठाये इनको करूं क्या बयान मैं।
आखिर को हाले ज़ार पै खा करके उनके रहम।
ईश्वर ने भेजा स्वामी दयानन्द जहान में।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागधनासरी) १३५ भजन (ताल ३

नख बिन कटा देखे, जोगी कनफटा देखे,
सीस धारी जटा देखे, धूर लावे तन में। १।
मुनि अनबोल देखे, सरी बड़े अचोल देखे,
करत किलोल देखे, बन खराडी बन में। २।
बीर और शूर देखे, माया भरपूर देखे,
जन्म ही के कूड़ देखे, फूल रहे धन में। ३।
आदि अन्त सुखी देखे, जन्म ही के दुखी देखे।
ऐसा कोऊ न देखो, जा को लोभ नहीं मन में। ४।

---

१३६ भजन

बन जाना बन जाना मेरे भाई आर्य्य बन जाना।
(१) हिन्दुआं दे विच दुःख बहुतेरे,
सत् धर्म्म विच करन बखेड़े,
अज्ञान दे विच लाए डेरे,
बन जाना बन जाना मेरे भाई आर्य्य बन जाना।
(२) बाली उमर में ब्याह रचावें,
गंद बोलन ते न शरमावें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन के हुकुम न हरगिज़ भुलाइया । व६०

रागनी भैरवी भजन १३७ (ताल तीन

झूठ को जिसने त्याग दिया और सत्य को मित्र बनाया
मोक्ष का मारग उसी ने निश्चय मृत्यु लोक में पाया ॥ १ ॥
दुःखों का सागर उसने पकड़ा बुद्धि हीन कहाया ।
जगत् पिता की जगह में जिसने और को सीस नवाया ॥२॥
दुःख और दर्द क्लेश कोई भी उसके पास न आवे,
एकाग्र जो मन को करके शरण प्रभु की आया ॥३॥
अपनी २ जिन चीजों को कहकर जान है देता,
मूर्ख अपने मन में समझें तु साथ भी या कुछ लाया । ५
सारे पदार्थ पडे रहेंगे कोई नें साथ चलेगा,
खाली हाथ जायगा यहां से खाली हाथ था आया ॥६॥
जीते जी के सब साथी हैं मरे पर काम न आवें,
बेटा बेटी साला सुसरा जोरू चाचा ताया । ६ ।
केवल अति आनन्द में निशदिन रहता है मन मेरा,
जगत् पिता से निश्चय करके जब से नेह लगाया । ७ ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गंदा सिठनियां डोली सुनावें,
बनजाना बनजाना मेरे भाई आर्य्य बन जाना
(३) छोटी उमर में रांड बिठावें
दर दर उसको यह भटकावें
इन गौश्रन पर तरस न खावें
बनजाना बनजाना मेरे भाई आर्य्य बनजाना
(४) उनकी आहों से दुःख उठावें
कौम को नरक का अधिकारी बनावें।
बाल विवाह का यह फायदा उठावें
बनजाना बनजाना मेरे भाई आर्य्य बन जाना
(५) वेदों की यह करते हानि
करते हैं अपनी मन मानि
पुराणों मे न करें गिलानी
बनजाना २ मेरे भाई आर्य्य बनजाना
(६) झूठी गाथा हमको सुनावें
ऋषि मुनियों पर कलंक लगावें
कृष्णचंदर को भीख मगावें
बनजाना २ मेरे भाई आर्य्य बनजाना
(७) भैरव को यह शराब पिलावें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बकरों की वहां भेट चढ़ावें।

जगत नाथ का जूठ यह खावें,

बनजाना बनजाना मेरे भाई आर्य्य बन जाना ॥

(८) स्वामी दयानन्द पर उपकारी,

वेद प्रचार में जान जिस वारी।

चिरंजी लाल भी थे उपकारी,

बजानना बनजाना मेरे भाई आर्य्य बनजाना ॥

(९) लेखराम थे बड़े ब्रजकारी

धर्म्म के लिये जिस जान वारी।

'आर्य्य' कहे सुनलो नर नारी,

बनजाना बनजाना मेरे भाई आर्य्य बनजाना ॥

राग जिला १३६ भजन

टेक—सनातन वेदो की बानी,

जो होवे प्रचलित रहे न मूर्ख अज्ञानी, सनातन०

(१) गुरुकुल पूर्ण कर दीजे, वेद की शिक्षा लेलीजे,

उठो भारत वासियो गुरुकुल करो तैयार।

परस्वार्थ का वक्त है समय न बारम्बार

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सभी मिल कर कार्य्य को कीजे,
सफल हो जावे जिन्दगानी। सनातन० ॥
(२) ऋषि मुनियों की आज्ञा पालो,
इस अमृत सागर में नहालो।
तीन ताप मिट जावें निश्चय करलो जान,
ऋषि पदवी को पायेंगे ऋषियों की संतान।
ब्रह्मचारी बन दिखलाओ,
रहे न कोई भी अभिमानी। सनातन० ॥
(३) नष्ट आश्रम हुए सारे,
कष्ट दुःख सिर पै पड़े भारे।
ब्रह्मचर्य्य बुन्याद है शेष आश्रम दीवार,
बिना ब्रह्मचारी बने जीवन पै धिक्कार।
भेज दो गुरुकुल में संतान।
न भेजे उसकी नादानी। सनातन० ॥
(४) अगर सब आनन्द को चाहो,
वेद प्रचार को फैलाओ।
दुर्भिक्ष आदि इस लिये जो नहीं वेद प्रचार,
महाभारत का लेख है सुनिये सब संसार।
वेद प्रचार करो सारे,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बचेंगे तभी सारे प्राणी । सनातन० ॥

(५) शुकर उसका ही बजा लावें,

उसी का धन्यवाद गावें ।

विद्या पढ़ दयानन्द ने कियो जगत उपकार,

सब के प्रति उपदेश है वेद पढ़े संसार ।

इसी मतलब को गुरुकुल है,

फ़ज़ीलत जिससे हो इनसानी ॥ सनातन० ॥

(६) वेद को साङ्ग उपांग पढ़ लो,

पहिला आश्रम पूरा करलो ।

व्याकरण आदि अंग हैं न्याय आदि उपअंग,

इन सब को पढ़ कर तभी पढ़ले वेद निशंग ।

ऋषि मुनियों की सुगम रीति,

मोक्ष मार्ग में हो आसानी ॥ सनातन० ॥

(७) धर्म्म मर्य्यादा फैल जावे, ओ३म् का झंडा लहरावे

पचीस वर्ष आयु के गुरुकुल को दो दान ।

ब्राह्मण आदि सभी की पढ़े वहां संतान,

उच्च पदवी यह देश पावे ।

भारत हो देशों में मानी ॥ सनातन० ॥

(८) प्रभु जी बल हम को देओ ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२ अन्तरा

यह दुनिया कूड़ कहानी अन्त को फानी,
चित्त मत लावो चित्त मत लावो।
मत छोड़ ईश को और की शरणी जावो,
हो बान्ध कमर त्यार वेद हथ्यार पकड़ कर जावो
यही चारो दिशा में धर्म्म उपदेश सुनाओ
कुछ चित्त में सोच विचार करो,
भाई ऋषियन का आचार करो।
गुरुकुल को तुरत तैयार करो, बिगड़ी हालत को सुधार करो।
नो सोये पड़े अभिमान चादर को तान उनको जगावो
भाई जी वेदों का प्रचार खूब फैलावो॥

३ अन्तरा

मत आलस्य हिये में कर तू, धर्म्म का पकड़ दम दा है नहीं आसा
यह चल जावे जिवें पानी विच पतासा,
क्यों मरया एथे डेरा, कुछ नहीं तेरा जान मत हासा।
तजे मन्द कर्म्मों को हो ईश्वर का दासा।
तू ओड़क को पछतावेंगा, कुछ समझ तेरी नहीं आवेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अशक्ति सारी हर लेओ।
भारतवासी मिल सभी गुरुकुल करें तैयार,
यथाशक्ति धन दान दे भर देवें भण्डार।
बजे फिर वेदों का बाजा, होवे जो तेरी मेहरबानी।
सनातन वेदों की बानी।
जो होवे प्रचलित रहे न मूर्ख अज्ञानी।
भाई वेदों का प्रचार सभी फैलाओ।

रागनी पीलो) १३७ भजन (ताल कव्वाली

१ अन्तरा

जब होते भारत में पाप होती थी माफ धर्म्म की हानि।
करवाते कार्य जो मन आते प्राणी।
फड़ वेद धर्म्म की तेग सांतू ज्यों मद्य आये जब स्वामी।
तिन के आगे नें रहा कोई अभिमानी।
भाई बाल विवाह को दूर किया, भाई आलस सब काफूर किया
भाई सबके दिल में नूर किया, भाई वेदों का ज़हूर किया
भाई ऋषि मुनियन की रीत, आपस की प्रीत सब को सिखलावो
भाई वेदों का परचार खूब फैलावो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धन यौबन काम न, आवगा, बिन हरि न पार लंघावेगा ।
तज काम क्रोध को लोभ मोह को इन्द्रियां वश में लावो
वेदों का प्रचार खूब फैलावो

५ अन्तरा

भाई गफलत से तुम भागो, आलस को त्यागो
सोचो कुछ मन में
क्यों बैठे हो यह समय जाता है क्षण में
तुम सबको करो उपदेश शूद्र और वैश लिखा वेदों में
अब देरी मत तुम करो धर्म्म पालन में
वह सच्चिदानन्द कहाया है, कोई अन्त न उसदा पाया है
घटघट में आप समाया है, चौहां वेदां में एह गया है ।
कहे "कहेसाभर" करो तुम कार होकर हुश्यार मोक्ष को पावो
भाई वेदों का प्रचार खूब फैलावो ॥

---

१३८ भजन

अमोलक मनुष्य जन्म प्यारे,
शहादत दे रहे वेद चारे ।
इस दुनियां में आन के, किया न पर उपकार ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भाई विद्या हीन पशु समान कह गये ऋषि पुकार ॥

योगी जन गुणी ज्ञानी न्यारे,

अमोलक मानुष्य जन्म प्यारे।

शहादत दे रहे वेद चारे।

पर उपकार के कारने यन तन देवो लगा।

भाई भारत की सन्तान है हम हैं सभी भरा ॥

सोच कुछ मन में

क्यों बैठे हो यह समय जाता है क्षण में।

तुम सब को करो उपदेश शुद्र और वैश्य लिखा वेदों में।

अब देरी मत तुम करो धर्म्म पालन में।

वोह सच्चिदानन्द कहाया है, कोई अन्त नै उसदा पाया है।

घट २ में आप समाया है, चौहां वेदां में एह गाया है

अमोलक मानुष्य जन्म प्यारे,

शहादत दे रहे वेद चारे

आंख खोलो प्यारयो, नींद से हो होशियार।

हालत बिगड़ी देश की अब तो करो सुधार।

बुलावें धर्म्म के जयकारे,

अमोलक मानुष्य जन्म प्यारे,

शहादत दे रहे वेद चारे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(लावनी] १३९ भजन

हिन्दूपन से धोय हाथ अब परमेश्वर के दास बनो।
करो कर्म अनुकूल वेद फिर तुम आर्य्य खास बनो।

चौक १

बिना धर्म्म सुख मिले न स्वपने क्यों वृथा मन भटकावो।
दम्भ कपट छल त्याग न जब तक सीधे मार्ग पर आवो।
चाहे जितनी गंगा न्हावो गया प्रयाग चाहे नित्य जावो।
सुख की शकल देख नहीं पावो चाहे दुनियां में धावो।
सत्य धर्म में श्रद्धा लावो पीछे भोग बिलास घनो।
कर्म करो अनुकूल वेद के फिर तुम आर्य्य खास बनो।

चौक २

दश लक्षण जो कहे धर्म के मनु शास्त्र में सुखदाई।
पहला धैर्य क्षमा दूसरा दम तीजा जानो भाई।
है चौथा स्तेय पांचवां दया शौच पन वतलाई!
इन्द्रिय निग्रह छटा सातवें बुद्धि की निर्मलताई।
अष्टम विद्या नवम सत्य उर दशमें क्रोध का नाश करो,
करो कर्म अनुकूल वेद के फिर तुम आर्य्य खास बनो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चौक ३

यही धर्म है मनुष्य मात्र का इसके ऊपर चितलावो ।
क्यों दुनियां में फिरो भटकते, धन देकर धक्के खावो ॥
मन को करो पवित्र चित्त से, राग द्वेष को विसरावो ।
स्थिर हो बैठो एकान्त में, भजन करो शान्ति पावो ॥
लिव लगांओ उस परमेश्वर से जग से निपट निरास बनो ।
करो कर्म अनुकूल वेद के, फिर तुम आर्य्य खास बनो ॥

चौक ४

वैरभाव विसराय परस्पर, प्रीति करो सब नर नारी ।
करो सत्य व्यवहार जगत, उपकार वेद गावें चारी ॥
तजो कुपथ की बान कहालो, मान ज्ञानि इसमें भारी ।
करो भक्ति निष्काम छूटे जन्म मरण की बीमारी ॥
शरण गहो "बलदेव" ईश की, मत विषयन के दास बनो ।
करो कर्म अनुकूल वेद, फिर तुम आर्य्य खास बनो ॥

---

१४० भजन

विवाह आवे संस्कार दिन में, वैश्या बुला नचाते हैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म कर्म जो नष्ट करे, उसे मंगलमुखी बताते हैं ॥
संतानों को सजा २ कर, माहिफल में ले जाते हैं।
गोया बनकर गुरु आप उनको, व्यभिचार सिखाते हैं ॥
बच्चों के हाथों से रुपया, वोह रंडी को दिलवाते हैं।
दान पुण्य में देवें न कौड़ी, वैसे ही लाख लुटाते हैं ॥
रंडी का सुनने को राग, वोह बड़ी खुशी से आते हैं।
कहे "मुरारीलाल" वेद वाणी से मुंह दबकाते हैं ॥

---

१४१ भजन

टेक—होता बरबाद घर रंडीबाज़ी से ॥

अपनी नारी को छोड़ा, रंडी से नाता जोड़ा।
घर में किया फ़िसाद ॥ घर रंडी० ॥
कैसे ये बड़े तुम्हारे, इन पापों से बचने हारे।
जिन की हो औलाद ॥ घर रंडी० ॥
क्यों उनका नाम डबोया। सारी इज़्ज़त को खोया।
तजो कुल की मार्याद ॥ घर रंडी० ॥
लाखों की बिके जिमींदारी, फिरते हैं दर २ मारे।
नहीं जिनकी तादाद ॥ घर रंडी० ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पहके तो माल धन सारा, रंडी के ऊपर वारा।

रोवे फिर कर २ याद ॥ घर रंडी० ॥

जब दौलत माया छीनी, बदले में आतशक दीनी।

लो देखे इसका स्वाद ॥ घर रंडी० ॥

रंडी ने मज़ा चखाया, गर्मी ने आन दबाया।

निकलने लगा मवाद ॥ घर रंडी० ॥

कहे "वसुदेव" यह रंडी है, महां दुखों की मंडी है।

करें कहां तक बकवाद ॥ घर रंडी० ॥

—o—

भजन १४२

भाइयो जगत में आकर वृथा हुआ है जीना ॥

मुशकल से ऐ बुजुर्गो पाया मानुष जन्म था।

अफ़सोस फिर भी मित्रो कुछ भी धर्म्म न कीना ॥

इन्द्रियों के वश में होकर मनका गुलाम बनकर।

विषयों में फंसके पापी तनमन वा धन दीना है ॥

आया था किस लिये तूं कुछ भी ख़बर नहीं है।

बेहोश हो रहा है ऐ मूर्ख बुद्धि हीना ॥

वेमोल तेरा जीवन क्षण २ में जा रहा है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हा ! शोक है तो यह है कुछ भी धर्म न कीना ॥
ऐ "वासुदेव" उठो गफलत में क्यों पड़े हो,
समझो सराए दुनियां यहां पर नशा न पीना ॥

(वैश्या संग के निषेध में) १४३ भजन

तन में से काम जावे, लोक में से नाम जावे ।
गांठ में से दाम जावे, रूप जाए रंग से ॥
धन जावे दाम जावे, देह से आराम जावे ।
और सब काम जावे, भरम जावे नंग से ॥
नीत जावे मीत जावे, पत और प्रीत जाए ।
कुल की सुरीत जावे, बल जावे अंग से ॥
रोगी होवे सोगी होवे, सुख से वियोगी होवे ।
दुःख भारा भोगी होवे, वैश्या के संग से ॥

भजन १४४

अहो अन्धे मूर्ख ! तु कैसा है सोया,
अमोलक समय तूने सोते ही खोया ॥ १ ॥
न आंखें ही खोली न करवट ही बदली,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न दर्पण ही देखा न मुखड़ा ही धोया ॥ २ ॥
गर्भाशय का भी न समझा तू आशय ।
कुए किन २ कर्मों का यह दण्ड होया ॥ ३ ॥
पहना था जामा मनुष्य जन्म का ।
पापों के कीचर में तूने डबोया ॥ ४ ॥
भूषण की शोभा को क्या जाने गर्धभ,
गले में तेरे कैसे माणिक परोया ॥ ५ ॥
'अमीचन्द' बालक जन्मता है रोता,
चलते समय भी यही रोना रोया ॥ ६ ॥

१४५ भजन

ईश की भक्ति में तन मन को लगाना चाहिये,
झूठ के फंदे से इस दिल को बचाना चाहिये ।
आये थे हम किस लिये और कर रहे हैं क्या यहां,
गौर करके खूब इसकी तेह को पानी चाहिये ।
जिन्दगी अपनी यहां बेशुबह है मिसले हबाव,
क्यों बगैर अज़ धर्म्म के कोई दम गवाना चाहिये ।
खाने पीने में तो है हैवान भी मिसले आदमी,
कौन सा हम को शर्फ है यह दिखाना चाहिये ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐशो आराम और धन दौलत जिसे समझा है तू,
बिन भजन ईश्वर के उनको खाक जाना चाहिये।
मौत के पंजे से बच सकता नहीं कोई कभी,
छोड़ दीजे अकड़पंन हारिगान गाना चाहिये।
इस कदर दुनियां के फिकरों में हैं क्या गलतान तू,
कुछ तो यादे हक़ में भी ध्यान लाना चाहिये।
खाहश बेजा जो है इस नफ़स पर गालिब तेरे,
ले पनाह संतोष की उसको मिटाना चाहिये।
अमल की खेती यह दुनिया जान ले तू ऐ अज़ीज़,
तुखम नेकी बोके फिर उसको उगाना चाहिये।
बुग़ज़ो नख़वत नें किया है कौम को अपनी तबाह,
है यह धब्बा सरबसर इसको उड़ाना चाहिये।
सत की संगत जिसे कहते हैं सोहबते आरिफां,
किमीयां दुनियां में ऐ 'धम' इसको माना चाहिये।

राग बलावल] १४७ भजन

बन्दे तू अपना आप पछान।

जे तैं अपना आप पछाता, साईं दा मिलना आसान।
सोने दे कोट रोपह दे छज्जे, हरि बिन जान मसान॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तेरे सिर पर काल है वजदा, भावें तू जान न जान ।
साढ़ तिन हाथ मुल्क तुसाडा, ऐडी तू तान न तान ।
सोनें रूपा ते माल खाज़ना, होए रहया महिमान ।
कहे 'हुसैन' फकीर नमाना छड दे खुदी गुमान ।

रागनी भाग) १४७ भजन

त्यागेगा जो असत्य को सुख वोही पावेगा,
सत्याचरण हो मोक्ष की पदवी दिलावेगा ॥ १ ॥
जितने हैं पाप झूठ है सब का पितामहा,
जो इसका यार होगा, महां दुःख उठावेगा ॥ २ ॥
सीधा नरक पुरी को यहां से सिधारेगा,
ईश्वर की जगह और को जो सिर झुकावेगा ॥ ३ ॥
आवा गमन के दुःखों से छूटेगा बस वही,
जगदीश के प्रेम में जो लिव लगावेगा ॥ ४ ॥
अन्तः करण की शुद्धि का भागी बनेगा वोह,
सत्याचरण की गंगा में जो जन न्हावेगा ॥ ५ ॥
ईश्वर समझ के पूजेगा जड़ मूर्ति को जो,
जड़ रूप अपनी बुद्धि को निश्चय बनावेगा ॥ ६ ॥
वेना किसी को जो कोई कलपावेगा यहां,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह याद रहे वह भी कभी कल न पावेगा ॥ ७ ॥
जो नेक काम करना है कर ले वह आज ही,
गुज़रा हुआ न वक्त कभी हाथ आवेगा ॥ ८ ॥
परलोक को सुधारेगा! इस लोक में न जो,
आखिर वह अपने हाल पै अफसोस खावेगा ॥ ९ ॥
संबन्धि छोड़ देंगे तेरा साथ मरते वक्त,
'केवल' है एक धर्म्म ही जो साथ जावेगा ॥ १० ॥

(कान्हडा) भजन १४८

जादू टूने के फंदे न फंसियो
जाल भ्रम उसे जानियो सखियो।
भूत चुड़ेल की मिथ्या कहानी,
अनपढ़ मूर्ख निश्चय मानी।
भूत चुड़ेल को किसने देखा,
जादूगरें की बातों से लेखा।
सुनी सुनाई हमें सुनावें,
एक ने देखा यह बतलावें।
पर कहो उनसे जो हमको दिखावें

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

झूठी गप्पों से बात टलावें ।
जादूगरों की ऐसी लीला,
झूठा जाने है बुद्धि शीला ।
यह हौले की ठगी मचाई,
लाखों इस से करें कमाई ।
गंडे तावीज़ का जाल बछाया,
बस इन के बश में ईश्वर आया ।
सन्ध्या धर्म्म और कर्म न जांने,
कहते हैं जो हम सांई स्याने ।

भजन १४८

दिल शाद दुनिया से लगाना नहीं अच्छा,
हर वक्त की तकलीफ उठाना नहीं अच्छा ॥
दायम मतवज्जह रहो ईश्वर की तरफ़ तुम ।
दिल मादी चीज़ों से लगाना नहीं अच्छा ॥
करते रहो तुम पंचमहायज्ञ हमेशा ।
बुद्धि को कभी इन से फिराना नहीं अच्छा ॥
जो सच से मिले नाने जवीं वह भी है बेहतर ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो झूठ से मिलता हो खज़ाना नहीं अच्छा ॥
क्या बाद फ़ना साथ चलेगा यह बताओ ।
जो हक़ है किसी का वह दबाना नहीं अच्छा ॥
बदचाल जो हैं वह भी तो कुछ नेक चलन हों ।
क्या उन को सत उपदेश सुनाना नहीं अच्छा ॥
जो जुल्म किया करते हैं हो जाते हैं बरबाद ।
ज़िनहार किसी दिल को दुखाना नहीं अच्छा ॥
बदनामगी होती है बुज़ुर्गों की तुमारे ।
मैख़ाना की जानब को भी जाना नहीं अच्छा ॥
हम साफ़ कहे देते हैं पछताओगे इक दिन ।
कस्बीसों से यह लुत्फ उड़ाना नहीं अच्छा ॥
फिर क्यों न कहें मांस का खाना नहीं अच्छा ॥
जो शौच की शरत है वह सब कीजिये पूरी ।
गंगा में सिर्फ़ नहाना नहीं अच्छा ॥

१५० भजन

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रहः,
धीर्विद्या सत्यमक्रोधो दशकं धर्म्मलक्षणम् ॥ मनुः

दोहा—सदा धर्म करते रहो, जब तक घट में प्राण ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धम्मशास्त्र में दश लिखे उसके खास निशान ॥

टेक—चिन्ह धर्म्म के भाई, महाराज मनु बतलाते ॥

प्रथम तुम धीरज को धारो, दूजे सब के वचन सहारो। (हरे) तीजे अपने मन को मारो, यही उपदेश सुनाते ॥ (महाराज० १) चौथे तज चोरी का पेशा, मिटैं सकल नर तेरे कलेशा (हरे) रहो पांचवें शुद्ध हमेशा। सब ऋषि मुनि गाते (महाराज० २) छठे इन्द्री वश में करना, मसन चित्त विचार में धरना (हरे) अष्टन विद्या मन में भरना जो तुम मनुष्य कहाते (महाराज० ३) नवें सत्य का धारण कीजे। दशवें क्रोध त्याग तनु दीजे। (हरे) प्रभु सिमर मुरारी लीजे क्यों बृथा जन्म गवाते ॥ (महाराज० ४)

---

१५१ भजन

टेक—प्रथय दोनों को मारो। हैं दुष्ट बड़े दुःखदाई ॥

काम क्रोध हैं अति बलिधारी। अस्त्रशस्त्र के निपुण खिलारी। (हरे) जिनके संग में दुनिया सारी। सगे २ दोउ भाई हैं ॥ दुष्ट० ॥ १ ॥ सेना इसकी है बड़ी घाती। बहुत मित्र हैं इस के साथी। (हरे) कुछ नहीं इन से पार बसाती। घर घर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर दुहाई ॥ हैं दुष्ट० ॥ २ ॥ अटल राज पृथ्वी पर करते नहीं किसी से अब यह डरते। (हरे) शूरवीर इन से नहीं डरते देख कोट और खाई ॥ हैं दुष्ट० ॥३ ॥ जो इच्छा इनसे जीत की। ले तलवारें ज्ञान नीति की हरे) फौज मुरारी बन प्रीति की। इनसे करो लड़ाई। है दुष्ट० ॥ ४ ॥

---

१५२ भजन

दोहा—वही शूर वही बीर है वही बलबान।
जो इन दश को जीत कर वश में करता प्राण ॥

टेक–जिन दश इन्द्रिय को जीता, है मर्द मरदाना।

प्रबल प्रचण्ड इन्ही की शक्ति। नहीं दें करन प्रभु की भक्ती ॥ (हरे) बिन मारे नहीं मुक्ति सुनो तुम मेरे मीता। जय इनसे कठिन है पाना। (है मर्द०) ॥ १ ॥

किया कैद जग इस ने सारा। बजे फतह का नित्य नकारा। (हरे) इनसे लड़े सो शूर भारा। भारी किया फजीता ॥ कोई कैसे हो दाना। (है मर्द०] ॥ २ ॥ ज्ञान खड्ग ले अपने हाथ में। विद्या बुद्धि मित्र साथ में। (हरे०) लगा रहे फिर इन की घात में। वही करे मन चाती।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न कुछ ही दुःख उठाना । (है मर्द ३ जिसने किया योग का साधन । वश उस के होगया फिर मन । (हरे०) कहे "मुरारी" उत्तम वह जन । ब्रह्मज्ञान जल पीता । ऐसे ही सत् शास्त्र बखाना । (है मर्द वही मरदाना) ॥ ४ ॥

---

१५३ भजन

लगेरे मोहि नाम निरञ्जन प्यारा ।
रसना कैसे न भजे तू हरि पद अघनाशक ओंकारा ॥ १ ॥
अति दुर्लभ मानव शरीर यह मिलहि न बारम्बारा ॥ २ ॥
है प्रभु वही सृष्टि का कर्ता है वही पालन हारा ॥ ३ ॥
जन्म मरण से रहित अमित गुण बुद्धि विद्या भंडारा ॥ ४ ॥
उसे त्याग सुख चहत मन्दमति सो अति मुग्ध गंवारा ॥ ५ ॥
करत सना दीनन पर दया, है सोई नाथ हमारा ॥ ६ ॥
औघट घाट नाव मेरी उरझी, सूझत नहीं किनारा ॥ ७ ॥
तुम्हीं नाथ अब पार लगावो, नाहिं तो डूबत है मझधारा ॥ ८ ॥
कहत 'पलन्दर' हमहि उबारो, हे प्रभू अधम उधारा ॥ ९ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भजन १५४

कैसे अमूर्ति की मूर्ति बनाएं,
सर्व देशी को एक देशी ठहरावें ।
आवाहन करें तो कहां से बुलावें,
विसर्जन करें तो कहां को पठावें ।
आसन सिंहासन पै तकिये लगावें,
निराधार को किस के आश्रय बिठावें ।
अप्राणी की प्राण प्रतिष्ठा करावें,
जड़ वस्तु को कैसे चेतन बनावें ।
पाद्यार्घ आचमन किस को करावें,
सदा शुद्ध निर्मल को किस में नहलावें ।
धूप और पुष्प गन्ध क्यों कर सूंघावें,
निर्लेप को लेप कैसे लगावें ।
ज्योति की दीपक को ज्योति दिखावें,
सूरज को जुगनू का चांदन बतावें ।
नैवेद्य के पीछे शुद्ध जल चढावें,
क्षुधा को हटा कर तृषा को बुझावें ।
पान और सुपारी इलायची मिलावें,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ये क्या उनके होठों की रंगत बढ़ावें ।
धन धाम जिसका है सर्वस्व जिस का,
देकर टकों दक्षणा बदला चाहें ।
प्रदक्षणा में जिसका नहीं अन्त पावें,
फिरें गिर्द उस के क्यों चक्कर खावें ।
जागृत स्वप्न सुषप्ति से न्यारा,
किस को सुलाएं वे किस को जगावें ।
अजन्मा को जो आज जन्मा बतावें,
'अमींचन्द' क्यों उनके धोखे में आवें ॥

भैरवी] भजन १५५ (ताल कव्वाली

प्रीतम मेरे पास वसदा ढूंडन किस्ये जावना । प्रीतम०
गली ते बाज़ार ढूंडो शहर ते दयार ढूंडो घर, २ हजार ढूंढो,
पता नहीं पावना ॥ प्रीतम ० ॥
मक्के ते मदीने जाइये मत्थे जा मसीत वसाइये,
उच्ची कूक बांग सुनाइये, मिलना नहीं जावना । प्रीतम० ।
गंगा मर्वें जमना न्हाओ, काशी ते प्रयाग जाओ, बद्री
किदार धाओ, मुड़ घर आवना । प्रीतम० ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देश ते दिशौर ते ढूंडो, दिल्ली ते पिशौर ढूंडो, भावें ठार २
ढूंढ किसे न बतावना ॥ प्रीतम०

बनो जोगी ते बैरागी, संन्यासी नगन त्यागी, प्यारे से
न प्रीत लागी, मेल की वटावना ॥ प्रीतम० ॥

भावें गल माला डाल, चंदन लगाओ भाल, प्रीतें नहीं प्यारे
नाल, जग नूं दिखावन ॥ प्रीतम०

मोमनां दी शकल बनावें काफरां दे कंन कपावें, मत्थे ते
महराब लगावें, मौलवी कहावना ॥ प्रीतम००

'खन्ना' कहे बार २ समझ मन्न ते यार, संई नाल कर ले प्यार
अन्त मर जावना ॥ प्रीतम०

भजन १५६

छोडो न तुम धर्म को चाहे जान तन से निकले।
सच्चा सुखन हो लेकिन शीरीं दहन निकले ॥
ईश्वर कहां वह भाई अकसांना हो गये किया।
माता कौशल्या के जो जो थे तन से निकले ॥
हर वक्त है मौत सिर पर चल लेले तोशा भाई।
म'क्के व नेकी करलो जितनी कि तन से निकले ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चुन लो कर्म धर्म्म के बहारे जवानी में गुल ।
नहीं तो खज़ां में रोता बुल बुल चमन से निकले ॥
रक्खा है क्या वहां पर कैसी है बस्ती सोचो ।
जितने ऋषि जन निकले सब ही वह बन से निकले ॥
अच्छे अमल हों जब कि समझें धर्म है क्या शै ।
ताऊन व हैज़ा क्यों न फिर तो वतन से निकले ॥
अन्धेरा मिटालो सूरज चमका है सोने वालो ।
उठो तायर भी अपने अपने मसकन से निकले ॥
धन से धर्म करो तुम नहीं तो समझ लो 'आजिज़'
सिकन्दर के हाथ दोनों खाली कफ़न से निकले ॥

भजन १५७

है जिसने सारे विश्व को धारण किया हुआ ।
वह है हर एक वस्तु के अन्दर रमा हुआ ॥
मिलता नहीं है इस लिये अज्ञानियों को वह ।
अज्ञान का है बुद्धि पै परदा पड़ा हुआ ॥
दुनिया के दुःख रूप समुद्र से है वह पार ।
जगदीश से है प्रेम भी जिन का लगा हुआ ॥
सच्ची खुशी से रहते हैं वह जन सदा अलग ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन जिनका विषय भोग में होवे फसा हुआ,
मन तो मलीन वैसा ही मूर्ख रहा तेरा।
गंगा में रोज़ जाके न्हाया तो क्या हुआ,
खोते हैं खेल कूद में जो उमर रायगां।
अफसोस उन की बुद्धि को क्या जाने क्या हुआ,
अज्ञानियों से रहता है केवल वह दूर २।
खुल जावें ज्ञान चक्षु तो वह है मिला हुआ,

—o—

भजन १५८

टेक—सायं समय और प्रातःकाले छोड़ छाड़ कर सब धन्दा।
जब तक जीवे वेद रीति और प्रेम प्रीती से कर सन्ध्या।
चौक १—बाला बूढ़ा, हो अधेड़ चाहे हो तरुण पर कर सन्ध्या।
ब्राह्मण क्षत्री वैश्य द्विज, चाहे कोई वर्ण हो कर सन्ध्या।
राजा प्रजा पुरुष स्त्री धनी व निर्धन कर सन्ध्या।
महल अटारी जंगल बन, एकान्त देश में कर सन्ध्या।
चाहे वस्त्र धारण करके, चाहे तन से हो नंगा।
जब तक जीवे वेद रीती और प्रेम प्रीती से कर सन्ध्या।
चौक २—दुःख में सुख में भले बुरे में रोग अरोग में कर सन्ध्या
हंसी खुशी आनन्द बीच, तज हर्ष शोक तू कर सन्ध्या।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मात पिता दारा सुत बिछड़े, तज वियोग तू कर सन्ध्या।
सेपत विपत अलग दोनो मे, होकर निर्द्वन्द तू कर सन्ध्या।
लङ्गड़ा लूला हो या बहरा, कोई चाहे हो कर अन्धा।

जब तक० ।

चाक ३—दुबला पतला निर्बल हो, चाहे बलवाला हो कर सन्ध्या
सुरत बदसूरत गोरा हो, चाहे काला हो कर सन्ध्या।
भाई बन्धु जोरु जातक, सुसरा साला हो कर सन्ध्या।
नौकर चाकर बान्दी लौंडी, घर वाला हो कर सन्ध्या।
माता बहु बेटी और जनिता, बिधवा हो चाहे हो सन्ध्या।

जब तक० ॥

चौक४—सरदी गरमी वर्षा में तू हरएक ऋतु में कर सन्ध्या।
पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर सभी सिमत में कर सन्ध्या।
बुद्धि ज्ञान की चाहे उन्नति, अर्थ सहित तू कर सन्ध्या।
योग युक्त और मुक्ति चाहे, तो सत् चित् से ५ कर सन्ध्या।
"नवलसिंह" तू कर सन्ध्या, जो भ्रम जाल कट जा फन्दा।

जब तक० ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भजन १५१

टेक—सारी आयु बीती जाय, भाइयो अब चेतो रे।

दोहा—आये थे एक धाम में, और उतरे एक ही घाट।
हवा लगी संसार की, हो गये बारह बाट।
मात पिता सुत भगनी दारा, कोई न अपना होवे
अन्त समय कोई काम न आवे, धर्म ही अपना होवे
माला तेरी काठ दी, धागे लइ परोय
मन में घुएडी पाप दी, राम भजे क्या होय।
माला फेरत जन्म गया, पर गया न मन का फेर।
हाथ का मनका छोड़ के, और मनका मनका फेर।
माला मो से लड़ पँड़ी, तू क्यों फेरत मोहि।
मन की माला फेर जो, ईश्वर मिल जाए तोहि।
बालापन सब खेल गंवाया, यौवन विषयों साथ।
बृद्ध भया कुछ बन नहीं आवत, कांपन सगरे गात।
रंज क्या २ न सहे, धर्म्म से गाफिल हो कर।
पाप क्या २ न किये, विषयों में माइल हो कर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१६१ भजन [लावनी)

शेर—टूटते जाते हैं बन्धन झूठ और पाखण्ड के ।
टर गया है भार खुल गये भाग भारत खण्ड के ॥

टेक—सत्यविद्या वेद तज झूठ पाखंड को गावें क्या मतलब
उलटे मार्ग में चल कर हम दुःख उठावें क्या मतलब ।

चौक १—निराकार चेतन की हम जड़ मूर्त बनावें क्या मतलब
अनन्त और सर्वज्ञ को हम एक घर में बैठायें क्या मतलब
शुद्ध पवित्र जिसका पद हो, फिर उसे नहलावें किस्या मतलब
भूख प्यास से रहित जो है, उसे भोग लगावें क्या मतलब
जिस के नहीं शरीर उसको हम वस्त्र पहनावें क्या मतलब
उलटे मार्ग०

चौक २—बिन बोले जो सुने, उसे हम कूक सुनावें क्या मतलब
जिसके अनहद बाजे हैं, हम गाल बजावें क्या मतलब
फूल पत्र में रमा जो उसे हम पुष्प चढ़ावें क्या मतलब
जो सब को प्रकाश करे, उसे दीप दिखावें क्या मतलब
जड़ पदार्थों की संगत में, जड़ हो जावें क्या मतलब ॥
उलटे मार्ग०

चौक ३—जो है मुक्त स्वभाव उसका हम जन्म बतावें क्या मतलब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो है सब का पिता, किसी का पुत्र बनावें क्या मतलब ।
जो है बेअन्त उसकी हद ठहरावें क्या मतलब ॥
करके कैद एक मन्दिर में, फिर कुफल लगावें क्या मतलब ।
जो है सबका रचता, उसे रचना में लावें क्या मतलब ॥

उलटे मार्ग।

चौक ४—जो मस्तक में रहे उसे हम सीस नवावें क्या मतलब।
जो हाथों में बसे, उसे हम हाथ बंधावें क्या मतलब।
जिव्हा में जो रहे फिर हम ज़बान हिलावें क्या मतलब ॥
मन में रहे उसे मान, फिर मन को डिगावें क्या मतलब !
नैनों में जो रहे फिर हम निगाह चलावें क्या मतलब ॥

उलटे मार्ग।

चौक ५—दशवें द्वार का भेद न जाने, द्वारका जावें क्या मतलब
हरि छुपा है हिरदे में, फिर देह दिगवावें क्या मतलब ।
जगन्नाथ सारे जग में फिर उड़िया धावें क्या मतलब ॥
सारे जगत की जूठ खाय के भ्रष्ट कहावें क्या मतलब ।
जहां पर होवें क्लेश हम कहां पै जावें क्या मतलब ॥

उलटे मार्ग।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चौक ६—माता पिता को घर में छोड़कर इत उत जावें किआ मतलब।
अन्तःकरण हो शुद्ध फिर हम गंगा न्हावें किआ मतलब।
सत्य व्रत को छोड़ के फिर अन्न न खावें किआ मतलब॥
इन्द्रियों को दमन करें, फिरं बन में जावें किआ मतलब।
तीन ताप से तपें सदा, फिर तपिये कहावें किआ मतलब॥

उलटे मार्ग०

चौक ७—पीर और पैगम्बर पर, हम ईमान लावें किआ मतलब।
लाशरीक पहले कह कर, फिर शिरक बढ़ावें किआ मतलब।
बुतपरस्ती छोड़ कर हम, काबे जावें किआ मतलब॥
पूर्व में किआ नहीं सीस पश्चिम को नवें किआ मतलब।
दिन को रोज़ा राखें रात भर फिर हम खावें किआ मतलब॥

उलटे मार्ग०

चौक ८—सारे रसकी जड़ काट छिलके को खावें क्या मतलब
दूध दहीं तज मक्खन को फिर हाड़ चबावें क्या मतलब।
होकर जो निर्दय किसी पर छुरी चलावें क्या मतलब॥
करनी भरनी पड़े एक दिन, गला कटावें क्या मतलब।
मनी हैज़ का खाके खून सूत्र से घृणावें क्या मतलब॥

उलटे मार्ग०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चौक ६—जीते माता पिता को भोजन बिन तरसावें क्या मतलब
मरे हुए के सुख के हेतु पिण्ड भरावें क्या मतलब।
अपने पति की आज्ञा तोड़ें, सति कहलावें क्या मतलब।
अपनी नार को दुःख दे वह पति कहावें क्या मतलब।
पर नारि से भोग करें वह पति कहावें क्या मतलब॥

उल्टे मार्ग।

चौक—१०—बाली उमर में व्याह कराके बल वीर्य्य घटावें क्या मतलब।
बाली कन्या व्याह के फिर, उसे रांड बिठावें क्या मतलब।
व्याह काज में धन खोकर, कङ्गाल कहावें क्या मतलब।
जग ज्योंनार के बीच, वेश्या भांड नचावें क्या मतलब।
धन दौलत घरबार लुटा कर, मज़ा न पावें क्या मतलब।

उल्टे मार्ग।

चौक—पर दारा से प्रीति लगा, दिल दाग लगावे क्या मतलब।
लाज शरम को छोड़ जिगर में आग लगावें क्या मतलब।
औरों के सुख सम्पत को, हम देख हिरसावें क्या मतलब।
सबर और सन्तोष छोड़, मन को तरसावें क्या मतलब।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इधर उधर गलियों में दिन भर मन भटकावें क्या मतलब ।

उलटे मार्ग०

चौक १२—राम कृष्ण का स्वांग बनाकर भीख मंगावें

क्या मतलब ।

रास और लीला में, सीता राधा को नचावें क्या मतलब ।

भरी सभा में नाच कूद ताड़ी पटकावें क्या मतलब ।

ललिता और विसाखा बन, आंखें मटकावें क्या मतलब ।

श्रीकृष्ण को चोर जार कह, नहीं शरमावें क्या मतलब ।

उलटे मार्ग०

चौक १३—साहूकार चोरों के संग में धन को लुटावें

क्या मतलब ।

ठठ्ठा की बातों में आकर, हम जान गंवावें क्या मतलब ।

मूर्ख की संगत में सज्जन, धोंखा खावें क्या मतलब ।

जो न आप से रुके, उसे फिर हम आप बुलावें क्या मतलब ।

पोपों की सोहबत में पण्डित, मान घटावें क्या मतलब ।

उलटे मार्ग०

चौक १४—विना परीक्षा किये किसी से प्रीति लगावें क्या

मतलब ॥

बढ़ा के पहले प्रेम मित्र से, फिर जो घटावें क्या मतलब ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पहले छाती ठोक के हम, फिर पुश्त दिखावें क्या मतलब।
धरके कदम आगे तो युद्ध में फिर हटावें किआ मतलब।
मूर्ख पहले ब्रह्म बने फिर मांग के खावें किआ मतलब।

उलटे मार्ग० ।

चौक १५– एकताई नाहिं करें फिरें वह दुःख उठावें।
किआ मतलब।
एक २ से लड़ें फिर हम सुख को लुभावें किआ मतलब।
विद्या को नहीं पढें फिर हम विप्र कहावें किआ मतलब।
पुरुषार्थ को छोड़ पेट फिर भर कर खावें किआ मतलब।
कर्म धर्म दें छोड़, ब्रह्मण पदवी पावें किआ मतलब।

उलटे मार्ग०

चौक १६– दयानन्द ने जगा दिये, फिर हम सोवें किआ मतलब
दियानन्द दुःख भगा दिये, फिर अब हम रोवें किआ मतलब।
चार वेद सत्य के सागर में, मन हीं धोवें किआ मतलब॥
[illegible]ा वचन यह सुना दिया, अब थूक विलावें किआ मतलब॥
[illegible]ल्लासिंह' कह बे मतलब हम झूठ जो गावें किआ मतलब॥
[illegible]लटे मार्ग में चलकर हम दुःख उठावें किआ मतलब॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राग आसा) १६२ भजन (ताल चंचल

टेक—सिमर प्रभु दिन रात रे मन।

उस बिन तेरा कोई न सहाई सिमर ॥ प्रभु० ॥

सिमरण कर अन्तर्यामी का,

जग कोई दम की बातेरे मन। उस बिन तेरा० ॥ १ ॥

कर सन्ध्या और पढ़ गायत्री,

दूर होवें कुल आफात रे मन। उस बिन तेरा० ॥ २ ॥

परिपूर्ण की कर उपासना,

तब ही मुक्ति पात रे मन। उस बिन तेरा० ॥ ३ ॥

दुनिया मिसल सराय मुसाफिर,

लाय रहा यम घातेरे मन। उस बिन तेरा० ॥ ४ ॥

खुश हो कर सिमरण ईश्वर का,

"बेकस" मुक्ति पात रे मन। उस बिन तेरा० ॥ ५ ॥

राग सिन्धड़ा) १६३ भजन (ताल रूपक

सदाकत के लिये गर जान जाती है तो जाने दो।

मुसीबत पर मुसीबत सिर पै आती है तो आने दो॥

लगी है आग गफ़लत की धूआं हरसू है आलस का।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करो कोई उपाय जल्दी, भड़कती को बुझाने दो।
ज़रूरत कौम की देखो, हुआ इदबार क्यों हाइल।
नहीं फिर वक्त मिलने का, समय को मत टलाने दो।
सभा आर्य के होने से नसीबा कौम का जागा।
करो सत्संग रलमिल कर, धर्म्म वैदक सुनाने दो।
जहालत का समुन्द्र था, नज़र से दूर साहिल था।
ज़हे किस्मत मिली किश्ती, हमें अब पार जाने दो।
शिरोमणि जो जबानों की, खज़ाइन इल्म है जिस में।
है केवल बेद की विद्या, यही पढ़ने पढ़ाने दो।
कदीमी इल्म की ख्वाहिश, अगर कुछ दिल में है बाकी।
आचार्य कुल बनाने के लिये ज़र को लुटाने दो।
ऋषि मुनियों के जीवन को निगाहे गौर से देखो।
लिखा जो सत्य ग्रन्थों में, वही दिल में समाने दो।
अगर आर्य्य बने हो नाम मात्र तुम मेरे साहिब।
रजिस्टर में सभा के नाम मत अपना लिखाने दो।
तरक्की धर्म की करना कठिन है फ़र्ज़ आला है।
बिना सोचे कदम मैदान में, हरगिज़ न आने दो।
स्वार्थ सिद्ध करने की जिन्हें आदत हुई है बद।
सरासर हसद करते हैं, उन्हें बकने बकाने दो॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डरो न मुश्किलातों से, अवश्य है खौफ पापा का।
बढ़ाकर हौसला बुद्धि को, ग़लवा उन पे पाने दो।
बला से हाल साज़ों की, शिकायत और वदगोइयां।
भरोसा ईश पर रख "धम" न दिल को डगमगाने दो।

१५२ भजन

टेक—क्यों सोया उठ जाग, समय चला जाता है भाई।
जिस जीवन को स्थिर माने, है बादल की छाई।
ये संसार असार है सारा, ज्यों सुपना रैनाई ॥ १ ॥
बाल सखा संग झूठ खेल में, बीत गई लड़काई।
विषय सेवा में गई है जवानी, बृद्ध अवस्था आई ॥ २ ॥
दुर्दशा होगी जो आगे बुढ़ापे में, देता हूं तुझे समझाई।
सख्त वस्तु कोई खा न सकेगा, तोड़ेगी दांत मिठाई ॥ ३ ॥
कान भी बिन ऊंचे शब्दों के बात न सुनत सुनाई।
हाथ पांव देह कांपेगी सारी, आंखें न देखेंगी राई ॥ ४ ॥
बात पित्त कफ रोगों की पीड़ा, अति होगी दुखदाई।
निकट बैठ कोई बात न पूछे, मांगे न मिलत दवाई ॥ ५ ॥
घर के बाहर वासा मिलेगा, टूटी सी चारपाई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कपड़े मिलें तो कैसे निकम्मे, चीथड़े लेफ तुलाई ॥ ६ ॥
हो परवस पड़ा खटिया पर, रो २ देत दुहाई ।
पछताने से अब क्या होवे, बैठा है खेत लुटाई ॥ ७ ॥
कुटुम्ब कह हुआ बहत्तर वर्ष का, दादा हुआ सौदाई ।
जो माया है प्राणों से प्यारी, पल में होत पराई ॥ ८ ॥
बार २ पूछत सम्बन्धी दम कुछ धरी धराई ।
"अमी" रस पी कर अमृत होजा, काल से होवे रिहाई॥९॥

---

१६५ भजन

क्यों पड़ा है स्वपन में भई भोर निद्रा त्यागरी ।
सास ननद देत निहोरे, नागरी तू जागरी ॥ १ ॥
हे पतित हे अधम बुद्धे सो गई आलस भरी ।
शान्ति २ शब्द कहकर चरण पति के लागरी ॥ २॥
स्नान कर उठ धार अम्बर, कर सिंगार लगा सुगन्ध ।
जौन विधि रीझे रिझाले, मन से कर अनुरागरी ॥ ३ ॥
सफल यौवन करले मुग्धे, यह समय दुर्लभ है ।
पश्चाताव रहे न "अमीचन्द" चार दिवस का फागरी ॥ ४ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भजन १६६

लगा दिल ईश से प्यारे, अगर मुक्ति को पाना है।
बगैर अज़ यासो हसरत के सिवा क्या हाथ आना है ॥१॥
यह दुनियां चन्दरोज़ा है यहां रहना नहीं दायम।
जवां हो, पीर हो, तिफ्लक, सभों ने छोड़ जाना है ।२॥
करोड़ों हो गएँ योद्धा, जो भारत के सितारे थे।
नशां उनका कहां बाकी, कहां उनका टिकाना है ॥ ३ ॥
बहारे जिन्दगी पर किस लिये भूला फिरे नादां।
ख़जां को याद रख जिसने निशां तेरा मिटाना है ॥ ४ ॥

भजन १६७

लगी जिनकी जगदीश से हो लगन,
नहीं काम में उनके होता विघन।
नहीं कोई होता है उनको कलेश,
जो रखते है वेदोक्त अपन चलन।
सदा वही पाते हैं प्रतिष्टता,
बुरे काम से भागते हैं जो जन।
किसी से नहीं बैर बुद्धि जिन्हें,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह रहते हैं हर वक्त मन में मगन।
गये दोनों लोकों उसके "केवल" सुधर,
जिसने किया इन्द्रियों को है दमन।

राग भैरव] भजन १६८ (ताल मुगलई

हर जगह मौजूद है वह पर नज़र आता नहीं,
योग साधन के बिना उसको कोई पाता नहीं ॥ १ ॥
मरने और जीने के बन्धन से बरी वह है सदा,
उस का कोई ज़ौज बेटा और पिता माता नहीं ॥ २ ॥
गान विद्या से अगर कुछ लाभ है मद्दे नज़र।
फिर जगत स्वामी के तु गुणवाद क्यों गाता नहीं ॥२॥
जो जगत करता की मन से आज्ञा है पालता।
कोई भी दुख दर्द उस को शकल दिखलाता नहीं ॥४॥
रास्ती को जिसने छोड़ा कजरवी की अख्त्यार।
मंज़िल मकसुद तक उसका कदम जाता नहीं ॥ ५ ॥
मुस्तहक के हक दबा लेने की आदत जिसने की।
कौन है जो पेचताबे ग़म से घबराता नहीं ॥ ६ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है समझ जिन को वह उनको जानते हैं कम समझ,
जो यह कहते हैं कोई कर्मों का फल दाता नहीं । ७ ।
कुच्छ भी पर उपकार में होती नहीं तुझ से मदद,
हैफ़ अपने दिल में तु 'उर्फ़' शरमाता नहीं । ८ ।

१६९ भजन

टेक—नाम जपन क्यों छोड़ दिया ।
क्रोध न छोड़ा झूठ न छोड़ा, सत्य बचन क्यों छोड़ दिया ।
झूठे जग में दिल ललचा कर, असल वतन क्यों छोड दिया ।
कौडी को तो खूब सम्भाला, लालरत्न क्यों छोड दिया ।
जिन सिमरन से अतिसुख पाव, तिन सिमरन क्यों छोड दिया ।
'खालिस' एक भगवान् भरोसे, तन मन धन क्यों छोड दिया ।

१७० भजन

नकारा धर्म का बजता है आए जिसका जी चाहे ।
सदाकत वेद अकदस आज़माए जिसका जी चाहे ॥१॥
मुनादि शहर में कर दो, कि एक जगदीश है सबका ॥
बिना उसके बुतों को सिर झुकाए जिसका जी चाहे ॥२॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं है साला सुसरा बेटा पोता जगत कर्ता का।
कलंक इस किस्म के झूठे लगाए जिसका जी चाहे ॥ ३ ॥
सिफ़ारिश औलियाओ अंबिया की वह नहीं सुनता।
अबस इलजाम रिशवत का लगाए, जिसका जी चाहे ॥४॥
नहीं वह काठ पत्थर, आहिनी सीसा जरो गौहर।
हज़ारों बुतकदों में, बुत बनाए जिसका जी चाहे ॥ ५ ॥
जो एली २ करता था न हक ने मददगारी की।
तो फिर खातिर पै उसका जां गंवाए जिसकी जी चाहे ॥६॥
दिलो जां से करो सन्ध्या पढ़ो वेदे मुकाद्दिस को।
टैक्स से पाप के धन को बचाए, जिसका जी चाहे ॥ ७ ॥
नहीं है श्राद्ध मुर्दों का खिलां वेदे मुकाद्दिस में।
यह हुंडी जाल की उनकी, चलाए जिसका जी चाहे ॥८॥
कोई बिन वेद पुस्तक नहीं है मानने लायक।
पुरानी सब से और सच्ची, दिखाये जिसका जी चाहे ॥ ९ ॥
सिदक दिल से करो भक्ति, प्रभु की वेद के द्वारा।
वरना शर्मसारी को उठाए जिसका जी चाहे ॥ १० ॥

राग पीलो) १७१ भजन (ताल ३

टेक—नेक कमाई कर कुछ प्यारे, जो तेरा परलोक सुधारे ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस दुनियां का ऐसा लेखा, जैसा रात को स्वपना देखा।
ज्यों सुपनें में दौलत पाई, आंख खुली तो हाथ न आई ॥१॥
कुटुम्ब कबीला काम न आवे, साथ तेरे एक धर्म ही जावें।
सब धन दौलत पड़ा रहेगा जब तू यहीं से कूच करेगा ॥२॥
तोशा कुछ नहीं सफर है भारा, क्योंकर होगा तेरा गुजारा।
अबतक गाफिल रहा तू सोया, वक्त अमोल अकार्थ खोया।३।
टेढ़ी चाल चला तू भाई, पग पग ऊपर ठोकर खाई।
खूब सोच ले अपने मन नें, समय गंवाया मूर्खपन में ॥ ४ ॥
यदि अब भी नहीं यत्न करेगा, तो पछताना तुझे पड़ेगा।
कर सतसंग और विद्याध्ययन, तब पावे तू सुख और चैन ॥५॥
एक प्रभु बिन और न कोई, जिसके सिमरे मुक्ति होई।
उसीका 'केवल' पकड़ सहारा, क्यों फिरता है मारा २ ॥६॥

भजन १७२

विश्वपति के ध्यान में, जिसने लगाई हो लगन।
क्यों न हो उसको शांति, क्यों न हो उसका मन मगन ॥१॥
काम क्रोध लोभ मोह, शत्रु हैं सब महा बली।
इन के हनन के वास्ते, जितना हो तुझ से कर यत्न ॥ २ ॥
ऐसा बना स्वभाव को, चित्त की शान्ति में तू।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पैदा न हो ईर्षा की आंच, दिल में करे कहीं जलन ॥३॥
मित्रता सब से मन में रख, त्याग के वैर भाव को ।
छोड दे टेढी चाल को ठीक कर अपना तू चलन ॥४॥
जिस से अधिक न है कोई, जिसने रचा है यह जगत ।
उसका ही ले तू आसरा, उसकी ही तू पकड शरण ।
छोड के राग द्वेष को, मन में तू उसका ध्यान कर।
तुझ पै दयाल होवेंगे, निश्चय है यह परमात्मन् ॥ ६ ॥
जैसा किसी का हो अमल, वैसा ही पाता है वो फल ।
दुष्टों को कष्ट मिलता है, शिष्टों का होता दुःख हरण ॥७॥
आप दया स्वरूप हैं, आप ही का है आसरा ।
कृपा दृष्टि कीजिये, मुझ पै जब हो समय कठिन ॥ ८ ॥
मन में मेरे हो चांदना, मोक्ष का रस्ता मिले ।
मार के मन जो 'केवला' इन्द्रियों को करे दमन ॥६ ॥

—o—

भजन १७३ काफी

टेक—हृदय में हरि को जान, भजन कर अन्तर ध्यान हो ।

कली १—अग्नि वायु और जल थल में, व्यापक एक समान,
सब ही लोक उस से प्रकाशित, क्या चन्दा क्या भान ।
भजन कर०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दोहा—आंख नाक मुख मुन्द के, जो नाम निरंजन लेय।
अन्दर के घट तब खुलें, बाहर के पट देय। भजन कर०

कली २ लड़का बगल में, ढोल शहर में क्यों भूला नादान।
बिना शुद्धता अन्तःकरण के, चाहे मिट्टी छान।

भजन कर०

दोहा—भूला मृगा बंन में भटकत, नाभी बीच सुगन्ध।
इत उत मूर्ख फिरे भरमता, पावे कहां आनन्द।

भजन कर०

कली ३—अपने घर की सुधबुध नाहीं, परघर फिरत हैरान।
मन्दिर में दुःख दीपक बिनां, ज्यों जीवं को दुःख विनं ज्ञान॥

भजन कर०

दोहा—ज्यों सूरज और नयन का हर दम है सम्बन्ध।
जो है समाखा वह लखे क्या जाने कोई अन्ध,

भजन कर०

कली ४—काम क्रोध और लोभ मोह की, जब लग मन में खान।
"नवलसिंह" हरि कैसे देखे, भरा कपट अभिमान।

भजन कर अन्तर ध्यान हो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राग आसा] १७४ भजन [ताल चंचल

हरि २ गुण गाओरे साधों, हरि संग प्रीति लगाओरे साधो।
कर्म धर्म की धूनी तपालो, सत्य की खाक लगाओरे साधो।
ज्ञान की माला ध्यान के वस्त्र, निश्चय की अलख जगाओरे साधो
विद्या का प्रचार करो तुम, ग़फ़लत दूर भगाओरे साधो।
लाभ करे स्मरण ईश्वर का, सत मार्ग में आओरे साधो।

रागनी आसावरी) १७५ भजन (ताल झप

यह कर्म की गति न्यारी रे ऊधो, यह कर्म की गति न्यारी।
मूर्ख २ राज करत हैं, पण्डित फिरत भिखारी रे ऊधो०।
गङ्गा यमुना दोनों हैं मीठी, सागर कित बिध खारीरे ऊधो०
उज्वल पंख दीने बगले को, कोयल कित गुण कारीरे ऊधो०

१७६ भजन [लावनी

टेक—पक्षपात और अस्वार्थ को छोड़ सरल हो कर तू ध्यान।
न्याय तुला पर तोल दिखाऊं जो पूरा हो उस को मान॥

चौक १

इधर अजन्मा, अमृत्यु है, उधर जन्मता और मरता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इधर है आनन्द स्वरूप ईश्वर, उधर दुःख सुख में पड़ता ।
इधर अभय नित्य अविनाशी है, उधर छछूंधर से डरता ॥
इधर अचल अखण्ड एक रस, उधर गांठ बांधे फिरता ।
इधर है ईश्वर सर्व शक्तिमान, उधर झाड़ जड़ द्रव्य पाषाण

न्याय तुला०

चौक २

इधर सनातन वेद का पुस्तक, उधर नये २ अनेक ग्रंथ ।
इधर एक मत वेद सनातन, उधर सम्प्रदा लाखों पन्थ ॥
इधर हैं ब्राह्मण कर्म पे केवल, उधर जन्म पे है बे अंत ।
इधर है ईश्वर अथाह अगोचर, उधर ईश्वरका आद और अंत
इधर प्रभु है सर्व व्यापक, उधर डिबिया में विराजमान ।

न्याय तुला०

चौक ३

इधर हवन से पवन सुधारें, पका मांस रहे उधर बिगाड ।
इधर मलाई मक्खन भोजन, उधर चबा रहे कड़२ हाड ।
इधर दमन इन्द्रयों की आज्ञा, उधर नहीं इकपमती जाड़ ॥
इधर धर्म का झंडा गाड़ें, उधर अधर्मी रहे उखाड़ ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इधर उन्नति गो रक्षा की, उधर गौ की कर रहे हान,
न्याय तुला पर तोल दिखाऊं जो पूरा हो उसको मान !

चौक ४

इधर शुद्ध बुद्धि मुक्ति विज्ञानी, उधर भ्रम में पड़ा हुआ,
इधर आकाशवत् परिपूर्ण है उधर मन्दिर में खड़ा हुआ।
इधर सकल सृष्टि का कर्त्ता, उधर मनुष्य का घड़ा हुआ,
इधर नाड़ी नस का नहीं बन्धन, उधर ज़मी में गड़ा हुआ,
इधर ज्ञान से उसको देखें, उधर चरम दृष्टि से ध्यान।

चौक ५

इधर पवित्र है पद प्रभु का, उधर करांब नित्य स्नान,
इधर वह प्रकाश स्वरूप है, उधर दीप विन अंधा जान।
इधर रहता है भूख प्यास से, उधर वह करता खान और पान
निराकार निर्विकार इधर है, उधर सब उसके नाक और कान
इधर तीन कालों का ज्ञाता, उधर कहीं हो गया अज्ञान। न्या०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चौक ६

इधर सन्ध्या और नित्य गायत्री, उधर बजावें गुलगुलगाल ।
इधर कहा मनको स्थिर कर, उधर बजावें टुनटुनटाल ॥
इधर ध्यान है ओ३म अर्थ का उधर न ऊकन पावें ताल ।
इधर एकांत में भजन कहा है, उधर घाट पर लायाजाल ।
इधर अनाथ का पालन करना, उधर मुचंडे मांगें दान । न्या०

चौक ७

इधर उपासना योग युक्ति से, उधर झांज घरांटे की घोर ।
इधर प्राण तक का है साधन, उधर जगत् में कर रहे शोर ॥
इधर मगन आनन्दस्वरूप में, उधर पथरियां रहें बटोर,
इधर प्रेम का प्याला पी रहे, उधर मद का चल रहा दौर ।
इधर भलाइं सब जीवों की, उधर गो आदिका वलिदान ॥ न्या०

चौक ८

इधर मातापिता गुरू की सेवा, उधर मरों का है सत्कार ।
इधर पितर जीते जी रक्षक, उधर मरों को रहे पुकार ।
इधर जीवत को भोजन वस्त्र, उधर मरों का रचा भंडार ,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इधर गया है नाम ज्ञान का, उधर गया नदी की धार।
इधर मोक्ष नहीं बिना ज्ञान के, उधर मोक्ष हो कर स्नान ॥न्याय०

चौक ९

इधर रीति है ब्रह्मचर्य्य की, उधर रचा है बाल विवाह ।
इधर उन्नति बुद्धि विद्या की, उधर वीर्य्य बल किया तबाह ॥
इधर व्यवस्था गुण से वर्ण की, उधर जन्म पर करें निगाह ।
इधर चार आश्रम को माने, उधर बाल लिया मूंड मुंडा ॥
इधर अतिथि है सत्य उपदेशक, उधर चरस में हैं गलतान ।
न्याय तुला० ॥

चौक १०

इधर मेल और जोल का करना, उधर फूट में शिर गये फूट।
इधर परस्पर करनी रक्षा, उधर एक को एक रहा लूट ॥
इधर प्रेम है करनी सबको, उधर एक से एक रहा रूठ।
इधर सत्य व्यवहार करें सब, उधर देख लो झूठ ही झूठ ॥
इधर कपट की कहीं नहीं आज्ञा, उधर कपट की खुली दुकान।
न्याय तुला० ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चौक ११

इधर सभा और समाज उत्तम, उधर रंडी भड़वों का नाच ।
इधर कान भर गए ज्ञान से, उधर नैन की खा गई आंच ॥
इधर शब्द का अर्थ विचारें, उधर नाच नखरे की जांच ।
इधर प्रभु के गुण वर्णन हों, उधर कोक कथा रहे बांच ॥
इधर रीति है आर्य्यावर्त्तकी, उधर सचमुच हिंदुस्तान । न्या०

चौक १२

इधर जहां तक है विचार सब,उधर है अन्धम परम्परा ।
इधर हैं करना पर उपकार का, उधर कुल अपस्वार्थ भरा ॥
इधर से मन अपना प्रसन्न है, उधर से जाय जिया डरा ।
इधर का मार्ग ग्रहण करो सब, उधर नहीं है राह खरा ॥
'नवल सिंह' कहे आओ इधर उधर मुफ़त रहे मिट्टी छान ।
न्याय तुला० ॥

भजन १७७

खादन्ति वृक्षा न फलोद्गमे,
पिबन्ति नापः स्वयमेव निम्नगाः ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वहन्ति नद्यः हेतवे स्फुटाः,
परोपकाराय सतां विभूतयः ॥

दोहा

वृक्ष फले नें आप को नदी न अचवे नीरं ।
पर कार्य्य के कारणे सन्तन धरा शरीरं ॥

भजन

टेक—दयानन्द दया ऐसी कीनी भारत का भार उतार गयो ।

कली

कर वेद भाष्य दियो धर्म्म राख, सब बिगड़ी डगर सुधार गयो
फिर देश देश, कर सत्य उपदेश, भारत क्लेश सब टार गयो ।
फिर नगर२ और झगड़ २ पाखण्डो लोग सब हारगयो ।
'नवलसिंह' वह निष्कलकं कर, जग उद्धार पधार गयो ।

---

१७९ भजन

टेक—बिनां ज्ञान जीव कोई मुक्ति नहीं पावे ।

कली

चाहे धार माला चाहे बांध मृगछाला ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चाहे तिलक छाप चाहे भस्म तू रमावे। बिना०
चाहे रचके मन्दिर मठ पत्थरों के लादे ठंड,
चाहे जड़ पदार्थों को सीस नित्य नवावे। बि०
चाहे बजा गाल चाहे शंख और बजा घड़याल,
चाहे डफ डौरू चाहे झांझ तु बजावे। बि०
चाहे फिर तु गया प्रयाग चाहे काशी में प्राण त्याग,
चाहे गंगा यमुना चाहे सागर में तू न्हावे। बिन०
द्वारका और रामेश्वर बद्रीनाथ पर्बत पर,
चाहे जगन्नाथ में तू भ्रष्ट भात खावे। बि०
चाहे जटा सीस बढ़ा बोहर में चाहे कान फड़ा,
चाहे यह पाखण्ड रूप लाख तू बनावे। बि०
ज्ञानियों का कर ले संग पोपों का तज दे भंग,
'नवलसिंह' मुक्ति का साधन तब आवे। बिन०

१७६ भजन

टेक—है प्रभु वही सब पर है जिसे बढ़ाई।
है भक्त वही जिन प्रीति प्रभु से लाई॥

चौक १

है ज्ञानी वह जो वेद की विद्या जाने,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

है ध्यानी वह जिस का चित्त रहे ठिकाने।
है वही कवीश्वर सत्य शब्द लगे गाने,
है वही श्रोता सत्यासत्य जो छाने।
जिन सत्य से प्रीती कर असत्य से करी जुदाई। है भक्त०

चौक २

ज़रदार हुआ ज़र जिस ने प्रथम लगाया,
सरदार हुआ सर जिस ने प्रथम झुकाया।
नामर्द हुआ जिस ने मुरदार को खाया,
हो दर्द उसे जो दुःख नहीं तके परायां।
जिस ने हिंसा को तजा जिन्दगी पाई। है भक्त०

चौक ३

जो करे उपकार उसका उपकार होता है,
जो अपस्वार्थ में फसा वह कुछ खोता है।
काटेगा वही जो पहले बीज बोता है,
जो कल्लर में बीज बोता है बीज खोता है।
जो पुरुषार्थ नहीं तजे वह करे कमाई। है भक्त०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चौक ४

जो काम को जीते वही कामिनी पावे,
जो क्रोध को जीते सब को वही हरावे।
जो लोभ को जीते सब को वही लुभावे,
जो मोह को जीते वह मोहा नही जावे।
जिन खुदी को जीता उसने पदवी पाई। है भक्त०

चौक ५

जिन जीभ को जिता स्वाद को उसने पाया।
मन जीता जिसने हुआ काम मन भाया।
जिन आप को जीता जीता सभी जमाना।
जिन तुच्छ बुद्धि को तना वह हो गया दाना।
अहंकार को तजे तो मिले बड़ाई। है भक्त०

चौक ६

जो परदारा को तजे तो पावे नारी
जो झूठ वचन दे छोड़ शुद्ध हो बानी।
जो वीर्य्य की रचा करे तो चढ़े जवानी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करे सत्य व्यवहार तो रिद्धि मिले मन मानी।
कहे 'नवल सिंह' बिन विद्या दुर्गत पाई ॥ है भक्त०

भजन १८० (चौताला

ऐसी आर्य्य रची समाज, वेद ध्वनि साज बाज।
होम यज्ञ धर्म्म काज, रोग दुःख जाय भाग ॥ १ ॥
विद्वान देत ज्ञान, विद्या का देत दान।
श्रोता के भरत कान, जासु भ्रम होत त्याग ॥ २ ॥
ब्रह्म को विचार होत, बुद्धि को सुधार होत।
देश को उपकार हेत, आर्य्य पुरुष रहें विराज ॥ ३ ॥
प्रेम को करो उपाय, विरोध को धरो उठाय।
परस्पर होत सहाय, जासु छाय जाय धर्म्म राज ॥ ४ ॥
सुगन्धियों से हो हवन, दुर्गन्धता का होत हनन।
शुद्ध होत वृष्टि पवन, अमृत होथ जल फल अनाज ॥ ५ ॥
दयानन्द किया प्रबन्ध, काट गये पोप फन्द।
नवलसिंह स्वामी जी को देत असीस दीन अपाहज ॥६॥

भजन १८१

वेद प्रचार कैसे होवे ऐसी गाढ़ो पी लई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पगड़ी तो उतरी फिर, फिर भी कहे उतरी नहीं ॥
आबरू जब तक ही जानों, जब तक आदर आब है ।
मूर्ख होकर आब उतरी, फिर भी कहे उतरी नहीं ॥
'तेज सिंह' है शर्म जो, शर्माय खोटे काम से ।
व्यभिचार करते शर्म उतरी, फिर भी कहें उतरी नहीं ॥
मिला लाखों का घर ख़ाक में कहो अब क्या कसर रही है ।
पढ़ देखो तारीख पुरानी, यह घर था सब घरों में नामी ।
अब यह करता फिरे गुलामी, मिल गई आबरू ख़ाक में ।
अति भारी विपति सही है । कहो अब० ॥ १ ॥
जो थे ख़ास तुम्हारे भाई, होगये मुसल्लमान ईसाई ।
कैसी तुम्हें क्षमा सी आई कई करोड़ लाख में ।
उन की तादाद कही है, कहो अब० ॥२॥
रही सही को क्यों खोते हो, क्यों फसाद अंकुर बोते हो ।
किस ग़फ़लत में तुम सोते हो, धर्म्म कर्म्म धर ताक में ।
अधर्म बांह की गही है, कहो अब० ॥३॥
करो मित्र वैदिक प्रचारा, वैर भाव से करो किनारा ।
'तेजसिंह' सुख मिले अपारा, लिखा वेद की शाख में ।
इस में कुछ झूठ नहीं है, कहो अब क्या० ॥४॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भजन १८२

सूर्य्य वैदिक निकला भाई क्या अब भी नहीं चेतोगे ? ॥
उठो २ ग़फ़लत को त्यागो, उमर गुज़र गई अब तो जागो ॥
करवट बदल पड़े अभागी, कैसी नींद है आई ॥ क्या० ॥१॥
जगज़ाहिर इक़बाल तुम्हारा, हा हा ! मिला ख़ाक में सारा ॥
कहते सीना फटे हमारा, सुना नहीं जाई ॥ क्या०॥२॥
भाई मित्र अरू सुत नर नारि, प्राण प्रिय सन्तान तुम्हारी ॥
होती आई बारा बारी, यवन और ईसाई ॥ क्या० ॥३॥
आंख मल कर मूंह धो डालो, सत्य ज्ञान के जल में न्हालो ॥
पुरुषार्थ का खड्ग सम्भालो 'शर्मा' समुझाई ॥ क्या० ॥४॥

१८३ भजन

जो शुद्ध आत्मा होवे, सन्ध्या कर दोनों काल में ।
जल से होती तन की शुद्धि, तप से मन अरु ज्ञान से बुद्धि ।
प्रतिमा पूजन वेद विरुद्धि, फंसे भर्म के जाल में ।
तू किस गफलत में सोवे ॥ १ ॥
सत् जल से स्नान किया कर, ओ३म् नाम का ध्यान कियाकर
प्राणायाम का ज्ञान किया कर, चित् धर दीनदयाल में ।
गुरुमन्त्र हृदय मल खोवे ॥२॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रोक इन्द्रियां विषय कर्म से। सुकर्म कर नित दया धर्म्म से।
रहे सदा आनन्द परम से। कर्ता की प्रतिपाल में।
जो इस विध नियम संजोवे ॥ ३ ॥
पञ्च महायज्ञों को करना। श्रुति शास्त्रों में चित धरना।
'घासीराम' कुमति से डरना। सुमति राख ख्याल में।
नर काटे जैसा बोवे ॥४॥

१८४ भजन अग्निहोत्र में।

दोहा—अग्नि होत्र के करन से, सुख पावे संसार।
सत्य श्रुति का लेख है, बड़ा बड़ा उपकार ॥

करो अग्नि होत्र चित्त लाके, जो सुख पहुंचे संसार को। स्वार्थ बहुत लोग करते हैं, परमार्थ न चित्त धरते हैं। दुर्गति होके सो मरते हैं, ढोय पाप के भार को, सब अपना धर्म गंवा के ॥ १ ॥ अग्निहोत्र सा उपकार को है, पानी पवन की शुद्धि हो है, अन्न औषधि निर्मल सो है, पुष्ट करे नर नार को, तन अरोग हो सुख पाके ॥ २ ॥ द्रव्य सुगन्धित अग्नि जरेंगे, प्रमाणु वायु में मिलेंगे बड़े सुगन्धित मेह वर्षेंगे, फैलावें महकार को। दुर्गन्धि को हटा के ॥३॥ भया प्रचार बन्द ये जब से, दाबा जगत् रोगों ने तब से, अब मेरी

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विन्ती है सब से, जारी करो प्रचार को अज्ञान अधर्म विसराके ॥ ४ ॥ कठौर दौलत को खोते हो, महायज्ञ करते रोते हो, कहे 'घासी' कैसे सोते हो।, जागो समझ सुधार को मैं कहता हूं समझा के ॥

१८५ भजन विवाह के विषय में।

दोहा

वेद विरुद्ध विवाह से, विपत भरे दिन रात।
नर नारी में प्रीति ना, रहे कलह उत्पात ॥

वेदोक्त विवाह रचावो, जो सुख पावें नर नारी।
कर कन्या वर कर्म विचारें, रूप उमर गुण दोष निहारें।
स्वतन्त्रतासे गृहस्थ धारें, काटें उमर सुखारी। ये बात ध्यान में ल्यावो ॥ १ ॥ कन्या बड़ा होय वर छोठा, निश्चय जानो लहना लोटा। भूले फिरो समझ का टोटा, कहां गई अकल तुम्हारी। सुत पुत्री को विसरावो ॥ २ ॥ जनक भूप सीतो पर्णाई, बहुतेक राजा लिये बुलाई। निज इच्छा से वरे रघुराई। जयमाला डारी। सो क्यों मर्याद मिटावो ॥ ३ ॥ वेद विरुद्ध विवाह करोगे, निज सन्तानों को दुःख दोगे। कहे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'घासी' कब फिर चेतोगे, पल २ हो रही भारी । किस काज महा दुःख पावो ॥ ४ ॥

भजन १८६

दोहा

करो विवाह विचार के, वेद शास्त्र की शोध ।
बिना स्वयम्बर क्या करो, ये सब नीति विरोध ॥

शुभ रचो स्वयंबर शादी, सुख सम्पत प्रीति आराम हो । वर कन्या गुण कर्म में सम हों, बुद्धि अवस्थामें ना कमहों । तब तो विवाह अति उत्तम हों, सुख से उमर तमाम हो । ना वैर होयं ना व्याधि ॥ १ ॥ बाल उमर में शादी करना, गुड्डा गुडिया खेल ये वरना । वेद विरुद्ध दोष सिर धरना । विरोध आठों याम हो ।ऐसा मत करो उपाधि ॥२॥ क्या हासिल रण्डी को नचाना, हराम में पैसे को गंवाना । भांड नचाके कुफर मचाना, महिफल भी बदनाम हो । ये क्या बदरस्म ठहरा दी ॥ ३ ॥ आतिशबाज़ी बाग़वी वाड़ी धन खाने को तरह निकाली । कितने ही पछतायें पिछाड़ी जब कुर्की नीलाम हो । रोवें सुन ढोल मुनादी ॥ ४ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बखेर का करना फिजूल है, बहुत बखेरा फिर भी धूल है। पोच कर्म सो दुख का मूल है, कभी सिद्ध न काम हो। हर समझ बरबादी ॥ ५ ॥ तुरंग बैल की जोट मिलाओ, सुत पुत्री पर ख्याल न ल्यावो। कह 'घासी' पाछे पछ-तावो, बदनामी मुदाम हो। मे सांची वात सुनादी ॥ ६ ॥

१८७ भजन

दोहा

चार आश्रम से है बड़ा, गृहस्थ आश्रम जान।
इस की निन्दा जो करे, सो मूर्ख अज्ञान ॥

टेक—गृहस्थ बड़ा उत्तम है, सर्दार आश्रम चार का। इसी से सुर ऋषि मुनि भये हैं, कविजन पण्डित गुणी भये हैं। यति मति और गुणी भये हैं, मूल सकल संसार का। ये ज्येष्ठ श्रेष्ठ आश्रम है ॥ १ ॥ इसी से है राजे महाराजे, शूरवीर जो रण में गाजे। सखी सखावत कर २ लाजे, क्या कहना उपकार का। निन्दा कोई करे अधम हैं ॥२॥ इसी से यशी होय यश पा गये, बड़े २ पुरुषार्थ कमा गये। गृह-स्थियों का सीस निवा गये, भला चाहे नर नार का। जब तक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रहा दम में दम है ॥३॥ पर देखो पाखण्डी आकर, त्यागी बनते मूंड मुंडाकर। फिर भी भिक्षा मांगत आकर, सांसा वस्त्र अहार का। खा पी के बनते बेग़म हैं ॥ ४ ॥
इसी से चारों वर्ण कहावत, चार आश्रम का बोझ उठावत। तिसे बुरा कहत न लजावत। ये प्रथा बुरे विचारका। किस तरह बताया कम है ॥ ५ ॥ फ़क़ीरी से कोई भी भया ना, प्रभुता का अभिमान गया ना। गृही ऊपर रख दया ना। तजा खौफ कर्त्ता का। 'वासी' तो रज के सम है ॥ ६ ॥

भजन १८८ संन्यासाश्रम में।

दोहा

परमहंस जन हंस हैं, बसें सुधा के ताल।
निर्भय हो क्रीड़ा करे, अमल कमल की डाल ॥

टेक—जब तुरीयपद को पावे सत्पुरुष सुघड़ सन्यास ले।
वेद पढ़े तज पद विरुद्धी, सत जल से तन मन की शुद्धि।
ब्रह्मज्ञान करे निर्मल बुद्धि, इस का कर अभ्यास ले।
क्यों बृथा जन्म गंवावे, छलियों के फन्द में आवे।
जड़ को चैतन्य बनाया, रघु भूत ईश बिसरावे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर ठिकाने होश हवास ले ।१। दशों जीत छोड़े मत काऊ समदृष्टि कर शीत स्वभाऊ । हर्ष शोक सुख दुखई नसाऊ ।
एक नाम की आस ले अब तजके योग कमावे ।
चित ध्यान निरन्तर लावे । पुनः प्राणायाम चढ़ावे ।
तन मन पवित्र होजावे । कर शून्य महल में बास ले ॥२॥
पर उपकार कर गुण रासी, सत उपदेश सदा सन्यासी । मार मार विद्या की गांसी, अघ अज्ञान विनाश ले । दिल, असतय से हटाये । सत मार्ग गमन करावे । भ्रम जाल को दूर उड़ावे ।
सुख उपजे दुःख नसावे । सज्जन जन मेटो त्रास ले ।३।
तुरीय[1] जानें तुरीया वाले।इसके हैं कुछ ठाठ निराले। 'वासिराम' प्रभु के गुण गाले। गुण की कर तलाश ले । सब गुणियों के मन पावे, सुकर्म ही पार लावे, मत ना पाखण्ड मचावे ॥ सच आर्य धर्म कहलावे, पढ़ सत्यारथ प्रकाश ले ॥४॥ १२॥

---

१८६ भजन वर्णव्यवस्था में ।

टेक— उस बाल्मीकि भक्त के गुण गाते विप्र सुजान है॥
निष्ट मात्र मानुष था खोट[1], निपट शूद्र बुद्धि का टोटा।
तस्कर हिंसक पापी मोटा, हते सैंकड़ों प्राण हैं ॥कुछ रचा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहने तंगी के०॥१॥ सत्य उपदेश ऋषिन से पाकर ।
ऊंचे कर्म किये चित लाकर । विप्र भया अज्ञान गंवाकर ।
जानता मुल्क जहान है । सर्व कर सत्य संगी के ।२।
रामायण जो नहीं बनाता, कौन राम फिर उसका गाता ।
इसी कथन से जग विख्याता, प्रगट भया गुणवान है ।
लख ठाठ कथन चङ्गी के ॥३॥
गर्भ से सब शूद्र आते हैं, गुण कर्मों से पद पाते हैं
'घासीराम' हरि गुण गाते हैं, भटी पुरा सुस्थान है ।
चले ज्ञान बात जंगी के ॥४॥ २० ।

भजन १९०

दोहा—विषय बानर रोगिया, ज्वारि लुच्ची नार ।
पांचों की कुछ पत नहीं, षष्टम झूठ लवार ।

टेक—खेलन में नफा नहीं है, पेशा बुरा जुवारी का ।
धर्म न्यायनृप नीति रहना । शील दया सुख प्रीति रहना॥
हार जीत कोई मीत रहेना किसी खिलारी का ॥ पत किसी
की नाय रही है ॥ १ ॥ राज्यपाट धन वस्त्र हरादे ।
बेटा बेटी को पकड़ादे । औरें के हाथ दिलादे ।
अपनी नारिकूं । मैं सांची बात कही है ॥ २ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीता जुवारी मड़क बनावे, हारा खोटा पाप कमावे।
माल बिगाना ठग २ लावे चोरी जारी का।
संगत भी सदा रही है ॥ ३ ॥
धर्म त्याग कर अधर्म करना, सत्पुरुषों का कभी न वरना।
"घासी कहे ध्यान उर धरना, कथन हमारी का।
सत मन की डगर गही है ॥ ४ ॥

भजन १६१

दोहा—राजा नल से हर गये डिगे युधिष्टर भूप।
सब प्रभुता घट जात है, जो नर खेलत जूप ॥
टेक—धिक्कार जुआ खेलत को, मत चाल चलो उत्पात की
धर्म से बढ़ प्रताप नहीं है, ओ३म् से बड़े कोई जाप नहीं है,
जुवे से बढ़कर पाप नहीं है, ये आदत बदगात की लानत
उन गुरु चेलन को ॥ १ ॥ जीता जुवारी धन खावेगा।
हारा मूंड पकड़ रोवेगा। विपत मेरा ना सुख सोवेगा।
नींद जाय दिन रात की दुखिया पापड़ बेलन को ॥ २ ॥
गहना तक बालक मारेंगे, छल चोरी पर चित धारेंगे।
पर तिरियों पै हाथ डारेंगे, टूप तारने गात की। अमृत
में विष मेलन को ॥ ३ ॥ सर्वस खोये हिर्स मिटे ना।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हँसे वा रोवे हिर्स मिटे ना। नार बिछाए हिर्स मिटे ना।
सुने न गुरू पिता माता की। घासी सब की झेलन को ॥४॥

भजन १६२

दोहा—दया धर्म ऊपर चले, तब तो है इन्सान।
ना इस जग में मनुष्य से, बहुत भला हैवान ॥

टेक—मुख भजन करने को दीना, नर छोड़ झूठ तूफान को।
सत्य कहे ना सत्य सुनाता, झूठी साक्षी में क्या पाता, अन्न छोड़ के मांस को खाता, दधि तज मदिरा पान को धिक्कार जगत में जीना ॥१॥ वेदों का ना करे उच्चारण लगा पुराणों में शिर मारण। बृथ ग्रन्थ पढ़े किस कारण बु इञ्जील कुरान को, बना चाहे परवीना ॥ २ ॥ आंखें जती सती लखने को, सन्तों के दर्शन करने को॥ आप लगे गणिका तकने को, खो बैठे ईमान को। ऐसा क्यों अधर्म कीना। ३ चरण दिये सत पर चालन को, दौलत दीनों के पालन को, पीटन लागे कंगालन को। हाथ दिये ये दान को, मत खेल जुआ मति हीना ॥४। कान दिये ब्रह्मज्ञान सुना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर ठुमरी टप्पे, सुनता जा कर 'घासी' के ऊपर पा कर। घर ईश्वर के ध्यान को। सत धर्म चाहिये चीना ॥५॥

भजन १९३

टेक—जिससे सब रोग कटे हैं। एक जड़ी हमारे पास है।
मूल का नाम ओ३म् हैं भाई। गायत्री डण्डी कहलाई।
जप तप टहनी पर छाविछाई। निगम बाग में बास है।
फल की ना चमक घटे है॥१॥ नियम धर्म के पाते कहाते।
सत के फूल खिले लहराते। प्राणायाम के फल मन भाते।
मिट जावे सब त्रास है। सन्मुख ना पीड़ा डटे है॥ २॥
उरु का खरल सफाई तन की, बुद्धि का रगड़ा सूमती मनकी
सन्ध्या प्रातः समय घोटन की। मूल सजीवन ख़ास है।
त्रिदोष असाध्य हटे है।३॥ तीनों ताप पास न आवें, तीनों
पाप शीघ्र नश जावें। घासी राम छन्द कथ गावें।
सब गुणियों का दास है। कर्त्ता के नाम रटे है ॥ ४॥

भजन १९४

टेक—दश नियम धर्म के भाई, जिन को आर्य बतलाते।
प्रथम सत्य विद्या को जाने, दूजे निराकार को मानो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तीजे सत्य वेद पहचानो। पढ़ाकर दो सभ्य पढ़ाई, स्वामी जी यही फरमाते। जिन को०। चौथे सत्य को मन में धारो असत्य सब हृदय से टारो। पञ्चम हरदम धर्म विचारो। यही है नेक कमाई। ऐसे सब ऋषि सुनाते। जिन को० छटे सबका उपकार करावो। जभी आर्य खास कहावो। सप्तम सब से प्रीत लगाओ। अष्टम विद्या को गाई। अविद्या को दूर भगाते। जिन को०॥ नवें उन्नति सब की करना, दशों नियम हृदय में धरना, 'गंगासहाय' कह जब हो तरना भव सागर दरियाई। यों बिरथा जन्म गंवाते। जिन को०॥

भजन ११५

टेक—जिस की तू फिरे तलाश में। वह सदा पास रहता है सच्चे घर को नहीं पिछाना। इसी भूल में फिरा दिवाना। कांशी मथुरा में ईश्वर जाना। वो रह नहीं मक्के खास में, सब के घट २ बसता है। वह सदा पास०, भागा २ क्यों फिरे वो वामी। वही एक है जग का स्वामी, है निराकार और अन्तर्यामी। रहो उस की आश में। जो आप जगत् कर्त्ता है। वह सदा पास०। वेद मनु भी यही सुनावे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अजर अमर ईश्वर कहलावे । फिर क्यों ना तू ध्यान लगावे। पूर्ण ब्रह्म प्रकाश में जो कभी नहीं मरता है वह सदा पास० । पोप जाल को तोड़ भगावो, सन्ध्या पढ़ो गायत्री गाओ सत्यधर्म में मन ठहराओ । रहो मुक्ति के वास में, यूं गंगासहाय कहाता है, वह सदा पास० ॥

भजन ११६

टेक—सब सज्जन करो विचार वर्णों के कर्म सुनावें,

वेद पढ़े औरों को पढ़ावे यज्ञ करे पर घर करवावे, दान, दे औरों से दिलवावे, करे वेद प्रचार, शर्मा जब ही कहलावे, वर्णों० ॥ यज्ञ करे नित वेद को जाने, दान देय और धर्म पिछाने, रण में जाके शस्त्र ताने, दे दुशमन को मार तब पदवी वर्मा पावे, वर्णों० ॥ देश और परदेशों जावे, माल बेचकर नफा उठावे, कर्म धर्म में चित्त लगावे, है वैश्य वोही शुमार, जो सुद सवा का खावे वर्णों । शूद्र वही जो मूरख भाई, तीनों वर्णों की टहल बतलाई 'गंगासहाय यूं कहे सुनाई, नहीं और कर्म अधिकार ऐसे सब वेद बतावे, वर्णों० ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भजन १९७

उठ मुंह धो डालो बहुत ही सुलाया आलस नींद ने।

टेक—फूठ मद पीकर सोये। बुद्धि बल सर्वस खोये।

यवन मत दिखाया, आलस नींद ने। उठ० । १ ।

ग्रन्थ सत् जलाये सारे। अरु जनेऊ तोड़ न्यारे।

हिन्दू पद दिलाया, आलस नींद ने। उठ० । २ ।

बिन विवाही बेटी प्यारी, रोती अरु कलपती सारी।

हमसे छिन छुड़ाया, आलस नींद ने। उठ० । ३ ।

ये गुलाम लौंडी कहां के सोचे रहने वाले यहां के,

हा! हां! क्या कराया, आलस नींद ने। उठ० । ४ ।

नाना मत अंधेरा भागा, वेद सूर्य चमकन लागा।

हा! क्या फिर सुलाया, आलस नींद ने। उठ० । ५ ।

कमल ज्ञान बिकसा पाठका, सकुचे धूर्त्त कैरव बाधका,

जाने क्या सुंघाया, आलस नींद ने। उठ० ॥ ६ ॥

भजन १९८

जब से छोड़ी बान अग्निहोत्र की तुमने। टेक।

दिन रात काल पड़ते हैं, लाखों प्राणी मरते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुफ़त देते हैं ज्ञान, अग्नी० ॥ १ ॥

कहीं है विशूचका मारी, कहीं प्लेग महा दुखदारी।

कांपत सुन २ प्राण, अ० ॥ २ ॥

वायु है बहुत जरूरी, बिन जल भी हो मजबूरी।

दुहुन दोषन की खान, अ० ॥ ३ ॥

नहीं अन्न स्वच्छ पाते हैं, हम रोगी हो जाते हैं।

व्याधि ने घेरे आन, अ० ॥ ४ ॥

सुन्दर सन्तान न होवे, होवे तो रोगी होवे।

देख कर बनो अजान, अ० ॥ ५ ॥

अब भी जो यज्ञ रचाओ,

जल वायु अन्नशुचि पाओ,

नहीं दुख होय निदान, अ० ॥ ६ ॥

भजन १९९

पड़े क्यों ख्वाबे ग़फ़लत में समय अनमोल खोते हो।

भुलाकर नाम ईश्वर का सुखों से हाथ धोते हो॥

अदा अपना फ़रायज़ को जो तुम अब तक नहीं करते।

समझलो अपने हक़ में तुम दुःखों का बीज बोते हो॥ १॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो है फ़रमान वेदों का अमल उस पर नहीं मुतलक़।
ग़ज़ब की नींद सोते हो नहीं बेदार होते हो ॥ २ ॥
कुफ़र को छोड़ दो भाई बनों वेदों के अनुयायी।
मिले जब शांति सुखदायी वृथा क्यों भार ढोते हो ॥ ३ ॥
कमालो धर्म को प्यारे ये जिन्दगी चन्द रोजा है।
बचन 'बलदेव का सुन लो वृथा क्यों जग रोते हो ॥४॥

ग़ज़ल भजन २००

भक्ति भगवान में दिल अपना लगाओ तो सही।
वेद मारग पै क़दम अपना बढाओ तो सही।
ठोकरें खाते न शरमाते हो उठाते तकलीफ़।
खोटे कामों से ज़रा दिल को हटाओ तो सही ॥१॥
वक्त नायाब को नाहक़ न गंवाओ साहिब।
ग़ौर से सोचो ज़रा होश में आओ तो सही ॥२॥
इस मुसाफिर खाने में ठहरे हैं मुसाफिर कितने।
दुशमनो दोस्त इन में कौन बताओ तो सही ॥ ३ ॥
बेवफा खुदगर्ज़ों से दो छोड़ लगाना दिल का।
मेल 'बलदेव' उस मालिक़ से मिलाओ तो सही ॥४॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भजन २०१

हरि सों प्रीति करो मन मेरे।
जिन २ प्रीति करी प्रीतम से।
जैसे लोह परसि पारस सों, कञ्चन होत खेरे ॥ १ ॥
जिहि सुमरत कलि कलुष विनाशत विघ्न आवत नेरे।
जैसे रञ्चक अग्नि जरावत घास के कोटि घनेरे ॥ २ ॥
काम क्रोध मद मोहादिक यह प्रबल शत्रु हैं तेरे।
इन के वश होय जीव जगत में भोगत दुःख बहुतेरे ॥ ३ ॥
मोह नींद को त्याग जाग जड़, प्रभु चरणन चित दो रे
विनय दास 'बलदेव' जासु के सुर नर मुनि सब चेरे ॥४॥

भजन २०२

तुम्हें इन्साफ़ करने को प्रभु ने नर बनाया है।
फ़र्ज अफसोस अपने को मगर तुमने भुलाया है।
रहम अबला अनाथों पर जो करना तुम को लाजिम था।
सितम ईजाद कर २ के उन्हें तुम क्यों सताया है ॥ १ ॥
चलो बस देखली हमने तुम्हारी सिफत दानाई।
जो खंजर जुलम का तुमने गरीबों पर चलाया है। २।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जहां से पुत्र की उत्पत वहीं से पुत्रियां जन्मे।
तो फिर पुत्री के पालन में कहो क्यों जी चुराया है। ३।
सुतन विद्या पढ़ाते हो उन्हें महरूम रखते हो।
तुम्हें बे मुन्सफी करते न दिल में तरस आया है। ४।
बदों बुड्ढों मरीज़ों से न करते व्याह शर्माते।
हुए हाऐ सख्त दिल ऐसे जिगर पत्थर बनाया है। ५।
अग्नि को बीच में देकर जो पकड़ा हाथ पञ्चों में।
बचन दें सात वेदों पर जिन्हें पत्नी बनाया है। ६।
उन्हीं के शिर पै बेश्या को बना सौतन बिठाते हो।
अहद तो उम्र उल्फत से कदम अपना हटाया है॥ ७॥
जुलम करते हैं जोरुओं पर तरस खाते न शर्माते।
न करते खौफ़ ईश्वर का जो घट २ में समाया है॥ ८॥
रुदन करती हैं अबलायें नहीं सत्कार पाती हैं।
वही कुल नष्ट होता है मनु ने भी बताया है। ९॥
करो निज धर्म का पालन समय 'बलदेव' जाता है॥
बड़े ही पुण्य से प्यारो मिली मनुष्य की काया है। १०।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कौंसिया) भजन २०३ (ताल ३

पढ़ो २ रे वेद सत्पन्थ चलो, अब आर्य बनो जो भयो सो भयो।
वेदों का प्राचार करो अब अज्ञान में काल गयो सो गयो १
धन देह सुकर्म में दीननको, अब लों कुदान दयो सो दयो २
प्रीति परस्पर करो सकल मिल फूट ने लूट लयो सो लयो।३।
गयो हाथ सें ताको न सोच करो, करो वाको सम्भाल रह्यो सो रह्यो ४
बनो भक्त 'पुलन्दर' ईश्वर के, अबलों दुःख सह्यो सो सह्यो ५

भजन २०४

दुर्दैव घटा घिर आई, अब जागो भारत भाई।
बक दादुरवत प्रजा पुकारे, करत न कोई सहाई १
वैदिक धर्म समूल नशावत, पवन पखंण्ड चलाई २
सत्य सुमति एक्यता छिपें सब, चक्रवाक की नाई ३
धन विदेश को चल्यो जाय जिमि, सरित सिन्धू को जाई ४
रोग वृष्टि भारत पर वर्षे, नित नूतन अधिकाई ५
दुखकर सिन्धू बढ़त दिन दूनो, लखि २ जिय घबराई ६
कहत 'पुलन्दर' उठहु भरात अब, सोच हु कोई उपाई ७
डूबन चहत देश भारत यह, ... में ... बचाई ८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२०५ भजन

हरि बिन और हितू नहीं कोई - (अन्तरा)
निशिदिन भ्रमत फिरत मन मूर्ख क्षण हरि भजन न होई।
काल कराल शीश पर डोलत खान चहत अब तोई । १ ।
हाथी घोड़ा महल खजाना सुत दारा दिक सोई।
अन्त सहाय न करे एक हू चले यहां से रोई ॥ २
कन्हिा बनज लाभ नहीं पाया गांठ की पूंजी खोई ॥
सुधा क्षेत्र में जड़ मति हो कर बिष की बेल तैं बोई ॥
हरि सिमरण की सुरत भुला के पाप मोट शिर ढोई
जन्म जुआ में हारि 'पुलन्दर' सुख की नाव डबोई । ४ ।

गजल] २०६ भजन

ऐ ... दिल हो कैसे देश में सत धर्म का प्रचार ।
जब तक न भेद वेद का सब पर हो आशकार । १ ।
मुश्किल है वेदवाणी सिखाना अवाम को ।
उपदेश ही से देश का जल्दी करो सुधार । २ ।
ईसाई और कुरानी जबानी कहानी से ।
दिन रात अपने मन को बढाते हैं होशियार । ३ ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

खुर्शीद वेद धर्म का हरसू हुआ प्रकाश ।
मिसले चिरागो लैम्प हुए फीके मत हज़ार ॥ ४ ॥
जैसे हो वैसे मित्र के परम प्रेम से सभी।
इस आर्य्य भूमि देश का जल्दी करो सुधार ॥ ५ ॥
बांधो कमर कसर न करो धर्म कार्य्य में।
आसा नहीं है पाना मनुष्य जन्म बार बार ॥ ६ ॥
फैलाओ ब्रह्मज्ञान का चर्चा हरेक जगह।
नैपाल और अमरीका क्या चीन और तातार ॥ ७ ॥
मशरिक यही है नैयर इल्म और अक्ल का।
दौरे फलक से ग़र्ब में गो अब है आशकार ॥ ८ ॥
अफसोस आप चीज़ थे नाचीज़ बन गये।
घर खोके फिर भी आप को सूझी न एक बार ९
जागो उठो संभालो बचालो रही सही।
सच्चा जो वेद धर्म है उस पर चलो विचार। १०।
उस को पढ़ो पढ़ाओ सुनाओ सुनो सदा।
संसार भर में वेद है सब विद्याओं का सार ।११।
तन मन धन से कीजिये रक्षा स्वधर्म की।
विनमाली 'मिश्र' कहता है कर जोड़ बार बार ।१२।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ग़ज़ल भजन २०७

चापलूसी और है सत लिन्नता कुछ और है।
वैडाल बृत्ती और है धर्मज्ञता कुछ और है। १ ।
कहते हैं वह कहते नहीं कहते सो कर पाते नहीं
बातें बनाना और है कर्त्तव्यता कुछ और है २
जीव ईश्वर दोनों को वाहिद बताना भूल है।
अज्ञानता भ्रम और सर्वज्ञता कुछ और है ॥ ३ ॥
स्वामी सेवक दोनों की 'बलदेव' होवे न तुल्यता।
परतन्त्रता कुछ और है स्वतन्त्रता कुछ और है ॥ ४ ॥
जीव है बन्धन में आता ईश मुक्त स्वभाव है।
बन्धन की विपता और है मुक्ति की प्रभुता और है। ५ ।

(कवित) भजन २०८

धन से क्या लाभ जो न खावे और खवावे क्यों देवे ना दिलावे कुछ पर उपकार में, बल से क्या लाभ जो न शत्रु को सतावे पर भूमि न दिवावे न लगावे नेक काम में। शास्त्र से लाभ क्या जो होवे न विवेक हिये धर्म को न जाने न स्नेह सदाचार में। नर तन से लाभ क्या जो ईश

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को न ध्यावे तनक। चित्त न लगावे 'बलदेव' सद्विचार में॥४॥

सवैया) २०९ भजन

कर्म वही अनुकूल जो धर्म के, धर्म्म वही जो कलेश मिटावे। नारि वही पति की हितकारिणि, तारि दुहू कुल स्वर्ग सिधावे। पुत्र वही पितु मातु को सेवहि, मित्र वही जो विपत्ति बटावे। त्याग वही 'बलदेव' कहे, कुछ कंचन देखि न चित्त चलावे॥५॥

कवित) २१० भजन

जन्म ही प्रथम अनित्यता की गोद बैठे पीछे निज माता की गोदी मांझ आवे हैं। पीछे संयोग के वियोग है सदा से लगी जैसे दिन रात एक आवे एक जावे है। क्षण प्रति क्षीण होतें काया पै न जाने परत जैसे घट काचों जल बीच ही विलावे है। यौवन धन रूप के गुमान में भूले सठ प्रेम 'बलदेव' क्यों न प्रीतम सो जतावे है॥६॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कवित २११ भजन

विद्या, बुद्धि, शूरता, उदारतादि एको गुण पाय के पायो नाम जगत में आयके। स्त्री पुत्र गुरु अतिथि भृत्य दीन बन्धुन को कीन्हो सत्कार न दयालुता दिखाय के। योग यज्ञ जप तप धारणा समाधि ध्यान भक्ति हु न कीन्हीं मन चित्तको लगायके। बीत्यो 'बलदेव' जन्म श्वान के समान तैमे कौन फल पायो हाय नर तन पायके ॥७॥

कवित २१२ भजन

सागर में तारिबे को जहाज बहु भांति रचे अन्धकार हारिबे को दीपक जलायो है। न्यारी के चलायबे को पंथ भांति २ रचे गजन वश कारिबे को अंकुश बनायो है। शीत उष्ण टारिबे को नानाविधि वस्त्र रचे और बहु रोगन को सु औषधि सुहायो है। सुधरे स्वभाव 'बलदेव' याते दुष्टन को ऐसो न उपाय हाय काहू ने बतायो है ॥ ८ ॥

कवित २१३ भजन

मुंह सों कहीं बात पशु पक्षी हूं पिछान लेत सोटा के

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सहारे गधा करते पयान है। अकुंश के इशारा को गजहू खूब जानत है बाग के इशारा को घोड़े पहिचान है। लकड़ी के इशारा पाय बन्दर बहुनाच नचे स्वामी को बोल पहिचान ज्यों श्वान है। बिना कहे जान तत्व बात पहिचाने बलदेव सोई बुद्धिमान पण्डित सुजान है॥

कवित २१४

काया मांहि देखिये कलेश को खजानो भरो सम्पति में देखिये बिपत्ति ही को धाम है। भोग माहि रोग और संयोग में धरो वियोग सुख दुःख दोनों को निवास एक ग्राम है। निश दिन हानि लाभ जीवन मरण आदि एक के सुपीछे एक चलत मुदाम है। ऐसे काल चक्र के फिरत 'बलदेव' सदा हर्ष शोक मानिबे को यामें कौन काम है॥

सवैया २१५

शान्ति नहीं जिनके चित में मन इन्द्रियन पै जिनको वश नहीं
कुंजर की स्नान समान क्रिया उन को अरु कर्म हु याहीं।
ज्यों विधवा तरुणी को सिङ्गार और वृक्ष बिना फल २ रुखाहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कवित २१८

चाहे नीति निपुण कोई निन्दा और स्तुति करे चाहे लक्ष्मी जू घर आवे चाहे आवे ना चाहे देह छुट जाय आज कल्पान्त में जन्म पर्यन्त सुख पावे चाहे पावेना । चाहे 'बलदेव', गति पृथ्वी की पलटि जाय भावे काहू के मन चाहे काहू भावे ना । धरि के न्याय पन्थ मांहिं पग को सुधीर पुरुष कोटिन विघ्न आवे तहू पीछे को हटावे ना ॥

कवित २१६

आपनो विगार करे उपकार सोई उत्तम पुरुष तिहुंलोक में प्रधान है । प्रथम बनाय निज और को बनावे पीछे तेऊ कोटि मध्य में गणित सुजान है ॥ आपनो बनावे चाहे और को बिगार चाहे अधम निकृष्ट वही राक्षस महान है । करत 'बलदेव' दोनों अपनी पराई हानि उनको नाम जानिवे में हम हूं तो अजान हैं ॥ १४ ॥

कवित २२०

रजनी बिन चन्द जैसे रदन विन गयन्द जैसे पर बिना

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

परिन्द जैसे कमल बिन सर है । सुन्दर स्वरूपवान विद्या बिहीन जैसे कृष्णा धनवान बिना दुम बनचर है । कहत 'बलदेव, होय सुजन दरिद्री जैसे दुष्ट दुखदाई तिय पतिव्रता को बर है । कंटक समान ऐते खटकत महान् जैसे पुरुष बिना नारी और नारी बिन नर है ॥

कवित २२१

नारी नैनवान जाके चित्त में न बंधे कबों क्रोध रूप अग्नि जाके चित्त में न लागी है । विषयन के जाल में फंस्यो चित्त जाको कबों इन्द्रीजीत भोगन से रहित विरागी है ॥ कबहुं 'बलदेव' कह्यो मुखसों न मिथ्या बने हिंसा पर निन्दा पैशुन्य जिन त्यागी है । ऐसे त्रयलोक तिलक दुर्लभ संसार माहि उपजै जिहि कोखि धन्य मातु बड़ भागी है ॥

कवित २२२

प्यास लगे सुखे कंठ शीतल जल पाय मिटे भूख लगे भोजन करि क्षुधा मिटावे है । शीत उष्ण टारिवे को वस्त्र बहु भांन्ति चाहे धूप लग छांह में सो व्याकुल हुवे धावे है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जगे 'बलदेव' अग्नि काम की प्रचण्ड जब सुन्दर तरुणी को हिये लायके बुझावे है। एक २ व्याधी की जो औषधी विरंचि रंची बुद्धि को दरिद्री तिन्हें सात सुख बतावे है ॥

कवित २२३

जौलो यह शरीर हृष्ट पुष्ट शुद्ध रोग रहित जौलौं नहीं निकट बुढ़ापा दुष्ट आया है। जौलों शक्ति इन्द्रिय की शिथिल भई है नाहिं जौलों कोई बुद्धि में विकार ना जनायो है। तौलों 'बलदेव' खोजी पकड़े कल्याण पन्थ सोई नर बुद्धिमान पण्डित कहायो है। आग लगी घर में तब पानी हेतु कूप खोदि कहो तत्काल फिर कौन ने घर बुझायो है ॥

कवित २२४

कहा कियो सम्पति कुबेर के समान पाय कहा कियो वस्त्र बहु मूल्य तन धारिके। कहा कियो गजरथ तुरंग की स्वारी बैठि कहा कियो शशि मणि मुकट सवारि के। कहा कियो सुघर सुन्दरीन के कपोल चूमि कहा कियो प्रबल शत्रु सेन

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

को सघारिके । कहत 'बलदेव' परलोक ना सवारो तिन कहा कियो व्यर्थ बात ज्ञान को बघारिके ॥१६॥

कवित २२५

दूर ते पतंग दौरि २ परत दीपक पर मोह वश तनकहु न सूझ लाभ हानि है। मछली तनक मांस देखि कांट को निगल जाय ताहि के पीछे पुन खोवाति निज प्राण है। मुनि के मृदु बीन गान वन को मृग मोहि जात तब ही दुष्ट व्याध खेंचि मारत हिये बाण है। त्योंहि 'बलदेव' जानि बूझि फंसत बिषयन में देखो प्रिय मित्र मोह महिमा बलवान है॥

भजन २२६

नर ओंकार का ध्यान धर, जिस ने यह जग रचाया।

टेक—वेद शास्त्र के लिखा संस्कारे, ऋषि मुनि कहते गये सारे। हरे व्यापक है प्रभु अंदर बाहर, नित्य उसी का गान कर। सुधेर यह तेरी काया, जिसने यह जग रचाया॥ १॥

अविनाशी प्रभु रक्षा करता, नहीं जन्मता वह मरता। हरे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पत्थर पूजा फिर क्यों करता, पत्थर पड़ गया ज्ञान पर।
ईश्वर का नाम भुलाया जिसने० ॥ २ ॥
मन विषयों से रहित हो जावे, ऋषि कहे यह ध्यान कहावे। हरे
मन चञ्चल को वश में लावे, तीर क्यों चढ़े कमान पर।
त्यों ओं को धनुष बनाया जिसने० ॥ ३ ॥
बाण रूप आतम कर लीजो, परमात्मा को लक्ष्य करजो। हरे
लक्ष्य भेद कर सुख में भीजो, आनन्द हो इस ध्यान पर।
यह 'धर्मदेव' को भाया जिसने० ॥ ४ ॥

रागनी भैरवी) २२७ भजन (ताल खवी

मेरा मन मुझको कैसे सतावे,
कैसे सतावे कैसे सतावे कैसे सतावे।
मैं समझूं मन समझे नाहीं,
उलटे मार्ग में मुझ को लेजावे।
झूठ कपट छल शिक्षा देवे,
पाप सागर में मुझ को डुबावे।
कभी पूर्व कभी पश्चिम जावे,
कभी उत्तर कभी दक्षिण धावे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्संगत का संग न करता,
खोटी संगत की कथा सुनावे।
मन पापी कपटी अति प्रबल,
मैं 'अधीन' की पेश न जावे।

ठुमरी] २२८ भजन (खम्माच

टेक—थाम चतुर चञ्चल मनको तु थाम चतुर चञ्चल मन को।

कली—कब हूं मन कञ्चन महल रचत है।
कबहूं मन धाय चले बन को।
कबहूं कहे यह देह दिन दश है।
मान करे कबहू जोबन को।
कबहूं त्याग वैराग करत है।
कबहूं चाहे मिथ्या धन को।
कबहूं कहे पुरुषार्थ करें कुछ।
कबहूं चले भीख मांगन को।
कबहूं रुखी सुखी में तृप्त।
कबहूं चाहे मन्न तर भोजन को।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'नवलसिंह' बिन आड ज्ञान के ।
कठिन वेग मन इञ्जन को ॥

भजन २२९

कबहूं मन रंग तुरंग चढ़े कबहुं मन चाहत है धन को ।
कबहूं मन वेद पुराण पढ़े कबहूं मन चाहत है रण को ।
कबहूं तिरया देख लुभाए चलो कबहूं मन मृग होइ बन को ।
'तुलसीदास विचार करो समझाय चलो कपटी मन को ।

भजन २३०

कहूं मन की कथा क्या मैं मति कुछ इस की न्यारी है,
मनोर्थ नित्य नये रचता खेल ऐसा खिलारी है,
करे विचार मन जब यह तो पानी छान कर पीवे,
भ्रष्ट मन देखिये कैसा मद्य मांस आहारी है ।
मन ही चतुर आंधेक भाई महा मूर्ख है मन भोला,
मन ही कड़वे बचन बोल कहे मन बात प्यारी है ।
तपस्वी मन ही बन जावे करे तप लोह सम देखे,
मन ही शठ विषयी पामर अति मिथ्या आचारी है ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राग भूपाली) २३१ भजन (३ ताल

टेक—चल रे मना हरि दर्शन पा।

काम क्रोध मद लोभ सभी को दूर हटा,
अपने आप से दुर हटा।
खप २ मरता इस दुनियां पर,
क्या समझा अपने चित्त में क्या समझा।
आयु खोई पाप कमाया जन्म गया,
प्रभु के भजन बिन जन्म गया।
छोड़ सकल संसार के धंधे,
शरण आ अपने प्रभु के शरण आ।
धन दौलत दारा सुत भाई,
न तेरा इन में कोई सहाई, न तेरा० ॥

भजन २३२

कोई मन मेरे नूं आ समझावे सैय्यो लख २ मिनतां लावे।
मैं समझाऊं मन समझे नाहीं हर दम आन सतावे,
जी २ करदी हार गई पर मन नूं समझ न आवे।
मैं मोड़ं मन मुडदा नाहिं उठ २ जग नूं धावे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं पापी नूं प्यार करां मन बनके सिह डरावे।
वेद शास्त्र पढ़ां निश दिन मन फिर भी बदी करावे,
भूखी प्यासी सबर करां मन दर २ भीख मंगावे।
सीधे रस्ते चलदी नूं मन पुट्ठे राह चलावे,
मिनतां करदी हार गई मन गुतनी नूं हथ पावे।
दया धर्म दी मैं प्यासी मन खोटे पथ चलावे,
पुत्र २ आख रही मन पुत्रां वांगि न आवे।
शर्म दी मारी मैं मरदी मन खड़ी बाज़ार नचावे,
मैं डरदी अन्दर वड़दी मन धौलयां नूं दाग लगावे।
मैं बांदी हां उस दी जेड़ा मन नूं रस्से पावे,
इस पापी निर्लज पशू ते मेरी जिन्द छुड़ावे।

राग बिहाग] भजन २३३ [ताल ३

यह मन कब समझेगा बावरा,
कब समझेगा बावरा कब समझेगा बावरा ॥ १ ॥
अमृत सागर को तज मूर्ख पीवत है जल कौड़ा ॥ २ ॥
विषय आनन्द की मृग तृष्णा में फिरत इत उत दौड़ा ॥ ३ ॥
व्यभिचारी मति मानत नाहीं खावत है विष मौहरा ॥ ४ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अकार उकार मकार फूल की रस ले तू बन भौरा ॥ ५ ॥
'अमीचन्द' बेद न मानत नाहीं मुग्ध गंवार निगौड़ा ॥ ६ ॥

भजन २३४

मेरे मन ने मुझ को दीवाना किया है।
न सत्य धर्म्म की ओर जाने दिया है ॥
न जपने दिया है नाम उस का।
कि जिस ने यह अमोलक जन्म दिया है ॥
विषय भोग की ओर लेजा के उसने।
मुझे जगत स्वामी से बेमुख किया है ॥
जो मुक्ति के साधन थे सारे छुडा कर।
पत्थर पूजा में खूब लाया जिया है ॥
कभी देवी के आगे बकरा चढाकर।
मुझे जीव हत्या का भागी किया है ॥
भला बकरा देने से मुक्ति कहां हो।
कि दूजे को दुःख देके सुख किस लिया है ॥
यह मन मेरा किस रोज समझेगा मूर्ख।
जान बूझ के यह पशू बन रहा है ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कभी देख पर नारि भरमें है पापी ,
चोरी जारी को ही धर्म्म मन लिया है ॥
हाए हैफ़ सद हैफ़ जवानी पै 'चन्दा'
मनुषा जन्म को सुफल न किया है ॥

भजन २३५

कोई मोड़े दिलां दियां वागां नूं
मन समझाया समझे नाहीं—रात दिने उठ पैंदा राहीं ॥
ढूंढन साध समाधां नूं ।
यह मन मेरा कौआ कहिये बिना हंस क्यों मोती लैये ॥
मिल हंसां तन कागां नूं ॥

भजन २३६

मन मानत नाहीं ऐसा उत्पाती है ।
टेक—दिन रात करत यह घात बडा घाती है ।
यह काम सदा उलटे ही करवाता है ।
इन्द्रियों के वश हो विषयन में जाता है ॥१॥
अति ही चञ्चल स्थिर क्षण भर नहीं रहता है ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं अपनी बदी से जरा बाज़ आता है।
छोड़त नहीं मूरख अपनी बदकारी है।
दिन रात करत यह घात बड़ा घाती है॥ २॥
कभी फिरे बनाता यह अटा अटारी।
कभी रचता कूप तड़ाग बाग़ फुलवारी।
कभी काम विवश हो चाहत सुन्दर नारी।
कभी दीन हीन क्षण ही में होये भिखारी।
कभी युद्ध क्षेत्र में लड़े ठोक छाती है।
दिन राति करत यह घात बड़ा घाती है॥ ३॥
कभी भंग चरस पीवे शराब का प्याला
कभी नृत्य करे गावे होकर मतवाला
इस मन मूरख ने बहुतों का घर घाला।
बहुतों का जप तप ज्ञान भ्रष्ट कर डाला
इसके वश होकर सुधि बुद्ध सब जाती है।
दिन राति करत यह घात बड़ा घाती है॥ ४॥
जगदीश्वर इस दुःख से हमें छुड़ाओ।
हे मन! करूं हाथ ऐसा सामर्थ्य बढ़ाओ।
करि दूर विषय से अपनी ओर लगाओ।
मोहि जानि आपनी दास नाथ अपनाओ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दुःख हरो दास की तबीयत घबराती है ॥
दिन राति करत यह घात बड़ा घाती है ॥ ५ ॥

रागनी टोड़ी २३७ भजन [ताल झप

मेरे मन ने मुझ को बहुत ही सताया ।
कुसंगी किया और कुमार्ग चलाया ॥ १ ॥
मुझे झूठी बातों से बहका के इस ने ।
असत काम में वक्त मेरा गंवाया ॥ २ ॥
बढ़ाई रुचि खोटे कर्मों में मेरी ।
दिया मुझ को धोखा भ्रम में फंसाया ॥ ३ ॥
कराई कभी इस ने पत्थर की पूजा ।
कभी इस ने पीपल कभी बढ़ पुजाया ॥ ४ ॥
कभी मुक्ति पाने अमर नाथ पहुंचा ।
पहाड़ो की चोटी के ऊपर फिराया ॥ ५ ॥
कभी वामियों की लगावट से इसने ।
विषय भोग को मोक्षमार्ग बताया ॥ ६ ॥
नया रोज़ धोखा दिया मुझ को इस ने ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिगाड़ा मेरा काम अपना बनाया ॥ ७ ॥

कराई कभी लिंग की इस ने पूजा ।
कभी देवी की प्रतिमा को पुजाया ॥ ८ ॥

वहां बकरा चढ़वाया कह कर इसी ने ।
मुझे जीव हत्या का भागी बनाया ॥ ९ ॥

अविद्या के जंगल में चक्कर दिलाये ।
हर एक काम उलटा ही मुझ से कराया ॥ १० ॥

भयानक सुनाई सदा इसने बातें ।
सदा इस ने झूठा मुझे डर दिखाया ॥ ११ ॥

न जाने दिया सीधे रस्ते पे मुझ को ।
मुझे विद्वानों में मूर्ख बनाया ॥ ११ ॥

किये इतने झगड़े बहुत ख़ाक छानी ।
मगर शान्ति को कहीं भी न पाया ॥ १३ ॥

गरज इसने धोखे से रक्खा भ्रम में ।
न करना था जो कुछ वो मुझ से कराया ॥ १४ ॥

न मानूंगा अब तो कभी मन का कहना ।
समझ को मेरी इसने बट्टा लगाया । १५ ।

खुलें ज्ञान चक्षु तो फिर हर जगह पर ।
जगत स्वामी का मैने प्रकाश पाया । १६ ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नहीं कोई 'केवल' रहा मुझ को संशय।
मुझे वेद मार्ग है अब हाथ आया। १७।

राग भुपाली) २३८ भजन (३ ताल

मन मेरा मद माते हाथी की न्याईं,
वश में कदापी न आवे है पापी। १।
निर्मल नदी को करे है गंदीला,
उजले गंगा जल न न्हावे है पापी। २।
अपनी सफाई को आप ही बिगाड़े,
सिर पर धूल उडावे है पापी। ३।
पर धन पर हिंसा पर नारी ऊपर,
लोभक नयन चलावे है पापी। ४।
वट आदि वृक्षण की तोड़े है शाखा,
गन्ने में तृप्ति न पावे है पापी। ५।
बन्धन को तोड़े है अंकुश न माने है,
पापों के मार्ग में धावे है पापी। ७।

भजन २३९

मन मूर्ख को समझ न आवे वृथा अपनी उमर गंवावे,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गंगा न्हाये माने मुक्ति जान बूझ कर गोते खावे।
कहां तक कहूं बुद्धि हीना जड़ वस्तु को सीस नवावे।
सब से बढ़ कर जो है चतुराई ईश्वर का अवतार बतावे।
पत्नी उन को का स्वांग बनाकर भरी सभा में नाच नचावे।
भ्रम में भूला फिरे भटकता जहां जावे वहां ठोकर खावे।
सारे जगत का जो है स्वामी उस से क्यों नहीं प्रीत लगावे।
मन को योग्य है अति मग्न हो गुण ईश्वर के प्रेम से गावे।
केवल तत्त्वज्ञान को समझे तब मन में कुछ शांति पावे।

॥ इत्युपदेश प्रकरणम् ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ ओ३म् ॥

आर्यगायनम् ।

दूसरा खंड ।

स्त्रियों के हितार्थ गीत ।

(स्तुति और उपासना)

१ गीत

हर गुण गाईये माये, हर गुण गाईये माये ।
आनन्द पाइये नी सैय्यो, आनन्द पाइये नी माये ।
भक्ति करिये माये, भक्ति करिये माये ।
पार उतरिये नी सैय्यो, पार उतरिये नी माये
दीनाबन्धु माये, दीनाबन्धु माये ।
करुणा सिन्धु नी सैय्यो, करुणा सिन्धु नी माये ।
एहो स्वामी माये, एहो स्वामी माये ।
अन्तर्यामी नी सैय्यो, अन्तर्यामी नी माये ।
करनी करिये माये, करनी करिये माये ।
इस विध तरिये नी सैय्यो, इस विध तरिये नी माये ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कूटां चारे माये, कूटां चारे माये।
व्यापक सारे नी सैय्यो, व्यापक सारे नी माये।
शास्त्र कैंहदा माये, शास्त्र कैंहदा माये।
बेला बैंहदा नी सैय्यो, बेला बैंहदा नी माये।

---

२ गीत

टेक— हर गुण गाईये माये।
हर गुण गाईये भैना जो हमरा स्वामी नी सैय्यो।
मुक्ति दाता सब का वह अन्तर्यामी नी सैय्यो।
है वह प्रीतम प्यारा अन्तर्यामी नी सैय्यो।
तन मन धन से उस दी करो गुलामी नी सैय्यो।
एक दिन चलना होसी यह दुनियां फानी नी सैय्यो।
उस दिन भैना भाई लोग तमामी नी सैय्यो।
धर्म कमाईये जग में जो होवे हामी नी सैय्यो।
आज्ञा प्रभु दी पालो कैंहदी 'रामा' नी सैय्यो।

---

३ गीत

जुत्ती नारोवाल दी वे सतारियां जड़त जड़ी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(इस गीत की आवाज पर निम्न लिखित)

भक्ति मेरे राम दी सर्व सुखां दे नाल भरी ।
वे रामा भक्ति होवे तां एहो जही ॥ १ ॥
कर भक्ति खोटे सङ्ग में जो कोई बैठेगा एक घड़ी एक घड़ी
वे रामा उस दी आयु व्यर्थ गई ॥ २ ॥
ऊंची भक्ति राम दी जिस दे हृदय दे वीच जमी वीच जमी
वे रामा उस नूं आंउदी है शान्ति ठण्डी ॥ ३ ॥
सारे मुनि जन गाऊंदे उसदी महिमा दा अन्त नहीं अन्त नहीं
वे रामा साडे जिवड़े नूं समझ नहीं ॥ ४ ॥
की कीता की कर रिहा साड़े करने दी एहो घड़ी एहो घड़ी
वे रामा सानूं इतनी भी खबर नहीं ॥ ५ ॥
मूर्खता बिच पड़ रिहा धर्म करने दी चाह नहीं चाह नहीं ।
वे रामा साड़ी आयु व्यर्थ गई ॥
जीवड़े नूं नहीं सुझदा कर्म करने दी जांदी घड़ी जांदी घड़ी ।
वे रामा साडे मूर्खता मगर पई ॥ ७ ॥
जो बीते दिन होगये ओन्हां गयां दा सोच नहीं सोच नहीं
वे रामा सानूं अग्गे नूं समझ देवी ॥ ८ ॥
खोटे कर्म छुड़ाय के चंगे करने दी चाह देवीं चाह देवीं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वे रामा साडी मूर्खता दूर करीं ॥ ९ ॥
हायनी अकले मेरिये नी तूं प्रभु जी से बेमुख रही बेमुखरही
नी मूइये नी तूं तांहें तां दुखी रही ॥ १० ॥
जे कर्म करें तूं चंगड़े तां तूं सुखां दे नाल भरी नाल भरी
नी मूइये नी तूं प्रभु जी दी शरण पवीं ॥ ११ ॥
भक्ति करदे जो जन ओन्हां मुक्ति दी आश लगी आशलगी
वे रामा सानूं भक्ति दे योग्य करीं ॥ १२ ॥
'भगवती' हथ जोड़दी सची विद्या दा दान देवीं दान देवीं
वे रामा साडी अविद्या नूं दूर करीं ॥ १३ ॥

३ गीत

घड़ सुनियारिया मेरे हथ्थां दा चूड़ा वे । रखनी हैं डबुए बिच मैं एनी मेरियांए केसर भिन्नियां भेढियांए ।

(इस गीत की आवाज़ पर निम्नलिखित)

कर प्रभु पियारिया मेरा यह प्रण पूरा वे करां मैं मनचित लाये जी तेरियांए आनन्द भिन्नियां आज्ञा जेडियांए । आनन्द भिन्नियां मंगल भिन्नियांए तेरियांलय सुखां लपेटियां आज्ञा जेडियां । कर प्रभु पियारिया मेरे मन इन्द्रिय वश वे करां मैं मनचितलाय जी तेरियांए आनन्द भिन्नियां आज्ञा जेडियांए आनन्द भिन्नियां प्रसाद भिन्नियांए

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तेरियांलय दुःख गुवावनहार आज्ञा जेड़ियांए । कर प्रभु पियारिया मेरा अज्ञान दूर वे । करां मैं मन चित लायनी तेरियांए आनंद भिन्निया आज्ञा जेड़ियांए आनंदाभिन्नयां मंगलभिन्नियांए तेरियांलयदोषानिवारणहार आज्ञा जेडियांए । कर प्रभु पियारिया मेरे हृदय प्रकाश वे। करां मैं मनचित लाय जी तेरियांए आनन्द भिन्नियां आज्ञा जेडियांए आनन्द भिन्नियां अहलादभिन्नियांए तेरियां लय करन दुःखां ते पार आसां जेड़ियांए । कर प्रभुपियारियासानूं भक्तिदा दान वे । करां मैं मन चित लायेनी तेरियांए । आनन्दभिन्नियां आज्ञाजेड़ियांए तेरियांलय जन्मसुधारपियार आज्ञा जेड़ियां ए । कर प्रभु पियारिया सानूं सामर्थ दान वे । करां मैं मन चित लाय जी तेरियांए आनन्द भिन्नियां आज्ञाजेड़ियांए आनन्द भिंन्नियां प्रसन्नता भिन्नियांए तेरियां लय सब सुखां दा सार आज्ञा जेढियांए । कर प्रभु पियारिया सा ज्ञान प्रबोध वे करां मैं मन चित लाय जी तेरियां ऐ आनन्द भिन्नियां आज्ञां जेढियांए आनन्द भिन्नियां प्रेम भिन्नियांए तेरियां लय संसार तारनहार । आज्ञा जेढियां ए । कर प्रभु पियारिया सानूं भवसागर पार वे । 'भगवती' करे अर्दास वेनती मेरियांए । करां मैं प्रीत दे नाल आज्ञा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तेरियां। आनन्द मिलियां खास मिलियां ऐ तेरियां लय माच पहुंचान हार आज्ञा जेहड़ियांए॥

गति ५

प्रभु पूर्ण तुमरे द्वार याचक आय खरे।
तुम लीजो सुधि हमार दीन दयाल हरे॥१॥
तुहि दाता सब संसार दान अनन्त करे।
तुम राजा जग महाराज तुझ से सकल डरे॥२॥
हरि उत्तम दीनन बन्धु जीवन पालें भरें।
तुहि स्रष्टा जगत पसार जड़ चैतन्य करे॥३॥
तुम पवित्र रूप अपार तैं बल सृष्टि तरे।
तुम स्वामी सब ब्रह्मांड हम सब दास तेरे॥४॥
हम निर्बल दीन मलीन तुमरे पाय गिरे।
धनवन्ता प्रीतम तुझ से नाहिं परे॥५॥
अब दीजे करुणा सिन्धु नाम पुनीत वरे।
तेरी महिमा यश गुण चारु अपने हिये धरे॥६॥
प्रभु लीजे चरणन मांहि दुःख सन्ताप टरे।
होय निर्मल शुद्ध और बुद्धि तुमरा ध्यान धरे॥७॥
तुम धन्य धन्य कर्तार हो बलवन्त हरे।
हम गावें जय जय कार नाम ओ३म् उचरे॥८॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गीत ६

डिपटी जय बोलो

(इस की आवाज़ पर निम्न लिखित)

जय बोलो महाराज हरि दी जय बोलो ॥ टेक ॥

भले लोक सब हरि नूं सिमरण हरि नूं करन प्यार।
हरि दी० ॥१॥

भले करन नित्य स्वामी सेवा, भक्ति प्राण आधार।
हरि दी० ॥२॥

धर्म्म कर्म शुभ करदे सज्जन, गावन हरिगुण चार।
हरि दी० ॥३॥

तन मन से सो निर्मल रहिंदे, उत्तम तिन्हां विचार।
हरि दी० ॥४॥

मन्द कर्म्म नूं सजन तजदे, माड़े करन विगाड़।
हरि दी० ॥५॥

निज हरि भक्ति रचे हैं सज्जन, मूर्ख भक्ति बाहर।
हरि दी० ॥ ६ ॥

भले लोक ना किसे दुःखावन, बुरे करण दुराचार।
हरि दी० ॥७॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भले लोक सब लज्जा वाले, मन्दे मन्द व्यापार।

हरि दी० । ८ ।

संग बुरा न कादे सज्जन, प्रभु दी शरण आधार।

हरि दी० । ९॥

गीत ७

हरिनाम जपो धर प्रीति मना हरि नाम जपो।

टेक—एकोंकारा जगद धारा, छाड़ विलम्ब हि शर्ण गही।

जन्ममरण त्रित निर्धन के, धन सत्य सनातन अटलहरी।

आनंद दाता सब जग पाता, पापी जन की सुमति दान करी।

महिमा निर्मल सिमरो हरपल, भव दुःख सागर जा नतरी।

नाथ अनाथ गावो गाथा, क्यों नहीं ध्यावो पहर घड़ी।

एह जग सारी गावनहारा, हरि निर्मल यश जरी जरी।

रवि शशि तारे बर्णत हारे, गाय थके नहीं पार परी।

नित्य निरंजन दोष विभंजन, आनन्द रूप हरि चिन्ता।

हरि मंगल करता संकट हर्ता, प्रेम पयोधर भगवन्ता।

अरु हरि स्वामी, अन्तर्यामी, करुणासिन्धु विसार नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

८ गीत

टेक—मैं तेरी, मैं तेरी, मैं तेरी वे प्रभु जी।
बुद्ध हीणी सुद्धलीनी तू मेरी, वे प्रभु जी।
गुण गावां फल पावां, तर जावां वे प्रभु जी।
तू दयालु कृपालु प्रतिपालक वे प्रभु जी।
मैं झल्ली तुर चल्ली ते इकल्ली वे प्रभु जी।
हथ खाली देह जाली बुरे हाली वे प्रभु जी। मैं०
तूं दाता पिता माता, हे विधाता वे प्रभु जी।
मैं बिचारी औगुण हारी ते भिखारी वे प्रभु जी।
मेरी नैय्या वहण पैय्या रख लैय्या वे प्रभु जी। मेरी०
जिन्द जांदी गोते खान्दी, पछतांदी वे प्रभु जी।
तूं कर्त्ता दुःख हर्ता तुहीं भर्ता वे प्रभु जी।
स्वामी आया समझाया तां मैं गाया वे प्रभु जी। मैं०
असीं राहीं कट फाहीं हो सहाई वे प्रभु जी।
सच्चिदानन्दा काटो फंदा देओ आनन्दा वे प्रभु जी॥

९ गीत

मोरे प्राणपति से जा कहियो, दर्शन की लग रही अभिलाषा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निश दिन तरसत हैं मोरे नैना, ज्यों जल बिन चातक प्यासा
तुम बिन सब कुछ फीका लागत, आभरण भूषण मलमल खासा
क्षमा करो अपराध प्रीतम, अब अपनी शरण में देओ वासा
धन १ योबन धन है संयोगन, जिसकी पति करे पूरी आशा
दास कहाये किस के ढिग जाए 'अमीचन्द' दासन अनुदासा

१० गीत

टेक—मेरे राणा जी मैं भगवत के गुण गाना।
राजा रूठे नगरी राखे, प्रभु रूठे कहां जाना।
राणा ने भेज्या ज़हर प्याला, अमृत कर पी जाना ॥
डबिया में काला नाग जो भेज्या, ओ३म् अक्षर करजाना।
'मीरांबाई' प्रेम दिवानी, प्रभु प्रीतम को पाना ॥

११ गीत

टेक—मैं समलड़ी औगुणहार, कोई मैनूं दस देओ।
लघां किस विध भवजल पार। हे स्वामी ॥
न मैं तव भक्ति चित्त लाया, न कोई उत्तम कर्म कमाया।
जन्म गंवाया। हे स्वामी ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभु ! नाम तेरा न जपया, सत्संग मनो है तजया।
अाई न लज्जा। हे स्वामी॥
नहीं स्तुति गुण तेरा गाया, विषय तृष्णा में दिल है लाया
समय वंजाया। हे स्वामी॥

उपकार कदे भी न कीता मैं यह जन्म अकार्थ लीता।
ऐवें जाय बीता। हे स्वामी॥
नाहीं जाता धर्म प्यारा, जेड़ा देसी अन्त सहारा।
कुछ न विचारा। हे स्वामी॥

सत्विद्या दा पठन न पाठन, सत्ज्ञान न ज्ञान दा साधन।
होईयां अभागन। हे स्वामी॥
धन जोडन दा रहया चसका, लग्गा झूठ ते पापका लटका
भुल्या खटका। हे स्वामी॥
मैं स्वाद ते विषयां दी पट्टी, कोई मूल भलाई न खट्टी
हो मन मत्ति। हे. स्वामी॥
ओथे धर्म ओड़क संग जावे, भाई बंध न कम कोई आवे
वेद बतावे। हे स्वामी॥
'गंगाराम' जो आज्ञाकारी, सोई जाय न पार उतारी।
बिन अधिकारी। हे स्वामी॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मैं अवलड़ी औगणहार, कोई मैनूं दस देवे।
होवां किस विध भवजल पार। हे स्वामी।

गीत १२

अज बधावड़े भलके बधाइयां नी भला जस की सुर ते।

धन प्रभु प्यार दियां वे परवाहियां नी भला जस।
सूरज चान्द चाहडे, कर रोशनाइयां नी भला जस
कई भांत दे नी मेवे मिठाइयां नी भला जस।
साडे २ खान लई उसने बनाइयां नी भला जस।
गाइए महिमा उस दी एहो भलाइयां नी भला जस।
जो जन सिमर गये कर गये कमाइयां नी भला जस।
जिन्हां ने भुलाया प्रभु ओह ऐवें ही आइयां नी भला जस
'रामचन्द्र' आखे भैनां छड दो बुराइयां नी भला जस।

गीत १३

मैं सौं २ रातां गुजारियां, प्रभु दे भजन बिना।
सौं २ सारी रातां गुजारियां, ऐमी तैंनू मैं वसारियां।
रात दिनां नित्य पाप कमावां, सिर पापां दियां खारियां।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मानुष्य जन्म अकारथ खोया, जीती बाजी मैं हारियां
तु गुणां वाला सब गुण तेरे मैं निर्गुण औगुण हारियां।
मैं पापण नूं तार दयामय, चरनां तो बलिहारियां।

---

१४ गीत

प्रभु लै २ नाम तेरा, मैं दिआं चरखे नूं फेरा।
तुझ चरखा मेरा घड़िया, मैं तेरा ही लड़ फड़िया
चरखे दी कीमत भारी, मैं दे न सकां विचारी।
अनमोल जीभ दी चमड़ी, मैं मुल न पाया दमड़ी।
मैं कतनियां चाई २, त्रकले विच वल न पाई।
मेरा बैड़ा माल न भड़के, मैं कतनियां उठके तड़के।
घड़ दे कारीगरा पीढ़ी, जेड़ी सुख दी होवे सीढ़ी।
कोई पक्की लकड़ी लाई, उत्ते गूड़ा रंग चढ़ाई।
रंग चाहड़ी तूं दिल देके, खुश होवण साहुरे पेके।
सैय्यां देख के होवण राजी, ओह मेरी करन मुहताजी।
मैं पहली पूणी लाई, साहुरे घरों आया नाई।
मेरे नाल दियां जो सैय्यां, ओन्हा कत्त पछियां भर लैय्यां

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

एह चरखा होया पुराना, करे "अमीचन्द" किसदा माना

---

१९ गीत

टेक—मैं तेरे वारे जावां तरखाना, तूं है मेरा परम सुघड़ सुजान

पंच तत्व का काठ मंगाया, मंजा बनाया खूब सुहाया ॥
लोट पोट कर खुश हो बैठा जिस पर सकल जहान ।
मैं तेरे वारे जावां०

लत्तां बावां दियां सेरू बांहियां, पैरां दे पावे सांयां ॥
पांज प्राण का संधा करके, नसां बनाइयां बाण ।
मैं तेरे वारे जावां०

दुखां सुखां दियां पिडियां पाइयां तीन गुणांदे रंग रंगाइयां
जी सभना ने ऊचा राखो, नबज़ रक्खी दबानें ।
मैं तेरे वारे जावां०

साणां मंजा कसा कसाया, तेरे दिया हेठ बछाया ॥
उत्तम नाम भजन नहीं कीना, मंजे में पड़गई काण ।
मैं तेरे वारे जावां०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अथोउपदेशः ।

१६ गीत

टेक-प्रभु लंघासिया पार वे हरि नाम सिमर लै"।
प्रभु लंघासिया पार वे हरि नाम सिमर लै ।
नेक कमाई कर कुछ प्यारे, इन्द्रियां नूं मार वे ।
हरि नाम सिमर लै०
धर्म बिना कोई संग न जावे, रहे नी वेदें पुकार वे
हरि नाम सिमर लै०
विषय भोग विच गई है जवानी, अजे भी सोच विचार वे
हरि नाम सिमर लै०
मानुष जन्म अमोलक है, मिले न बारंबार वे ।
हरि नाम सिमर लै०
नं कर नींद कठन है पैड़ा, होसी बहुत ख़वार वे ।
हरि नाम सिमर लै०
मूढ़ मन जो सोचे नाहीं मानन मुग्ध गंवार वे ।
हरि नाम सिमर लै ०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१७ गीत

करसां मैं हार शृंगार, जिस विच पिया मेरे वस आवे
मेरे प्राण आधार नी सैय्यो ०

जिस भूषण बिच होवे न दूषण सो मेरे दरकार । नी०
न ओह टूटे न घिस जाए न लवे चोर चकार । नी०
भट्ट पवे ओह सोनां चांदी जो लग्गे कन्ना नूं भार । नी०
गजरयां बंगां थीं हुण संगां कच्चा कच उतार । नी०
अन्त मुलम्मा है गहणा निकम्मा एह सौदा मुनियार । नी०
न धन रहसी न धन वालियां एह जोबन दिन चार । नी०
प्रेम दी माला नाम दा नामा, पाओ नी गल विच हार । नी०
दान अनन्त धर्म दा धागा, धुर मुड़ा धर्म प्रचार । नी०
चर्चा चूड़ कनी कंगण, आरसी तत्त्व विचार । नी०
दयादी दाओणी झुमके चमा वाले टिक्का पर उपकार । नी०
शुभ लच्छण दी लच्छो अच्छी, ... पिया दा प्यार । नी०
पावांगी छल्ले मैं निर छल्ले, रखसां पैर सुधार । नी०
सुन न सके मेरी सौकण वैरन, झांजर दा छनकार । नी०
लौंग बुलाक है नथ खावंद हथ, चुटकी दा चमकार । नी०
चौंक चौंप सुच फुल भक्ति, गहणा है कीमतदार । नी०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिंदी बंदना कर स्वामी दी, ज्ञान है करनाधार । नी०
दर्शन पावां खुशियां मनावां, तनें मन देमां वार । नी०
'अमीर' प्रीतम नूं वश करसां, देसी पल विच तार । नी०

१८ गीत

प्रभु जप लेना भैनां एहो सफल है कमाई ।
विना धर्म्म नी भैनां कुछ संग भी न जाई ॥
चित्त अपना तूं भैनां प्रभु चरनां वल लाई ।
चार दिनां दे एहे झूठे नी मां पेओ भैनां भाई ।
आज्ञा पति दी नी पालो आगे होवे बड़याई ।
मुड़के जन्म एह दुर्लभ हथ भी न आई ।
इस जग में फंस के स्वामी दिया क्यों भुलाई ।
'रामचन्द्र' कहे प्रभु बिन कोई न सहाई ।

१९ गीत

मेरिया वे माहया की सुर पर

मेरियो नी सैय्यो मन नूं लेओ समझा
नी क्यों पड़ विषयों में ईश्वर दिया भुला

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सारे जगत का जो स्वामी है उस से नहीं लो ला
सब सृष्टि का कर्त्ता हर्त्ता जग में रहया समा
वही है साडा प्रीतम प्यारा चरनां तों बल जा
कर्म धर्म कुछ नेकी करले जो साडे कम आ
एह दुनिया है सराए मुसाफिर दम दा नहीं वसाह
धर्म बिना कोई संग न जासी धर्म ही करे सहाय
जिन्हां नाल है प्रेम प्रीति, हथीं देन जला
धियां पुत्र और भैनां भाई सब एथे रहजा
एह जन्म दुर्लभ है भैनां मुशकल से हथ आ
'राम' कहे कर याद पीयां नूं सब दुःख दूर होजा

२० गीत

जे तैनूं सच्चे सुखां दा हैगी लोड़ वे
तां तूं अपनी कुचाल मना छोड़ दे
तेरे कर्मां नूं ओथे जाके तोल दे
तेरे कर्मां नूं ओथे जाके तोलं दे
मंदे कर्म नर्कां वल टोर दे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मंदे कर्म नरकां वल टोरदे
स्वर्ग जांदे नूं रसते विचों मोड़दे
स्वर्ग जांदे नूं रसते विचों मोड़दे
तैं तां बन्धन पा लए डाढे ज़ोर दे
तैनूं धर्म्म सुनावां मना होर वे
तूं तां छल चतुराईयां मना छोड़ दे
तेरे कर्मां नूं ओथे जाके तोल दे
मन्दे कर्म नरकां वल टारदे
पर उपकार सुनावां मना होर वे
पर पीड़ा नूं अपने विचों छोड़ दे
पर पीड़ा नू अपने विचों छोड़ दे
तेरे कर्मां नूं ओथे जाके तोल दे ॥ २ ॥
सच्चा बोल सुनावां मना होर वे
निन्दा चुगली दा करना मना छोड़ दे
निन्दा चुगली दा करना मना छोड़ दे
तेरे कर्मां नूं ओथे जाके तोल दे ॥ ३ ॥
तैनूं खिमां सुनावां मना होर वे
तूं तां वैर विरोध मना छोड़ दे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तूं तां वैर विरोध मना छोड़ दे
तेरे कर्मा नूं ओथे जा'के तोल दे ॥ ४ ॥
तूं तां प्रभु जी दे वल्ल मुख मोड़ वे
तैनूं 'भगवती' काहिंदी हत्थ जोड के
तैनूं 'भगवती' कहिंदा हत्थ जोड के
तेरे कर्मां नूं ओथे जाके तोल दे ॥ ५ ॥

बारह मासा

१२ गीत

इक माहा दो माहे तिन चलदे आये ।
वे लाल जम्मूं दरियाऊ, पत्तन डेरे पाये ।
(इस की रीति और आवाज़ पर)
प्रथम जगदीश को हृदय मांहि मनाये ।
नी सखियो जिस दे प्रताप से इस जग विचं आये ।
भलयई दे करने नूं यह जग भला ठिकाना ।
बुराई बैरन इस ते बच के रहना ।
जिन्हां ने कीती जग में बहुत बुराई ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नी सखियो होगा पछतावा क्यों मैं जग पर आई ॥१॥
वैसाख बंधन लाख कल्लो नी मैं तोड़ न सकां ।
भक्ति प्रेम दी रस किस विध चक्खां ॥२॥
जेठ सोच के देख कीनी कौन मन्ताई ।
नी सखियो दम्मादे लोभ में सब औध गंवाई ॥
दम्मां दे लोभ में सब औध गंवाई ।
न सखियो ऐसे लई कीती सारि छल चतुराई ॥
छल बल मैं सारी छल चतुराई ।
छल बल दे कीते पूरी पैंदी नांहीं ॥
परमेश्वर दे दित्त चूड़े छणकया बांहीं ॥३॥
हाड़ के महीने उत्तम कर्म करीवां ।
परमेश्वर दी करां भक्ति जग में जब लग जीवां ।
परमेश्वर दी करां भक्ति जग में जब लग जीवां ।
नी सखियो बेम दे पिआले नी मैं भर भर पीवां ॥४॥
सावण दे महीने जो प्रभु शरण न पड़ियां ।
काम क्रोध दियां लहरां उनको मुशकल बनियां ॥५॥
भादों दे महीने जो कोई मन्दा बोले ।
परमेश्वर विमुख उनका जिउड़ा डोले ॥६॥
असू दे महीने जो शुभ कर्म में रत्ते ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उनके सब कार्य प्रभु जो करदा आप ॥७॥
कातक दे महीने यह नर देही पाई ।
परमेश्वर नहीं याद करदी जो मन भाई ।
मन दे परचावे दे विच उमर गंवाई ।
करके शुभ काम नें कीती सफल कमाई ॥८॥
मग्घर दे महीने जद दे जग विच आये ।
परमेश्वर की भक्ति दे विच चित्त न लाये ।
नी सखियो लड़दे दिन रात रहिंदे रौला पाये ॥९॥
पोह जन्म लिया खोह जो झगड़े करन नकम्मे ।
नी साखियो करदे सत्यसंग जो जन पूर करम्मे ॥१०॥
माघ दे महीने जो जन करन लड़ाई ।
गुस्से अभिमान में सब उमर गंवाई ।
गुस्से अभिमान लोभ लालच में रत्ते ।
शांति संतोष धैर्य कदे चक्खे ।
गुस्से अभिमान में मन हर दम झूरे ।
सत संगत मिले रहिंदे जो कर्मां दे पूरे ॥११॥
फगण दे महीने जिंद मेरी बन रही भोली ।
गुस्से अभिमान में आ मंदा बोली ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुस्से अभिमान में आ क्या फल पाया।
भक्ति न कीती ऐंवें जन्म गंवाया।
गुस्से अभिमान में तूं रह गई माती।
भक्ति प्रेम दी कुछ सार नँ जाती॥
भक्ति प्रेम में तु पाई न पूरी।
फंदों में फस के निदंड़ी पल पल झूरी।
'भगवती कहंदी प्रभु जी शरणी आवां।
भक्ति प्रेम में सब उमर बितावा॥१२॥

२१ गति

ऊंचा बुर्ज लाहौर दा।

(इस गीत की आवाज पर निम्न लिखित)

ऊंचा कर्म्म संसार में उपकार कहिये।
सच्चा बोल कहिये प्रभु दी भक्ति कहिये।
नीचा झूठ पलाल सुन लय जीया वे मेरिया॥१॥
जे सुख चाहें अपना जीया वे मेरिया मना वे मेरिया
कर लय उपकार सुन लय जीया वे मेरिया॥ २॥
इस संसार में आय के जिया वे मेरिया मना वे मेरिया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कीते कर्म करूर सुन लै जीया वे मेरिया ॥ ३ ॥
गिन २ कर्म्म भुगीवने जीया वे मेरिया मना वे मेरिया।
लेखा जा पैना दूर सुन लै जिया मेरिया ॥४॥
शक्कर होवे तां वंडिये जीया वे मेरिया मना वे मेरिया।
कर्म न वंडिया जाय सुन लै जीया वे मेरिया ॥५॥
धागा होवे तां तोड़िये जीया वे मेरिया मना वे मेरिया।
कर्म्म न तोड़िया जाय सुन लै जीया वे मेरिया ॥६॥
खाई होवे तां टप्पियये जीया वे मेरिया मना वे मेरिया।
कर्म्म न टपिया जाय सुन लै जीया वे मेरिया ॥७॥
कर्म्न हैं तिन्न प्रकार दे जीयाँ वे मेरिया मना वे मेरिया।
सो चंगे मंदे मध्य सुन लै जीया वे मेरिया ॥८॥
मन्दे मध्य त्याग के जीया वे मेरिया मना वे मेरिया।
शुभ कर्मां में तूं लाग सुन लै जीया वे मेरिया ॥ ९ ॥
इन शुभ कर्मां दे कारणे जीया वे मेरिया मना वे मेरिया।
पवें मोक्ष द्वार सुन लै जीया वे मेरिया ॥ १० ॥
'भगवर्त' तैनूं आखदी जीया वे मेरिया मना वे मेरिया।
कर लै प्रभु से पिआर सुन लै जीया वे मेरिया ॥११॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२१ गीत

मैं तैनूं आखिया माह्हीं वे मारू देश न जाईं।

(इस गीत की आवाज पर निम्न लिखित)

मैं तैनूं आखिया जिन्दे, नी लग जा सच्च दे धन्दे।
नी ऐथे बहुत हैं फन्दे, एहना विच फस न जावीं ॥
नी पैनें गियां बेड़ियां वांहीं ॥१॥
हथीं करेंगी चंगा, नी तद तेरा सौरेगा धन्दा।
नहीं तां पावेंगी दुखड़े नी कंडे बीज लए राहीं ॥२॥
जे तूं करेंगी क्रीड़ा, तां सुख तैनूं होवेगा थोड़ा।
जे तूं रहेंगी माती, तां कोई ना होवेगा साथी ॥३॥
जे तूं पथ जावें सड़के, कदे न जिन्दड़ी धड़के।
जे तूं पथ जावे राहीं, तां कोई दुखड़ा नाहीं ॥४॥
जे करें शुद्ध तूं मन नूं, तां तेरे चैन है तन नूं।
जे है मैल मन मांहीं, तां तैनूं चैनं वो नांहीं ॥५॥
जे चढ़े पुराय दे बम्बे, तां सारे सौरदे धन्दे।
जे चढ़े धर्म दी रेले, तां तैनूं प्रभु दे मेले ॥६॥
जिन्हां घर रश्मी बस्ते, तिन्हों पर बैठ कर हस्ते।
हत्थों कुछ देंदेड़ नाहीं, ओन्हां नू चाहिये ऐसा ॥७॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वह हुन्दा धर्म लई पैसा, एह और किस काम का नाहीं
ओह पछतावें गे बहुता समय हथ आवना औखा ॥
तां पेश कुछ जावनी नाहीं, 'भगवती' आखदी पिआरी।
कपट से हो जावो न्यारी, लगी प्रभु भक्ति के मोहीं ॥६॥

१८ गीत

तान दुपटड़ा पैं सुत्ती वे मेरा।

(इस गीत की आवाज पर निम्न लिखित)

जग में आकर सो रिहों वे मना बेपरवाही।
जे मना तूं प्रभु वल मुखड़ा मोड़ें तां तेरे विच दोष नाहीं
दोष तेरे अपकर्मों नूं वे मना बेपरवाही।
वे मना जिन्हां करके होवे क्लेश तेरे विच्चें दोष नाहीं २
जिस दिहाड़े आया सी वे मना बेपरवाही।
वे मना तूं प्रभु से करके करार तेरे विच दोष नांही ॥३॥
ओह कौल विसार के वे मना बेपरवाही।
वे मना तूं लग गया होर ख्याल तेरे विच दोष नांहीं ॥४॥
काहे कारण आया सीं वे मना बेपरवाही।
वे मना कोई ऐसे जगत विचें तू तेरे विच दोष यही ॥५॥
मैं मेरी विच रम रहा वे मना बेपरवाही।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वे मना कोई हानि कर लईं तूं तेरे विच दोष यही ॥६॥
'भगवती' तैनूं आखदी वे मना वेपरवाही ।
वे मना तू जो करना है करले आज तेरे विच दोष यही ॥७॥
एहो वक्त विहाय के वे मना वेपरवाही ।
वे मना प्रभु दे आगे पावेगा लाज तेरे विच दोष यही ॥८॥

गीत १९

तेरी २ खातर मल्ला जी त्रै वस्तां छोड़ियां ।

(इस गीत की आवाज पर निम्न लिखित)

सुखां दी खातर मन ते धर्म्म करावना ।
धर्म्म करावना इस ते प्रभु नूं रिझावना ।
प्रभु नूं रिझावना उस ते सब सुख पावना ।
तुसां न छोड़िया मना जी पाप कमावना ।
पाप कमावना इस ते नर्का में जावना ।
नर्का में जावना ओथे बहु दुःख लै पावना ।
आयां सी सुखां नू एथों दुःखं लै जावना ॥१॥
सुखां दी खातर तन ते ब्रत रखावना ।
ब्रत रखावना इस ते देह सुकावना ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देह सुकावना इसते मन समझावना।
मन समझावना इसते प्रभु नूं रिझावना ॥ २ ॥
सुखां दी खातर तन ते तीर्थ करावना।
तीर्थ करावनां तन नूं कष्ट दिखावना।
कष्ट दिखावना इस ते मन समझावना।
मन समझावना इसते प्रभु नूं रिझावना ॥ ३ ॥
सुखां दी खातर किधरों बकरा चढ़ावना।
बकरा चढ़ावना उस दा गल कटावना।
पाप दे कर्मां तुं पुराय वतावना।
इहां पुरायां दा फल बालक चावना।
दूजे नूं दुःख देके सुख नहीं पावना।
हुण दी कीता एहो अगे भुगतावना ॥
तुसां न छोड़िया मना जी पाप कुमावना ॥ ४ ॥
सुखां दी खातर किधरों धागा करावना।
धागा करावना नाले यन्त्र लिखावना।
यन्त्र लिखावना ओह तां गल विच पावना।
गल विच पावना नाले लक बन्धावना।
लक बन्नवना सजने डोले लटकावना।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

डोले लटकावना खण्डी मेढ़ी बिच्च पावना ।
एहनां गल्लां बिच्च धन खरचावना ।
धनं खरचावना कुछ बन नहीं आवना ।
तुसां न छोड़िया मन जी पाप कुमावना ॥ ५ ॥
सुखां दी खातर मन नूं कथा सुनावना ।
कथा सुनावना इस ते मन समझावना ।
मन समझावना इस ते प्रभु नूं रिझावना ।
'भगवती' कैंहदी फेर दुःख नहीं पावना ॥ ६ ॥

---

२२ गीतं

अनी एह नर देह प्यारी एह नर देह अति उत्तम ही पायए । अनी समझ बिना पियारी समझ बिना मैं ऐसे गुवाय । जद मैं बालक बुध नियानी तां मैं हानि लाभ न जांनी । रही खेडन दे बिच लग्गी मेरी उमर गई है ठगी मैंनूं कुछ भी सुझ न आई एह तां ऐसे ही विहाई ए ॥ १ ॥ अनी एह नर देह पियारी एह नर देह । प्रभु कृपा से पायाए अनी लग विषयन में लग विषयन में प्रभु नूं भुलायाए । जद मैं भर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

योबन दी मत्ती हस्सणा खेडणा दे विच रची तां हथ विच शीशा लैंदी मुखड़ा देख देख फुल्ल वैंहदी तां मैं प्रभु महिमा न गाई एह वी ऐसे ही विहाई ॥ २ ॥ अनी एह नर देह पियारी एह नर देह बड़े पुण्य से पायाए अनी मोह माया में लग मोह माया में लग धर्म भुलाए जद मैं टब्बर विच परिवारी मेरी मत्त गई है मारी तां में करदी मेरी तेरी ऐसे तोर उमर गई मेरी तां में प्रभु दी शरणी आई एह वी ऐसे ही विहाई ए ॥ ३ ॥ अनी एह नर देह पियारी एह नर देह सानू मरसी हथ आयाए अनी इधर उधर फिर व्यर्थ गुवायाए । नी मैं जद होई बुढिया नी तां मैं रह गई बहुत हरानी मेरी किधर गई जवानी मैंनूं कहंदे दादी नानी टब्बर किहा मनदा राई एह वी ऐसे ही विहाई ए ॥ ४ ॥ अनी एह नर देहं पियारी एह नर देह बड़े चिर पिच्छों पाया ए । अमी लड़न भिड़न लड़न भिड़न में ऐसे हीं गुवाया ए सारा दिन रैंहदी पड़दी कदही प्रभु नूं याद न करदी रैंहदी लोकां दे संग लड़दी कदे कीती न भलाई । एह भी ऐसे ही विहाई ए ॥ ५ ॥ अनी एह नर देह पियारी एह नर देह प्रभु ने आप बनाया ए । अनी ओह प्रभु पियारा पियारा ओह

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभु पियारा कदे याद न आगाए । "भगवती" कैंहदी सखी आइये हरिके प्रेम गीत ही गाईये प्रीति प्रभु दे नाल ही लाइये आयु ऐसे भान्ति विताइये तां परम पद पाइये ए ॥६॥

---

१६ गीत

रावलपिण्डी दिया वे माहियाँ रावलपिण्डी न जा

(यह गीत ढोलकी पर गाया जाता है इस गीत की आवाज पर निम्न लिखित)

इस जग आया वे मनुआं झूठ बोलन लगा ।
कि मेरिया वे मनुआं झूठ बोलन लगा ।
झूठ कपट विच लग के वे वैठा दिल परचा ।
कि मेरिया वे मनुआं बैठा दिल परचा ।
झूठ कपट है ऐसा वे देंदा नर्क पहुंचा ।
कि मेरिया वे मनुआं जाना तैं घबरा ।
नर्क भोग विच्च रह के वे जाना तैं घबरा ।
कि मेरिया वे मनुआं जाना तैं घबरा
एस जग आया वे मनुआं की उपदेश करां ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि मेरिया वे मनुआं की उपदेश करां
सतसंगत विच जाके वे तेरे रस्ते साफ करां।
कि मेरिया वे मनुआं तेरे रस्ते साफ करां।
काहे कारण आया वे करदा हल्ले कि गुल्ले।
कि मेरिया वे मनुआं करदा हल्ले कि गुल्ले।
जिस लई एथे आया वे ओह गल गइयो भुल्ले।
कि मेरिया वे मनुआं ओह गल गइयो भुल्ले।
जद दा इस जग आया वे करदा उलटे खेल।
कि मेरिया वे मनुआं करदा उलटे खेल।
जे सुख चाहें अपना वे कर प्रभु जी से मेल।
कि मेरिया वे मनुआं कर प्रभु जी से मेल।
जद दा इस जग आया वे कीती न शुभ खट्टी।
कि मेरिया वे मनुआं कीती न शुभ खट्टी।
लड़ने भिड़ने विच लग के वे सारी उमरा कट्टी।
कि मेरिया वे मनुआं सारी उमरा कट्टी।
जद दा इस जग आया वे करदा मारो मार।
कि मेरिया वे मनुआं करदा मारो मार।
क्रोध दे वश होके वे जन्म लिया तैं हार।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कि मेरिया वे मनुआं जन्म लिया तैं हार।
जद दा इस जग आया वे करदा पोसो पोस।
कि मेरिया वे मनुआं करदा पोसो पोस।
काता पावेंगा अपना साड़े जम्मे की दोष।
कि मेरिया वे मनुआं साड़े जम्मे की दोष।
जद दा इस जग आया वे करदा चाल कुचाल।
कि मेरिया वे मनुआ करदा चाल कुचाल।
जब लेखा तूं देवें गा होगा मंदा हवाल।
कि मेरिया वे मनुआं होगा मदां हवाल।
जे तू यह तन पाया वे प्रभु जी दी शर्णीं आ।
कि मेरिया वे मनुआं प्रभु जी दी शर्णीं आं।
सुख संपत धन लक्ष्मी वे जगदीश्वर से पा।
कि मेरिया वे मनुआं जगदीश्वर से पा।
"भगवती" तैनूं कैंहदी वे करलै प्रभु जी से प्रीति।
कि मेरिया वे मनुआं करलै प्रभु जी से प्रीति।
उत्तम कर्म करींवेंगा जन्म लएंगा जीत।
कि मेरिया वै मनुआं जन्म लएंगा जीत।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२० गीत

ऊदे चीरे वालिया वे मेरा बांका ढोल।

(यह गीत ढोलकी पर भी गाया जाता है इस गीत की आवाज पर निम्न लिखित)

नर तन पाने वालिया वे कोई नेकी टोल ॥ १ ॥

मुखड़े से तू हरि गुण बोल।

(मुखड़े इत्यादि शब्द हर पद के अन्त में बोले जाते हैं)

करलै उत्तम काम कि जे तैंनूं सुख दी है लोड़ ॥ २ ॥ मु०

जे सुख चाहे अपना वे कोई नेकी टोल ॥ ३ ॥ मु०

कर बड़यां दा मान कि जे तैंनूं सुख दी है लोड़ ॥४॥ मु०

दे दीनों को दान कि जे तैंनूं सुख दी है लोड़ ॥६॥ मु०

क्रोध ने घेरा पालिया वे कोई नेकी टोल ॥ ७ ॥ मु०

शान्ति हृदय में धार कि जे तैंनू सुख दी है लोड़ ॥८॥ मु०

लोभ ने तैंनू फाह लिया वे कोई नेकी टोल ॥ ९ ॥ मु०

कर संतोष से कम कि जे तैंनूं सुख दी है लोड़ ॥१०॥ मु०

काम ने मटका लिया वे कोई नेकी टोल ॥ ११ ॥ मु०

धैर्य नूं रख पास कि जे तैंनूं सुख दी है लोड़ १२। मु०

अहंकार ने अकड़ा लिया वे कोई नेकी टोल १३। मु०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्षमा दा जामा पोहन कि जे तैनूं सुखदी है लोड़ ॥१४॥मु०
जे सुख चाहें आपना वे कोई नेकी टोल ॥ १५ ॥ मु०
तजदे वैर विरोध कि जे तैनूं सुखदी है लोड़ ॥ १६ ॥ मु०
जे सुख चाहें आपना वे कोई नेकी टोल ॥ १७ ॥ मु०
पर पीड़ा नूं छोड़ कि जे तैनूं सुखदी है लोड़ ॥ १८ ॥ मु०
जे सुख चाहें आपना वे कोई नेकी टोल ॥ १९ ॥ मु०
तज बुरियां दा सङ्ग कि जे तैनूं सुख दी है लोड़ ॥२०॥मु०
मूर्खता ने खालिआ वे कोई नेकी टोल ॥ २१ ॥ मु०
कर प्रचार कि जे तैनूं सुखदी है लोड़ ॥ २२ ॥ मु०
जे तूं इस जग आगिया वे कोई नेकी टोल ॥ २३ ॥ मु०
कर भलियां दा सङ्ग कि जे तैनूं सुखदी है लोड़ ॥२४॥मु०
सुख दी इच्छा वालिया वे कोई नेकी टोल ॥ २५ ॥
करले पर उपकार कि जे तैनूं सुख दी है लोड़ ॥२६॥ मु०
प्रभु ने तैनूं पालिया वे कोई नेकी टोल ॥ २७ ॥ मु०
कर महिमा प्रचार कि जे तैनूं सुख दी है लोड़ ॥२८॥मु०
जे तूं प्रभु नूं भालदा वे कोई नेकी टोल ॥ २९ ॥ मु०
ओह सर्व व्यापक रेंहदा सब दे कोल ॥ ३० ॥ मु०
ओह सबदे दिल दी जाणदा वे कोई नेकी टोल । ३१ । मु०
तू रहे मन ते साफ कि जे तैनूं सुख दी है लोड़ ॥३२॥मु०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'भगवतां' तैनूं आखदी वे कोई नेकी टोल ॥ ३३ ॥ सु०
प्रभु जी दी शरणी आवे कि तैनू सुख दी है लोड़ ॥ ३४ ॥
सुख सम्पद धन लक्ष्मी वे कोई नेकी टोल ॥ ३५ ॥ सु०
जगदीश्वर से पावो कि जो तैनूं सुखदा है लौड़ ॥ ३६ ॥

गीत २१

आज आनन्द मङ्गलचार गावो जय २ करो ।
वह उत्तम पर्व मनाय मन के क्षेम हरो ॥ १ ॥
अति पूर्ण तुमरे भाग्य नाम प्रचार करो ।
प्रभु पावन प्राण अधार शरणहि आये परो ॥ २ ॥
सत्य सुन्दर मंगल ज्योति पूर्ण रूप जगे ।
धन्य मानव जिस मन माहिं प्रभु से प्रीति लगे ॥ ३ ॥
धन्य देश नगर गृह द्वार हर गुण बेल उगे ।
धन्य दिवस पहर पल मास जब हरि प्रेम पगे ॥ ४ ॥
इस जीवन का फल नाम ध्याना सो प्रेम भरी ।
कहे सार्थिक तब हि होय गावहु जय २ हरि ॥ ५ ॥
प्रभु तारे पतित अनेक ही भव सिन्धु तरी ।
तिन के डर हो न एक जिन प्रभु ओट धरी ॥ ६ ॥
जुर आवहु सुन हु सुजान हरि की शरण परें ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह मानव जन्म सुधार आज निहाल करें। ७।
हरि तीर्थ पावन एक पाप अनेक हरें, ※
तन मन के जो सर्व क्लेश नाम जपन्त झरें। ८।

---

२३ भजन

(मेरा बेलना मेरा बेलना नौरंग मेहड़ा ओस ने लै लिया ना)
इस सिठनी की आवाज़ पर
निम्न लिखित

—o—

उत्तम जन्म है उत्तम जन्म है बहु रंग किथों लियानी।
प्रभु है कृपाल प्रभु कृपाल है ख्याल जिसने दिया नी ॥ १ ॥
ऐवें खलके ऐवें खलकें खो दिया यह क्या कीयानी।
हरि रस सार है हरि रस सार संसार सो न पियानी ॥ २ ॥
जो प्रभु बराजिया जो प्रभु बरजिया न संग सोते किया नी।
जिन हरि रस पीतड़ा जिन हरि रस पीतड़ा अनमोल सोतर गियानी ॥३॥ नम्र होयके, नम्र होय के जगदीश शरणी पियानी उसने जन्म दा उसने जन्म दा जरूर लाहा लिया

(※) हरें से आशय छुड़ाने का है ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लियानी ॥३॥ जिस ने कीतड़ा जिसन कीतड़ा उपकार प्रभु दा हुकम उन मनलिया नी जिन सुख मोड़िया जिने सुख मोडिया करतार उसदा जन्म ही गल गियानी ॥ ५ ॥ जो प्रभु पालदा जो प्रभु पालदा संसार उसनूं जीव क्यों भुलगियानी। मंदा बोलदा मंदा बोलदा मुख फाड ओह मुख मैल से भर गियानी ॥६॥ जो जो जनठगदे जो जन ठगदे पर माल उस ने नरक में घर कियानी। सोई सुखी है सोई सुखी है संसार जिस ने मन नूं वश कियानी ॥ ७ ॥ धन्य कहांवदे धन्य कहांवदे मनुष्य जिसने बेदमार्ग लिया नी। बिना विद्या बिना विद्या ते पशु अैवें जन्मवृथा गिया नी ॥ ८ ॥ सुझन आंवदा सुझन आवदा है सत्य मिथ्या की है नी। विद्यावानने असत्य तजके सत्य ग्रहण किया नी ॥९॥ जो जन पथ गिया जो जन पथ गिया हरि शरण सोई काल ते बच गिया नी। सो नर करेगा सो नर करेगा विरलाप जिसने और को दुःख दिया नी ॥१०॥ सोई भोगेगा सोई भोगेगा सुख आप जिसने और को सुख दिया नी उसदे जन्म दा उसदे जन्म दा है नाश जो पाखंड में फंस गिया नी ॥११॥ सुख भुगतांवदा सुख भुगतांवदा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रभु आप जिसने दीन रक्षा किया नी। जो लिवलांवदे जो लिवलांवदे हरि साथ उसदा काज सब सर गिया नी ॥१२॥ करदी "भगवती" करदी "भगवती" अरदास अपने प्रभु जी के पास मेरे सीस पर हथ दिये जी। अपनी भक्ति का अपनी भक्ति का वरदान सानूं सबनां को दियो जी ॥१३॥

२४ गीति

(नी सुन अमकी कुड़िये नी तैनूं)

इस सिठनी की आवाज़ पर

निम्नलिखित

नी सुन मेरिये जिन्दे नी प्रभु ने की फरमायां वेद में।
नी सुन मेरिये जिन्दे नी प्रभु ने सत्य बताया वेद में।
नी सुन मेरिये जिन्दे नी प्रभु ने धर्म बताया वेद में।
नी सुन मेरिय जिन्दे नी प्रभु ने दान बताया वेद में।
नी सुन मेरियें जिन्दे नी प्रभु ने उपकार बताया वेद में।
नी सुन मेरिये जिन्दे नी प्रभु ने भजन बताया वेद में।
नी सुन मेरिये जिन्दे नी प्रभु ने आख सुनाया वेद में।
जग में ऐसी वर्ती नी जैसे कमल रहे सर ताल में।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जग में ऐसी वर्ती नी जैसे बृक्ष रह उपकार में।
जग में ऐसी वर्ती नी जैसे खण्ड मिठी संसार में।
जग में ऐसी वर्ती नी जैसे फुल लटकता बाग में।
जग में ऐसी वर्ती नी जैसे मदिके भरी गुलाब में।
जग में ऐसी वर्ती नी जैसे करती रहे क्षमा धार में।
जग में ऐसी बर्ती नी जैसे निर्मल जल नद ताल में।
जग में ऐसी वर्ती नी जैसे चांद शीतल आकाश में।
तू इक न मानी नी करदी मम आइयां संसार में।
तू ऐसी उरझी नी जैसी मकड़ी उरझी जाल में।
तू ऐसी कौड़ी नी जैसी मिर्च मरोड़ी थाल में।
तू ऐसी खट्टी नी जैसे निम्बू निचोड़ा दाल में।
तू सदा कठोरी नी तैनु दया न आवे याद में।
तू ऐसी तपदी नी जैसे सूर्य तपदा हाड में।
तू ऐसी तिड़के नी जैसे चना तिड़कदा भाड़ में।
तू ऐसी लड़दी नी जैसे लड़े धमोड़ी लात में।
तू ऐसी कड़के नी जैसे बिजली है बर्सात में।
तू बड़ी जहरीली नी जैसी ज़हर भरी है सांप में।
गिर प्रभु जी दी शरणी, नी तेरे अवगुण नी रहे गात में।
कर भगत समरण नी जिन्दड़ी हर पल हर पल स्वास में।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२५ गीत

टेक—तिरिया पातिव्रत को धार लो, सुख भोग स्वर्ग जावेगी

पत्थर जा छोड़ा जाके, पति की सेवा करो बना के, ईश्वर से लो ध्यान लगा के, ये नियम चित्त में धार लो, मन इच्छा फल पावोगी सुख० ॥ खोटे काम छोड़ सब दीजो, सत्य कर्म हिरदे धर लीजो, कड़वे वचन मधुरा कर लीजो, ऐसे मैंने को मार लो । तब सीता कहलावोगी सुख० ॥ सास ससुर की टहल में रहना, कभी दुःख नहीं उनको देना, जो कुछ कहे सोही सहलेना अपना जन्म सुधार लो । सब दुःखों से छुट जावोगी । सुख० । पति आज्ञा में नित रहना, कभी न उत्तर उनको देना, गङ्गा सहाय कह मानो कहना पति के अर्थ विचार लो । भव सागर तर जावोगी । सुख० ॥

---

२६ गीत

नारियों के धर्म बहनो ! सुनोरि सुनाओ ॥ टेक ॥

मातु पिता भ्राता से बहनो, इक हद तक सुख पाओ ॥

बेहद सुख हो पति के कारण ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मितंददति हि पितामितंभ्रातामितंसुतः ।
अमितस्यचदातारं भर्तारं का न पूजयत् ॥

सेवा में उस की तुम तन मन लाओ। नारियों ०॥ १ ॥ सासु आदि जितनी बड़ी घर में, सब की दासी कहाओ बिन आज्ञा कहिं पग नहीं दीजो मन माना सुख बहनों तुम पाओ नारियों । २ । दया रखो देवर आदिक पै, अरु सन्तान पढ़ाओ। आमद देख खर्च का करना, चादर देख पांव फैलाओ। नारियों के धर्म बहनों! सुनोरी सुनाओ । ३ । पीछे सोना पहिले उठना, कटु नहीं बचन कहाओ। नित प्रति चीजों को परतालो, घर का हिसाब सारा लिखो व लिखाओ। नारिओ के धर्म० । ४ । सोच कर समय २ पर सारी वस्तु मंगाओ, पैसा मत नहीं खरचो, जो तुम घर का प्रबन्ध बनाओं । नारियो के धर्म बहनों!। ५ । खाली रहना बहुत बुरा है, कुछ न कुछ किये जाओ। थोड़ा २ बहुत होत है, चिड़िया के घोंसले पै नज़र लगाओ। नारियों के धर्म बहनों० । ६ । मिट्टी पत्थर को मत पूजो,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्यों भ्रम में तुम जाओ । पाठक एक ईश है स्वामी, उसही की शरण में बहिन तुम आओ नारियों के धर्म्म बहनों ७।

गीत २७

ध्वनि—'पापलीला कठिन फैलाय दई !

मेरी बहनों अकल कहां गंवाय दई । टेक ।

पीरों फकीरों के पाओं में लागी ।

अपने पति की सेवा भुलाय दई । मेरी ० ।१।

मीरां मुहर्रम व गाजी मियां की।

खीलों बताशों से कबरें भराय दई । मेरी ० ।२।

आप ही मरे क्या जिवावें किसी को ।

क्या कुछ समझ के तु बहनो वहां गई । मेरी ० ।३।

झाड़ों कें वृक्षों को पत्थरों को पूजो ।

जीवन बनाकर हा ! देवी बताय दई । मेरी० ।४।

गाली बको बुरी व्याह के समय में ।

हा २ अविद्या ये किसने पढ़ाय दई । मेरी० ॥५॥

गृह के फलों को बड़ा सच्चा मानों ॥

झूठों ने अपनी ये माया फैलाय दई । मेरी० ॥६।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पाठक है मन से हितैषी तुम्हारा।

उसने तुम्हें चुन के शिक्षा बताय दई। मेरी० ॥७॥

२८ गीत

तुम अपना धर्म बिचार लो, क्यों फिरती मारी २ ।टेक।

तीर्थ देवता और न दूजा, केवल करो पति की पूजा।

जगन्नाथ को जाना सूझा, कहीं पहुंची हरिद्वार को।

क्यों यहां ईश नाहिं प्यारी, क्या फिरती ० ॥१॥

पति के संग फिरे जब फेरे, क्या बन्ना ये करार तेरे।

आज्ञा में रहूं स्वामी तेरे, याद रहे दिन चार को॥

अब भूल गई हो सारी। क्यों फिरती मारी० ॥२॥

स्याने पण्डा तुम्हें बतेरे, ग्रहवाले ठग मिले घनेरे।

तुम उनके नाहिं जाओ नेरे, अपनी दशा निहार लो॥

कहां तुम ने बुदि विसारी। क्यों ॥३॥

आप पढ़ो सन्तान पढ़ाओ, बृद्धों की सेवा में चित लाओ।

कहे 'पाठक' भ्रम से छुट जाओ घरके काम संवार लो

यह मानों सीख हमारी। क्यों फिरती ० ।४।

———

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२९ गीत

ज्यों लो हम से बनेगा सुझाय जायेंगे ॥ टेक ॥

ठगियों की गाली है फुलवा की नाईं ।
पै सांची सांची बतियां सुनाय जायेंगे ॥

दुनियां के दुःखों की परवा नहीं है ।
जो सीधा सीधा मारग बताये जायेंगे ॥

अपने भले और बुरे का समझना ।
ये बछिया के बावा बकाय जायेंगे ॥

स्वारथ से अच्छे २ कामों से भैना ।
ये विद्या के शत्रु हटाय जायेंगे ॥

ग्रह के फलों को गरुड़ कहिं सुना के ।
तुम्हें प्यारी डर से डराय जायेंगे ॥

विद्या को पढ़लो पढ़ालो सभी को ।
वेदों की आज्ञा दिखाय जायेंगे ॥

---

३० गीत.

हाय कैसी ये अविद्या भूली हो अपना पातिव्रत । टेक ।

अपने पति को दो सौ सौ गाली ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्याने दिवानों को झुक झुक सलाम । हा० । १ ।
अपने श्वसुर भी की बनती न रोटी ।
पीरों फकीरों को बर्फी बादाम । हा० । २ ।
पड़ौसन पड़ौसन से घुल मिल के रहती ।
सासु से लड़ने में समझा है नाम । हा० । ३ ।
अपने देवों की तो सार न जानी ।
भूतों प्रेतों को मानों तमाम । हा० । ४ ।
अच्छी कथाओं से सौ कोस भागो ।
मेले तमाशों में चार २ मुकाम । हा० । ५ ।
'पाठक' कहे देव पति जो तुम्हारे ।
उनके चरण धोओ सुबह व शाम । हा० । ६ ।

३१ गीत

टेक—पति अपने में राखो ध्यान, कि बढ़ कर धर्म नहीं ।
तन भी दीजे मन भी दीजे ।
अर्पण कीजे प्राण । कि० ॥ १ ॥
जो पति की आज्ञा शिर धारो ।
सुन्दर हो सन्तान । कि० ॥ २ ॥
ऋषि मुनि गावें वेद बतावें ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुख होवे परिमाण। कि बढ़० ॥ ३ ॥
सम्पति पाओ, दुःखें बितराओ।
पाओ पद निर्वाण। कि बढ़० ॥ ४ ॥
सन्ध्या करलो, ओ३म् सिमर लो।
होम करो नित दान ॥ कि बढ़० ॥ ५ ॥

---

३२ गीत

तुम सुनो सुशीला नारी, क्यों बिगड़ी दशा तुम्हारी ॥ टेक ॥
विद्या का पढ़ना छोड़ा, पतिव्रत धर्म को तोड़ा
ईश्वर को हाय! भुलाया, पत्थरों को रोज़ न्हिलाया
नहीं किया पति का आदर कबरों पै चढाई चादर
क्यों फिरो भटकती दर २ नहीं पुत्र दे सकें पत्थर
दिन रात ये इच्छा भारी, मिले गहना गोटा किनारी
सोना अरु पीना खाना, लड़ भिड़ कर शोर मचाना
पशुओं की दशा ये सारी, रही दया धर्म से न्यारी
गृह पत्नी नाम तो पाया, पर उस में मन न लगाया
क्यों मनुष्य जन्म है धारा, भैनों तुमने नहीं विचारा
बस येही है उत्तम गहनों, तुम करो पति का कहना
जिसने यह बात विचारी, वह बुद्धिमती है नारी ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३३ गीत

टेक-कैसा उलटा तुम्हारा है नारी धरम ।

व्यञ्जन बनाकर खिलाने न जानों ।

ढुंढा लड़ाना है नारी धरम कैसा० ॥ १ ॥

सीना सिलाना न पढ़ना पढ़ाना,

रोना रुलाना है नारी धरम, कैसा० ॥ २ ॥

बच्चों का चेचक में औषध नें करना,

डोरे बंधाना है नारी धरम, कैसा० ॥ ३ ॥

मीरां व सय्यद के कर २ बहाने,

बकना बकाना है नारी धरम, कैसा० ॥ ४ ॥

भूतों व प्रेतों व परियों से डर के,

स्याने बुलाना है नारी धरम, कैसा० ॥ ५ ॥

नागा ने काटा बस थाली बजा के,

शिर का हिलाना है नारी धरम, कैसा० ॥ ६ ॥

व्याहों में कोठों पैं चढ़ २ के मैना,

कोयल बुलाना है नारी धरम, कैसा० ॥ ७ ॥

भोजन खिलाते हजारों के सोही ॥

गाली सुनाना है नारी धरम, कैसा० ॥८॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बुड्ढा मरे स्वांग भर नाचो गावो ।
ठठ्ठ उड़ाना है नारी धरम, कैसा० ॥ ६ ॥
'पाठक' कहे वेद शास्त्रों को पढ़ना ।
सुनना सुनना है नारी धरम, कैसा० ॥ १० ॥

---

३४ गीत

माए नी मैं भई दिवानी, देख जगत में शोर ॥
इकनां डोली इकनां घोड़ा, इक सोए इक गोर ।
नंगी पैरीं जांदे डिठे, जिनके लाख करोड़ ।
इक शाह इक दरिद्री आहे, इक साधु इक चोर ।
कहे 'हुसैन' फकीर नमाणा, भले श्वासां थीं डोर ॥

३५ गीत

टेक--क्यों बनी हो गंवारी, पढ़ी नहीं विद्या भारी ।
बिना विद्या के पावे न आदर, पुरुष हो या नारी ।
विद्या से जो नहीं शोभित हो, समझे है उसको अनारी
सुनो तुम भारत नारी क्यों बनी हो गंवारी ।
सुख सम्पति जो चाहो जगत में, रहो पति आज्ञाकारी ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सास श्वसुर और ननद जिठानी, उनकी करो सेवा भारी।
मानो यह सीख हमारी, क्यों बनी हो गंवारी।
पति आज्ञा जो करें हैं उलंघन, जानो उन्हें व्यभिचारी।
ऐसों की संगत जो बैठे हैं, वह भी हत्यारी।
हो कितनी हो रूप संवारी, क्यों बनी हो गंवारी।
पहले नारी देखो दुलारी, कैसे थी सत्या नारी।
पतिब्रता कहलाई जगत में, तज कर महल अटारी।
चली वन जनक दुलारी, क्यों बनी हो गंवारी।
"श्याम सुन्दर" कहे तुमारो हितैषी, करो सोच बिचारी
प्राण जायें पर धर्म न छोड़ो दुःख हो कितना ही भारी।
मर्द चाहे खाए कटारी, क्यों बनी हो गंवारी॥

३६ गीत

तर्ज़—मेरे मरू ढोला आनतो जगाई गहरी नीन्द में।
मेरी प्यारी बहनों सोई हो पड़ी गाढ़ी नीन्द में।
पति की तो सेवा करना, बालकों को शिक्षा देना।
तुमने तो भुलाया गाढ़ी नीन्द में।
अच्छी २ विद्या धर्म का तो संग्रह करना,
सारा ही गंवाया गाढ़ी नीन्द में।
ईश एक सच्चा तुमने, सारी रचना की है जिसने,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उसको भी सुलाया गाढ़ी नींद में।
देवता हज़ारों माने कबर भूत तुमने,
स्वप्न देखा गाढ़ी नींद में। मेरी प्यारी०
क्या बतावें 'पाठक' आगे अग्नि होत्र आदि त्यागो,
धर्म तो बिसारा गाढ़ी नींद में। मेरी प्यारी बहनों०

---

३७ गीत

बहनों है फरयाद सुनियों ज़रा हमारी
जब तुम से पढ़ना आवे, जैसे नीति बतलावे,
तभी सुधरे औलाद, सुनियों ज़रा०
तुम ही व्योहार को जानो, बर्ताओ नहीं पहचानों,
तभी होता व्याह, सुनियों ज़रा०
तुम सदा दुखी रहती हो, मालूम है क्यों सहती हो,
अविद्या करे फसाद। सुनियों ज़रा०
विद्या ही दुःख मिटावे, मनमाना नर सुख पावे,
करो तन मन से याद, सुनियों ज़रा०

---

३८ गीत

टेक—सीता की ओर निहार जो जो थी सतवंती नारी,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गई संग में पति के बनको, छोड़ सभी सुख सम्पत धनको ।
कष्ट दिया अति अपने तनको नहीं मन में घबराई ।
सब छोड़े महल अटारी । जो थी ० ॥१॥
रहती थी जो रंग महल में, रहें टहलनी जिसकी टहलमें ।हरे,
नंगे पैर गई पति गैल में, ऐसा ही ब्रत तुम धारोगी ।
जो धारा जनक दुलारी । जो थी ० ॥२॥
हुई कान्ति दुगनी सुखकी, जिन परवाह करी नहीं दुखकी
सभी लालसा अपने सुख की, पति के ऊपर वार दी ॥
रहा सदा जो आज्ञा कारी । जो थी० ॥३॥
पति सेवा में चित हित दीजो, आज्ञा भङ्ग कभी नह कीजो ।हरे
मेरा कहा मान अब लीजो, यह कहता बहनों 'मुरारी' जो थी

---

३०. गीत

टेक—सैय्यो नो मैं मूल न कत्या कीकन दान रंगावां ।
नहीं सां मैं सुक्खी नहीं सां मैं नंगी,
पर नहीं चोली चुन्नी रंगी ।
हुन बैठी शरमावां । सैय्यों नी मैं मूल न कत्या ॥१॥
पिछला कत्या कड छंडाया,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अगो कसण नु हथ नहीं लाया।

हुण बैठी पछतावां। सैय्यो नी मैं मूल न कत्या ॥२॥

कंत सुचज्जा है मैं हां कुचज्जी, उसदे कजयां मैं जावां कज्जी

जे कंते मन भावां। सैय्यो नी मैं मूल न कत्या ॥३॥

"अमींचन्द" ब्राह्मण लैण नू आया।

रोवन लग्गा मेरा मां प्यो जाया।

कींकण साहुरे जावां, सैय्यो नी मैं मूल न कत्या ॥४॥

४० गीत

सैय्यो नी मैं कित वल जावां नाहीं किते मै नूं ढोई।

निपट अयानी सां सब मन भाई अडयां कणां मावें रोई

लोरी दंदे चुक २ लैंदे नो, करन न गल है ओही।

जद थीं होश सम्पाली मैं वाली, कादी तंद न पूणी छोई

गुडियां पटोले विंदियां तंदोले छड्डी न खेड मैं कोई।

चज न सिख्या पढ़या न लिख्या सकां न सुई परोई ॥

नित २ माई रही समझाई, इक भी न मत मैनूं ओही।

हानन मेरियां सबे कुछ जानन ऐवें उमर मैं खोई।

सुनया वर मेरा है अति चातुर गुण अवगुण लैंदा जोही।

मैं तां बैठेठी घर अकलां सेती खांरा मैं रज या सोई ॥

मिचसी न वर तद होसी न आदर छुटर रहसां मैं मोई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गंगाराम औगणाहारी मैं भारी सुनसी न कौन अरजोई ।
कढ २ कसीदे मैं हारी, नाहीं बनी मेरी फुलकारी ॥
मैनूं कपड़ा न मिलया अच्छा, विरली औंतर सूतर कच्चा ।
एतां रंगया किसे अनाड़ी, फोका रङ्ग नहीं चमकारी ॥
सुई खुंडी तरोपा न भरदी, जेकर भरे तां डिंगी पत्ति चलदी ।
मेरी निष्फल गई दिहाड़ी, हत्थों बिगड़ी मूल संवारी ॥
हत्थ कम्बे मैं पालों घुसदी, कोई बूटी न सोहनी टकदी ।
करदी ध्यान जे सिखने दी वारी, अाज मूल न हुंदी ख्वारी ॥
जेड़ा पट्ट दहाजं मंगाया, नाहीं मुकणे दे विच आया ।
माई ताई की करे विचारी, आपे आप मैं होई निकारी ॥
सैइयां कढ २ देवण सीधां मैनूं सुझदियां पैयां खेडां ।
अजे खाली पई पिटारी, कित्थों भरांगी मैं औगुणहारी ॥
मेरे आंढ गवांढ सुचज्जियां वेले वक्त ओ नासण कज्जियां ।
मैनूं मुश्कल दिस्से भारी, होसी दाज दी किस विध त्यारी ॥
की देसा शौह नूं ढोया, एहा फिकर मैनूं हुण होया ।
कोई सज्जन मिले प्यारी, चज्ज सिख के होवां सुख्यारी ॥
'गंगाराम' मैं क्यों घबराई, होसी ईश्वर अंत सहाई ।
जेकर रहसां मैं आज्ञाकारी, आज्ञा पूरी होएंगी सारी ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४१ गीत

किस विध उतरांगी पार नी मैं

अपनी कमाई दा खर्च न पल्ले देवे न कोई उधार। नी मैं०
पैंडा बिखड़ा राह अवलड़ा शौह वगदा विचकार।
ठाठां मारे खाये उच्छारे दिस्से नं पार उरार।
घाट पत्तणा दी दोहीं तर्फीं, बैठे नी ठेकेदार।
सोई लंघ २ जाणा मुसाफर, देन महसूल जो तार।
या जिन्हां लीता पास कमाई दा, कौन उन्हां रोकनहार।
मैं तत्ती दे आगुण भारी, खोटी दशा खोटी कार।
कोई न बनदा ज़ामन मेरा, जाणान सब बुरयार।
निरास वे आस हो मैं खलोती, करदी हां रो २ पुकार॥
"गंगाराम" विपदा अति दुस्तर लाज रखे करतार॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिनति

४२ गीत

तुम सुनो पुकार कन्या विनय करे है

सुनो मात हितकारी, कन्या रोरही बिचारी,
    टेर सुनो इक बार। कन्या०

जब होवे पुत्र तुम्हारे, बजें हर्ष के ढोल नकारे,
    करो हो जय जय कार। कन्या० ॥

यदि पुत्री होई सुन पावें, तब रोवें शोक मनावें,
    कोई कोई डालें मार। कन्या०

जो चीज बाहर से लाओ, पुत्रों को लाय खिलाओ,
    करो खुश हो हो प्यार ॥ कन्या० ॥

क्यों बुरा हमारा चाहते, हाए द्वैत भाव जतलाते,
    हमने क्या किया बिगाड़ ॥ कन्या० ॥

हम से सब चीज छुपाओ, मोटे वस्त्र पहनाओ,
    न चाहो जिया हमारा ॥ कन्या०

जो मर जावें कन्या र जावे तो पुत्र कहां से आवे,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज़रा तो करो विचार ॥ कन्या० ॥

गर ही मो गया कुछ जीन, धन हम से सब छीना,

कहा नहीं अधिकार ॥ कन्या०

हमें जूती सम बतलाया, शूद्रों का खिताब दिलाया,

बंद किया विद्या द्वार ॥ कन्या० ॥

हम मूरख ही वर पावें, नहीं पतिव्रत धर्म निभावें,

रात दिन होती मार। कन्या० ॥

पर यह भी ध्यान में लाओ, चाहे कितने ही यत्न बनाओ

न हरगिज होय सुधार। कन्या० ॥

जब तक नहीं हमें पढ़ाओ, पूरा सुख तुम नहीं पाओ,

भरोगे दुःख अपार। कन्या० ॥

यह "वासुदेव" चाहता है, इस ''इन इन गाता है,

पुत्री शाला हों त्यार ॥ कन्या० ॥

---

४३ गीत

सदमों की चोट सीने पै खाई नहीं जाती ॥

ता उमर यह तकलीफ उठाई नहीं जाती ॥

रोना यह शबोरोज का गेएं कहां तलक,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पयामों से नदी खूं की बहाई नहीं जाती ॥

खुद गर्ज हो गया है यह जमाना इस कदर,

इनसाफ की बू तक यहां पाई नहीं जाती

होता है जुल्म रात दिन इन औरतों पै हाय,

तिस पर भी जबां इनसे हिलाई नहीं जाती

करते हैं विवाह नाई ब्राह्मणों की राय पर,

बाहम की शकल वस्फ मिलाई नहीं जाती ॥

बचपन में ब्याह देते हैं नालाइकों के साथ,

विद्या तलक भी इनको पढ़ाई नहीं जाती ॥

यह नारी गंवारी हैं यह शौहर पढ़े हुए,

कितना ही मिलो दिल की जुदाई नहीं जाती ।

सुध लीजो "बलदेव" अबलाओं की अब तो,

तुम से मर्म की पीड़ा छुपाई नहीं जाती ॥

४४ गीत

हमें दान विद्या का दो आर्य भाइयो ।

दुःख सागर से आप पार लगाइयो । टेक ।

विद्या मनुष्य मात्र की जो है माता ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिस के मिले से सभी कष्ट जाता ॥१॥
हम संग बिछुरों को हुई है देरी।
इसी कारणं दुष्ट शत्रू ने घेरी ॥२॥
मैया की गोद में हम को बिठाओ।
आनन्द देवो यश तिलक पाओ।३।
क्रोधादि जो दुष्ट शत्रू हैं भारे।
जननी के भय से वे होवें किनारे।४।
विद्या बिना भक्ति प्रभु को विसारा।
व्याकुल फिर हैं सभी भारत नारी ॥५॥
अविद्या समुद्र में वो बहे जो रहे हैं।
न दीखे किनारा लगे हम कहीं हैं ॥६॥
विद्या से हीनों को दुःखों ने घेरा।
करो आप मिलके ही पार बेड़ा॥७।
महा विद्यालय है बेड़े की भांति ॥
देवो सहारा सभी भारतवासी ॥८॥
दयानन्द स्वामी की आज्ञा विचारो।
बनो शूरमें आप हिम्मत न हारो ॥९॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"भगवती, की इच्छा को मन से पछानो
दीनों की रक्षा सर्वोपरी मानो ॥१०॥

४८ गीत

विद्या का हम सबों को पिता दान दीजिये
हमारी विनय जरा सी है ये ध्यान दीजिये ॥१॥
पशुवत हमारी आज कल जो हो रही गति ॥
किसका है ये नतीजा इसे जान लीजिये ॥२॥
शिक्षा में अपने पुत्रों के हों इस कदर यत्न ॥
क्या हम नहीं हैं बेटी जरा कान दीजिये ॥३॥
सतै शास्त्र में व वेदों में देखो है क्या लिखा ॥
समदृष्टि रख सब का पिता मान कीजिये ॥४॥
सोना न रूपा मोती न कुछ मांगती हैं हम ॥
भूषण हमें विद्या ही फकत दान कीजिये ॥५॥
लीलावती सुमित्रा सा बनना है क्या कठिन ॥
सम्भव है सभी इस से हां अनुमान कीजियें ॥६॥
सुलभा ने जनक की जो परीक्षा वेदान्त की ।
कारण वो कौन था अनुसन्धान कीजिये ॥७॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ज्ञानी पति अपने को चुड़ेला ने जो किया
बस विद्या ही की महिमा थी यह जान लीजिये ।८।
कन्यें पाठशाला यदि ठौर २ हों ।
अविकार हो सुधार हो परमान कीजिये ।९।
पढ़ने से ज्ञान होता है सीता के ज्ञान का ।
विद्यावती बनाओ हमें ज्ञान दीजिये ।१०।
स्त्रीकार निर्बलों की सदा से हुई पुकार ।
विद्या की देदी औषधी बलवान कीजिये ।११।

। इति बिनाति ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शिक्षा

राग जयजयवंती) ४६ गीत (३ ताल

ज़रा कान धरके इधर ध्यान कीजे, थोड़ा समय मुझ को
वर दान दीजे ॥ १ ॥

पुत्रों से करते हो तुम प्रेम प्रीति, पुत्री से करते हो ऐसी
अनीति ॥ २ ॥

बहन है निरक्षर बी ए एम ए भाई, तुम सा अहो और
कौन अन्यायी ॥ ३ ॥

स्त्री पुरुष का सनातन है जोड़ा, सारांश शास्त्रों का हमने
निचोड़ा ॥ ४ ॥

स्त्री पुरुष दोनों हैं साथी व अङ्गी, स्त्री बनी पुरुष की
अर्द्ध अंगी ॥ ५ ॥

दोनों ही करते थे विद्या उपार्जन, दोनों ही करते थे यजन
और याजन ॥ ६ ॥

पहले तो सब स्त्री विद्यावती थीं, जैसी महारानी लीला
वती थीं ॥ ७ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब सारी अनपढ़ है भारत की नारी, अतएव बिगड़ी दशा है हमारी ॥ ८ ॥

भारत दशा आपने है बिगाड़ी, चलती नहीं एक पहिये की गाड़ी ॥ ९ ॥

पुत्री पढ़ाओ इसी पर है निर्भर, बनेगी यह तुम्हारे घर की गवर्नर ॥ १० ॥

गृहस्थी का घर एक है राजधानी, जिस में करे राज गृहस्थी की रानी ॥ ११ ॥

पड़ता है उसके गले काम भारी, सुनाऊंगा आगे सुनों वारी वारी ॥ १२ ॥

किसी काल में यह करे है अदालत, किसी काल में यह करे है वकालत ॥ १३ ॥

बच्चों में होती है जब कि लड़ाई, करे फैसले उन के घर बीच माई ॥ १४ ॥

करा देती है एक पल में सफाई, नहीं रहती मन में किसी के बुराई ॥ १५ ॥

किसी को दे धमकी किसी को दे गाली मिटा देती है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सारी ही फौजदारी ॥ १६ ॥

दिवानी के करती है ऐसे यह कारज जैसे कि जज्ज लेता
है अपना चारज ॥ १७ ॥

बाहर से कोइ वस्तु जब घर में आवे, हिस्से के अनुसार
सब को दिलावे ॥ १८ ॥

न हिस्सा घटाये न हिस्सा बढ़ाये, दोनों का इस में ही
पूरा पटाये । १९ ।

न्याय तुला पर मुकद्दमे को तोले, दोनों सिरो से कोई भी
न बोले । २० ।

पिता पुत्र में जब कि होती है अनबन, मनाने में उनके
लगाती हैं तन मन । २१ ।

जिस से वह हो जायें आपस में राजी, स्वामी की करती
है मिन्नत मुहताजी । २२ ।

मिटा देती है उनके दिल की मलालत, पिता पुत्र के बीच
करके वकालत । २३ ।

करें है मुहब्बत सदा मादिराना, नहीं मांगती उनसे कुछ
मिहनताना ॥ २४ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धन धान घर का उन के हवाले, लेखे को देखे और नांचे
पड़ताले ॥ २५ ॥

कम खर्च करने के सांचे हैं चाले, रुपया बढ़ाने के ढंग
निकाले ॥ २६ ॥

कौड़ी२जोड़े रुपया बनाए, जिस हेतु से मायाबढ़ती ही जाए२७

नहीं घटने देती खजाने से तिल भर, मानो है घर में
फाइनैन्शल कमिश्नर । २८ ।

गल्ले के रखती हैं अंबार भर कर, गोया गुदामों की
जैनरल है अफसर । २९ ।

सौदा मंगा कर करे है कमेटी, बुला नौकरों को बिठा
बेटा बेटी । ३० ।

यह सौदा है अच्छा यह है माल खोटा, बत देवे इसका
नफा घाटा टोटा । ३१ ।

गुदामों में देखे रसद सब भरा है, घी दाल चावल
आटा खरा है । ३२ ।

वस्त्रों की ऐसी बनाती है वरदी, कि सिग देती है जिस
में गरमी व सरदी । ३३ ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इमारत का घर बैठ नकशा बनाए, खाविन्द को ले साथ
मौका दिखाए ॥ ३४ ॥

यहां होवे चुल्हा वहां होवे चैका गुसल खाना पाखाना
होवे बमौका । ३५ ।

यहां पर हवादार कमरा बनाए, वहां फूलों के बेल बूटे
लगाए ॥ ३६ ॥

पक्की इमारत हो अंगन कुशादा, आराम पाने का गर हो
इरादा । ३७ ।

कारीगरी में यह है ऐसी चातुर नहीं तुल्य इसके कोई
बारक मास्टर । ३८ ।

पड़ती जब घर में आकर बिमारी, डाक्टर के सदृश यह
करती है कारी । ३६ ।

बच्चे को कहती है दूंगी मिठाई, अगर तूने पीली यह
कौड़ी दवाई । ४० ।

डरेसी करे और न्हलाए धुलाये, नाना प्रकारों की
औषध बनाए । ४१ ।

करती नहीं एक तिल भर गिलानी, करे है कारज ज्यों

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करे मिहतरानी । ४२ ।

करे फिंसी फोड़ की ऐसी दवाई, बिना मरहम पट्टी के
झट हो सफाई । ४३ ।

माता अध्यापक है माता आचार्य्य, माता बनाती है
सन्तान आर्य्य । ४४ ।

माता ही देती है बच्चों को शिक्षा, माता ही लेती है
इनकी परीक्षा । ४५ ।

माता कुशिक्षत का बेटा कुशिक्षत, माता सुशिक्षत का
बेटा सुशिक्षत । ४६ ।

माता सुशीला तो बेटा सुशीला, माता कुचीला तो बेटा
कुचीला ॥ ४७ ॥

माता पर पूत है पिता पर है घोड़ा, बहुत न हो तो
भी थोड़ा थोड़ा ॥ ४८ ॥

भोजन बनाने में करे सावधानी, यह साक्षात अन्न पूर्णा
है भिवानी ॥ ४९ ।

सब की यह करती है सेवा सुश्रूषा, नहीं रहने देती किसी
को भी भूखा । ५० ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह है जगत जननी यह है योग माया, करो इस का पूजन मनु ने बताया । ५१ ।

माता से पैदा हुए हैं महा ऋषि, माता से पैदा हुए तत्वदर्शी । ५२ ।

स्त्री गृहाश्रम के नियमों को पाले, स्त्री हो घर के कार्य सम्भाले । ५३ ।

नहीं तुल्य इस के कोई कर्मचारी, न हो तुल्य इस के कोई आज्ञाकारी । ५४ ।

इतिहास देखो कि कैसी थी सीता, गार्गी ने कितनी सभाओं को जीता । ५५ ।

मंडन की स्त्री वह विद्याधरी थी, शंकर की मध्यस्थी जिसने करी थी ॥ ५६ ॥

मंदालसा की सुनो बुद्धिमानी, पुत्रों को जिसने किया ब्रह्मज्ञानी ॥ ५७ ॥

दमयन्ती में देखो विद्या का बल, ढूंडा था किस बल से झट राजा नल ॥ ५८ ॥

क्या २ विदुषी भारत की नारी, पिया की प्यारी पिता की दुलारी ॥ ५९ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सन्तान अपनी सुधारा जो चाहो, तो सारे ही तुम
अपनी पुत्री पढ़ाओ ॥ ६० ॥
बना दीजे गुरुकुल बना दीजे शाला, जिस में पढ़ें सारी
भारत की बाला ॥ ६० ॥
कन्या को जब तुम पढ़ाओगे विद्या, चली जाएगी
तब यहां से अविद्या ॥ ६२ ॥

मिश्रित

४६ गीत

जिस चरखा यह मेरा बनाया
सैथों अन्त नहीं ओहदा पाया ॥
ऐसी लाई सु लक्कड़ पक्की।
जिसनूं पोंहदा नहीं घुन मक्खी ॥
ऊपर गूढ़ा है रंग चढ़ाया।
जेहड़ा चमके है नित्य सवाया ॥
मुन्ने गुडिया दी सिफ़त की आखां।
जिसते चैन पाये मुलाखां ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हत्था हथ दा खूब बनाया ।
सैय्यां सारियां देख सलाहया ॥
माहल बेड़ दी सोहणाँ सफाई
नाल फुमणां ने जग मग लाई ॥
सिद्दा अकला है ऐसा बनाया ।
जिसने ढोला कदी न लाया ॥
ऐसा चरखा मूल न कतदी ।
दिन रात खेडण उठ वतदी ॥
सैय्यां कत कत दाज रंगाया ;
मैनूं चज नहीं कोई आया ॥
चाची ताई मामी दे दे हारी ।
मैं ते समझां नाहीं नकारी ॥
जासी किस विध दाज बनाया ।
कदी चरखे नूं हथ नहीं लाया ॥
की कुछ लैके मैं साहुरे जासां ।
पई रो रो के पछतासां ॥
जिस दिन कन्त लैजान नूं आया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जासी संग न मां पेओ जाया ॥
सैय्यां करके विदा मुड़ आना ।
मैं इकल्लड़ी पिया संग जाना ॥
घर जा पुछसी कीं पेके कमाया ।
जासी लज्जा से सिर न उठाया ॥
कन्त सुचज्जा ते मैं हां निकारी ।
ओहदे चरनां तों जां सदके वारी ॥
जिसने दुःख थीं मैनूं छुड़ाया ।
"अमीचन्द्र" क्यों उस नूं भुलाया ॥

---

४७ गीत

टेक–बाहर चरखे ने घूं घूं लाई, सतें नामें दी देवे दुहाई ।
एह चरखा है रंग रंगीला, चमके सुर्ख ते सावा पीला ।
माल वेड़दी सोहणी सफाई, सिद्धा तकला नहीं वलकाई ।
पुखता चमड़ी न मुन्ना हिलदा, हत्थ लायां प्या हत्था चलदा
लठ पक्की लकड़ दी पाई, कसर नहीं रति राई ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिसने एह चरखा घड़िया,गुणी पूरा ते सिफतांदा भारआ
अचरज कारीगरी है दिखाई, अकल फिकर चकित होजाई
गली २ महल्ले २ चरखे डाह कुड़ियां थड़े मल्ले।
कोई खुशी हो रही गीत गाय, कोई हंसदे होरां हंसाय॥
जेड़ी त्रिंजन जाके, लगी कत्तन जिया लगाके।
ओही सुघड़ स्यानी सदाई, सो तुर्त छिक्कू भर लाई॥
ओही लौदियां दाज बनाई, इलड़ी वार जड़ा संग नाई।
भला दस खां तूं कीता कदी नाम कत्तन दा लीता।
ठठ्ठ करन ननद भरजाई, तां भी तैनूं समझ न आई॥
छड खेड अजे है वेला, गोड़ा प्या २ होया मैला।
रहयां सैय्यां तां छुप मुकाई, पूनी छुत्ती न तैं मन लाई॥
जद होसी चरखा पुराना, होए कत्तन थीं यह नमाणा।
बन्द बन्द ढिल्ला हो जाई, लगे जोर तां फेरा खाई॥
तद कुछ भी न बनतर आना, पछोतासी जां वक्त विहाना
दुनियां मां पेओ फिर नाई, रो रो कासी सखीं जुदाई।
"गंगाराम" उदास न हो तूं, छोप करत सभमें फिर तूं।
कैयां कान्त ने कल बुलाई, तेरी तुच्छ है सारी कमाई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागनी शुद्ध टोडी) ४८ गीत (ताल ३

मैं जिन्दजान तुसां थीं घ ऱी, सैय्यो बाबल जाइयो नी
भरजाइयो रख लौ अज काई डोली। १। मैं जिन्द०
कई बाऊ दे वर्गे वरोले, सांभ न सकियां मैं गुड्डियां पटोले
खेडन थीं अजे चाह नहीं लपड़ा क्या विछोड़ा झोली। २।
जांजियां कीते तुर्त त्यार, पाटलियां गल ऊंट संगारे।
सुन २ कूच दे ढोल नगारे, होइयां डांवां डोली। ३।
पैर डोली विच मूल न धरसां, सैय्यो तुसां थीं विछड़ी मरसां।
दम २ याद तुसां नूं करसां, किधर गई मेरी टोली। ४।
डोली पकड़ बिठाई भाइयां, मिलन न दित्तियां चाचियां ताईयां।
बंझड़ी नाल मैं बिदया न होई, बाबल नाल न बोली। ५।
डोली चाई चहुं कहारां, रोवां कूकां आहीं मारां।
मथयों घड़ी संधूर उतारां, गल थीं लाहवां चोली। ६।
गुथिया तुटियां शहर गराईयां अमीचन्द ब्राह्मणां लागियां नाईयां
सब सखतियां सिर मेरे आईयां, की जाणां मैं भोली। ७।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

४९ गीत

(बाल विवाह पर)

दोहा-जब से बाल विवाहि, भारत में बहुत होने लगे,
तब से ही भारत निवासी, आयु बल खोने लगे।

क्यों बाल विवाह रचवायके बल वीर्य का नाश किया है हे मति मन्द समझ नहीं आई, बाली कन्या व्याह बिठाई कुछ तो सोच समझ मन भाई उसको रांड बिठायके क्यों सिर पर पाप लिया है। बल वीर्य०। १। सोलह वर्ष की उमार जब आवे। ब्रह्मचर्य पूरण हो जावे। तब ही कन्या व्यांह रचावे। गुण अरु कर्म मिलाय के। वेदों में साफ लिखा है। बल वीर्य०। ॥२॥ व्याह का तुमसे ॥

---

५० गीत

(गर्भ रक्षा पर)

हमरी विनय को सुनो धर काना।
जासी बलिष्ट गुणी हो सन्ताना ॥
रज के समय में तजु भय चिन्ता,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

* रोना न तेल न काजल लगाना ।
दिन में न सो वहु नख भी न काटहु ॥
हलका बलिष्ठ हो भोजन पाना ॥
गर्भ समय में दृश्य भयानक ।
अति दुःखदाई विपत्ति को आना ॥
चावल मूंग उदद अरु गूलर ।
मिशरी अनार शहद घृत पाना ॥
(१) गर्भ को शूल हो औषधि खाओ ।
(२) शीघ्र प्रसव हो दवा ये लगाना ॥

---

* माता के रोने से बालक की आंखें खराब । नख काटने से नख खराब, तेल लगाने से राज यक्ष्य का रोगी, काजल लगाने से काणा । दिन में सोने से अधिक सोने वाला उत्पन्न होगा ॥

(१) में औषधि गर्भशूल लाल चन्दन, खस, कमल, केशर पद्माख, मुलहटी, तिल का तेल सम भाग पीसकर तेल में मिला कर पेट पर लेप करें ॥

(२) शीघ्रप्रसव सांप की कांचुरी को पुट देकर जलावे उस का काजल शहद के साथ आंखों में लगावे ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तीक्षण औषधि अथवा रसादिक।
दुःखदायक हैं इन्हें नहीं खाना ॥
जैसा स्वभाव आचार रहेगा।
तैसे प्रभाव की सन्तति पाना ॥

विवाह के गीत

५१ गीत

घोड़ी तेरी वे मल्ला सोहणी ।
(यह जो बालक के विवाह पर गाई जाती है
इसकी आवाज पर निम्नलिखित)

बृत्ति तेरी वे मना सोहणी २ (टेक)। बणादी शिक्षा दे नाल बणादी विद्या दे नाल ढिल ना लाईं वे मना मेरे सजना, हरि प्रभु शरण नूं तूं आउ, प्रीति उसी से फिर लाउ, मोक्ष द्वार नूं तूं ढूंडणा ॥ १ ॥ बृत्ति तेरी० ॥ खोटी संगति ना जाउ उसनूं पाप से बचाउ, जन्म गुवाईं ना मना मेरे सजना, हरि प्रभु शरण नूं ॥ २ ॥ बृत्ति तेरी० ॥ इस से कर लवीं उपकार, तांहियों होवेंगा सुचीयार तूं जन्म गुवांई ना मना मेरे सज्जना । हरि प्रभु शरण नूं ॥ ३ ॥ बृत्ति तेरी इस से विद्या

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बधाउ, सच्च झूठ तोल के दिखलाउ, तांहियों पावेंगा कल्याण तूं, हरि प्रभु शरण नूं ॥ ४ ॥ बृत्ति तेरी ॥ इस से मन दीनों का ना दुखाउ, जहां तक हो सके, आनन्द नूं पहुंचाउ, तांहियों पावेंगा सुख आप तूं हरि प्रभु शरण नूं ॥५॥ बृत्ति तेरी । इस से ने किये कुमाउ, बदी से सब तरह हटाउ, तबही होवेंगा खुश हाल तू हरि प्रभु शरण नूं । ६ । बृत्ति तेरी० । इस नूं बैठके समझाउ किधरे धर्म्म पंथ में लाउ तब ही रिझावेंगी कर्तार तूं हरि प्रभु शरण नूं । ७ । बृत्ति तेरी० । "भगवत" आज्ञा में जोड़, शीघ्र सुन लो बिनती मोर, अपनी शरण में अब राख तूं, हरि शरण नूं, ॥ ८ ॥ बृत्ति तेरी० ॥

सुहाग ५२ गीत

गावो मंगलचार नी तुसी आवो नी सखियो गावों मगला चार ॥ टेक ॥

रल मिल गीत प्रभु के गावो, देसी काज सुंवार ॥ १ ॥
बाबल धर्म्मी ने काज रचाया, वेदां दे अनुसार ॥ २ ॥
जीवे जोड़ी, सांई जोड़ी राजी रक्खे करतार ॥ ३ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सब सखियां रल देखन आईयां, करके प्रीति प्यार ॥ ४ ॥

हवन कराया पवन सुधारी, गल फूलन के हार ॥ ५ ॥

बढ सुहागन होवे जाई स्वामी दी आज्ञाकार ॥ ६ ॥

वेदी हेठां वेद विचारे, महिमा अपरम्पार ॥ ७ ॥

" लाभचन्दा" तेरी सफल कुमाई, कीती है निरंकार ॥ ८ ॥

---

५६ गीत

बाह वाह कटोरा बटणे दा

(इस गीत की सुर पर निम्नलिखित)

वाह २ एह वेला रूठने दा । जिन्दड़ी यह वेला खट्टणे दा । वाह २ कुकर्म्म से बचने दा ॥ जिन्डी० । वाह २ खटे दियां सो जाणियां ॥ जिन्दनी ॥ वाह २ जो हरि यश गांवदियां जिन्दनी० ॥ वाह २ जो नाम ध्यावदियां ।जिंदनी० वाह २ जो मन समझावदियां । जिन्दनी ।

मै हुण सुणी है यह वात लाहे खट लए । जिन्दनी० कि लाहे खटे लए जिन्हां लीते मन समझा कि. लाहे खट लए । जिन्दनी० । मैं हुण सुणी है यह बात मूल गुंवाय किए ।जिन्दनी० जो चल्ले मनदे राह मूल गुवाय लिये जिन्दनी०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाह वाह नी तन मन शुद्ध करो । जिन्दनी० कोई यह वटणा है सार तन मन शुद्ध करो ॥ जिन्दनी० ॥ वाह २ हुक्म नारायण दा । जिन्दनी० ॥ तुम कीनो बाल पढ़ाय हुक्म नारायण दा । जिन्दनी० ॥ वह २ जां पूर्ण पढ़ जावे । जिन्दनी । जां फिर कर परीक्षा आप पूर्ण पाढ़ जावे । जिन्दनी० । वाह २ परीक्षा हो जावे । जिन्दनी० । पुनः गृह में तुर्त बुलाय परीक्षा होजावे । जिन्दनी० । वाह २ जां पढ़ के घर आवे । जिन्दनी० । फिर शीघ्र करो विवाह जां पढ़ घर आवे जिन्दनी० । वाह २ कन्या वर तुल्य होवें जिन्दनी० । तब होवे अति उत्साह कन्यावर तुल्य होवे । जिन्दनी० ॥ वाह २ जे बल गुण भेद पड़े । जिन्दनी० । तो कलह रहे दिन रात बल गुण भेद पड़े । जिन्दनी० । वाह २ रूप गुण सम चाहिये । जिन्दनी० । तब आनन्द करे निवास रूप गुण सम चाहिये । जिन्दनी० । वाह २ बेनती 'भगवती' से जिन्दनी० । जोड़ी होवे रास बेनती भगवत से । जिन्दनी० ॥

५४ गीत

लावां के समय का गायन

रामा पहिलड़ी लांउ है सत्य धर्म कमाइये ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कपट दम्भ त्याग सकल ही नित्य हरि गुण गाइये ।
हरि गुण गाइये नाम ध्याइये प्रीति प्रभु से कीजिये ।
भक्त जन कहें लावं पहली नाम रंग से पीजिये ॥१॥
रामा दूजड़ी लावं है कि चरण हरि चित्त लाइये ।
जगत यात्रा माँहि स्वामी अटल आनन्द पाईये ॥
आनन्द तां पाइये गीत गाइये शांति सुख हरि दीजिये ।
यही है शुभ लावं दूजी सुख में दम्पति भीजिये ॥२॥
रामा तीजड़ी लावं है सत्य सुहाग मनाइये ।
ए लावां शीलवन्ती हृदय नाथ बसाइये ।
नाथ हिरदे बसे हर पल निमख भरना कब हो टले ।
ला हे भाग्यवंती सत्य सन्तत ते फले ॥३॥
रामा चौथड़ी लावं है चरण हरि मन जब दिया ।
चढ़ा रंग सुहाग सांचा जन्म सार्थक है किया ॥
जन्म सार्थक हुआ तब हो नाथ अपना पा लिया ।
होयें मङ्गलाचार ग्रह में बजें बधाइयां ॥ ४ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५५. गीत

प्रतिज्ञा के समय का

प्रभु निबाहे वचन व्रत धारण करो।
जो प्रतिज्ञा वचन उन्हें हृदय धरो ॥ १ ॥
वर कन्या तुम दोय नियम को पालियो।
एक २ की आज्ञा कभी मत टालियो ॥ २ ॥
दोये अंग हुए तुम एक वचन मत हारियो।
एक को मन से एक कभी न बिसारियो ॥ ३ ॥
दुःख सुख में तुम साथ कभी मत छांड़ियो।
प्रेम प्रीति के नियम कभी मत तोड़ियो।
हम दी कन्या दान सजन तुम लीजियो ॥ ४ ॥
तन मन धन सब इस के अर्पण कीजियो ।५।
भोजन आभूषण वस्त्र से आनन्द राखियो।
प्रिय वचन के बोल सदा तुम भाखियो ॥ ६ ॥
पतिव्रता का वचन तू कन्या पालियो।
अपने पति का वचन कभी मत टालियो ॥ ७ ॥
करियो सत व्यवहार तुम सब संसार में।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तन मन धन से रहियो जगत उपकार में ॥ ८ ॥
करियो विरोध न क्लेश कुटुम्ब परिवार से ।
समता राखियो सभी नगर नर नार से ॥ ९ ॥
करियो सर्व घर काज वेद की रीति से ।
करते रहियो पंच महायज्ञ प्रीति से ॥ १० ॥

आशीर्वाद का गीत

५६ गीत

शुभ करियो करतार काज यह, शुभ करियो करतार ॥ टेक ॥
जगत कुरीति छोड़ी हमने, पकड़ी शरण तुम्हार ॥ १ ॥
सुख आनन्द से वर कन्या, यह रहैं प्रीति अनुसार ॥ २ ॥
दोनों के चित इक चित होवन, अधिक बढ़े हित प्यार ॥ ३ ॥
कपट क्रोध कभी निकट न आवत, सुख के खुलें किवाड़ ॥ ४ ॥
मात पिता गुरु सब सम्बन्धी, और जितना परिवार ॥ ५ ॥
सब की आज्ञा सिर पर राखन, प्रीति भाव अनुसार ॥ ६ ॥
गृहस्थ धर्म और भक्ति में प्रभु, ऐसा होये व्यापार ॥ ७ ॥
तेरे नाम का पूजन कर कर गावन मंगलाचार ॥ ८ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

५७ गीत

कन्या के भेजने समय

कि तूं सुन नी मेरी बनतन कोयल मापे छाड़ कहां चली है।

इस के स्वर पर निम्न लिखित।

तूं सुन नी गुणवन्तिए बीवी।

स्वामी की सेवा में तू चल्ली हैं॥ टेक॥

मात पिता ने जो शिक्षा दीनी।

उसको वर्ती नाल अर्धांनी। स्वामी०।१।

सेवा करीं हथ जोड़ खलोवीं।

इन बातों से शिरोमणि होवीं। स्वामी०।२।

सास स्वसुर की आज्ञा मानी।

गुणवन्ती की एहो निशानी। स्वामी० ॥३॥

देवर जेठ जो सब सम्बन्धि।

इन से रीति वर्ती चंगी। स्वामी० ॥४॥

दरानी जठानी ननंदें जो तेरी।

इन से प्रीति करीं घनेरी। स्वामी० ॥५॥

और जो तेरी सब परिवार।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मन से राखीं सरल व्यहार । स्वामी० ॥६॥

नगर नार जो आवन पास ।

उन से करीं रसीली बात । स्वामी० ॥७॥

यह गृह आश्रम आश्रम भारा ।

इस में ईश्वर करे सहारा । स्वामी० ॥८॥

मन की बृत्ति खूब टकावीं ।

प्रभु की आज्ञा नांहिं भुलावीं । स्वामी० ॥९॥

पञ्च महायज्ञ करीं करावीं ।

"भगवत्" के अधिक फैलावीं । स्वामी० ॥१०॥

५८ गीत

तिल्ल छटे दिये ।

(इस सिठनी के स्वर पर निम्नलिखित)

कर याद प्रभु कर याद प्रभु जो सारे जगत नूं तारे । कर याद प्रभु० । जे खोज करें जे खोज करें । तां व्याप रहेउ जग सारे । जे खोज करें ॥

उठ उत्तम कर उत्तम कर तू काम कुड़े जग लाहे कारण आए । उठ उत्तम कर ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तज लोभ परे प्रभु सारे जगत नूं पाले । तज लोभ परे ॥

ना क्रोध करो ना क्रोध करो जग रहना है दिन चारे । न क्रोध करो ॥

तर जावनगे, तर जावनगे जो क्रोध कपट नूं मारे तर जावनगे ॥

दुःख पावनगे दुःख पावनगे जो पाप कुमावन हारे । दुःख पावनगे ॥

सुख भोगनगे सुख भोगनगे जो करे पर उपकार । सुख भोगन गे ॥

है चैन उन्हां है चैन उन्हां जो मनं दी वृत्ति सुधारे । है चैन उन्हां ॥

प्रभु पूछेगा प्रभु पूछेगा पाह बैठ कुड़े । तैं क्या अमल कुमाए । प्रभु पूछेगा ॥

फिर रोवेंगी फिर रोवेंगी । तू आप कुड़े जे छेती याद न आए । फिर रोवेंगी ॥

क्यों लड़दी सीं क्यों लड़दी सीं उन साथ कुड़े जो तुझ से लड़न न चाहे । क्यों लड़दी सी ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्यों करदी सी अभिमान कुड़े यह चलती फिरती छांएं? क्यों करदी सी ॥

ना हानि कर ना हानि कर उन साथ कुड़े। तू जिन से लाभ उठाए। ना हानि कर ॥

कर नम्रता कर नम्रता धन पाए कुड़े। यह सब में गुण अधिकाए। कर नम्रता।

क्यों देंदी सी क्यों देंदी सी सन्ताप कुड़े। जो तेरी शरण में आए। क्यों देंदी सी ॥

क्यों खांदी सी क्यों खांदी सी बहु भांत कुड़े तू होरना नूं तरसाए। क्यों खांदी सी ॥

'भगवत' से करो अरदास कुड़े प्रभु दीजो हमें सहाए "भगवत" से करो ॥

सब मूर्खता सब मूर्खता को दूर करो। फिर सांचा पंथ दिखाइये। सब मूर्खता ॥

---

५९ गीत

गायन शान्ति के समय का।

दोकामुड़े कर मेरी बीबी कान्हा तेरे वश आवे। दोकामुड़े।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

(इस के स्वर पर निम्न लिखित)

शुभ काम कुंड़े कर मेरी बीबी, कन्त तेरे वश आवे।
हथीं काम पैरी नी काम काम करीं प्रीति नाले।
ऐसे काम करीं मेरी बीबी भर्ता प्रेम से पाले ॥१॥
हथीं काम पैरीं नी काम काम करीं इक सूत्ती।
ऐसे काम करीं मेरी लाडो होवन सुख की बूटी ॥२॥
टूणा कामण री मेरी सजनी भूल करीं मत कोई।
स्वामी कहे सो तू पल २ कीनो सहजे ही वश होई ॥३॥
तन से काम मन से नी काम काम करीं ऐसी करनी
ऐसे काम करीं मेरी बीबी लागीं साधु की चरणीं ॥४॥
हथीं काम पैरी काम करनी करीं सब चंगी।
ऐसे काम करीं मेरी लाडली खुश होवन संबन्धि ॥५॥
जिस गृह भार्य्या से सुख भर्ता सो गृह उत्तम जान।
जिस गृह स्वामि से सुखी पत्नि सो घर स्वर्ग समान ॥६॥
तन से काम तूं मन से नी काम, काम करीं तू सारे।
ऐसे काम करीं मेरी लाडली मान होवे परिवारे ॥७॥
हथों काम परी ना काम, काम करी करीं सब भारे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसे काम करीं मेरी बीबी यश होवे जग सार ॥८॥
कौड़ी बात तू सब दी नी सहलईं आप बोलीं मीठी बाणी।
एहनी कर्म्मी तू मेरी लाडली होवेंगी पटराणी ॥ ९ ॥
जब तू काम करने नी लागे प्रथम करीं विचारे।
ऐसे काम करीं मेरी लाडो "भगवत" कृपा धारे ॥ १ ॥

मिलनी के समय का गायन ॥

६२ गीत

कोई वे लोको जागदा।

(इसकी स्वर पर निम्न लिखित)

कोई है वे उत्तम जात दा। कोई है वे उत्तम जात दा।
जो मन्द कर्म से भागदा, जो मन्द० ॥
और नित्य परभाते जागदा, और नित्य० ॥
यह अमका धर्म्मी जागदा, यह अमका० ॥
उठ हरि स्मरण में लागदा, उठ हरि० ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैदिक संस्कार

६३ गीत

तर्ज़—धन्य दीन दयाल तू प्रभु,

शुभ समय आया सज्जन, शुभ वार हमरे आईयां,
प्रेम मंगल छा रहा, नर नार मंगल गाईयां,
गुणवान अति होकर मग्न, वेदी रचन करवाईयां
चन्दन काफूर आदि हो, प्रसन्न ब्रहन कराईयां।
सुन वेद ध्वनि संसार के, देव और मनुष्य हर्षाईयां।
चहूं ओर जय जय कार करते, फूल शुभ बरसाईयां।
गले माला फूलन फूल, वर्षा फूली अंग न समाईयां।
आनन्द बाजे बज रहे आनन्द शब्द सुनाईयां।
शुभ रीति और शुभ प्रीति से, शुभ छत्र शेष ढोलाईयां।
आनन्द हो सज्जन पुरुष, आसन शुभ बठलाईयां।
अहो भगय हमरे वार जो, मंगल चरन तुम आईयां
अहो भागम उन मात पिता, सज्जन पुरुष जिन जाईयां॥
नर नार सब प्रसन्न, मङ्गलचार देखन आईयां।
वेद रीति देख हर बार, करते बड़ाईयां।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शान्ति स्वास्ति पढ़न को, सब मन बृत्ति ठहराईयां ।
आशा करे पूर्ण प्रभु आनन्द चित भर आईयां ॥

६४ गीत

आज मिल सब गीत गाओ, उस प्रभु के धन्यवाद ॥
जिस का यश नित्य गाते हैं, गंधर्व गुणीजन धन्यबाद ॥
मंदिरों में कंदरों में पर्वतों के शिखर पर ॥
देते हैं लगातार सौ सौ वार मुनिवर धन्यबाद
करते हैं जंगल में मंगल पक्षिगण हर शाख पर
पाते हैं आनन्द मिल गाते हैं, स्वर भर धन्यवाद
कुओं में तालाब में, सिन्धु की गहरी धारा में
प्रेम रस में तृप्त हो, करते हैं जलचर धन्यबाद
शादियों में जलसयों में यज्ञ और उत्सव के आदि
मीठी स्वर से चाहिये, करें नारि नर सब धन्यबाद
मानकर "अमीचन्द मजनानन्द ईश्वर स्तुति
ध्यान धर सुनते हैं श्रोत, कान धर २ धन्यबाद

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

६५ गीत

सदा खुशी हो सदा मंगल, सदा हो जलसा यह शादयाना १
सदा स्वस्ति सदा हो शांति, सदा हो सुफल यह यज्ञ रचाना २
सदा हो कीर्ति सदा हो लक्ष्मी, हे बाल वृद्ध ! हे नौजवाना ३
सदा हो तुष्टि सदा हो पुष्टि, सदा हो बल प्राक्रम बढ़ जान ४
सदा हो आपस में प्रेम प्रीति, नमस्ते कह करके कर मिलानी ५

हवन यज्ञ

६६ गीत

यह हवन सुगन्धित पवन मेरे मन भावे
है धन्य भाग जो हवन का यज्ञ करावे।
भारत में अविद्या अन्धकार जो छाया
मूर्खता से यह वैदिक धर्म भुलाया
बिन जल कैसे संसार फुलवारी कहलावे।
बिन वायु नाज़ुक फूल न क्यों मुरझावे।
वायु की शुद्धि यही हवन करता है
यही वर्षा द्वारा जल मंगल भरता है

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिन विद्या के नहीं उसका भेद कोई पावे
कहे मूर्ख वर्षा कैसे हवन बरसावे
सब जाने धुएं का पानी हो जाता है
फिर भी मूर्ख के नहीं समझ आता है
कर सूर्य आकर्षण धुआं हवन लेजावे
वायु हो सुगन्धित जल ही जल बरसावे
कैसे नहीं बरसे बबा जगत में आवे
यही बात से हर दिन पाप और रोग बढ़ावे
नित्य करो महाशयों हवन धर्म्म रीति से
सुख भोगो परस्पर रहो सदा प्रीति से
नहीं तीन ताप निकट तुम्हारे आवें
इस धर्म्म काज से सब जग शुभ सुखपावें

---

६७ गीत शान्ति क।

मित्र और वरुण उर्वी यह सदा शान्त रहे
इन्द्र और विष्णु बृहस्पति भी सदा शान्त रहे
रुद्रमय और सदा शिव भी करें नित्य नित्य कल्याण
सूर्य अग्नि और आदित्य भी सदा शान्त रहे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महर्षि कृपा कर इन्द्र भी होवे अनुकूल
हृदय और मन भी तेरा शान्त सदा रहे
पृथ्वी वायु भी और जल भी हो तुझे सुखदाई
अन्तरिक्ष और बृहस्पति भी सदा शान्त रहे
औषधि आदि तुझे होवे सदा शान्ति रूप
विश्व देव और ब्रह्म भी सदा शान्त रहे
अन्धकारों से बचावे तुझे नित्य वह सर्वज्ञ
पाप अरु क्रूर गृह आवें न निकट सदा शान्त रहे
शान्ति के लिये जगदीश सहायक होवें
शान्ति २ करे शान्त सदा शान्त रहे
देव तेतीस जो हैं वह करें कृपा तुमपर
निर्विघ्न काम हो सर्व और यह सदा शान्त रहें

---

६८ गीत

टेक—आज घर शान्ति होई
तुसी गाओ मङ्गलाचार आज घर शान्ति होई
स्वस्ति वाचन और शान्ति पाठ सब

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुन कर होवें प्रसन्न चित ।
धन्य २ हे करतार, आज घर० ॥ १ ॥
हम सब को प्रभु शरण में लेओ,
सारे हो सुख हम को देओ ।
दुःख के मोचन हार, आज० ॥ २ ॥
सुख दे हम को यह जग सारा,
दुःख होवे हम से न्यारा ।
तीनों ताप प्रभु टार, आज० ॥ ३ ॥
सुर्य्य चन्द्र और यह तारे,
फूल बनस्पति जो यह सारे ।
देवें सुख हर प्रकार, आज० ॥ ४ ॥
अभयम् मित्रात् अभयम् मित्रात् ,
अभयं ज्ञातात् अभयम् परोक्षात ।
होवें अभय संसार, आज ॥ ५ ॥
द्यौ शान्ति अन्तरिक्षम् शान्ति,
द्यावा शान्ति पृथ्वी शान्ति ।
शान्ति जल की फुआर, आज० ॥ ६ ॥
औषधि शान्ति बनस्पति शान्ति,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विश्वे देवा च ब्रह्म शान्ति ।
शान्ति हो सेह बार, आज० ॥ ७ ॥
शान्तिरेधि सामा शान्ति भौतिक अग्नि भी दे शान्ति ।
हे दया के भण्डार, आज० ॥ ८ ॥
पश्येम शरदः शतम् जीवेम् शरदः शतम् ।
शुद्ध होवे व्यवहार, आज० ॥ ९ ॥
शृणुयाम शरदःशतम् अदीनाः स्याम शरदः शतम्
होवे न लाचार, आज घर० ॥ १० ॥
सारे रल मिल आनन्द गाओ,
आज का दिन यह मुबारक पाओ ।
गल फूलों के हार, आज० ॥ ११ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गर्भाधान

६९ गीत

जो नियम अनुसार चले ईश्वर के वह बर्ती कहलाता है।
ऋतुदान दे ऋतुकाल में यह सुख सम्पति पाता है॥
हैं सोलह स्वाभाविक रात भला जाने नर नारी सदा।
हैं चार जो पहिली रात सदा वह वैदिक धर्म्म छुड़ाता है।
ग्यारह तेरह बचना चाहिये दश रात गर्भ रखना चाहिये।
हो ताक रात पुत्री पैदा और पुत्र जुफत में आता है।
इस समय अमावश जो आवे या पूर्णमासी हो जावे।
देना इन में भी ऋतुदान पर धर्म मना बतलाता है॥
करो ऋतु समय तुम प्रीति से सब अंग मलाओ शुभ रीति से।
जब पूर्ण इच्छा हो जावे फिर पृथक् २ हो जाता है।
विश्राम कर स्नान करो फिर दुध औषधि पान करो।
अपनी २ शैया सोना फिर वेद धर्म्म बतलाता है॥
दे ऋतुकाल जो ऋतुदान सन्तान अति हो विद्वान।
बलवान हो सन्तान पाप फिर कभी निकट नहीं आता है॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुंसवन

७० गीत

टेक—पुंसवन रीति शुभ कारी है ॥

जगदीश्वर से बार २ यह विनति अब हमारी है।
गर्भ स्थिर हो हे ईश्वर अब आशा लगी यह भारी है
पूर्ण मास कर ईश्वर तेरी जन्म लेता बलकारी है।
पाक बनाओ अति सुन्दर अब हवन यज्ञ त्यारी है ॥
बचा हवन का पाक जो भोजन खाने की अधिकारी है।
शरीर पुष्ट हो बुद्धि निर्मल यह विनती अब हमारी है
हो सन्तान युक्त सुख भोगो सुखदाता जग कारी है।
प्रजापति नित्य कृपा करे लगे धर्म्मरीत उन प्यारी है॥

सीमन्तोन्नयन

७१ गीत

हे कृपालु हम सबों को भय रहित कर दीजिये।
तेरे ही गुण गाये निस दिन दुःख सब हर लीजिये। हे कृ०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रार्थना पश्चात् हम बतलावें तुझ को गर्भिणी ।
पांचवें ही मास में समिन्त भी कर लीजिये । हे० ॥ २ ॥
संस्कारों में तो यह बतला दिया है तीसरा ।
गर्भ पुष्टि के लिये है ध्यान तो धर लीजिये । हे० ॥ ३ ॥
काठ की चौकी कड़े आसन पै हरगिज़ बैठ मत ।
बैठ जाना टेककर घुटन न आसरा दीजिये । हे० ॥ ४ ॥
सुख से जो कर जाये दिन ऐसा सदा आचार रख ।
खाना पीना जो रुचि हो, योग्य ही कर लीजिये । हे कृपा ५

---

७२ गीत

सीमन्तोन्नयन छटे मासिक में कीजे नियम अनुसार
कीजे नियम अनुसार प्यारे ।

पूर्णमासी हवन करो तुम उत्तम पदार्थ द्वारा कीजे नियम०
कर स्नान सुन्दर जल से देह शीतल होए है तुम्हारा कीजे ।
बालों तेल सुगन्धित डारो वस्त्र करो संगारा । कीजे
जल छींटे दे शुद्ध करो तेरा रूप लगे अति प्यारा । कीजे
भोजन आदि का सेवन कर सुफल काज हो सारा । कीजे
विद्वान दे पुत्र तुम्हारे ईश जगत कर्तार । कीजे नियम ०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जात कर्म ।

७३ गीत

टेक—आज घर बालक जन्मा तुम्हारे ।
गुण गा रहे हैं आर्यगण सारे ।
सभी मिल के गाते हैं ईश्वर की महिमा ।
कि जिसने हमारे सभी काम संवारे । आज० ॥१॥
खुशी से फूले समाते नहीं हैं ।
पड़े लाल झोली जो लालन से प्यारे । आज० ॥२॥
हवन से पवन जैसे देती है फ़ाइदे ।
पढ़े वेद विद्या यह भारत सुधारे । आज० ॥३॥
समय अति सुन्दर क्या आज आया ।
तू गा "लाभचन्दा" धन्य भाग हमारे । आज० ॥४॥

---

७४ गीत

प्रसुता पूत जाया है, बधाई है बधाई है ।
टेक—कटायो नाल ललना का, दिया मधु घृत चटाई है । प्र०
लिखो ओङ्कार जिह्वा पर, कनक की सींक आई है । प्र०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहो फिर कान में उस के, जो संज्ञा वेद पाई है। प्र०
हुआ नहीं दस्त प्यारे को, जनम घूंटी पिलाई है। प्र०
लला की घाम आंधी में न लाना चतुराई है। प्र०
रखो आरोग्यता प्यारी, घड़ी प्रभु ने दिखाई है। प्र०

७५ गीत

आनन्द से आज गावो बधाई,
ईश्वर ने मन इच्छा पूर्ण कराई ॥१॥
द्वितिया का चांद पड़ा मेरी झोली,
जिसका सतारा है सूर्य की न्याई ॥२॥
ब्रह्मचर्य आश्रम को पूर्ण करेगा,
विद्या की पूर्ण करेगा पढ़ाई ॥३॥
गृह आश्रम में धन उपार्जन करेगा,
दिनों दिन बढ़ाएगा कीर्ति सवाई ॥३॥
कर्त्तव्य अपने से पालन करेगा,
सत्कार और सदा यश बड़ाई ॥५॥
जिस कुल में जन्मे पुत्र ऐसो 'अमीचन्द'
धन्य है पिता उसका धन्य २ माई ॥६॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

७६ गीत

चिरञ्जीव हो तुम्हारो बाल, प्रभु जी की शरण रहे ।

टेक—विद्या पढ़े गुरुकुल में जावे, कौशलादि क्रिया में यश पावे

मेटे सब जञ्जाल । प्रभु० ॥१॥

मात पिता के वश में रहि है, पितु आज्ञा प्रतिपालन करि है

धर्म निष्ठ सब काल ॥२॥

चारों आश्रम जैसे बताये, करि है धारन अवसर पाये ।

हो उपकार विशाल । प्रभु० ॥३॥

हो तेजस्वी आर्य्य आस्तिक, महता यशस्वी हो स्वभाविक ।

'पाठक' तुम्हारो लाल । प्रभु० ॥४॥

---

७७ गीत

चिरञ्जीव हो और बली हो वह पूत,
पिता माता की आज्ञा पाले सपूत ।
रहे धर्म्म मर्यादा पालन में तत्पर,
होवे सर्व हितकारी और सर्व मित्र ॥१॥
तपस्वी हो विद्या में होवे निपुण,
होवे कुल का दीपक सभा का रत्न ॥२॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मधुर वाणी और शीलता का स्वभाव,
हर इक से करे पैदा भ्रातृ का भाव ॥ ५ ॥
ब्रह्मचर्य का होवे पूर्ण यह कर्ता ।
रहे दुष्ट कर्मों के करने से डरता ।
पिता महां हुए राम लक्ष्मण थे जैसे ।
अनुकरण करता रहे गुण यह वैसे ।
प्रतापी महां हो चुके जैसे पुरुषा ।
कृपा ईश से वैसे हो यह लड़का ॥ ६ ॥
करे चार आश्रम विना विघ्न पूर्ण ।
सदा सुख को भोगे हों दुःख सारे चूर्ण ॥ ७ ॥
हुआ जन्म उत्सव मिले आर्य भाई ।
पिता माता बालक को दें सब बधाई ॥ ८ ॥
हों नित्य ऐसे जलसे गंगाराम घर २ ॥ ९ ॥
सदा ऐसा आनन्द होवे परस्पर ॥ १० ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

नाम करण

६७ गीत

जन्म से ग्यारहवां दिन जो आवे नाम करण रीति कहलावे
पहिले नाम के पहिले वर्ण का' क, ख अक्षर नाम में आवे।
चौथे वर्ण के अक्षर में से, य, र, ल, व, बीच में आवे।
यज्ञ दत्त या होवे देव दत हो, दो चार अक्षर नाम धरावे।
सावित्री या होवे यशोदा, ऐसा नाम कन्या का धरावे।
सुन्दर नाम रखो प्रीति से जो सब के मन प्रीति बढ़ावे।
नाम निहाला घुडू जंगली, रुड्दू घसीटा आज कहलावे।
पिता पुत्र जो घर न होवे, जब आवे तब नाम धरावे।
शर्मण ब्राह्मण नाम के पीछे, वर्मण क्षत्रि शब्द लगावे।
गुप्त वैश्य और शूद्र वर्ण के पीछे नाम के दास लगावे।
सुन्दर वस्त्र पहिना बालक को, उसका पिता फिर गोद उठावे।
माता कर परिक्रमा उसी की, फिर स्त्री बालक को उठावे।
दो अशीस तुम युं वालक को रहे सुखी गुणवान कहावे।
करके हवन शुभ रीत से माता पिता वह नाम बुलावे।
चारों मनोर्थ पूर्ण होवे, दिन २ ईश्वर तेज बढ़ावे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

निष्क्रमण

७९ गीत

करो शुद्ध रीत निष्क्रमण छठा अब मास आया है।
सजो भूषण बसन सुन्दर कि बालक हेश पाया।
फिराओ खेतों में उस को जहां अति शुद्ध वायु हो
कराओ सूर्य दर्शन, बाल को यह मुख्य बताया है।
हमारा तात्पर्य सूर्य दर्शन से यह है प्यारे।
कि जिस से सूर्य आदि ने अति प्रकाश पाया है।
उसी ईश्वर को हम देखें सुनें जीवें वर्ष सौ तक।
किया प्रकाश हर पर जिस ने यह सूर्य बताया है।
हवन की रीति तुम प्यारे करो निश्चय चित सो शुभकारी।
धर्म्म है काज वेदादि ने यह हम को बताया है।
रहें आधीन तेरी दीनबन्धु जगत के स्वामी।
करें शुभ देश में भ्रमण यह निष्क्रमण जताया है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अन्न प्राशन

८० गीत

सज्जन सब गाओ मिल कर गीत, आज है अन्न प्राशन रीती

छठे महीने का जब होवे बाल कंवार।

भोजन का अर्थ कर हवन रीति के द्वारा,

खिला दूध माखन मधु सहित।

आज है अन्न प्राशन रीति।

विघ्न हरन मंगल करन करें सदा कल्याण।

अन्न के दाता हो सदा यह तेरी सन्तान।

करें नित्य पराक्रम और प्रीति,

आज है अन्न प्राशम रीति।

सत्चित् आनन्द वह राखे नित्य आनन्द।

बाल तुम्हारो ऐ सजन हो विद्या का कन्द।

सुखी रहे गर्मी और शीत।

आज है अन्न प्राशन रीति।

पयस आदि क्षीर का खावो भोजन पाय।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हवन करो शुभ रीति से कभी न हो सन्ताप ।
वचन यह कह गये ऋषि अतीत ।
आज है अन्न प्राशन रीति ।

८१ गी

सातवां यह संस्कार है अन्नप्राशन कहुं बखान
छटे महीने करो सब, सुनियो चतुर सुजान ।

टेक—अन्न प्राशन संस्कार कहता तुम्हें सुनाके ।
तुम छटे महीने भाई, अन्न प्राशन दियो कराई ।
ऋषि सब कहें विचार, कहता०
जो तेजस्वी बालक चाहो घृत दही भात बनवाओ ।
शहद को करो तयार, कहता०
सब को एक जगह मिलाके संस्कार विधि को मंगवाके के ।
करो उस के अनुसार, कहता०
मन्त्रों से ध्यान लगाओ, बालक को भात चटाओ ।
यज्ञ के बीच मंझार, कहता०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईश्वर की प्रार्थना प्यारे करें पुरुष स्त्री सारे।

धर्म का करें प्रचार, कहता०

बालक को आशीस सुनावें जो नर नारी वहां आवें।

'गंगासहाय' कहे पुकार। कहता० ॥

चूड़ा कर्म

८२ गीत

दोहा—आठवां यह संस्कार है, चूड़ा कर्म है नाम
केश छेदन भी बोलते सुनों मित्र दे ध्यान!

टेक—सब सुनियों ध्यान लगाय के इस संस्कार को प्यारे।

चूड़ा कर्म की विधि बताऊं सुनों महाशय तुम्हें सुनांऊ।

पारसकार गृह्य सुत्र दिखाऊं तुम देखो चित्त लगाय के।

ऋषियों के नियम विचारे। सब०

एक साल या तीन वर्ष में उत्तरायण दिन काल और शुक्लपक्ष में

आनन्द मंगल उत्तम दिन में, दो संस्कार कराय के ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यों संस्कार विधि पुकारे।

यज्ञशाला उत्तम बनाओ, विधि पूर्वक हवन कराओ।

नाई बुलाय मुण्डन करवावो संस्कार विधि मंगवाय के।

करो उस के तुम अनुसारे। मन०

८३ गीत

बाल तेरा तीजे वर्ष में आया, कीजे शुभ चूड़ा कर्म रचाया।

गरम सरद जल से केशों को, माता पिता भिगोवें।

हंस २ कर यह बाल तुम्हारा बाल कटावे।

पिता फूला नहीं अंग समाया।

काज शुभ चूड़ा कर्म रचाया।

मंत्र पढ़े फिर जिसका अर्थ यह ऋषि महर्षि लगाया

ईश करे छेदन बालों को दिया तेज का दाया।

अजी कुशा केशा मला के कटाया।

काज शुभ चूड़ा कर्म रचाया।

कुशा औषधि रक्षा कर तु ज्यों जग पालन पाले।

जैसे सूर्य किरण द्वारा रस औषधि में डाले।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह तो वैदिक धर्म्म बतलाया ।
काज शुभ चूड़ा कर्म रचाया ।

शिखा एक या चार रखो तुम वेद धर्म्म अनुसार ।
जल उष्ण से करो अस्नान वस्त्र साजो शुभ कार ।

आहा समय अब हवन का आया ।
काज शुभ चूड़ा कर्म रचाया ।

हवन करो अति प्रीति से तुम महके जग संसार,
त्रि आयुषम् का मंत्र पढ़ो करे रक्षा जग कर्तार ॥

प्रभु करे तुम प्रीति दाया,
काज यह चूड़ा कर्म रचाया ॥

धीरे २ बाल कटना कोमल बाल प्यारे,
क्रिया द्वारा जैसे सुवर्ण रस औषधि में डारे ॥

गीत हम चूड़ा कर्म का गाया
काज शुभ चूड़ा कर्म रचाया ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर्ण वेध

८४ गीत

प्रथम स्नान करा बालक को सूर्य दर्शन करवाओ
भूषण बिषण सजो अति सुन्दर कर्ण बाल के बधाओ
तेज शस्त्र से वेध हो करण की रग नाड़ी को बचाओ
दच्छण करण प्रथम तुम वेधो, मुख पूर्व कर बठलाओ
इसी तरह से वाम करण, पद्धत रीति छेदाओ
गायन करो वेद के मंत्र, अर्थ उन के ऐसे गाओ ।
भद्र पुरुष कल्यण करें नित्य, आनन्द मंगल बरसाओ ।
छिद्र बंद होने नहीं पावे, ऐसा रत्न भी कराओ ।
पूजन करो नित्य ईश्वर का, हिये ध्यान उसका लाओ ।
पिता जगत को भूलो नाहीं, सुख संसारिक नित पावो ।

उपनयन

८२ गीत

कर्म उपनयन जो करावे, वेद मार्ग यह बतलावे,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हो आरोग्य ब्राह्मण का बालक, वर्ष पांचवें आवे। कर्म०
छत्री छठे वर्ष में होवे, वैश्य आठवां पावे, कर्म०
बाजे गिनें यह वर्ष गर्भ से, जो मन को शुभ भावे, कर्म०
बाजे सो गिनें जन्म से पीछे, वर्ष आठवां आवे, कर्म०
इसी तरह से ग्यारा वर्ष का, क्षत्री बालक होजावे, कर्म०
लाचारी जब होजाय भारी, सोलह वर्ष होजावे, कर्म०
बारा वर्ष वैश्य बालक को, यज्ञोपवीत चढ़ावे, कर्म उप०
बाईस साल आज्ञा छत्रयों को, चौबीस वैश्य बतलावे, कर्म०
केश कटाके स्नान कराके, वस्त्र अंग सजावे, कर्म०
बस सजा ब्रह्मचारी को, शाला में ले आवे, कर्म०
वेद अनुसार अब हों जो वस्त्र, बालक को पहनावे, कर्म०
ब्राह्मण सुरख रंग के वस्त्र, क्षत्री मजीठ रंगावे,
वैश्य पीले करवावे।
मुंज द्राव की तेरागी ब्राह्मण, छत्री तांत फिरावे,
ऊन के वैश्य बनावे।
दण्डप लाश [illegible] ब्राह्मण हाथ दिलावे, कर्म०
गूलर छत्री वैश्य को बलप, या जब दण्ड मिलावे,
उसको काम लावे, कर्म०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यज्ञोपवीत रीत है भारी, द्विज तब ही कहलावे,
जोकि उपनयन करावे।
मर्यादा जो यह न करेगा,
पतित वर्ण होजावे, न फिर वह पढ़े पढ़ावे।

गीत ८६

हे सुत तुम्हें यह मिलता यज्ञोपवीत है,
धारण करो उपनयन की उत्तम यह रीत है।
ब्रह्मचारियों की गणना में तुम आ। से हुए,
विद्या को जानो भूषण विद्या ही मीत है।
माता पिता गुरु की आज्ञा को पालियो,
गुण गृहण करना अवगुणों पै पाओ जीत है॥
गृहस्थ आश्रम में आनकर भोगेंगे सब स्वाद।
अब विद्या उपर्जन में रहना अतीत है॥
अहिंसा परम धर्म्म है रखना विशेष ध्यान,
यथाशक्ति मत सताओ यदि तुच्छ कीट है॥
अभिमान का अहंकार को चित्त से हटाओ,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राखो व्यवहार ऐसा जो दर्शावे प्रीति है ॥
"गंगाराम" ने हित से कहा मत भूलो कभी,
उपदेश है यह सूक्ष्म केवल न गीत है ॥

वेदारम्भ

८७ गीत

वेदारम्भ समय शुभ आया, वेदारम्भ समय शुभ आया।
गायत्री तुम पढ़ो आदि में, मुख्य नियम यह वेद बताया ॥
सावधान हो हवन अब कीजे,मुख्य जलका अब स्पर्श कराया।
मित्र अब तोको समझाऊं, जिस से गुरु ने हवन कराया ॥
अग्नि रूप ईश परमेश्वर, जैसे अग्नि रूप बढ़ाया।
अग्नि रूप कर तेजस्वी, देवे प्रभु ताहे ज्ञान सवाया ॥
गृहण कियां जो पग आचार्य्य का, सावित्री तोहे मंत्र बताया
गूढ़ अर्थ सावित्री समझो, दुष्टता से तो गुरु ने बचाया।
सन्ध्योपासन करो दो काला, ईश करेंगे तुम पर दाया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

८८ गति

ब्रह्म चर्य्य व्रत को धार करो सन्ध्या उपासन ।
भोजन के पूर्व शुद्ध करो जल का आचमन ।
दुष्कर्म को त्यागो कभी दिन में न करो शयन ।
आचार्य के आधीन करो वेद अध्ययन ।
एक २ वेद पूर्ण करो बारह वर्ष में ।
वो जब तलक हो पूर्ण रहो ब्रह्मचर्य में ।
सद्धर्म युताचार्य की आज्ञा को मानना ।
उपदेश धर्मच्युत कभी मन में न धारना ।
मद क्रोध लोभ मोह तजो मिथ्या भाषना ।
मैथुन भी अष्ट भान्ति का निज मन से त्यागना ।
शय्या को त्यागना सदा भूमी में शयन ।
स्नान नींद खाना अधिक करना मत गृहण ।
अञ्जन व गन्ध का भी कभी करना न सेवन ।
गाना बजाना नाचना निन्दित हैं ये व्यसन ॥
जगो न अधिक निन्द्रा न भय शोक चित्त धरो ।
नित प्रातः काल चौथे पहर में उठा करो ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शुचि दन्त धावनादि हो स्नान कर्म नित्त ।
ईश्वर की प्रार्थनादि हो अभ्यास योग चित्त ॥
गज ऊंट अश्व वृष की सवारी कभी न कर ।
जूता व छाता ग्राम का वसना तजो सुघर ।
लघु शङ्का बिना छूओ न इन्द्रिय उपस्थ को ॥
हों ऊर्ध्वरेता वीर्य सहित राखो स्वास्थ्य को ।
खट्टा कसैला क्षार अधिक तीखा न खाओ ॥
रेचक जमाल गोटा व उबटन न लगाओ ।
युक्ति से हो विहार व आहार तुम्हारा ॥
विद्या ग्रहण में यत्न करो शीलके द्वारा ।
दण्डा व मेखला रखो भिक्षा का आचरण ॥
नित होम व स्नान करो सन्ध्या उपासन ।
आचार्य के प्यारे करो सब अपने आचरण ॥
सायं प्रातःकाल करो नित्य अभिवादन ।
साष्टाङ्ग दण्डवत हो नमस्ते का नित नियम ॥
"पाठक" बढ़ावे आयु व यश बुद्धि बल सुगम ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

समावर्तन

८९ गीत

नख और केश कटाए औषिधि जल में धुलवाया।
करो हवन शुभ रीति से आनन्द समय अब आया।
काम क्रोध लोभ भी तुम से गुरु ने छुड़वाया।
नाच रंग में नहीं किसी के जाना बतलाया।
गायन विद्या गुरु ने वेद से तुझ को बतलाया।
रात समय गायन कर निज मन्दिर में मन भाया।
संयमता नीति श्रेष्ट गुण औ ने सवाया।
कर उपदेश सत्यगुरु जी ने इसे ज्ञान बताया।
ग्रह आश्रम वेद अनुसार ब्रह्मचारी पाया।
पूर्ण हुआ है आश्रम तेरा ईश्वर हो सहाया॥

विवाह

९० गीत

आज शगन मनावें वर के सदा सुहाग रहे बनरी को।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

महां भाग्य हो इस प्रिय वर के ॥
दुल्हा को दुल्हन हो प्यारी, कुलवन्ती भर्त्ता हितकारी,
हो पटराणी इन्द्राणी सम, पुत्र पौत्र की फुलवड़ी ।
रुकमण सीता सी सतवन्ती, कहें यह लोग नगरके। घरके॥२॥
सारे नगर की लोग लुगाई, देते मुबारक लाख बधाई,
भाट प्रोहित करत बढ़ाई, हो दुल्हा तेरी सुफल कमाई ।
लागी ले केशर को छिड़कत, सुवर्ण कटोरे भर भर के ॥ ३ ॥
सुरनाई डक ढोल नकारे, बजत तुरी स्वर ऊंची पुकारे,
दुल्हा आया आज मेरे द्वारे, मैं उसके सदके बलिहारी
'अमींचन्द' होवे वारे न्यारे, सेज पिया पग धर २ के ॥४॥

९१ गीत

बनरा बनरी ब्याहन आया ॥
धन्य भाग दुलहन लाडली के सुगड़ चतुर वर पाया ॥१॥
मोहनी मूर्त मधुरा सी सूरत, रूप यौवन मन भाया ॥ २ ॥
उत्तम कुल उत्तम वंशावली, एक से एक सवाया ॥ ३ ॥
'अमींचन्द' चिर जीवे यह जोड़ी, विधि ने जोड़ मिलाया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गीत ९२

विनती सुनो महाराज हमारी, विनती सुनो महाराज ॥ १ ॥
शरणागत की शरम है तुम को बांह गहे की लाज ॥ २ ॥
भूषण वस्त्र शय्या आदि, यथा शक्ति दिया दान ॥ ३ ॥
परस्पर सुख उपजाओ मिल कर हे राजाधिराज ॥ ४ ॥
कन्यां हमारी है पृथ्वी वत तुम सूर्य महाराज ॥ ५ ॥
चन्द मुखी के तुम हो भान्ति मोरमुकट सरताज ॥ ६ ॥
अपनी आज्ञा दीजिये इस को कर यह घर के काज ॥७॥
हर्ष सहित गावत स्तुति स्त्री सकल समाज ॥ ८ ॥
सत्य धर्म की वृद्धि कीजे जय जय जय महाराज ॥ ९ ॥

प्रतिज्ञा का गीत ९३

धर्म्म अनुकूल करो प्रतिज्ञा ।
जैसे सखीरी वर्णन करूं मैं ॥

वर प्रतिज्ञा करत है प्यारी निस दिन रक्षा तेरी करूं में ।
तूं भी कर प्रतिज्ञा सुन्दर रक्षा से तेरी नहीं टरूं मैं ।
सूर्य्य समान पुरुष है तेरा पृथ्वी वत तूं उसकी नारी ।
कर प्रतिज्ञा बिन तेरी आज्ञा इक पग बाहर नाहीं धरूं मैं ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋग और साम वेदमत दोनों के परस्पर कार्य शुद्धि ।
प्रतिज्ञा कर नार सुहाग उस सम्पति घर भार भरूं मैं ।
पुरुष कीन प्रतिज्ञा तोसे अपमान नहीं नार करूं मैं ।
प्रतिज्ञा कर गृह आश्रम में नहीं स्वामी तोसे लडूं मैं ।
जिस पत्थर पर बैठे हो दृढ़ताई तुम उस से सीखो ।
कर प्रतिज्ञा स्थिरकर मन को सब दुःख सुख हिये माहीं भरूं मैं ॥
प्रतिज्ञा निज कर मत भूलो यह धर्म की हर्षा रीति ॥
वेद अनुकूल सत्य हृदय से यह शिक्षा नर नारी करूं मैं ॥
सदा रहे संयोग तुम्हारा प्रीति पूर्व रहे परिवार ॥
हाथ जोड़ आगे करो बिनती हे स्वामी तोहे पावन पडूं मैं ॥
करो नमस्ते बार बार उच्चारण पत्नी सह पति तुम्हारा ॥
होए तुम्हें सुख जग संसार यही प्रार्थना करूं मैं ॥

उपदेश का गीत ९७

वेद रीति से पुरुष नार मिलाया हमने ॥
सुख से सो [illegible] काज रचाया हमने ॥
चेरी हो सदा करो सास सुसर की अपने ॥
ननद देवर तेरे तारण हैं [illegible] हमने ॥
जो हो कुनबे में तेरे पति के तू रखियो प्रसन्न ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भूल मत जाना जो उपदेश सखाया हमने ॥
ि.द्र नों की तरह रखिया परस्पर प्रीति ॥
बहुत आनन्द अरी प्रीति में पाया हमने ॥
प्र.ण जल दोनों के हृदयों का रखे मिल.प ॥
धर्म्म अनुसार यह संबन्ध मिलाया हमने ॥
ा। वेद.न करे तुम में कभी विप्रीति ॥
वेद अनुकूल ेरा प.ति यह मिलाया हमने ॥
नित्य रह फूलती तू फलती अरी बड़भागन ॥
वृक्ष यह धर्म क शुभ आज लगाया हमने ॥

बधाई ।

९८ गीत

जी अंब लेओ बधाई ॥
होए बधाई सदा है बधाई, सुखी बसे परवार ॥
परव र खुशियां दिनों दिन खुशियां, कार्ति वढ़ संसार।
आप जीवो परवार जीवें, जीवे दुल्हा दुलार ॥
होय आनन्द सदा जयकारा, हे श्री जगदाधार ॥
सन्तति हो हारे आज्ञा कारी, करे देश उपकार।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कुल भूषण निर्दोषण होवे, सभा का होए शृंगार।
आर्यसमाज हो वंश तुम्हारा, पूरण ज्ञान विचार।
आर्य अनुग्रह रहे तिन पै सदा सुखी नर नार।
यही आशा हमारी जाने देवे हैं बारंबार।

९९ गीत

शरण पति की रहना बहिना, शरण पति की रहना बाहिना
हिल मिल सब से रहियो बहिना, सास कहे सो सहनारी बाहिना।
जिसे पिया चाहे वोही सुहागन, जो गुजरे सो सहनारी बाहिना
सास सुसर की सेवा कीनो, नित्य उठ चरनन गहनारी बाहिना
मीठी बात कर प्रसन्न राखियो, सब आधीन रहनारी बहिना
ईश्वर कृपा से रहो सुहागन, नहीं भूलो हमारा कहनारी बहिन
निज स्वामी आज्ञा में रहियो, धन्य तुम्हारा लहनारी बहिना

१०० गीत

हमारी है दुआ प्यारी, सुहागन हो सुहागन हो
जियो सौ वर्ष तक प्यारी, सुहागन हो सुहागन हो।
तो सन्तत जगत सुख पावे, जगत में धर्म फैलावे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करे जो इन्द्र वर्षादी, सुहागन हो सुहागन हो।
नहीं मुहताज तूं होवे, न कुल को लाज तू खावे।
पति से प्रीति हो भारी, सुहागन हो सुहागन हो।

गृहाश्रम

१०७ गीत

गृहाश्रम दूसरा करना धरम सन,
पति पत्नी करें सन्तान उत्पन्न ॥
जो ऐहिक पार लौकिक सुख का कारण,
करें उपकार सब का दोनों धारन ॥
नित्य प्रीत काल में ईश्वर का अराधन,
लगे सद्धर्म में धन और तन मन ॥
लगाओ अपना गृह के कृत्य में मन ॥
करो जगदीश की आज्ञा का पालन ॥
प्रतिज्ञा दोनों ने की जो परस्पर,
रहें दृढ़ वीर्य के मिलन पर तत्पर ॥
एक सौ वर्ष की सदा करना,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुतों अरु नीतियों को प्राप्त करना ॥
ऋषी मनु जी ने ये आज्ञा लगाई,
रहे दोनों मुदित कल्याण दाई ॥
जहां नर नारी नहिं प्रमुदित परस्पर,
कलह दुःख का मानो भण्डार है घर
प्रथम तो वहां नहीं सन्तान होती,
यदि होती है तो दुःख खान होती ॥
पति व्यभिचार से सति शोकातुर,
जहां तहां नाश होवे शीघ्र वह घर ॥
दुखी नारी जहां दे शाप भारी,
वह भी कुल नष्ट हो वा रहे दुखारी ॥
अतः भोजन व पट से नारियों को
करें सत्कार नर तौ उन्नति हो ॥
सदा नारी रहे आनन्द युत घर,
करे भोजन गृह के कृत्य सुन्दर ॥
यदि पत्नी हो दुष्टा श्रेष्ठ पति हो,
सुधर जाती है वेद सत्संगती हो ॥
पितर सुख सेवा सति सन्तान उत्पति,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह हैं अधीन सुख नारी के नित प्रीत
करे सन्तान उत्पन्न और पालनें,
गृहाश्रम धर्म कामों का है कारण ॥
वानप्रस्थी ब्रह्मचारी और त्यागी,
गृहस्थी से ही है निर्वाह भागी ॥
सदाचारी अतिथी जो पास आवें,
गृहस्थी योग्य पूजा कर बिठावें ॥
न मानें वेद ईश्वर धर्म को जो,
कुतर्की शठाभिमानी बृति वक हो ॥
पाखण्डी ऐसे अतिथी घर में आवें,
तो वाणी से भी नहीं सत्कार पावें ॥
गृहस्थी से हो पातक पांच इन थल,
बुहारी चूल्हा चक्की ओखली जल ॥
बताये यज्ञ पाचों इस लिये नित,
करें उन को गृहस्थी लेग दे चित ॥
प्रथम है देवयज्ञ ईश्वर आराधन,
ऋषियज्ञ होम पितृ तीसरा गिन ॥
है चौथा भूत यज्ञ बलि देव भोजन,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बताया पांचवां अतिथी के पूजन ॥
धरे चित मांहि दोषों को बिसारो,
करो सद्धर्म दुर्व्यसनों को टारो ॥
मिल चण्डाल योनि पाप मन सन,
जो वाणी पाप हो तो पशुओं में उत्पन्न ।
करे तन सन बने वृक्षादि जड़ तब,
सदा इन तीन पापों को तजो सब ॥
करें शुभ कार्य तन मन और बचन सन,
वही कल्याणदायक मोक्ष कारण ॥

बानप्रस्थ

१०२ गीत

बानप्रस्थ कठिन है बाना ।
केश सफेद चरम हो ढीला हो कर बूढा पुराना ।
पुत्री पुत्र छोड़ घर नारी, बन में अकेला जाना ।
स्त्री को जो इच्छा होवे वाको संग लेजावे ।
कंदमूल और पत्र पुष्प का निरामिस भोजन करके

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मृग चरम और वल्कल आदि वस्त्र धारन करना।
नख और पंच केश भी बन में बानप्रस्थ छोड़ बढ़ाना॥
करे शास्त्र, पठन विचारे तत सत वेदों का।
करे स्नान प्रातः और सायं ईश्वर से ध्यान लगाना॥
उपनिषदों और वेदों की श्रुति से ज्ञान बढ़ावे।
फिर करके उपदेश सत्य बनवासियों को भी शुद्ध बनाना॥
करे वेद अनुसार इसी तरह वो ही ऋषि कहलावे।
बानप्रस्थ ऋषि बढ़ करके लेवे महर्षि का फिर बाना॥

संन्यास

१०३ गीत

बानप्रस्थ होवे जब पूरा सन्यासी हो जावे है।
ब्रह्मचर्य्य और गृह आश्रम भी सन्यास में आवे है॥
सत्यवक्ता सत्यज्ञान जितेन्द्रिय जब हो जावे है।
किसी आश्रम में होवे संन्यास आश्रम पावे है॥
उत्तम हैं जो तीनों आश्रम करके पूरे पावे है।
बिन विद्या के सब कर्त्तव्य सन्यासी निष्फल हो जावे है॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सत्य विचार देश भ्रमण सन्यासी हो कर पावे है।
यह नियम संन्यास स्त्री को भी वेद बतावे है॥
यज्ञोपवीत शिखा आदि सब छिन्न गृहस्थ छोड़ावे है।
करके सेवन होय संन्यासी गुरु आज्ञा बरतावे है॥
तीनौं आश्रम अग्नि आत्मा में जो स्थापन पावे है।
सम्पूर्ण कर तीनों आश्रम सन्यासी हो जावे है॥
तप श्रद्धा से सन्यासी जो धर्म अनुष्ठान करावे है।
वही प्राण द्वारा अविनाशी पारब्रह्म को पावे है॥
तीनों आश्रम भोग योग संन्यास कर्म कहलावे है।
बिन विद्या है व्यर्थ आश्रम सत्य वेद यह गावे है॥

मृतक संस्कार

१०४ गीत

एथों चलना अमर जरूरी है, यह दुनियां वंदे कूड़ी है॥
इक दिन आखर चल जानाई, जद पिञ्जरा होवें पुरानाई।
विचों पंछी ने उड़ जानाई॥ १॥
तेरे नाल दे लखां चल गये, दस प्यारे ओह केड़ी चल गये

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कई आज गये कई कल गये ॥ २ ॥

जिस काम लई तू आयां है, उस काम नूं हथ नं लाया है।

तुझे माया ने भरमाया है ॥ ३ ॥

क्यों गफल होके सोया है, तुझ नींद ने क्यों मोहया है।

उठ वक्त चलन दा होया है ॥ ४ ॥

रसते विच सागर भारा है जिथों लंघना बहुत पवाड़ा है।

बिना लंघया न हो छुटकारा है ॥५॥

नहीं बेडी पर लवाने नूं न वंत न चप्पा लगाने नू

कोई पहुंचा उस टिकाने नूं ॥६॥

न कर्म धर्म कुछ कीतोई, न नाम प्रभु दा लीतोई।

न प्रेम पियाला पीतोई ॥७॥

"लाभ" विच इदालत जावेंगा, दस किसनूं हालसुनावेंगा

अपने कर्मांदा फल पावेंगा ॥८॥

इति संस्कार गीत समाप्तम् ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

* ओ३म् *

अथ तृतीय दैशिक खंडम्

भारत वर्षावस्था।

१०५ भजन

भारत हमारा देश है हित उसका निश्चय चाहेंगे।
उसके हित के कारण हम कुछ न कुछ कर जायेंगे ॥
भारत हमारी मातृ भूमी उसका ऋण हम पर बहुत।
उसके मिटाने के लिये कुछ न कुछ कर जायेंगे ॥
भारत के दुःख प्रद अवनति पर क्यों न अश्रु बहावेंगे।
उनके हटाने के लिये हम कुछ न कुछ कर जायेंगे ॥
धर्म विद्या और धन से उन्नति भारत की होय।
उस उन्नति के मार्ग में हम कुछ न कुछ कर जायेंगे ॥

---

१०६ भजन (रागनी देशी)

कभी हम बुलन्द थे तुम्हें याद हो कि न याद हो।
हर फन में रखते कमाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पढ़ते जब थे हम वेद को जाने थे सब के भेद को।
रखते न अपनी मिसाल थे तुम्हें याद हो कि न याद हो॥
पाबन्द थे जब धर्म के मोहर थे अपने कर्म के।
रोशन सभी पुर जलाल थे तुम्हें याद हो० ॥
जब से जहालत आगई तारीकी हर सू छागई।
मुफ़लिस हैं जो खुशहाल थे तुम्हें याद हो० ॥
हाकिम हैं जो मह्कूम थे, खादिम हैं जो मखदूम थे।
शेर अब हुये जो शृगाल थें तुम्हें याद हो०
हालत दिगरगूं हो गई क़िस्मत हमारी सो गई।
रोते हैं अब जो निहाल थे॥ तुम्हें याद हो० ॥

१०७ गीत

ऐ दया सिन्धो दुःख मोचन करुणामय कृपा करे।
नाश धर्म का यहां हुआ और उलटी मत भी सारी।
विद्या बुद्धि और सत्यता पाप अग्नि ने की जारी॥
महा अविद्या घोर पाप छाया है भारत मांही।
साहस पुरुषार्थ, विद्या, धन दृष्टि पड़त है नाहीं॥
अवगुण मूर्खता राक्षस ने सब को आन दबाया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुण अरु सांत्र चतुरता को भारत से मार भगाया ॥
सत्य धर्म की शिक्षा छुड़वा बहु पाखण्ड रचाया।
उद्यम तेज तपोबल योग्य सब जन बिसराओ ॥
पत्थर पूजा चल पई उस जगदीश्वर को बिसराओ।
जगत पिता से तोड़ के नाता परधन को अपनाओ ॥
जार कर्म, मद्य मतसर स्वार्थ को जो मित्र बनाया।
सत्य मार्ग नहीं सूझै ताते पाप ने आन दबाया ॥
कहां तलक रोंएं दयानिधे! हम सब निज २ कर तु तनको।
घोर पाप में डूबे जाते चेत नहीं है मन को ॥
हे जगदीश! देश डूबत है इस पर करुणा कीजे,
'पार बती' कहै तुम सों कुमत निवार सुमत अब दीजो ॥

---

१०८ गीत

ऐ पुरुषो भारत में तुमने क्यों पाखण्ड रचाया।
जड़ पत्थर की पूजा कीनी शरण पुराणन की गहलीनी
विद्या बुद्धि सब खो दीनी, पाप कर्म फैलाया ॥ १ ॥
जिस के तुल्य न कोई स्वामी, सर्व व्यापक अन्तर्यामी
जगत पिता चराचर स्वामी सब ने उसे बिसराया ॥ २ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैश्या को सब धन दे आवें, उसको अपना मित्र बन वे।
दया धर्म मन में नहीं लावें निज तिरियन तरसाया ॥३॥
ब्रह्मचर्य की प्रथा मेटो, आठ वर्ष की व्याही बेटी।
वह बन रांड आय घर बैठी अपयश खूब कमाया ॥४॥
वेश्याओं मे कुछ पण्डों ने कुछ कपटी साधु संतों नें।
कुछ भारत के भिख मंगों ने, लूट २ कर धन खाया ॥५॥
हे जगदीश! दया अब कीजे, करके विनय 'आर्य्या' की सुन लीजे
भारत के दुःख हरलीजे, करके अपनी दाया ॥६॥

१०९ गीत लावनी

टेक—भारत में सब पुरुष स्त्री पचीस करोड़ का किया शुमार,
सज्जन जन सब ध्यान धरें अब इनके काम का करूं विचार ॥

चौक १

बारह करोड़ इन में नारी हैं सिठनी पिटनी में कटी उमर,
एक करोड़ लड़के लड़की जो खेल कूद में रहें दिन भर,
ग्यारह करोड़ में तीन करोड़ जो भीख मांगते हैं दर दर,
दो करोड़ तीर्थ यात्रा में बारह महीने रहें न घर,
आगे रह गये छ करोड़ अब इनके सुनाउं कारोबार—सज्जन।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चौक २

एक करोड़ है इन झगड़े मे म. का लोटा चरस का दम,
तान के चादर सोते दिन भर आए गए का कुछ नहीं ग़म।
एक करोड़ी पी शराब फिरते तरंग में बकते बे ढंग,
एक करोड़ चलते चक्र में पुकारते हाय सनम सनम।
आगे रह गए चार करोड़ हैं एक करोड़ी इन में बीमार—सज्जन।

चौक ३

लाखों इन में चोर उचक्के लाखों इनमें जुए बाज़,
लाखों इन में नाच नचनिये लाखों इनमें दीन अपाज,
ताश पतंग कबूतर गंजफा ऐसे ही हैं सब उनके काज,
धन्य २ तुझ को भारत भूमि तू खाने को देती अनाज।
जो कुछ इनमें करने योग्य वह लड़भिड़ गए कचहरी द्वार
सज्जन जन सब ध्यान धरें अब उनके काम का करूं विचार

चौक ४

पुरुषार्थ को दिया छोड़ और खालिया हम ने मेवा फूट,
इलम हुनर से काम नहीं आपस में ही रहे कूट कूट,
आये विदेशी खेल खिलौने दिखा के धन सब लेगये लूट,
सत्य जो हो सो ग्रहण करो और उसे त्याग दो जो हो झूठ,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"नवलसिं०" कहे हो सुधार जब होये फेर विद्या प्रचार,
सज्जन जन सब ध्यान धरें अब उनके काम कों करू विचार

लावनी ११० गीत

टेक-आज्ञा में जिनके जहान था उनकी कुल में हमीं तो है
सातद्वीपें नौखंड बीच में जिनका मान था हमीं तो हैं।

१ चौक

चौदह विद्या जो निशान थे उनकी कुल में हमीं तो हैं,
जिन से चतुर हैं पशु हैवान अब ऐसी सन्तान हमीं तो हैं
वेदों को माने प्रमाण थे उनकी कुल में हमीं तो हैं।
बांचें हैं मिथ्या पुराण अब ऐसी सन्तान हमी तो हैं।
सब विद्याओं की जो कान थे उनकी कुल में हमीं तो हैं-स०

२ चौक

ब्राह्मण जहां पूरे गुणवान् थे उनकी कुल में हमीं तो हैं,
मूर्ख हुए जाति अभिमान में ऐसी सन्तान हमीं तो हैं।
सब का जो चाहें कल्याण थे दान उनकी कुल में हमीं तो हैं,
ठग्गी की धर ली दुकान अब ऐसी सन्तान हमीं तो हैं,
विद्या का करते थे दान जो उनकी कुल में हमीं तो है-स०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

३ चौक

ऋषि मुनि जहां ज्ञान वान् थे उनकी कुल में हमीं तो हैं,
भंग चरस में हैं गलंतान अब ऐसी सन्तान हमीं तो हैं,
जिनका देव सर्व शक्ति मान था उनकी कुल में हमीं तो हैं
जिनका इष्ट जड़ है पाषाण अब ऐसी सन्तान हमीं तो हैं,
संस्कृत जिनकी जबान थी उनकी कुल में हमीं तो हैं सा०

४ चौक

आकाश में चलते विमान थे उनकी कुल में हमीं तो हैं।
रेल देख होगए हैरान अब ऐसी सन्तान हमीं तो हैं।
भीमसैन बाली बलवान् थे उनकी कुल में हमीं तो है।
घुटनों पर रख उठे हाथ अब ऐसे जवान हमीं तो हैं,।
कृष्ण रामचन्द्र समान थे उनकी कुल में हमी तो हैं सात०

५ चौक

ब्रह्मचर्य की जिनकी शान थी उन की कुल में हमीं तो हैं,
बल वीर्य खो नातवान् हुए ऐसे नादान हमीं ती है ।
लख संहारी जिन के बान थे उन की कुल में हमीं तो हैं,
चूहे का नहीं कटे कान अब ऐसी सन्तान हमीं तो हैं।
अंगद सुग्रीव हनुमान थे उनकी कुल में हमीं तो है । सात०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चौक ६

देशोन्नति का था ध्यान जिन्हें उनकी कुल में हमीं तो हैं,
भारत में कर बैठे हानि अब ऐसी सन्तान हमीं तो हैं।
प्राणियों पर देते थे प्राण जो उनकी कुल में हमीं तो हैं,
मद मांस को करें पान अब ऐसी सन्तान हमीं तो हैं।

चौक ७

गो जान पर जिन की जान थी उन की कुल में हमीं तो हैं,
आर्यावर्त जिनका स्थान था उन की कुल में हमीं तो हैं।
जिनका स्थान हिन्दु स्तान अब ऐसी सन्तान हमीं तो हैं,
बड़े २ यहां धनवान् थे उनकी कुल में हमीं तो हैं,
भोजन बिन हो रहे हैरान अब ऐसी सन्तान हमीं तो हैं।
विद्या में करते स्नान थे उनकी कुल में हमीं तो हैं- सात०

चौक ८

सत्य उपदेश करते थे गान जो उनकी कुल में हमीं तो हैं,
कोक शब्द का तोड़ें तान अब ऐसी सन्तान हमीं तो हैं।
सत्यासत्य करते थे छान जो उनकी कुल में हमीं तो हैं।
सुन के सत्य जायें बुरा मान अब ऐसी सन्तान हमीं तो हैं,
"नवलसिंह" कह वेद धर्म पर धरें ध्यान फिर हमीं तो हैं--सात०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लावनी १११ गीत

सुनते है यह देश सब देशों के सिर का ताज था।
पर अविद्या भूल से लिया फूर मेवा इस ने खा।
टेक—कहां युधिष्टर भीमसैन सहदेव नकुल कहां गए अर्जुन
राम लक्ष्मण कहां गए भरत कहां गए शत्रुघन।

चौक १

कहां गौतम और कृष्ण कहां गए राजऋषि और मुनिश्वर
कहां योगी जन कहां गए बड़े २ वह तपीश्वर।
कहां गए वासिष्ट कहां गए व्यास कहां गए पाराशर,
याज्ञवल्क्य कहां, कहां गए पातञ्जली से ऋषिश्वर।
अग्नि वायु आदित्य अङ्गिरा ब्रह्मा कहां गए नारद मुन। राम०

चौक २

कहां गई वेदों की विद्या कहां गया सत्य धर्म्म कर्म्म,
कहां राज गया कहां धन गया कहां गई हया शरम।
कहां गए चार आश्रम कहां गए वह चार वरण,
कहां उमर गई वीर्य्य बल कहां रूप कहां गया योबन।
कहां गई वह शूरवीरता कहां गया वह धीर्य्यपन। राम०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चौक ३

कहां दया गई दान कहां धीर्य्य इन्द्रियों का दमन,
कहां शौच गया कहां गया है सत्य से मन का मज्जन।
कहां क्षमां गई शीलता कहां शुद्धता अन्तःकरण,
कहां अक्रोधता न्यायकू पक्ष कहां गया नियम प्रन।
कहां सन्ध्या कहां गायत्री ज्ञानभक्ति कहां गया भजन। राम०

चौक ४

कहां गए वह गौ बैल और कहां गए वह जंगल बन,
कहां दुग्ध गया घृत कहां मलाई और माखन।
कहां गई वह सामग्री और कहां गए वह यज्ञ हवन,
कहां वह औषधि अन्न जल कहां गई वह शुद्ध पवन।
कहां गई देह की अरोग्यता कहां गया आनन्द अमन। राम०

५ चौक

भारत की दुर्दशा का जो हम इस जिह्वा से करें कथन,
थके यह रसना नयन थक जांय जो इन से करें रुदन।
दयानन्द सरस्वती स्वामी ने भारत का दुःख किया हरन,
वेद भाष्य कर धर्म्म और कर्म्म प्रीति किया यत्न।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

"नवलसिंह" कहे इसी यत्न में तन मन धन करदो अर्पण,
राम लक्ष्मण कहां गये भरत कहां गये शत्रुघ्न।

११२ गीत

एक दिन भारत यह, सब देशों के सिरका ताज था।
जिस जमाने में यहां पर, क्षत्रियों का राज था॥

टेक—भारत को सूना छोड़ के वे कहां गये महाराजे॥

गये राम लखन कहां शूरवीर बलधारी। जिन के बल से पृथ्वी कांपे थी सारी॥ गये कहां युधिष्टर भीम भीष्म तप धारी। कहां परशुराम अर्जुन से शस्त्र खिलाड़ी। कहां करण गये अभिमानी, कहां गुरु गोविन्द लासानी॥ परतापसिंह बलवानी, जिन की विख्यात कहानी॥ किये काम उन्होंने बड़े, न मन में डरे युद्ध में लड़े, नहीं मुंह मोड़ के। रण अन्दर दुन्दम गाजे॥ (वे कहां० १) कहां गये वशिष्ट और व्यास से विद्याधर। कहां कणादि गौतम कपिल जैमिनी मुनिवर। कहां पातञ्जलि से ऋषि और पराशर, जिन की कृपा से विद्या फैली घर घर॥ कहां गये पाणिनी भाई। जिन रच दई अष्टध्यायी॥ कहां गये कृष्ण

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुखदाई । जो वैदिक धर्म अनुयाई ॥ गये नारद ब्रह्मा कहां, करूं क्या बयां, रहे नहीं यहां, वे नाता तोड़ के जाकर परलोक बिराजे । (वे कहां० २) । कहां हरिश्चन्द्र से राव गये सत्यवादी । दिये पुत्र स्त्री त्याग और राज्यादि । कहा गये दशरथ और जनक धर्म अनुयायी । नहीं टरे बचन से प्यारी जान गँवाई । कहां शिव दधीच राजा नल कहां मोरध्वज विक्रम शल । कहां दलीप अज रघु निर्मल । रहे बने धर्म में निश्चय । अब क्या तदबीर बनाये, कहां से लायें, मुफ्त चिल्लायें, भरे सिर फोड़कर । सब होगये काज अकाजे (वे कहां० २) क्षत्री कुल में होगए वेश्या गामी । हो डोर धर्म को छोड़ पाप की थामी ॥ ब्राह्मण कुल जो ऋषि मुनियों में नामी । वे होगये विद्या हीन और बहु वामी । सन्ध्या गुरु मन्त्र बिसारा । लगे आग्नि होत्र नहीं प्यारा । यों भारत दीन पुकारा कुल डूबा सभी हकारा ॥ अब भी सोचो मत हीन, बनो प्रवीन, "मुरारी" दीन, कहे कर जोड़के वेदों के बजाओ बाजे । (वे कहां गये महाराजे०) ॥ ४ ॥

इति भारत दशा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अवैदिक मत समीक्षा

११३ भजन

टेक—ढूंडा सारे शास्त्र पुराण में पर हिन्दु कहीं न पाया
वेद मनु और छौ शास्त्र में, पता मिला नहीं कोश मात्र में
हिन्दु पद नहीं (१) तंत्र में, यह सत् वचन सुनाया। पद० १
लुग़त फारसी में ग़यास है, उस में हिन्दु लिखा खास है।
देखो खोलो जिस के पास है, काफ़िर-चोर बताया। पद० २
जब संकल्प पढ़ो भाई, शब्द आर्य देव सुनाई। फिर क्या छाई मूर्खताई, हिन्दु वहां नहीं आया। पद० ३
यह है पक्ष यवनों का सारा, हिन्दु रख दिया नाम हमारा
कहे 'मुरारी' मित्र तुम्हारा, नया छंद यह गाया। पद० ४

हीनं च दूषयत्येव हिन्दुरित्युच्यते प्रिय।

मेरुतन्त्र २३ प्रका०

तथा—हिन्दु धर्म विलोप्तारो भविनश्चक्र वर्तिनः।

इत्यादि 'मेरुतन्त्र' में 'हिन्दु' शब्द तो यवन समकालीन ही है॥ परसराम शर्मा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भजन ११४

महाभारत के बाद पोप ने, ऐसा जाल बिछाया है।
मिथ्या कथा सुना लोगों को, सारा देश फंसाया है॥
शीघ्रबोध की शिक्षा देकर, बाल विवाह प्रचार किया।
बल वीर्य को हनन कराके, विद्या हीन बनाय दिया॥
रोगों की माला पहिना कर, अपना काम बनाय किया।
वर तो भेंट हुआ चचक की, कन्या को रांड बिठाय दिया।
कात पीस रो रो के कन्या, सारा जन्म बिताया है।
मिथ्या कथा सुना लोगों को, सारा देश फंसाया है॥१॥
फैलाया व्यभिचार देश में, दशम स्कन्ध सुना करके।
सोलह सहस्र गोपियों से किया, कृष्ण ने रहस नचा करके।
ललिता और विशाखा की, को कथा नैन मटका करके॥
धर्मभ्रष्ट कर दिये हज़ारों, वृथा गपौड़े गा करके।
करे अगर सन्देह कथा में, उसको पतित बनाया है।
मिथ्या कथा सुना लोगों को, सारा देश फंसाया है॥२॥
किसी के कोई मेरे पोप जी, गऊ दुधार मंगाते हैं।
वैतरनी के पार करन का, ठेका आप लिखाते हैं।
महा ब्राह्मण बन ये कोई, मुर्दों का माल उड़ाते हैं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मुंह मांगा धन इन्हें न दें तो, प्रेत योनि में जाते हैं ॥
झूठा डर दिखाया लोगों को, धन ले कर धमकाया है ।
मिथ्या कथा सुना लोगों को, सारा मुल्क फंसाया है ॥३॥
पोप जाल को काट दयानन्द, वेद भाष्य कर दिखा दिया ।
विद्या दिनकर उदय हुवा, माया का अन्धेरा भगा दिया ॥
सोता था भारत निद्रा में, सब को ऋषि ने जगा दिया ।
मन माना नहीं खेल पोप की, सच्चा मार्ग सुझा दिया ॥
कहें 'पुलन्दर' हे जगदीश्वर, यह सब तेरी दाया है ।
मिथ्या कथा सुना लोगों को, सारा मुल्क फंसाया है ॥४॥

भजन १२५

टेक—जो है सब जग की माता, कैसे बच्चों को खावे ।
जिस को दुर्गा कहें भवानी, देवी चामुंडा कर मानी । हरे०
नहीं उसे कुछ आए ग्लानी, जरा नहीं शरमाते ।
डाइन को तर्स नहीं आता । जो है सब०
मांगे भेट बकरा और भैंसा, यह अपराध किया अब कैसा । हरे०
माता को नहीं चाहिये ऐसा, गला जो बोह कटवावे ।
वह खड़ा खड़ा डकराता । जो है०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वाम मार्ग का है यह झंडा, मार चत्री खाते सदा । हरे०
पूजा मूर्खन का अब डंडा, क्यों न धर्म अब जावे ।
औरों के मास को खाता । जो है०
हिंसा पाप लिखा अति भारी, इस से बचो सभी नर नारी ।
मनुष्य वही है जो कहे "मुरारी" मन में दया जो लावे ।
प्राणी को नहीं सताता, जो है सब जग की माता ॥

=—

११६ भजन

दोहा

टके सेर मुक्ति बिके, लो इसे ख़रीद,
रजिस्टरी करवाए लो, दे है पोप रसीद ॥

टेक—कुछ काम ने जप तप ज्ञान से लेलो सस्ती मुक्ति
जगन्नाथ जाने से मुक्ति, जूठा भात खाने से मुक्ति ।
अनन्त बंधवाने से मुक्ति, कहीं गंगा असनान से ।
क्या सहल निकाली मुक्ति, लेलो सस्ती है०
एकादशी रहने से मुक्ति, मरा मरा कहने से मुक्ति
पिण्डदान करने से मुक्ति, कभी चरणामृतपान से ।
कहीं है कभी नहीं रुकी, लेलो सस्ती है०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काशी में मरने से मुक्ति, चार धाम करने से मुक्ति
ईश्वर के लड़ने से मुक्ति, जो हे सिद्ध प्रमाण है
उसको नहीं करते भक्ति, ले लो सस्ती है०
रुद्राक्ष और तिलक छाप से, दशम भागवत के प्रताप से
कभी होवे बम् बम् के जाप से, और पूजन पाषाण से
'शर्म्मा' सुन तबीयत फुकनी, लेलो सस्ती है मुक्ति॥

---

११७. भजन

टेक—ज्योतिष का जाल फैलाया लोगों ने।
ज्योतिष थी गणित की विद्या उसे करके फलित अविद्या।
भ्रम में दीना डाल, फैलाया०
भूगोल खगोल न जाने, नहीं अर्थ ग्रन्थ पहचाने।
लिखा है क्या २ हाल, फैलाया०
इक जन्म पत्र लिख लाए, नव ग्रहों के हाल सुनाए।
जन्म कुण्डली निकाल, फैलाया०
कहीं शनि की दश्या आई, कहीं आषाढ़ मिति बतलाई।
कहीं अन्न पड़ा बवाल, फैलाया०
दशा मारकेश की आई, है राहु केतु दुःख दाई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शाईद हो जावे काल, फैलाया०

मृत्यु से बचना चाहो, मृत्युञ्जा जाप कराओ।

ग्रह देवेंगे टाल, फैलाया०

मंगल बुद्ध दान बताके, चावल घृत गेंहू मंगाके।

और लो कपड़ा लाल, फैलाया०

चांदी के चन्द्र बनवाओ, सोने का सूर्य्य ले आओ।

दान करो पीली दाल, फैलाया०

नहीं सूर्य्य सिद्धान्त पढ़े हैं, सब अपनी २ घड़े हैं।

न जाने ग्रहों की चाल, फैलाया०

कहे 'वासदेव' यह झूठे, ज्योतिष का नाम ले लूटें।

ठगा धोखा दे माल। फैलाया ज्योतिष का जाल॥

११८ भजन

टेक—मन में छाया अभिमान क्या, बन बैठा ब्रह्म अनाड़ी

अहम् ब्रह्म जब कहने लगा कर्म धर्म सब करना त्याग, हरे फूला २ फिर अभागा, हुई बुरी बीमारी। बन बैठा०

जप तप की नहीं इन्हें जरूरत यही ब्रह्म की बनगये मूरत, हरे अच्छी मोक्षकी सूझी सुरत, अन्त होयगी ख्वारी। बन बैठा

झूठा सारा जगत बतावे, ब्रह्म भ्रम से जीव कहावे, हरे०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब कैसें छुटकारा पावे, फंसा पाप में भागी। और बैठा०
अब भी ज़रा चेत में ओवो, प्रभु जी के सेवक कहलाओ, हरे
मत अपने को ब्रह्म बताओ, यह अब कहे "मुरारी"। बन
बैठा ब्रह्म अनाड़ी ॥

---

११९ भजन

टेक—कैसा उलटा यह यारो सनातन धर्म्म।

नहीं वेद विद्या के पढ़ने से काम,
गपौड़े सुनाना सनातन धर्म्म ॥
कहें हमतो पैदा हुए खास मुख से,
यूंही ब्राह्मण बन जाना सनातन धर्म्म ॥
ले लोटे साटे को कूचे बकूचे,
कुत्ते भुकाना सनातन धर्म्म ॥
कैसी है सन्ध्या कैसी गायत्री,
टल्ली बजाना सनातन धर्म्म ॥
हिलाते हैं घंटा और करते हैं टंटा,
पूजारी बन जाना सनातन धर्म्म ॥
पूजा की करता है पत्थर सफाई,
बहयन नहलाना सनातन धर्म्म ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य्य समाजों को बुरा बताना,
पर रण्डी नचाना सनातन धर्म्म ॥
नियोग को समझें हतक आबरू,
हमल का गिराना सनातन धर्म्म ॥

१२० भजन

कहैं जो कुछ आर्य्य सुनों प्यारे भाइयो ।
है वेदों पे चलना सनातन धर्म्म ॥
मत करो जड़ों की सेवा, कर पूर्ण ब्रह्म उपासना ।
जड़ से जड़ होजावे बुद्धि, ब्रह्म ध्यान बिन हो ना शुद्धि ।
प्रतिमा पूजे वेद विरुद्धि, जिस से कोई आस ना ।
क्यों चढ़ें मिठाई मेवा ॥ १ ॥ सुने न सूझे हिले न चाले ।
तिस पर पुष्प और जल डाले । पत्थर सो किस के दुखटाले ।
अपना मेटे त्रास ना । सुख कैसे दे दुःख देवा ॥ २ ॥
पति की सेवा तज के नारी, मन्दिरों में जावे मति मारी ।
तर्के कुदृष्टी तिन्हें पुजारी, तिन का कुछ विश्वास ना ।
हैं मस्त रेड़के लेवा ॥ ३ ॥ परमेश्वर तो रम रहा तन में
फिरे भरमते परदेशन में । कह 'वीसा' क्यों भटके बन में
घट का खोज कयास ना । कस्तूरी मृगका नेवा ॥४॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१२१ भजन

टेक—मिल सज्जन सभी विचारो।
क्या अजब पंथ है जैनी॥
परमेश्वर नहीं जगत बनावे।
आप ही कर्मों सें बन जावे। हरे।
नहीं आदि सृष्टि की आवे।
नहीं मूल नहीं टहनी॥ क्या अजब०।
इन के मनुष्य बने परमेश्वर।
बैठे फटक सिला पर जाकर। हरे।
चौबीस हुए इकट्ठे वहां पर।
क्या कुछ हुई कुचैनी। क्या अजब०।
हैं जड़ कर्म ज्ञान नहीं जिन को।
खुद ही बने बनावें किन को। हरे।
जो जग का कर्ता कहे उन को।
रखे बुद्ध नहीं पैनी॥ क्या अजब०।
सौभाविक गुण जीवे रखे जो।
दूर नहीं फिर ईश इन बने। हरे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो नर "शर्मा" मानो उस को।
पड़े आपदा सहनी ॥ क्या अजब०।

---

१२२ भजन

टेक—मत चला नास्तिक जैनी, जो विमुख रहे करतार से। जीव और संसार को जाने, करता धरता ना कोई माने। अपना वल पौरुष पहचाने। संसारी व्यवहार से इन की लीला क्या कहनी ॥१॥ स्वभाव से उत्पत्ति मानते। प्रलय को भी ना पिछानते। आवागवन को नहीं जानते प्रीति करें नरनार से। जड़ छोड़ सींचते टहनी ॥ २॥ मूर्ति पूजा चली इन्हीं से जगत् की विद्या रली इन्हीं से। हुई कौन सी भली इन्हीं से धर्म उठा संसार से। परजा में हुई कुचैनी ॥ ३ ॥ पति परमेश्वर को विसरा कर। बुतपरस्त भये धर्म निशाकर। 'घीसा' मगन ईश गुण गाकर। भजन कह सुखे प्यारे से। भक्ति कर स्वर्ग निशेनो ॥४॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१२२ भजन

बिन वेद पता नहीं पाया मैं प्रीतम प्यारे लाल का

पूछा जाके मैंने ब्राह्मण से, बोला मिलेगा शिव पूजन से

पूजा करी मैंने लाख यतन से, नाश किया धन माल का

जब शिव मन्दिर बनवाया, सोने का कलश चढ़ाया।

पर कुछ भी हाथ न आया, पर प्रीतम प्यारे लालका ॥१॥

फिर जो मिला यादव मतवाला, उसने कहा जपले नंदलाला

वही करे तेरी प्रतिपाला, भय मिट जावे काल का ॥

मैंने वैसा ही अमल कमाया, मंदिर में टाल बजाया।

बृन्दावन चक्र लगाया, पर प्रीतम प्यारे लालका० ॥२॥

योगी बैरागी सब मैंने छाने, दादुपन्थिये और मसताने।

जैनी कुरानी किरानी पहचाने, महरम हुआ सब हालका।

अब जगन्नाथ चित चाया, हंस जूठा भात वहां खाया।

फिर आगे कदम बढ़ाया, पर प्रीतम प्यारे लालका० ॥३॥

फिर मैं द्वारका आया प्यारे बदरीनाथ कनखल हरिद्वारे।

तन मल मल गोते मारे, न मिला जवाब सवाल का।

तब खाली लौट घर आया, फिर भी मेरा मन घबराया।

तब चक्र अकल ने खाया, पर प्रीतम प्यारे लाल का० ॥ ६॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर जा पूछे मुल्लां काज़ी, कहते हज्ज में अल्ला राज़ी
पढ़े नमाज़ जो बने नमाज़ी, खतरह नहीं ज़वाल का
हक़ तआला ने फरमाया, तब उठ मसजद को धाया
कहां जाके सजदह बजाया, पर प्रीतम प्यारे लाल का० ॥५॥
तब भी मुझे शांति नहीं आई फिर मिलगया मुझ को ईसाई
उसने इक कहानी सुनाई, किस्सा मसीह के हालका
मेरे मन को और भटकाया, गिरजे लेना बतलाया
करक वाज़ समझाया, पर प्रीतम प्यारे लाल का० ॥ ६ ॥
सारा जहां मैंने ढूंडा भाला, ढूंढभाल होगया मतवाला
तत्व पतों का सभी निकाला, बंधा पहाड़ खयाल का
जो दिल में किसी के आया, वही लिखाके ग्रंथ बनाया
पर मुझको नहीं कुछ भाया, पर प्रीतम प्यारे लाल का० ॥७॥
मिला मुझे तब इक सन्यासी, ब्राह्मण वंश दक्षिण का वासी
बात मेरी मत जानो हांसी, तोड़ बंधा पढ़े जंजाल का
संध्या करना सिखलाया, वेदों का ज्ञान बतलाया
मुक्ति का राह दिखलाया, पर प्रीतम प्यारे लालका० ॥ ८ ॥
सुनों बात मेरी बुद्धवानो, यह महाऋषि दयानन्द जानो
कहे सिर्फ इक ईश्वर मानो, मालक शाहों कंगाल का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहे 'खन्ना' यह उसकी माया, सारा ब्रह्माण्ड रचाया
घट २ में आप समाया, पर प्रीतम प्यारे लाल का० ।९।

१२४ भजन

हम से धर्म्म का राज छुपाया नहीं जाता।
जो सच है उसे झूठ बताया नहीं जाता।
गिरराज जी के किस्से का आता नहीं यकीन।
उंगली पे इक पाहड़ उठाया नहीं जाता।
मर्यम के पेट से हुआ पैदा यसूमसीह।
हम से खुदा का वेटा बताया नहीं जाता।
लिखा कुरान में क़तल करो काफ़रों को तुम।
वैहशीपने पे दिल को जमाया नहीं जाता।
राज़क़ का क़र्ज लेने का इलज़ाम लगा कर।
इज्ज़त को उस की हमसे घटाया नहीं जाता।
अपने शिक़म के वास्ते ग़ैरों की रूह को।
बिस्मअल्ला कर के हम से सताया नहीं जाता।
इदुलजहा के रोज़ उमीदे सवाब पर।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बकरों के सिर को तन से कटाया नहीं जाता ।
धोखे में ऐसे लोगों के हरगिज़ न आईयो ।
वैदिक धर्म्म को 'शर्म्मा' गंवाया नहीं जाता ।

१२५ भजन

क्या अजब दीन इसलाम है, तुम ज़रा गौर फर्माना ।
बुतपरस्त औरों को कहते, त्वाफ़ खुद काबे का देते । हरे ।
बोसा संग असवद का लेते, इसका क्या अब नाम है ॥
हजरत की कबर पर जाना ॥ तुम जरा०
कुनसे बनगई दुनियां सारी, क्या फिलास्फ़ी इनकी भारी । हरे
किस पे हुआ हुकुम यह जारी, किसने सुना कलाम है ॥
हो अकल तो अब बतलाना ॥ तुम जरा०
हाजिर नाजिर एक खुदा है, यही कुरान के बीच लिखा है । हरे
फिर किस लिये मेरान हुआ है, सोचो क्या अंजाम है ॥
यह कैसा किया बहाना ॥ तुम जरा०
हुकुम कुरान में है जहाद का, यह झण्डा है कुल फसाद का ।
कहे 'मुरारि' खुदा याद का, उस में कुछ नहीं काम है ॥
समझो जो मर्द हो दाना । तुम जरा गौर फर्माना ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१२६ भजन

टेक—क्यों खुदा कसम खाता है तुम सुनों मुहम्मदी भाई।
देखो उन्नीस ग्यारह सूराए कसम दस आइत प्यारा,
जिस में तुम को साफ़ ईशारह क़ुरान बतलाता है।
वह झूठी कसम जिन खाई, तुम सुनों० ॥
औरों को वह करे नसीहत, अपने तांई चाहे फ़ज़ीहत,
कैसी उस का है बदनीयत, तुम को बहकाता है।
क्या है पूरा अन्याई तुम सुनों० ॥
कभी तूर घोड़े कुरान की, कभी हवा अर्बी जबान की,
कभी कसम वह आसमान की, खाकर समझाता है।
क्या वैहशत दिल में छाई, तुम सुनो० ॥
कसम कयामत दरया घर की, छत सतारे पैग़म्बर की,
कसम 'मुर्गी' रात फ़जर की, गफलत समझाता है।
दुनियां मैंने बनाई, तुम सुनों० ॥

---

१२७ भजन

स्वर—प्रभु प्रीतम जिसने बिसारा।

आकर हमको कोई बतावे, ईसा ईश्वर कैसे कहलावे ॥ टेक

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ईश्वर जन्म मरण से न्यारा ।
ईसा जीव था मरने हारा ॥
मर करके परलोक सिधारा ।
ईश्वर अविनाशी रूप कहलावे ॥ १ ॥
लोग कहते हैं ईश्वर का जाया ।
ईसा जन्म के दुनियां में आया ॥
बिना बीजके कैसे उपाया ।
जैसे सब जग जन्म को पावे ॥ २ ॥
कहते मर्यम के पेट में आया ।
फिर वह रूह उकदस कहलाया ॥
बिना संगम कैसे समाया ।
मर्यम कुंवारी कन्या कहलावे ॥ ३ ॥
स्त्री यूसफ की थी वह भाई ।
उसके साथ थी उसकी सगाई ॥
देखो कैसी कहानी बनाई ।
जिसका मुंह सिर नज़र न आवे ॥ ४ ॥
ईश्वर का यह नियम है भाई ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

माता पिता विन जन्म न पई ॥

खोलो आंख तो देवे दिखाई ,

बिना ज्ञान के समझ न आवे ॥ ५ ॥

क्यों तुम ईश्वर को दोष लगावो ।

मर्यम के संग मेल बतावो ॥

कंवारी कन्या को पेट बताओ ।

कहते हुए भी लाज न आवे ॥ ६ ॥

क्या था एको ही ईश्वर का जाया ।

वह भी दुनियां में रहने न पाया ॥

यहूदी लोगों ने मार मुकाया ।

रो २ सूली पै हाल बनावें ॥ ७ ॥

बेटा ईश्वर का क्यों था रोता ।

ऊपर सूली के क्यों जान अपनी खोता ॥

छुड़ाता ईश्वर जो बेटा वह होता ।

सूली पर चढ़ा अफसोस खावे ॥ ८ ॥

सुनो भाई क्यों मूढ़ता छाई ।

बेटे ईश्वर के हैं सारे भाई ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

न थी ईश्वर की कोई लुगाई।
जिस से ईसा जन्म को पावे ॥ ९ ॥
जो कोई ईश्वर के गुण गावे।
दुःख दूर हो सुख उठावे ॥
फिर वह मौत से न घबरावे।
करे योग तो मुक्ति को पावे ॥१०॥
जो कोई गुण ईश्वर के न गाता।
आचरण अपने न शुद्ध बनाता।
नित्य पापों में चित्त को लगाता,
लोक परलोक में दुःख उठावे ॥११॥
दुष्ट कर्मों का फल दुःख होता,
करत पाप वही जान रोता।
पछितावे जो धर्म को खोता।
ईसा मसीह न उस को छुड़ावे ॥१२॥
भरोसे ईसा के पाप कमावो।
सारी आयु ही दुःख उठावो।
तुम तो शरण प्रभु की आवो।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वही सब को मुक्ति दिलावे ॥ १३ ।

मोजज़े ईसा के तुम जो बतावो,
पुराणों ऊपर क्यों न निश्चय लावो ।
सत्य अपने वह झूठ बतावो,
दोनों झूठे यह आर्य्य बतावे ॥ १४ ॥

अंधा ईश्वर ने जिस को बनाया,
समाखा ईसा ने कैसा बनाया ।
क्या वह ईश्वर का बाप कहाया,
लूला लात कभी नहीं पावे ॥ १५ ॥

आओ भाई क्यों जन्म गंवाओ,
आर्य बनो और धर्म कमाओ ।
वेद पढ़ो और सुनो सुनावो,
धर्म करने से नेक कहावो ॥ १६ ॥

करे नेकी सो आर्य कहाया,
यही वेदों ने है फरमाया ।
छोड़ा वेदों को दुःख उठाया,
"धर्मदेव" यह सत्य बतावे ॥ १७ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१२८ भजन

मुर्दा खाने वालों को उपदेश ।

दोहा—बकरी खाती पात है, ताकी काढ़ी खाल ।
जो बकरी को खा गये, तिन के कौन हवाल ॥

टेक—नर दोज़ख़ को जो जाते हैं, बे खता जीव को मार के । और के गल पर छुरी धरें हैं, नहीं संग दिल दया करे हैं । पापी कुष्ठी होय मरें हैं । दिल से रहम बिसार के । गल अपना कटवाते हैं ॥१॥ जो गल कटकर बहिशत जाना, कुटुम्ब को भी पहुचाना, और खुदा को दोष लगाना । उसका नाम पुकार के । दुःख देख न घबराते हैं ॥२॥ घास खाएं सो गल कटवावें । मांस खाय सो किस घर जावें । समझे ना बहु विध समझावें । खुश होते सिर तार के । करनी का फल पाते हैं ॥३॥ बढ़ जाते हैं रोग बदन में, ना कछु ताकत बढ़ती तन में, हे ईश्वर ले ज्ञान उरन मैं, दरशो ज्ञान विचार के, जन 'घीसा' यश गाते हैं ॥४॥

इति मतसमीक्षा

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी दयानन्द सरस्वती

गुण वर्णन

१२१ भजन

नाम प्यारा है स्वामी तुम्हारा ॥ १ ॥

प्यारी दया अरु आनन्द भी प्यारा,

दोनों मिला के दयानन्द प्यारा ॥ २ ॥

जगकी भलाई प्रतिज्ञा तुम्हारी,

सोई किया जो मन में विचारा ॥ ३ ॥

पत्थर की पूजा जड़ से उखाड़ो ।

चेतन का सबको दिखाया नज़ारा ॥ ४ ॥

आर्य्य समाजों के नियम बनाये ।

विद्या का सबको दीन्हा भण्डारा ॥ ५ ॥

जैनी पुरानी किरानी कुरानी

मुक्ति का सब को दिखाय दिया द्वारा ॥ ६ ॥

'शीतलप्रसाद' हुआ ऐसा प्रतापी ।

वेदों का जग में बजाया नक्कारा ॥ ७ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भजन १३०

ऋषि ही इन्सान बना गया है।
कि देश भक्ति सिखा गया है॥
अधर्म्म से दिल हटा गया है।
वह वेद विद्या पढ़ा गया है॥
रयाज भारत में गुल खिला था।
वह तुहफा कुदरत से इक मिला था।
खजां के झोंके बुरा हो तेरा,
तू आके उसको सुखा गया है।
ऋषि के प्रचार सोलाने,
हम को कैसा दिया संभाला।
तिमिर के अन्दर किया उजाला,
विचित्र दीपक जला गया है।
श्राद्ध के मानी हम थे भूले,
जो यज्ञ का अर्थ हम थे चूके।
जो भाष्य करने के थे तरीके,
वह स्वामी हम को बता गया है।
ऋषि थां उन्नीसवीं सदी, का

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बजाया हर सिम्त जिस ने डंका।
बताओ है और कौन ऐसा,
जो ऐसी हल चल मचा गया है।
वह जैमिनी जी पै मरने वाला,
कपिल का सत्कार करने वाला।
वह धर्म युद्ध में न डरने वाला,
'फिदा' करशमा दिखा गया है।

—— ——

१३१ भजन

क्या किसे ख़बर थी स्वामी दयानन्द आन जगावेगा,
कर वेदों का प्रचार हमें उपदेश सुनावेगा।
मत भूल गये थे किरानी, अभिमानी हुए थे कुरानी,
यह क्या जाने थे पुरानी, वेदों का भाष्य हो जावेगा।
विद्या को छोड़ बैठे थे, यम नियम तोड़ बैठे थे,
मुंह सत से मोड़ बैठे थे, जैसे कोई नहीं समझाएगा।
मत फैल गये भारत में, ताकत न रही अत सत में,
फंस गये अपस्वार्थ में, कौन अब पढ़ पढ़ावेगा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पढ़ विद्या दयानन्द आए, वेदों के डंके बजाए,
खुश उदय भानु हो जावे, लोग सब जगता जावेगा

---

१३२ भजन

टेक—चलो कलिकाल सत्य अब आया, चलो कलिकाल।
कली-कोप हुआ ईश्वर अति भारी पोप जाल जब छाया।
बड़ा अनुग्रह हुआ भारत पर दयानन्द तब था उपाया॥ चलो०
भारत की दुर्दशा देख कर दयानन्द फिर पछताया।
विद्या का प्रचार किया और सब के मनका भ्रम मिटाया। चलो०
नगर २ में फिर भारत के बहुता काल गंवाया।
देश २ में चर्चा हुई परम धर्म दयानन्द चलाया। चलो०
अन्तकाल को सब के मन में आदि मता यह भाया।
ग्रहण किया विद्वानों ने पोप पाखण्ड मन से भुलाया। चलो०
सत ज्ञान वेदों का देखकर सब ने सीस निवाया।
'नवलसिंह' धन्य स्वामी जी को भूले हुओं को राह बतलाया। च०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१३३ भजन

भारत तेरे भाग खुल गये, भाग खुल गये आया दयानंद स्वामी

भारत तेरे०

कि धन भाग भारत दे,

भारत सुत्तियां नूं आन जगाया । भारत०

दुखां दे विच मरदे सां, मरदे सां ।

स्वामी नी आन बचाया । भारत०

कि उस ब्रह्मचारी ने, चारी ने,

वेदां दा नाद बजाया । भारत०

वेद चारे छुप गये सी,

स्वामी ने आन छुडाये । भारत०

वेदां नूं कोई न पढ़दा सी, पढ़दा सी ।

स्वामी ने आन पढ़ाए । भारत०

ब्रह्मचर्य नित करना, नित करना,

स्वामी ने आन बताया । भारत०

चरस भंग पींदे सी,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

स्वामी ने आन छुड़ाए । भारत०

पत्थर पूजा कर कर के,

विरथा उमर गंवावे । भारत०

लिगां दी पूजा कर दे सां, कर दे सां,

निराकार आन पुजाया । भारत०

गायत्री दा जप करना, जप करना,

स्वामी जी ने आन सिखाया । भारत०

कि सन्ध्या नित करना, नित करना,

द्विजां दा धर्म्म बताया । भारत०

हवन कोई न करदा सी, करदा सी,

स्वामी जी न आन कराया । भारत०

बाल विवाह करदे सां, करद सां

स्वामी जी ने बन्द कराया । भारत तेरे०

गौआं सी दर २ रोंदियां, रोंदियां ।

कोई साडे प्राण बचाये । भारत०

कि विधवां दी आहो जारी नैं, जारी ने,

बेड़ा गर्क कराया । भारत तेरे०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यतीमां दी न सार लैंदे सां, सार लैंदे सां,

मरदे सी भुक्खां दे मारे। भारत॰

स्वामी जी नूं दया वे आई, दया वे आई,

सब नूं धीरज बन्धाया। भारत॰

वेदां दा प्रकाश करके, भाष करके,

पोपं पाखण्ड उड़ाए। भारत॰

भाई साडे बिछड़े सी, विछड़े सी,

स्वामी जी ने आन मिलाए। भारत॰

शुद्धि द्वार उस खोलया, उस खोलया,

बिछड़े आन मिलाए। भारत तेरे॰

समाजां बना वे दितियां, बना वे दितियां,

लेखराम जेहे वीर बनाए। भारत॰

गुरुकुल आन वे बने, आन वे बने,

सब सन्तान पढ़ाओ। भारत॰

कपिल और गौतम जी, गौतम जी,

फिर तो आन बनाए। भारत॰

दया ओन्हू प्यारी सी, प्यारी सी,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आनन्द फिर क्यों न आए। भारत०

दयानन्द स्वामी दे, स्वामी दे,

दुनियां कुल यश गावे। भारत०

"आर्य्य" दल यत्न करो, यत्न करो,

दुनियां सुधर दी जावे। भारत०

भजन १३४

व०। है वह गुल जो देश भारत को अज़सरे नौखिला गया है

ख़जां का मौसिमं मिटाके यारो बहार हरसु खिला गया है।

ख़ज़ाना अपना जो लुट चुका था।

जो अपना विसां ही गुम गया था।

जो अपनी पूंजी ही छिन चुकी थी।

हमारी हमको दिला गया है॥

वह गुम गई थी जो वेद विद्या।

वह मिट चुकी थी जो मातृ भाषा॥

वह उड़ गये थे जो वर्णाश्रम।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दो बारा उन को बेठा गया है।

वह बुतपरस्ती की गुदड़ी।
जिस में हज़ारों मत के लगे थे पैवन्द।

उतार कर तन से वह दियत का।
वह जामा हमको पहना गया है।

मिसाल मेंडक कमाल खुश थे।
शरीर कीचड़ में सुन रहा था।

बदन से आने लगी थी बदबू।
अतर से हमको नहला गया है॥

जो सम्प्रदायों में मुनकिसम थे।
था एक का एक जानी दुश्मन॥

वह एक रसता बताके।
बिछड़े हुओं को बाहम मिला गया है॥

कोई था बदमस्त मै को पीकर।
कोई था अय्याश धन को पाकर॥

उतर गया सब नशा वह यारो।
कि जाम अमृत पिला गया है॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कमाल से अपनी इल्मियत के।
जलाल से अपनी मारफ़त के।
मुख़ालिफ़ों के भी दिल को यक दम।
वह मरदे मैदां दिखा गया है॥
दया थी अव्वल में जब कि उस के।
तो पीछे आनन्द क्यों न होता।
दया से आनन्द करके "शर्मा"।
वह मोक्ष को खुद चला गया॥

---

१३५ भजन

ऐ हिन्द तू भी था कभी दुनिया का आफताब।
मन्तक रियाज़ी फ़लासफ़ा हिन्दसे में लाजवाब।
हरएक मुल्क तुझ से ही होता था फैजयाब।
सारे जहां का तुझ को ही कहते थे इन्तख़ाब।
यकताए रोज़गार जो मौजूद तुम में थे।
कुरुक्षेत्र के जंग ने बरबाद कर दिये।
जब इस तरह से हर तर्फ़ अन्धेरा छा गया।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दुशमन भी तेरे हाल पै आंसु बहा गया।
ईश्वर को तेरे हाल पै कुछ रहम आगया।
भेजा ऋषि जो धर्म का रस्ता दिखा गया॥
पाते हैं निज के नाम से हो रहम और खुशी।
थीं नाम नामी जिनका दयानन्द सरस्वती॥
आए थे सर्व देश के उपकार के लिये।
रसता दिखाने वेद का संसार के लिये॥
दुनियां में चारों वेद के प्रचार के लिये।
हिन्दोस्तान के खास कर उद्धार के लिये॥
क्या शान अपने देश पै इहसान कर गये।
आखिर को अपनी जान भी कुरबान कर गये॥
नाओ थी अपने धर्म की जब डगमगा रही।
उलटी हवा के ज़ोर से चक्कर में आ रही॥
मल्लाहों की अविद्या से सदमे उठा रही।
महफूज़ जा को छोड़ भंवर में जा रही॥
चप्पू लगा के वेद का इसको बचा लिया।
विद्या के बल से उसको किनारे लगा दिया॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जो मुशकलें थीं धर्म्म की आसान कर गये।
दुनियां में सर्व सुख के सामान कर गये॥
वेदों के मुनकरों को पशेमान कर गये।
मगरब के आलमों को भी हैरान कर गये॥
क्या २ न अपने देश पै इहसान कर गये।
आख़िर को अपनी जान भी कुरबान कर गये॥

---

११६ भजन

टेक—स्वामी के बाग़ रड़कें पोप दिलन में॥
रिपु अनेक आहे मतवाले, जिन निज २ शस्त्र संभाले।
चढ़ें आ मेघ समान। रड़कें०

कवित्त

श्री के निशान कहीं छल के नकारे बजा।
अटसट संस्कृत श्रुधन धार के॥
केते तलवार ले पुरानन कुरानन की।
कोई अञ्जील की तोपें संभार के॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जाती जमाती कोई नास्तिक रसालदार,
छड़े पोप गडी को विचित्र ही संभार के।
जय हो सनातन यूं खड़के की टेर भई
मोरचे अनेक थे हज़ारों के वार के।
गरजे तरजे चिल्लाएं, सब अपने मान गंवाए,
लगे जब बाण परमाया। रड़कें०

कबित्त

ओ३म् के निशान व्याख्यानो के नकारे,
बना तर्क तलवार गोली गायत्री के छंद की।
साम गान गड़खा था वेद मंत्र, छर्रन की भई,
टाप शास्त्रन के तुरंग गेंद की।
सेना पीत श्री प्रधान मंत्री, ही रसालदार,
मोरचा समाज सेना सभासद ब्रणद की।
होके घटा टोप चंढ़े वेदन की तोपे भागे भागे
फिर पोप जीत भई दयानन्द की।
ली स्वामी शिक्त इक पकती,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हुई उमत रिपुअन की मुक्ति भगे कितने ले
पुराण। रण कितने तो त्राह पुकारे कितने हुए शरण
बिचारे, बचा कृपा निधान रङ्के।
जय सदा सत्य की होती,
पर झूंठ बड़ाई खोती, सत से बने बलवान।
सब वेदों को जाने थे,
छे शास्त्रों को माने थे, विरोधि सजे पुराण।

राग कालंगड़ा) १३७ भजन (ताल शूल

उपज्यो दण्डी छुपे पाखण्डी, डरे हैं घमण्डी धूरत अन्याई १
विद्या पाकरानिकलरदिवाकर, तिमिर हटाकर ज्योतिदिखाई २
आये हैं स्वामीदयानन्द नामी, गर्ज सभा में सिंह की न्याईं ३
सत्यका मण्डन दम्भकाखण्डन; पाप तिलक की धूल उड़ाई ४
डरे हैं परमादी, अनीश्वर वादी, पौराणिक दें राम दुहाई ५
बड़े २ नास्तिक होकर आस्तिक, हाथ जोड़ आये शरणाई ६
कर शास्त्रार्थ रच सत्यार्थ, सद उपदेशों की धूम मचाई ७
लोक लोकान्तर, मत मतान्तर, कर न सका कोई उनसे लड़ाई ८

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

देशदेशान्तर, द्वीपद्वीपान्तर, मान चुके उन की पण्डिताई ९
वेदों के बल से, युक्ति प्रबल से कलयुग की काया पलटाई १०
तप अखण्डसे,तेज प्रचण्डसे, रिपुअन की छतियां धड़काई ११
योगिन्द्र महर्षि,आत्मदर्शी,दिग्विजय जिनके हिस्सेमेंआई १२
"अमीचन्द्र"ऐसा होना कठिनहै, धर्मावलम्बी वेदानुयाई १३
कष्ट उठाये, नहीं घबराये, धर्म्म नं हारा यदि विष खाई १४

---

१३८ भजन

टेक—उदय भयो है भानु भारत में, उदय भयो है भानु।

छिप गयो तिमिर धरत के नीच, नष्ट भयो अज्ञान ॥
नगर २ और ग्राम २ में घर २ सभा समाज।
घोर निद्रा से जाग उठे प्रिय भ्रातृगण विद्वान् ॥
यवन देश गई यावनी भाषा, मातृ भाषा की जागी आशा।
अब सत्कार करेगी मेरा, आर्यों की सन्तान ॥
देशभक्त और देश हितैषी, रसिक पुरुष मतिमान।
देश उन्नत और मधुर मनोहर, देते हैं व्याख्यान ॥
स्त्री शिक्षा फिर होवन लागी, भारत भूमि तू बड़ भागी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कन्या विधवा भई तरी सधवा, पा आदर सन्मान ॥
शिल्पविद्या, भली भान्ति विचारो, ले उपदेश हृदय में धारो ।
कला कौशल आदि रचो सुन्दर, नव यात्रा के यान ॥
वेद उपवेदों की पढ़ो विद्या, जिससे नाशे सकल अविद्या ।
सांच झूठ का निर्णय करलो, छोड़ हठ अभिमान ॥
धार्मिक शील सुशिक्षित पंडित, 'अमीचन्द' चतुर सुजान ।
मिथ्या त्याग करें सत भाषण, छोड़ लाभ और हान ॥

---

१३९ भजन

टेक—अगर देश हितैषी हमें न जगाता ।
तो देश उन्नति का किसे ध्यान आता । अगर० ।
अविद्या की निद्रा में सोता था भारत,
परोपकारी फिरता था घर २ जगाता । अगर० ॥१॥
तपस्वी प्रतापी वह भारत का भानु ।
न होता प्रगट कैसे अन्धेरा जाता । अगर० ॥२॥
हाते किरानी कुरानी बहुत से ।
यदि वेद रीति पुनर न चलाता । अगर० ॥३॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गौ की विपद देख विधवा का दुखड़ा,
वह कहता था हा देव हा हा विधाता । अगर० ॥४॥
प्रतिष्ठित न होती कभी मातृ भाषा,
जो संस्कृत की फिर रुचि न बढ़ाता । अगर० ॥५॥
महां था कठिन वेदों का भाष्य करना,
अहो उनकी बुद्धि अहो उनकी ज्ञाता । अगर० ॥६॥
किसकी थी सामर्थ्य किस को थी शक्ति,
जो ऐसे समय में समाजें बनाता । अगर० ॥७॥
आज्ञा थी उनको सर्व शक्तिमन की,
वह अतएव आया था भस्मी रमाता । अगर०
स्वदेश और स्वजाती की थी किसे को भक्ति,
छटी संख्या का जो नियम न सिखाता । अगर० ॥९॥
हवन में न पड़ती सुगन्धित सामग्री,
तो वायु यह कैसे सुगन्धि उड़ाता । अगर० ॥१०॥
इकट्ठे न होते जो विद्वान इतने,
हमें घर में आ कौन लैकचर सुनाता । अगर० ॥११॥
भला कैसे होता यह फलों की वर्षा,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहां कैसे आती यह उत्सव को पाता । अगर० ॥१२॥

परिब्राजकाचार्य्य स्वामी दयानन्द,

पधारा है परलोक डंके बजाता । अगर० ॥१३॥

अमीरस न पीता कवीश्वर कदाचित,

न सत्संग करता न हरि गुण को गाता । अगर० ॥१४॥

शुभागमन हो, उत्तम समय है महाशय,

नमस्ते २ करें आर्य्यभ्राता । अगर० ॥१५॥

---

१४० भजन

टेक–'दयानन्द' स्वामी की कृपा से वैदिक धर्म्म ज़हूर हुआ,

महामलीनं और दुष्टकर्म सब पाप भी हम से दूर हुआ।

पञ्चकर्म्म की विधि बतलाई, ईश्वर की पूजा सिखलाई।

दिल में सब के नूर हुआ। जब वैदिक० ॥१॥

वर्णाश्रम थे सब खोये, धर्म्म कर्म्म से बिमुख होये।

अब धर्म प्रयत्न अरूढ़ हुआ। जब वैदिक० ॥२॥

बाली उमर में शादी कीनी, जूठी सौ विपदा भर लीनी।

बाल विवाह काफ़ूर हुआ। जब वैदिक० ॥३॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

घर २ पहुंची वेद की बानी, उड़ गए जैनी और कुरानी ।
पोप पाखण्ड भी दूर हुआ । जब वैदिक० ॥४॥
संस्कार अब घर २ होवें, भजन कीर्तन दर २ होवें ।
सब को यह मनजूर हुआ । जब वैदिक० ॥५॥
वेदों का प्रचार करो, अब उठो सब सुधार करो ।
अब आलस्य हमसे दूर हुआ । जब वैदिक० ॥६॥
ऋषि मुनियों की रीति चलाई, जग में फेरी वेद दुहाई ।
शान्ति से भरपूर हुआ । जब वैदिक० ॥७॥
'लेखराम' से बनों बलकारी, वेदप्रचार में जिस जानहै वारी ।
सीना पल में चूर हुआ । जब वैदिक० ॥८॥

१४१ लावनी

टेक—'दयानन्द' आनन्द कन्द भये पाखण्डिन के मत टारन,
हुए जगत विख्यात, चहुं दिश परमार्थी तरन तारन ।
चौक (१) बाल अवस्था से पढ़ विद्या, देश देश में रटन ।
भारत की दुर्दशा देख, हुआ विषाद जी में, तपा दिया,
परमार्थ ही परम धर्म है, मन में सोच विचार किया ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

किया प्रकाश वेदों का जग में, तन मन अपना लगा दिया

सुन सज्जन आनन्द हुए, शठ मूरख चिढ़े बिना कारण।

दयानन्द आनन्द कन्द भए, पाखण्डन के मत टारन ॥

चौक (२) यवन तो करदियो दमन, किरानी भूलगये अपनी बानी

खाक छानते फिरे पुरानी, अब नहीं मन मानी।

जैनी भूल गये बहनी, सुन नाम चुप हुए अभिमानी।

छुड़ा दिया जड़ पषान पूजन, निराकार महिमा जानी।

वैदिक मत उपदेश किया, चहुं दिश लगे दुर्जन हारन।

दयानन्द आनन्द कन्द० ॥

चौक (३) वेद शास्त्र की विद्या, सब नगर २ में फैलाई।

कल्पित मत सब किये पराजय, देश देश कीर्ति छाई।

दयानन्द महा विद्वान हुए, देश २ हुई हवाई।

शिक्षा वेद सुन आर्यावर्त, नहीं मुसलमान नहीं ईसाई।

कोई न सामने खड़ा पाखण्डी, इधर उधर लगे गप्प मारन।

दयानन्द आनन्द कन्द० ॥

चौक (४) संस्कार और वर्णाश्रम के भूले कर्म फिर बताये।

हवन यज्ञ सन्ध्या उपासना बीच, नास्तिक लगाये।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म्म की रक्षा निमित्त, चहुं दिश आर्य्यसमाज बनाये।
भूत प्रेत जादू टूने के सभी भ्रम जिन मिटाये।
अंधाधुंध से गए निकल कुछ लगे लोग अब विचारन।
दयानन्द आनन्द कन्द ॥
चौक (५) अपनी २ बिरादरी में, लगे लोग सब सभा करन।
गौ, कन्या, विधवा, अनाथ के लगे दुःख पर ध्यान धरन।
मूर्ख पाखण्डियों की संगत से, मन में अब लगे डरन।
मद्य मांसके त्यागन का, लाखों ने कर लिया नेम परन।
डूबे हुये भारत जहाज़ को, फेर लागे उभारन।
दयानन्द आनन्द कन्द० ॥
चौक (६) पुत्र पुत्री शिक्षा की, भारत वासियों को कुछ ध्यान हुआ
सब ने निश्चय जान लिया, बिन विद्या यहां नुकसान हुआ
उर्दू फारसी हानिकारक हैं, इसका भी अब ज्ञान हुआ।
सतशास्त्रों के जो वक्ता, उनका अब कुछ मान हुआ।
देवनागरी २ लगे लोग अब पुकारन ॥ दयानन्द० ॥
चौक (७) मेल जोल का बोया बीज, जो हरा भरा यह दीखेबाग
अमृत वर्षा बरस रही, खिल रहे पुष्प मिटगये सब दाग।
इस बागीचे को फल जिसने खाया, उसके धन्य २ भाग।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'मिश्रीलाल' के कथन छन्द पर सभी महाशय देंगे दाद।
चार चौक परचार चौक कथ, नवनारसिंह किया उच्चारण
दयानन्द आनन्द कन्द० ॥

---

३४२ गीत

टेक—हुये भारत के भानु प्यारे, अन्धेरा दूर हुआ सारे ॥
धन्य भाग इस देश के, आये स्वामी महाराज।
दया कीनी इस देश पर सभी संवारे काज ॥
बिगड़ी हालत को सुधार दिया, झूठे अब फिरते मारे २
हुये भारत के० ॥ १ ॥
वेद शास्त्र की रीति को घर २ दिया चलाय।
झूठी बातें देश की सब को दिया हटाय ॥
जन्म सब का ही सुधार दिया।
पाप सब जड़ से उठा मारे। हुये भारत० ॥ २ ॥
गौ विधवा के दुःख को देख किया विरलाप।
मन अपने में सोच्या कीना पश्चाताप।
विद्यापढ़ दुःख सब टार दिया, दिखाये इसने वेद चारे।
हुये भारत के० ॥ ३ ॥
उसने देखी देश के वेद धर्म्म की हान।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऐसी हालत देखकर, तन मन कर दिया दान ॥

मुरदा हालत से उभार दिया, किया प्रचार फिरके सारे ।

हुये भारत के० ॥ ४ ॥

जितने शत्रु वेद के सब को दिया गिराय ।

जो २ आया सामने सब को दिया हराय ॥

वेद विद्या का सहारा लिया, झूठे सब सामने आ हारे

हुये भारत के० ॥ ५ ॥

काजी मुल्लां मौलवी जो २ पढ़े कुरान ।

पांडे जोगी पण्डितां जो २ बांचे पुराण ॥

सभी को उसने पछाड़ दिया, ताब नहीं सके उसकी ला रे ।

हुये भारत के० ॥ ६ ॥

वैदिक धर्म प्रचार से सब को दिया जगाय ।

कर्म धर्म पुरुषार्थ पर सब को दिया लगाय ।

ऋषि ने वेद शब्द पुकार दिया, अब तो उठ कुछ कर लो

प्यारे । हुए भारत के० ॥ ७ ॥

'अहंब्रह्म' और 'तत्त्वमसि' सब कल्पित हैं ज्ञान ।

वेदों में मिलता नहीं इन का कुछ प्रमाण ॥

दूध पानी को नितार दिया, अब काहे ब्रह्म बना प्यारे ।

हुये भारत के० ॥ ८ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पं० गुरुदत्त विद्यार्थी एम० ए०

गुण वर्णन ।

१४३ गीत (लावनी)

शेर—शोक है भारत में चहुंदिश, आपत और मातम छाया ।
क्यों न हो गुरुदत्त सा पण्डित जहां से उठ गया ।
टेक—हैं मन्द भाग भारत के सब नर नारी ।
क्या कहूं विथा जो हम पर पड़ी है भारी ॥
चौक (१) नहीं मुक्त हुए थे एक ही दुःख से जब तक ।
दूसरा उपस्थित हुआ, यह आकर तब तक ।
नहीं भूले थे हम दयानन्द को अब तक ।
गुरुदत्त वियोगानल से जलेंगे कब तक ॥
हा देव हमारी आशा मिट गई सारी, क्या कहूं वि०
चौक (२) पावेंगे कहां अब उस धर्मवृत्त गौहर को ।
देखें कहां अब उस की मूर्त्ति मनोहर को ।
और सुनेंगे कैसे अब हम उसके लैक्चर को ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अब देश में क्यों कर फैलावेंगे अक्षर को।
जिस के द्वारा अब देश की मिटे यह ख्वारी।

चौक (३) अब कौन वेदों का इंगलिश भाष्य करेगा।
और कौन मैक्समूलर का मान हरेगा।
और कौन स्वामी के भाष्य लेके बढ़ेगा।
वेदों का मान और गौरव कौन धरेगा।
उपनिषद हों सकें द्वीपान्तरं में प्रचारी। क्या०

चौक (४) मन्त्रों के वेद के व्याख्यान कौन सुनावे।
सायंस भरा अब उन में कौन दिखावे।
मेगज़ीन अब कैसे द्वीपान्तर को जावे।
नास्तिकों को समझा आस्तिक कौन बनावे।
है कौन अब ऐसा संशय और भ्रम हरे री। क्या०

चौक (५) धर्मार्थ अब अपना जीवन कौन लगावे।
परमार्थ की ख़ातिर अब कष्ट कौन उठावे।
अब स्वार्थ को अपने पास से कौन भगावे।
निज सुख को सब हित पर अब कौन चढ़ावे।
यह काम आप ही का था धर्म व्रत धारी। क्या०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चौक(६) बाइस बरस में ऐम, ए, पास किया था ।
और प्रोफ़ेसर का पद भी तुम ने लिया था ।
परतन्त्र समझ इसको भी छोड़ दिया था ।
क्यों नहीं तुम्हारा ही तो ऐसा हिया था ।
स्वाधीन धर्म्म उपदेश किया था जारी । क्या०

चौक (७) मंझधार बीच जब नाव हमारी आवे ।
तब गुरुदत्त सा मल्लाह जो गुम हो जावे ।
फिर क्यों नहीं मन दुःख सिन्धु में गोते खावे ।
और कौन है हमारा जो बेड़ा पार लंघावे ।
है दुःखं अगाध, नहीं इसकी वारापारी । क्या०

चौक (८) छवीस वर्ष की देह भी न होने पाई ।
गुरुदत्त ने करी हम से बे वक़्त जुदाई ।
जो व्याकुल हमें को छोड़ और असहायी ।
गुरुदत्त स्वर्ग को गये धर्म्म अनुयायी ॥
नहीं दोष किसी का, भाग्य की खोट हमारी । क्या०

चौक (९) "शर्म्मा" विराम कर, क्यों तू इतना रोता ।
धीराम्बु से अपने चक्षु क्यों नहीं धोता ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भवतव्य जो है वह निश्चय ही है होता।
फिर क्यों अधीरज से दुःख भार को ढोता।
हो ऐसा ही कोई और देश उपकारी।
है यह प्रार्थना करुणामय से हमारी। क्या०

पं० लेखराम आर्य्य मुसाफिर
गुण वर्णन

१४४ भजन

टेक—धर्म्म वीरका जबकि जनाज़ा, लाहौर के कूचे से निकला
तू भी देखले कातिल काफ़िर, देखने को आलिम निकला ॥
गली २ और कूचे २ उसका चरचा हो रहा है।
कौन बशर है, जो सुन कर यह सदमा, नहीं रो रहा है।
नगर २ और देश २ में फैल गया यह शोहरा है।
सत पुरुषों का कतल भी भाइयो, बीज धर्म्म का बो रहा है ॥
वेद के मन्त्र पढ़ते २ पण्डित जी का दम निकला।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तू भी देखले कातिल काफ़िर, देखने को आलिम निकला॥१

जान से है जिन को धर्म्म प्यारा, मरने से कब डरते हैं ॥
धर्म्म के लिये जान भी जावे, गर्दन आगे धरते हैं ॥
बुज़दिलों की छुरी को खाकर, होते कतल नहीं करते हैं ॥
ऐसा सच्चा सबक महाशय, वेद में से पढ़ते हैं ॥
जैसा निकला वह शेरे नर, वैसा और कोई कम निकला ॥
तभी देखलै कातिल काफ़िर, देखने को आलिम निकला ॥२॥

कुरान का फोटो खूब खैंच कर पण्डित जी ने दिखलाया ।
खुला पोल इसलाम का भाइयो, तास्सुब ने फिर भड़काया ।
काज़ी मुल्लां कोई मौलवी, सामने उनके नहिं आया ।
कतल किया धोखे से आखिर यह जवाब हमने पाया ।
तहकिकाते मुहम्दी को करने जब निकला बेगम निकला ।
तू भी देखले० ॥ ३ ॥

धन्य २ मात पिता उनके जिन्हों ने बच्चा ऐसा जाया ।
कलम को लेकर तेग मैदान में धर्म्म युद्ध करने आया
ऐसा किया युद्ध वीर की शहादत को सब ने पाया ।
दुश्मन के माथे पर उसने, स्याही का टीका लाया ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

'धर्मचन्द।' फिर आर्य्यवर्त्त में क़दम धर्म्म का जम निकला
तू भी देखले० ॥ ४ ॥

१४५ भजन

दोहा—जननी जने तो वीर जन, लेखराम से वीर ।
जिसने कारण धर्म्म के, त्यागन किया शरीर ॥

टेक—धन्य २ ऐसी माता को, जिन लेखराम सा जाया ।
ऐसा होना बहुत कठिन है, जिसने अपना तन मन धन
किया धर्म्म पै सब अर्पण है, कुछ नहीं शेष बचाया। धन्य०१
अरब रूम काबल कन्धारा, उसने देश हिला दिया सारा,
वीर सभा में जा ललकारा, कोई न सन्मुख आया । धन्य०।
खड़ा मुसलमानों के अन्दर वाज़ किया करता था वेडर,
अज़मत वेदों की दिखलाकर, झूठा कुरान बताया । धन्य०।३।
ब्रह्मणकुल भूषण की प्रभुताई, "मुरारी" उसने कर दिखलाई,
बुझी आग में फूंक लगाई, नाम जगत में पाया । धन्य० ।४।

१४६ भजन

[जब थोड़ा वक्त कूच मुसाफ़िरे कर रहे था,
दरयाव खून कटे सुए शीरयान से बहे था।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पुर दर्दनज़ा को वह ख़मोशी से सहे था,
और वेद मंत्र पढ़ के यह मित्रों से कहे था।
मत समझो कि मौत हुई लेखराम की,
धुन्दली कुछ इस से होगी लेखराम की।
सीने में जब था ख़ञ्जर क़ातिल घुसा हुआ,
नाला था एक खूं का रंगों से वहा हुआ।
और इक जहां था हसरतो गम में खड़ा हुआ।
था उस शहीद को यह जबां पर जड़ा हुआ॥
मत गम करो कि मरता हूं मैं धर्म के लिये।
धर्म्मी फ़िदा होने को ही हैं धर्म्म के लिये॥
यह खून वह है कि जोश पै आएगा एक दिन।
ख़लकत को इक करिशमा दिखाएगा एक दिन॥
दुशमन को यार बन के बनाएगा एक दिन।
बरगशतगों को राह पै लाएगा एक दिन॥
रोयेंगे वह कि हंसते हैं जो अब ढिठाई से।
बाज़ी कभी है झूठ ने जीती सचाई से॥
हां ठहरो ताके विछड़े हुए राह पर तो आएं।
जो नशे हैं सिरों को चढ़े वह उतर तो जाएं॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

भटके हुए कदम अपनी राह रास्त पर तो लाएं।
ठहरो कि गुड़गड़ाएं वह पछताएं और लजाएं॥
उस वक्त देखना कि समय कैसा छाएगा।
क्या रंग खून शहीद सदाकत का लाएगा॥
लेकिन नसीहत और वसीयत है कुछ मेरी।
गर तुम पै वज़ा दावा खिदमत है कुछ मेरी॥
गर दोस्तों के दिल में मुहब्बत है कुछ मेरी।
तो आप से आखीरी नसीहत है कुछ मेरी॥
तसनीफ़ को समाज के फैलाओ हर तरफ़।
प्रकाश वेद पाक का पहुंचाओ हर तरफ़॥
संसार को दिखा दो कि किस के हो तुम सपूत।
सन्तान आर्यों की सपूतों के तुम हो पूत॥
दिखला दो धर्म्म शक्ति के तुम जो हैं स्वरूप।
तुम को न कोई कह सके फिर कलयुगी कपूत॥
इक २ नियम पै जब कि हज़ारों शहीद हों।
तब जानना कि आपके जीवन मुफ़ीद हों॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१४७ भजन

टेक—लेखराम जहे वीर जी तुसी वन दिखलाओ ॥

सच्चा भगत स्वामी दा आइयो,

दुशमन दीन इसलाम दा आइयो ।

खाया कलेजे तीर जी, तुसीं वन दिखलाओ ॥

जब लग जीवया धर्म्म फैलाया,

ख़ौफ़ किसे दा मूलें न खाया ।

मार गई तक़दीर जी, तुसीं वन दिखलाओ ॥

कम न करियो बन्द तहरीरी,

यह नसीहत है आखीरी ।

मत होना दलगीर जी तुसीं वन दिखलाओ ।

गायत्री दा जाप करेंदे,

लोकां नूं पंद नसीहत देंदे ॥

धर्म्म हो पाया आखीर जी, तुसी वन दिखलाओ ।

पुस्तक लिखन उपदेश करने विच,

दुशमनां ते नां मुल डरन विच ॥

कौन है उस दा नज़ीर जी, तुसी वन दिखलाओ ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१४८ गीत

दोहा—धन धन धरनी भाव सुत, मातपिता और प्राण।
एक धर्म के सामने, हैं सब तुच्छ समान॥

टेक—धन्य लेखराम से वीरको, जिन धर्म पे जानगंवादी।

लिखी पुस्तक पण्डित जी ने बड़े ग़ज़ब की।
दी पोल खोल सारे इसलाम मज़हब की।
पड़े चौंक मुसलमां आंखें खुल गईं सब की।
लगे कहने झूठी किताब कर दी रब की।
यह दलील कैसी लाया, नहीं जवाब जिसका पाया
मज़हब इसलाम गिराया, कैसा मज़हका उड़ाया।
अब कुछ नहीं पार बसाया, किया क्या हाय।
रहा नहीं जाय बड़ी तौकीर को।
एक दम में आज घटा दी। जिन धर्म पे जान गंवादी। १।

जब नहीं पाई तहरीर की अपनी ताकत।
फिर अजब तरह की सूझी इन्हें हिमाकत।
एक रोज सब ने सलाह कर बदली हालत।
चन्दा करके जा दावा किया अदालत।
वहां से भी मुकद्दमा हारे, पड़े मायूसी के मारे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर चिढ़े मुसलमां सारे, यह क्या किया खुदा हमारे।
लगे ऐसा करन विचार, बुरी हुई हार।
कोई अब यार बंधावे धीर को।
सारी उम्मैद मिटादी, जिन धर्म० ॥ २ ॥
कोई सूरत नहीं जब फतह की अपनी पाई।
करो लेखराम को कतल यही ठहराई।
उठा एक पूरा एक बेईमान अन्याई।
देदगा से उनको मार बात सिखलाई।
वह शागिर्दी में आया, पूरा बिश्वास दिलाया।
एक दिन जो मौका पाया, खञ्जर का हाथ चलाया।
निकला ज़ालिम बेहया, मार भाग गया न आई दया।
दुष्ट वे पीर को मित्र करके बड़ी दगा दी। जिन० ॥३॥
गो पण्डित जी के ज़खम हुआ था कारी।
पर शूरवीर ने ज़रा न हिम्मत हारी।
रोती थी पत्नी एक तरफ महतारी।
करते थे शोर चहुं ओर खड़े नर नारी
यह ईश्वर भक्त पियारा, कहता था बारम्बारा।
जग है ये धुन्द पसारा, कुछ करो न रंज हमारा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

करो वैदिक धर्म प्रचार, मन में लो धार।
'मुरारी' सारे जन तदबीर को, देशों में करो मुनादी।
जिन धर्म पै जान गंवादी० ॥

वेद प्रचार

१४१ गीत

वेद विद्याओं की है कान, वेद में है परिपूर्ण ज्ञान।
वेद से उपजे ज्ञान अनन्त, पृथिवी से सूर्य्य पर्य्यन्त।
परा अपरा विद्या के भेद, भिन्न २ बतलाते हैं वेद ॥१॥
जीव ईश्वर प्रकृति के लक्षण, वेद से निर्णय होत विलक्षण।
तीन काण्ड का सब सिद्धान्त, वेद बताते हैं भली भान्ति ॥२॥
वेद सनातनधर्म को ग्रन्थ, वेद है मोक्ष द्वार का पन्थ।
वेद से सुख सम्पत हो प्राप्त, प्रतिपादन करते हैं आप्त ॥३॥
वेद के गायत्री आदि छन्द, शब्द अर्थ सारे सम्बन्ध।
उसने यह सब किये प्रदान, जिस को कहते हैं शक्तिमान ॥४॥
वेद अविद्या का करे नाश, सत विद्या का करे प्रकाश।
मन में रख के दृढ़ विश्वास, चार वेद का पढ़िये भाष्य ॥५॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेदों के सुन २ उपदेश, सत्य ही होगा मुख्य उद्देश।
पञ्च यज्ञादि होंगे कर्म, प्राप्त होगा वैदिक धर्म्म ।।६।।

वेद से मिटे हैं संशय भ्रम, वेद निरूपण करे है ब्रह्म।
वेद का जग में बढ़ा प्रताप, सदा उचित है वेद का जाप ।।७।।

महिमा वेद अमाप अतोल, वेद पदार्थ हैं अनमोल।
वदे अर्थ का करो विचार, 'अमीचन्द' प्रति दिन बारम्बार।।८।।

---

१५० गीत

वेद का प्रचार करना, जगत का उद्धार है।
श्रेष्ठ सब कामों में उत्तम, और पर उपकार है।
ऋषियों के मुनियो के बचनों को, निगाहे गौर से।
देखिये तो सब का यही तत्व है यह सार हैं।
ईश्वरीय आज्ञा का दुनियां में न हो प्रचार जब।
किस तरह सम्भव हमारे देश का सुधार है।
नाम वेदों पर ही केवल, तृप्त होजाते हैं जो।
आर्यपद का उन को कैसे मिल सके अधिकार है।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वेद पाठी हों न घर २ जब तलक ए आर्य गण।
सच तो यह है, हम को बस धिक्कार है धिक्कार है।
गांव कसबों में जब तक वेद प्रचारक न हों
सर्वथा दुस्तर ही जानो धर्म का प्रचार है।
अपने पुरुषार्थ को खोया अब तलक तुमने किधर।
धोखे की टट्टी में यारों ने बनाई अड़ है॥
खूं बहाकर अपना पुरुषार्थ दिया था जिन के हाथ।
वो बना बैठे विरासत और निज अधिकार है।
शोक अपनी भूल पर मत कीजिये और जागीये।
उपकार का कर्त्तव्य अब तो वेद का प्रचार है।
दीजिये इस को मन से धन से, जिस तरह हो पुष्टता॥
"बस" की विनती यही हर बार है सौ बार है॥

भजन १५१

टेक-वेदां दा प्रचारर करो, तुसी आनन्द रहियो॥
उठो आलस त्यागो भाइयो, गहरी नींद से जागो भाइया
बांध कमर हो तैयार, जी तुसीं आनन्द रहियो॥ १॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सुत्ते लोग जगाओ जाके, धर्म उपदेश सुनाओ जाके।
हर घर और हर बार जी। तुसीं आनन्द रहियो॥ २॥
इस दुनियां दे धंदे गंदे, क्यों इन्हां दा तूं होया बन्दे।
जीवना हैं दिन चार। जो तुसीं आनन्द० ॥ ३॥
असली सबूत दिखाओ प्यारे लोग तुसानूं देखन सारे
तन मन धन देओ वार, जी तुसीं आनन्द ॥ ४॥
गुरुकुल को हुन करो तैयार, जिस से पैदा हों ब्रह्मचारी
आश्रमां दा हो सुधार। जी तुसीं आनन्द० ॥ ५॥
चहुंवेदां दी होवे पढ़ाई, षट दर्शन और अष्टाध्यायी
मिट जाय धुन्द गुबार, जी तुसीं आनन्द० ॥ ६॥
एह कम आर्यों ने ही करना, होर किसे नहीं सिरपर धरना
माता निधि दी एह पुकार। जी तुसीं आनन्द० ॥ ७॥
सार रलमिल जोर लगाओ, अपना अपना बल दिखलाओ
बेड़ा होजाय पार। जो तुसीं आ०
हे ईश्वर, हे दीन दायाला, तेरी कृपा से होवे उजाला
पकड़ी शरण तिहार। जी तुसीं आनन्द रहीयो ॥ ९॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१५२ भजन

टेक—करो सज्जन वेद प्रचार तुम। क्यों मित्रो देर लगाई।
बजे वेद का जग में डंका। फिरै हो मूरखता का फंका (हरे)
मिटे अविद्या रूपी शङ्का। करो यही उपकार तुम।
इससे नहीं अधिक भलाई क्यों मित्रो देर लगाई० ॥१॥
चन्दा कर उपदेश कराओ। छोटे २ ट्रैक्ट छपाओ। (हरे)
देशों देश धर्म फैलाओ। जो जीवन का सार तुम ॥
है यही नेक कमाई। क्यों मित्रो देर लगाई० ॥२॥
बातें छोड़ो अपस्वारथ की। हालत देखो तुम भारत की (हरे)
रक्षा करो दीन भारत की। इसकी सुनों पुकार तुम ॥
यह शरण तुम्हारे आई। क्यों मित्रों देरं लगाई ॥३॥
इससे भरोसा बड़ा तुम्हारा। नहीं किसी का और सहारा। (हरे)
कहे 'मुरारी' दीन विचारा। कीजेगा उद्धार तुम ॥
सब मिल करो सहाई। क्यों मित्रो देरं लगाई० ॥४॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

गुरुकुल महत्व ।

१५३ भजन

हुआ है नमूदार अब फिर गुरुकुल, रहे सर्वदा शाद ईश्वर गुरुकुल ॥ १ ॥

यह करता रहे रोज़ अफ़ज़ूं तरक्की, रहे ऐश में ज़िंदगी भर गुरुकुल ॥ २ ॥

बहुत उन्नति हो ज़माने में इसकी, लगाय देशों के चक्कर गुरुकुल ॥ ३ ॥

यह कहता है भारत कि मैं खुश रहूंगा, रहा साया अफ़गन जो सर पर गुरुकुल ॥ ४ ॥

ऋषि महर्षि खूब पैदा करेगा, न छोड़ेगा हम को निरक्षर गुरुकुल ॥ ५ ॥

बनावेगा भारत को धर्म्मात्मा यह, कि है धर्म्म शिक्षा का अफ़सर गुरुकुल ॥ ६ ॥

न फंसेगा तनज्ज़ल के पिंजरे में हरगिज़, उड़े औज पर खूबले पर गुरुकुल ॥ ७ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मगर हमपै है फ़र्ज़ इमदाद करना, न कुछ कर सकेगा यह बेज़र

गुरुकुल ॥ ८ ॥

इसे दान कुछ दीजिये आर्य्यगण, दुआ आप को देगा लेकर

गुरुकुल ॥ ९ ॥

इयानत जो धन मन से इसकी करोगे, संभालेगा तुमको संभलकर

गुरुकुल ॥ १० ॥

यही आर्य्यवर्त्त में मिशल होगा, इसे होने देगा न अबतर

गुरुकुल ॥ ११ ॥

कहां वह समय हाय खोया गया है, कि था जिन दिनों हर जगह पर

गुरुकुल ॥ १२ ॥

ज़लील अब बहुत देश यह हो चुका है, करेगा इसे नामवर फिर

गुरुकुल ॥ १३ ॥

जो ऋषियों की औलाद हो चंदा भेजो, कि दुनियां में सब से है बेहतर

गुरुकुल ॥ १४ ॥

दिलो जान से क्यों इस के शैदा न हों हम, 'फिदा' है हमारा तो दिलवर

गुरुकुल । १५ ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१५४ भजन

टेक—क्यों वृथा समय गंवाओ, करो गुरुकुल की तैयारी।

अपनी सन्तानों को लीजे, भेज आप गुरुकुल में दीजे।
पहला यत्न मित्र यह कीजे विद्या वेद पढ़ाओ,
रक्खो बच्चों को ब्रह्मचारी, करो गुरुकुल० ॥१॥

गुरुकुल भारत से मिटा जब से, हालत बुरी हुई यह तबसे
बारम्बार कहूं मैं सब से, ईधर तो चित्त लगाओ,
तुम बनो देश हितकारी। करो गुरुकुल० ॥२॥

नहीं भरोसा है एक पल का, कीने काज आज कलका।
ईश्वर बल है निर्बलका, मत दिल में घबराओ।
पूरण हो आश तुम्हारी। करो गुरुकुल० ॥३॥

जो है धर्म तुम्हें कुछ प्यारा, तो अब मानों बचन हमारा।
सब झगड़ों से करो किनारा प्रथम इसे बनाओ।
करे बिनती यही "मुरारी" ॥ करो गुरुकुल० ॥४॥

१५५ भजन

दोहा—पोप जाल छूटे तभी, जब हो सत उपदेश।
वेदों का डंका बजे, सुधर जाए सब देश ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

टेक—जल्दी बनाएलो, गुरुकुल बनाएलो, गुरुकुल बनाएलो
गुरुकुल सारी विद्या का भंडार ॥
इस में तन मन धन दीजो, तन मन धन दीजो।
तन मन धन दीजो, यह है सब का उपकार।
जल्दी बनाए ले० ।
इस में पढ़ेंगे ब्रह्मचारी, पढ़ेंगे ब्रह्मचारी।
पढ़ेंगे ब्रह्मचारी, होगा देश सुधार। जल्दी० ।
वैदिक धर्म की शैय्या, धर्म्म की शैय्या।
धर्म्म की शैया पड़ी डूबे मंजधार। जल्दी० ॥
निकले वेद का भानु वेद का भानु।
वेद का भानु, मिट जावे अन्धकार ॥ जल्दी० ॥
स्वामी ने तुम को जगाया, भाई तुम को जगाया।
भाई तुम को जगाया, उतारो ऋषि ऋण भार ॥जल्दी०
कहे "वासदेव" बनो उपकारी, बनो उपकारी।
बनो उपकारी, करो वेदों का प्रचार ॥ जलदी० ॥

---

१५६ लावनी

चार आश्रम चार वर्णा का ठीक ज्ञान हो गुरुकुल से...

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चार वेद के ज्ञाता पण्डित ज्ञानवान् हो गुरुकुल से ॥
वीर्यवान् पूरण बलिष्ठ सुन्दर सुजान हो गुरुकुल से ।
आर्य धर्म तत्वज्ञ सर्व गुण में प्रधान हो गुरुकुल से ॥
स्वामी उद्देशानुसार जग सुधार हो गुरुकुल से ।
आप्त ग्रन्थ जो लुप्त हुए तिन का उद्धार हो गुरुकुल से ॥
ऋषियों के कर्त्तव्य धर्म का भी प्रचार हो गुरुकुल से ।
यथातथ्य पा मुक्ति द्वार सार संसार पार हो गुरुकुल से ॥
मिला लाखों का घर खाक में कहो अब क्या कसर रही है
ब्रह्मचर्य आश्रम को छोड़ा विद्या के बन्धन को तोड़ा
वानप्रस्थ की लखा न ओरा, घुस पापों की नाक में ।
विषयों में बुद्धि गई है । कहुं० ॥ १ ॥
अर्द्ध वन्य हुआ नाम तुम्हारा, सोते २ समय विसारा ।
पुरुषार्थों का नाम बिगारा कस धर्म धर ताक में ।
अवनति की शरण लगी है । कहुं० ॥ २ ॥
वीर्यवान् जो सन्तति चाओ, तो अब गुरुकुल में पढ़ाओ ।
विषय आदि दोषों से बचाओ, रुचि कराया फल शाक में ।
सोने का समय नहीं है । कहुं० ॥ ३ ॥
आठ वर्ष को दाखिल कीजे, देश सुधार बड़ाई लीजे

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

विद्या से अमृत को पीजे, गुण ह ऋषि के वाक में।
"पाठक" क्या खबर नहीं है। कहुं० ॥ ४ ॥

इति गुरुकुल महत्व।

बसन्त और होली

(१) बसन्त

१५७ भजन

अब आया बसंत तिन के घरमांहि, जिन सिमरा प्रभु मन प्रीतिलाहि
रैन दिना हरि चरनन परते, सदा रहे तिन में लिवलाये।
रागरंग तिन के द्वर लाचे, सत्य नाम जिन हृदय बसाये।
निज प्रभु नाम की खेले होरी, रोम २ हरि रंग रमाये।
धन्य भाग तिन हों के जग में, ये वसन्त जिन के मन भाये।

---

१५८ भजन

जब हरि सिमरें सो बसन्त काल, खेलें भक्ति रूप रंग पुष्पमाल
प्रभु से प्रीति हृदय में भीने, हरियश गावे सदा ताल।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

इस के हेतु सकल सुख त्यागे, तिस बिन और न कोई भाल।
प्रेम के बांधे जगत में विचरें, मन में लखें हरि रत्तपाल।
सो मानुष्य हैं अति बड़ भागी, तिसकी लगनमें जोहों निहाल।

---

१५९ भजन

आये बसन्त हिये उमगी री सब हि आर्य्य मिल खेलत होरी। वेद रङ्ग से रंग सब सज्जन देखि अनार्य्य चले मुख मोरी॥ १ ॥ सत उपदेश करते निशवासरें कपट फन्द सब दूर कियोरी ॥ २ ॥ ऐसो साज समाज आज लखि जयाति२ चहुं ओर भयो री ॥ ३ ॥ भयो प्रकाश सत्य वेदनको कहत 'गणेशी' तिमिर गयोरी ॥ ४ ॥

---

१६० भजन

टेक—भक्ति पुष्प खिलें सो बसन्त काल।
कोई धन्य समय सोई धन्य काल ॥ १ ॥

आयें बसे जब प्रभु मन अन्दर, पाप ताप दिये सब ही टाल।
हरि यश रंग रंगे बड़ भागी,कंध में जिन के है नाम माल।२।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिस मन प्रेम हरि पिचकारी, नाम चन्दन कर तिलकभाल।
धर्म गुलाल भरा जिनके घट हरि यश से मुख सदा लाल।३।
साधु भक्त ऐसी होरी मचावें, महिला रंग सब ही पै डाल।
तिन संग रल खेलें सब सज्जन पुरुष नार और वृद्ध बाल।४
जिन पुरुष को बसन्त स्पर्शे होवे सुखी दुःख क्लेश टाल।
यही दान करो प्रभु पूर्ण सब जग गायके हो निहाल।५।

---

१६१ गति

टेक—जगत् में वैदिक धर्म्म फैलाओ।

कल्पवृक्ष को प्राणों से प्रिय बनाओ।
सदाचार रूपी जल से सींचो, खाद पुरुषार्थ डिलाओ।
मुंह मांगा फल पाओ। जगत में० ॥ १ ॥
नाना पंथ बने जग में, एक बेड़े पर लाओ।
भ्रातृभाव की भावना उत्तम, पृथिवी पर फैलाओ।
सभी बिछुड़े मिले जाओ। जगत् में० ॥ २ ॥
वेद प्रचार फराड रूपी यज्ञ में, तन मन धन आहुती पाओ।
नगर २ और ग्राम २ में, आर्य्य समाज बनाओ।
धर्म्म का राज फैलाओ। जगत् में० ॥ ३ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ऋग यजु साम अथर्व वेदों का. उदय अस्त तक लजाओ
वेद उपदेश मनुष्य मात्र के, कानों तक पहुंचाओ ।
उनकी महिमा दर्शाओ । जगत् में० ॥ ४ ॥
सर्व हितकारी पवित्र यज्ञ को, असुरन से बचाओ ।
वैदिक धर्म्म की रक्षा अपना, मुख्य उद्देश्य बनाओ ।
उस पर न्योछावर हो जाओ । जगत् में० ॥ ५ ॥
अनाथ भारत की गिरी अवस्था, पुरुषार्थ से उठाओ ।
एक वेर हे ऋषि सन्तान ! उन्नति पर पहुंचाओ ।
पृथिवी स्वर्ग धाम बनाओ । जगत में० ॥ ६ ॥

१६२ गीत

सखी वाहूसंग खेलूंगी फाग, सखी वाहूसंग खेलूंगी फाग ।
जिसकी फूली सकल फुलवाड़ी बन उपबन उपबाग ॥ १ ॥
जिस बहुरंगी की अद्भुत रचना, तिससे लग्न रही लाग ।
देख खिलाड़ी के चरित मनोहर, मन उपजे वैराग ॥ २ ॥
जाके मन्दिर में ज्योति जगावत, चन्द्र सूर्य और आग ।
जन के द्वारे तारागण नाचत, वायु गावत राग ॥ ३ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जिनके बने नित अनहद बाजा, महाराजन के राज ।
ऐसे "अमीर"सों खेले जो होरी, सो तिरिया बड़भाग ॥ ४ ॥

१६३ गीत

खेलत फाग भले विधि सज्जन, वैदिक धर्म्म की धूम मचाई ।
शील क्षमा समता शुचि संयम, धीरज की पिचकारी सुहाई १
प्रीति प्रतीति दया रंग राते, क्षण छबि अतिशय अधिकाई २
स्वांग सनातन धर्म विचारत, मार्ग सत्य सप्रेम बताई ॥ ३ ॥
उमिड़ २ चहुंदिश घिर आये, धर्म ध्वजा जग में फहराई ४
ज्ञान ध्यान रंग भर २ मारत, ईश्वर भाव भक्ति दिखराई । ५
वेदगान सुखदान 'गणेशी' धन्य २ जिन राह लखाई ॥ ६

१६४ गीत

आर्य्यों ने ऐसी होली मचाई ।
चहुं दिश से सज्जन सब आए बैठे समाज बनाई ।
गावत वेद तान अति नीको ध्यावत यश जगराई ।
अगम गति जाकी है भाई ॥१॥
खेलत फाग सुलभ शुचि संयम सत पिचकारी बनाई ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

प्रेम रंग रंग भारि २ भारत ज्ञान गुलाल सुहाई ।
रंगे सब सज्जन आई ॥ २ ॥
जप तप दान गान वेदन को हिये उत्साह बढ़ाई ।
मिलत परस्पर प्रेम से सज्जन द्रोह कपट बिसराई ।
करत हैं जगत भलाई ॥ ३ ॥
विधवा अनाथ विपत्ति गौवों की तापर दृष्टि चलाई
कर प्रबन्ध अहरनिशि वासर तन मन धन से सदाई ।
दुःख जिन पर अधिकाई ॥ ४ ॥
सत्य प्रचार सुधार जगत को ऐसी फाग सुखदाई ।
खेलहु खेलहु पर हित कारण देहु अविद्या नशाई ।
"गणेशी" बलि २ जाई ॥

---

१६५ गीत

आदि देव यह विनय हमारी हरो दुःख दीनन सुखकारी ।
तुम ही हमारे प्राण हो स्वामी, तुम ही हो हितकारी ।
करें किस से जाय पुकारी ॥ १ ॥
हम तुमरी भक्ति के प्यासे, आशा करें तुम्हारी ।
निज सेवक और पुत्र जान के, तृप्ति कीजिये हमारी ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिटे व्याकुलता सारी ॥ २ ॥
काम और क्रोध लोभ की फांसी, मोह के बन्धन भारी।
तुमरे बिना नाथ कोउ न काटे, बने कौन हितकारी।
हरे यह विपद हमारी ॥ ३ ॥
इस दुनियां के सुख हैं ऐसे, नीर होय जैसे खारी।
प्रभु ही 'केवल' अमृत जल है, दे शांति अति भारी।
मिटावे तृष्णा सारी ॥ ४ ॥

१६६ भजन

टेक—आर्यों ने कैसी होरी मचाई देश में धूम मचाई।
विद्या की पिचकारी बनाकर, धर्म की डण्डी लगाई।
सत्य के रंग में भर २, वेद के शब्द सुनाई।
रंगो आत्मा को भाई। आर्यों ने कैसी०।
ज्ञान गुलाल उड़ावन चहुं दिश, तम अज्ञान हटाई।
सत उपदेश का राग हैं गाते, सत्य व्याख्यान सुनाई॥
समाज की रीति चलाई। आर्यों ने कैसी०।
चूर भक्ति के नशे में रहते, ईश्वर से लौलाई।
प्रेम तरंग में मन को बढ़ाते, प्राणायाम चढ़ाई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

योग की रीति दिखाइ। आर्यों ने कैसी०
धीरज की डोरी अवलम्बन कर, कर्म करें सुखदाई।
क्षमा रत्न को धारण करके, शान्ति रहे फैलाई।
दया सब पर दिखलाई। आर्य्यों ने कैसी० ॥
शम दम रूप महा तप करते, इन्द्रिय मन ठहराई।
आत्मिक शारीरिक उन्नति कर, ज्ञानी शूर कहलाई।
करें फिर देश भलाई। आर्य्यों ने कैसी०।
देशोन्नति व्रत पालन करते तन धन अपना लाई।
विद्या सभ्यता को फैलावें, गुरुकुल दिये बनाई।
तथा उपदेश सुनाई। आर्य्यों ने कैसी०।
वेद विरुद्ध असत्य मतन को, रहे समूल उड़ाई।
विविध कुरीति जो प्रचलित होगई, तिन को रहे मिटाई।
दिया जिन देश डुबाई। आर्यों ने कैसी०।
सज्जन आओ हम सब मिलकर, देवें समाज बधाई।
स्वामी "दयानन्द" के गुण गावें जिसने घड़ी यह दिखाई
हमें सोतों दिया को जगाई। आर्य्यों ने कैसी० ॥
"शम्म" की है विनय यह सब से, सुनो वेद अनुयायी
तन मन धन समाज अर्पण कर प्राण आहुति दो चढ़ाई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म्म के कारण भाइ ! आर्य्यों ने कैसी० ।

---

१६७ गीत

बागी न आना, तेरी काया में गुलज़ार ।
मन माली परमोद के, संयम की कर बाड़ ।
दया बाग सूखे नहीं, क्षमां शान्त जल डार ॥ १ ॥
करनी ऐसी कीजिये, साईं से रंग ला ।
मुक्ति कली अन्दर खिड़ी, क्यों नहीं लेत बहार ॥ २ ॥
सुरत निरत दो माली आए, गूंदे हार विचार ।
कहत "कबीरा" साध की, शरण पड़े दये तार ॥ ३ ॥

---

१६८ गीत

आज पिया संग होरी मैं खेलूं, समता रंग बनाए रही ।
सत संतोष को फाग मचायो है, धीरज वस्तर पाये रही ।
मैत्री करुणा रंग बना के, ध्यान पिचकारी चलाए रही ॥१॥
दान दया को मैं कुम कुम कीना, ज्ञान गुलाल उड़ाए रही
पांचों सखी मिल होरी खेलत, ईश्वर कृपा छाय रही ॥ २ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कर्म कलस सम केसर घोलूं, शीतलता जल पाय रही।
सन्त सभा सुरलोकन मध्ये, अनहद बाजे बजाय रही ॥ ३ ॥
वैराग्य विवेक सो चुन २ कलियां, विचार के हार गुंदाए रही
मन सा तुर्या छेज बिछाके, ले सानन गल लाय रही ॥ ४ ॥

१६९ गीत

कैसे पिया से होरी खेलूं, धुपदा रार मचा रही ॥ १ ॥
कपट कटोरा मद का भरिया, तृष्णा मनको छका रही ॥२॥
पांचों सखी मिल फाग मचाया है, ममता रंग बना रही ॥३॥
त्रिविध ताप मृदंग बजावत, मैं २ रागनी छा रही ॥ ४ ॥
ऐसो फाग संभल कर खेलो, ईश्वर कृपा छा रही ॥ ५ ॥

१७० गीत

होली खेलो समझ के रे भाई, वृथा क्यों धूर उड़ाई।
पर सन्ताप तार डर बासन, देखो होलका लगाई॥
याही जिलाए भस्म कर दीजे, शुद्ध नित होए जाई।
करो कुछ देश भलाई ॥ होली खेलो० ॥
काम क्रोध मद लोभ जे, करते सदा कुटलाई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कारो सुख कर इन्हीं निकारो, ऐसा स्वांग सुखदा॰
शोभा छिन २ अधिकाई ॥ होली खेलो॰ ॥
धीर क्षमा समता आराधन, अगम ईश श्रुति गाई ।
ताके ध्यान में मतवाले होए, तन को सुध बिसराई ।
मद ऐसी फैलदाई ॥ होली खेलो॰ ॥
ज्ञान ध्यान सनमान सज्जन को, रंग सुरंग बनाई ।
प्रेम प्रतीत प्रीत पिचकारी, मारो जिया हुलसाई ।
धूम चहुंदिश में छाइ ॥ होली खेलो॰ ॥
हे जगदीश अनादि अनूपम, निराधार जगराई ।
होए कृपा अब तेरी "गणेशी" भारत विपद नशाई ।
फाग तब होए सदाई ॥ होली खेलो॰ ॥

होली समाप्त ॥

आर्य्य समाज वार्षिकोत्सव

१७१ भजन

आर्य्य भाइयों को यह कार मुबारक होवे ।
करना उपदेश पर उपकार मुबारक होवे ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आर्य भूमि से ये वेद पोशीदा बिलकुल ।
हां किये स्वामी ने नमूदार मुबारक होवे ।
किया वेदों का जो भाष्य स्वामी जी ने ।
हम पर हां उनका पर उपकार मुबारक होवे ।
था अविद्या का अंधेरा भारत में पड़ा ।
हा अब हुआ वेदों का चमतकार मुबारक होवे ।
पालो नियमों को, करो सन्ध्या दो कालों में ।
हां जो न माने उसे धिक्कार मुबारिक होवे ।
पढ़ो वेदों का भी तुम, और पढ़ाओ सब को ।
हां सत्य विद्या का यह प्रचार मुबारिक होवे
ज़हे किस्मत हुआ फिर वेदों का प्रचार यहां ।
करना आगाज़ गुरुकुल का मुबारिक होवे ।
इल्तजा ईश से दिन रात हमारी यही है ।
होना ब्रह्मचर्य का आगाज़ मुबारिक होवे ।

---

१७२ भजन

सदा खुशी हो, सदा हो मङ्गल,
सदा हो जलसा ये शादियाना ॥ १ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सदा हो स्वास्ति, सदा हो शान्ति,
सदा हो सफला ये यज्ञ रचाना ॥ २ ॥
सदा हो कीर्ति, सदा हो लक्ष्मी,
हे बाल बृद्ध हे नौज्वाना ॥ ३ ॥
सदा हो तुष्टि, सदा हो पुष्टि,
सदा हो बल पराक्रम बढ़ जाना ॥ ४ ॥
सदा हो आपस में प्रेम प्रीति,
नमस्ते कह करके कर मिलाना ॥ ५ ॥

---

१७३ भजन

यह जलसा तुम को सालाना, मुबारिक हो मुबारिक हो।
सभी भाइयों का यहां आना मुबारिक हो, मु०
प्रभु तेरी दया से ये हुआ उत्सव हमारा है।
सभी करते हैं शुकराना मुबारिक हो, मु०
भवन में हवन करते हैं, सभी पढ़ करके मन्त्रों को।
सुगन्धित वस्तु का पाना, मुबारिक हो, मु०।
आये हैं दूर देशों से, हमारे आर्य भाई।
नमस्ते कह के मिल जाना मुबारिक हो, मु०
सिवाये नाम ईश्वर के नहीं कुछ और है चर्चा।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

सर्व व्यापक के गुण गाना, मुबारिक हो । मु०
करो हिम्मत तुम आपस में, सब मिल के महाशय गण ।
ये सत विद्या का फैलाना, मुबारिक हो मु० ।
सुधारा है जो भारत को, स्वामी दयानन्द ने ।
शुकर उनका बजा लाना, मुबारिक हो । मु०
हमेशा अर्ज करते हैं खुशो बेकश [illegible]दिक दिल से ।
भजन मण्डली का यह गाना, मुबारिक हो मु० ।

---

१७४ भजन

यह जलसा तुमको सालाना मुबारिक हो ।
मिले हैं खेशो बेगाना मुबारिक हो मुबारिक हो ।
सुशोभित आप ने जो आज मन्दिर को किया साहिब ।
करम हम पर ये फर्माना मुबारिक हो, मु०
कहां था देश का हित, और कहां पर उसकी उल्फत थी ।
यह बातें हम को समझाना, मुबारक हो मु० ।
कहां थी पाठशालाएं, जो वैदिक मत को सिखलातीं ।
महाविद्यालय का बनवाना, मुबारक हो मु० ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दया के चांद ने आनन्द से का दूर तारीकी।
ये शुभ उपकार मरदाना, मुबारक हो मु०।
सुगन्धित वस्तुओं की आहुति से धर्म जीवन की।
खबर आकाश तक जाना, मुबारक हो०।
बड़े विद्वान् पण्डित और लायक लैक्चरारों से।
नसाया पन्द सुन पाना, मुबारक हो०
महा योगी महा पण्डित ऋषि स्वामी सरस्वती का।
धर्म की वृष्टि बरसाना, मुबारक हो०।
दुआ है "मुदगल" की यह, रहें सब शाद आर्य गण।
भजन मण्डली का यह गाना, मुबारक हो०॥

मिश्रित

१७८ भजन

जे तैं सृष्टि रचाई वे रचाई वे रच ई सृष्टि वालड़या।
ऋषि मुनियों ने महिमा गाई सृष्टि वालड़या॥
तैंनूं गावें सकल जग वासी वे वासी वेदां वालड़या।
तू पूर्ण ब्रह्म अविनाशी सृष्टि वालड़या।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तू सब जगका भंडारी वे भंडारी सृष्टि वालड़्या ।

तैनूं गावे सृष्टि सारी वेदां वालड़्या ॥

जिस तेरा नाम ध्याया वे ध्याया वे ध्याया वे सृष्टि वालड़्या

उन्हां परम आनन्द पद पाया वेदा वालड़्या ।

तूं सब का मंगल कर्त्ता वे कर्त्ता वे कर्त्ता वे सृष्टि वालड़्या

तूं सब पापों का हर्त्ता सृष्टि वालड़्या ।

तेरी महिमा किस विध गावें ये कोई गावे वे सृष्टि वालड़्या

तेरा कोई भी अन्त न पावे सृष्टि वालड़्या ।

तैं चारों वेद बनाये वे रचाये वे रचाये वे सृष्टि वालड़्या

चौहां ऋषियां ते प्रगटाये वेदां वालड़्या ।

जिन्हां वेदां नूं मन लीता वे लीता वे लीता सृष्टि वालड़्या

उन्हां जन्म सफल कर लीता वेदां वालड़्या ॥

जिन्हां कीती वेदां दी हानि वे हानि वे सृष्टि वालड़्या

वोह मूर्खा बड़े अज्ञानि वे सृष्टि वालड़्या ॥

कई बन गये जैनी कुरानी वे किरानि वे पुरानि सृष्टि वालड़्या

सब करने लगे मन मानी वेदां वालड़्यां ।

कई भंग और चरस उड़ावन वे उडावन वे उडावन सृष्टि वालड़्या

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

लोकां नूं दुःख विच पावन वेदां वालड़्या।

कई बन गये मांस आहारी वे आहारी वे आहारी सृष्टि वालड़्या

फिर भारत होया दुखयारी सृष्टि वालड्या।

फिर अठारा पुराण बनाये वे रचाए वे जुड़ाए वे सृष्टि वालड़्या

लोकां नूं वेद भुलाय सृष्टि वालडिया।

फिर पत्थर आन पुजाये वे पुजाये वे पुजाये सृष्टि वालडिया

भारत ते कष्ट बढ़ाये सृष्टि वालडिया।

जद भारत होया दुखयारी वे दुखयारी वे दुखयारी सृष्टिवालडिया

तैं ने भेजया इक ब्रह्मचारी वे वेदां वालडिया।

ओ दक्खिणदेश बिचों आया वे आया वे आया सृष्टि वालडिया

भारत दा कष्ट मिटाया वेदां वालडिया।

उस गुरूदी आज्ञा मानी वे मानी वे मानी वे सृष्टि वालडिया

पूर्ण वेदां दा सी ज्ञानी वेदां वालडिया।

ओ पोप दलां विच जावे वे जावे वे जावे वे सृष्टिवालडिया

खड़ा होके सत बतावे सृष्टि वालडिया।

कई पत्थर ईंटां मारन वे मारन वे मारन वे सृष्टि वालडिया

कई सैंकड़ो गा २ हारन वेदां वालडिया

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उस वेदां दे अध्ययनाय वे सुनाये व सिखाए सृष्टिवालडिया
वेदां दे तत्व बताए वेदां वालडिया ।
उस बिछड़े आन मिल ए वे मिलाए वे मिल एवे सृष्टिवालडिया
सब सुत्ते आन जगाए सृष्टि वालडिया ।
उस संध्या फिर तों सिखाई वे कराई वे बताई वे सृष्टिवालडिया
फिर हवन दी रीति चलाइ व सृष्टि वालड़िया
उस आर्यसमाज बनाए वे रचाये वे सृष्टि वालड़िया
गुरुदत्त जहे बीर बनाए वेदां वालड़िया ॥
फिर लेखराम बलकारी वे बलकारी वे बलकारी सृष्टि वालड़िया
जिस खादा आन कटारी वेदां वालड़िया ॥
ओह ऋषि दयानन्द स्वामी वे स्वामी वे स्वामी वे सृष्टि वालड़िया
ओह दुनियां विच होया मनी सृष्टि वालड़िया ॥
"आरज" ऋषि दे धन्यवाद गावन वे गावन वे गावन सृष्टि वा०
प्रभु तेरे तों तर जावन सृष्टि वालड़िया ॥

इत्युत्सवम्

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१७६ लावनी वर्णाश्रम पर

शेअर—तज के विद्या वेद की जब उलटे हो गये आचरण।
तज के धर्म और कर्म को होने लगे शंकर वरण॥

टेक—चार वर्ण और चार आश्रम गुण कर्म से होते हैं।
वर्णाश्रम धर सिरहाने अब भारत वासी सोते हैं॥

चौक १

पहिला आश्रम ब्रह्मचर्य्य है वीर्य की जिस में है रक्षा,
पच्चीस वर्ष जितेन्द्रिय हो वेदों की पावे शिक्षा।
पण्डित राजा आके देश के करें फिर उस की परीक्षा,
वर्ण का दें अधिकार विवाहें उसे नार जो उसकी हो इच्छा।
सत्य व्यवहार से गृहस्थ करें और बीज मनुष्य का बोते हैं। वर्ण०

चौक २

गृहस्थ के पीछे बानप्रस्थ फिर ले सन्यास करें उपकार,
आतीथि बृत्ति भ्रमण करें निर्पक्ष धर्म का करे प्रचार।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

ब्रह्मचारी और गृहस्थी की जब होय बिराग छूटे व्यवहार।
करें जगत उपकार उन्हें भी सन्यासी का है अधिकार।
मोक्ष मार्ग में रहे कभी वह बृथा काल नहीं खोते हैं। वर्ण०

चौक ३

काशीनाथ ने शीघ्रबोध रच बाल विवाह का किया उपदेश
ब्रह्मचर्य्य की बात भुलाई जिस से बिगड़ गया सब देश।
बल वीर्य्य विद्याबुद्धि खोकर जब अन्धकार में किया प्रवेश।
ल ि ठोकरों पर ठोकर सिर फूट गये हुआ बहुत क्लेश।
राज पाट का नाश हुआ अब हाथ मलें और रोते हैं। वर्ण०

चौक ४

चार आश्रम का था मूल जो पहिला आश्रम नष्ट हुआ।
फूल गया फिर फले न बृक्ष धर्म्म कर्म्म सब भ्रष्ट हुआ।
आर्य्य से हिन्दू बन गए और पत्थर इनका इष्ट हुआ।
पत्थर चित्त होगए तब हो से दीन अनाथ को कष्ट हुआ
अपस्वार्थ में फंसे रात दिन विषयन में धन खोते हैं। वर्ण० ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चौक ५

मूरख शठ घर से लड़ मिड़ कर पहुंचे जाय नगर काशी।
सीस मुंडा कर जटा बढ़ा कर हो गए पूरे सन्यासी।
कामी क्रोधी महा आलसी कहन लागे हम अविनाशी,।
चरस भङ्ग मद गांजा पीकर कहें छुट गई चौरासी।
पञ्च गृही के टुकड़े खाकर पड़े रात दिन सोते हैं, वर्ण०।

चौक ६

दयानन्द सरस्वती स्वामी ने पूर्वाश्रम पूरा कर,
फेर लिया सन्यास वेद का भाष्य सत्य शुद्ध कर डगर २
आर्य्य समाज स्थापित कर दिये थके दुष्ट सब झगड़ झगड़
वेद भषाय और धर्म शास्त्र फैल गए सब नगर, नगर।
नवलसिंह कहे हम भी उन्हीं से यह मन मैला धोते हैं वर्ण०

गौरक्षा विषय में

१७७ ग़ज़ल

गौओं पर होता है सितम हम से सहा जाता नहीं।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तुम को कुछ भी ज़ालिमों इन पर तरस आता नहीं ।
दूध घी मक्खन तुम्हें दें आप जंगल में चुगें ।
इस पर भी इन्हें मारते सय्याद शर्माता नहीं ॥ १ ॥
बैल इन के हैं सपूत हल गाड़ी में तुम जिन्हें जोड़ते ।
इस कदर वफ़ादार कोई दुनियां में सुत आता नहीं ॥ २ ॥
बाद मुर्दन भी तुम्हें आराम दें निज चाम से ।
तिन की गर्दन पर छुरी धरते रहम आता नहीं ॥ ३ ॥
यवन और क्रिश्चियन आर्य सब को जानत एकसा ।
दूध से पाले बड़ी क्या सब की ये माता नहीं ॥ ४ ॥
ख़ैरख्वाह रफ़ीक़ों पर करो अब तो रहम सितमगारो ।
जुल्म हरगिज खुदा से भी बख्शा कभी जाता नहीं ॥५॥
करता है बलदेव जो क़ानून कुदरत के खिलाफ ।
कौन है आखिर में जो रो रो के पछताता नहीं ॥ ६ ॥

विद्या महिमा

१७८ गीत

विद्या जैसा दान न कोई विद्वानों ने माना है ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

बिन विद्या के प्यारे मानुष पशु समाना है ॥
विद्या से ही ज्ञान प्राप्त विद्या से हो शुद्धताई ।
विद्या से ही पता फिर प्रभु का मिलता है भाई ॥
विद्या से ही मान सभा में विद्या से पण्डिताई ।
विद्या से ही प्यारे निश दिन बुद्धि बढ़जाई ॥
विद्या से ही चतुर स्याना विद्या से हो दाना है ।
बिन विद्या के प्यारे मानुष पशु समाना है ॥
विद्या से ही प्रचारक बन वेदों का प्रचार करें ।
विद्या से ही महाशय जगत में पर उपकार करें ॥
विद्या से ही कलाकौशल गुणीजन लोग तैय्यार करें ।
विद्या से हुए वैदिक धर्म्म की जय २ कार करें ॥
विद्या से नर सीख लिये भी कहना और कमाना है ।
बिन विद्या के प्यारे मानुष पशु समाना है ॥
विद्या से हो संतान आर्य विद्या से हो ब्रह्मचारी ।
विद्या से हो शूरवीरता विद्या से हो बलधारी ॥
विद्या से हो श्रेष्ठ शिक्षा विद्या से आज्ञाकारी ।
ले शस्त्र विद्या राम ने असुरों से लंका मारी ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

राज मुमीक्षणा को दिया और हुक्म सभा ने मानी है।
बिन विद्या के प्यारे मानुष पशु समाना है॥
जब से विद्या भूल गये और अविद्या आकर छाई।
पग २ ऊपर जी हम ने बार २ ठोकर खाई॥
मत मतांतर फैल गये और तेग मुहम्मादियों ने पाई।
आर्य सन्तान काट २ कर खूं की जो नदियां बहाई॥
खुले भाग भारत के भाइयो पलटा और जमाना है।
बिन विद्या के प्यारे मानुष पशु समाना है॥
विद्या के कारण ऋषि ने जो २ कष्ट उठाए हैं।
सभी जानते प्यारे नहीं कुछ छुपे छुपाए हैं।
तकलीफों का किया सामना ईंट पत्थर खाए हैं।
सत्कार्य मण्डन किया और संशय भ्रम मिटाए हैं।
बेशक जावे जान न छोड़ो वैदिक धर्म्म खज़ाना है।
बिन विद्या के प्यारे मानुष पशु समाना है।
सत विद्या का सूर्य चढ़या गुरुकुल आज त्यार हुआ
तेरी दया से दयानन्द विद्या का चमत्कार हुआ।
यादगार तेरी की मदद को बच्चा २ त्यार हुआ

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

श्री कुरबानी महात्मा कौम का बेड़ा पार हुआ ॥

परम धर्म आर्य लोगों का पढ़ना और पढ़ाना है।

बिन विद्या के प्यारे मानुष पशु समाना है।

जिंदगी तक दे दिया जिन्हों ने शाखें क्या २ हौंसले आली हैं।

यह कल्प बृक्ष है कि जिस के मुन्शीराम जी माली हैं।

माल तो भाइयो पतिलाज के करने को रखवाली है।

जल सेंच २ कर जिन्हों ने शाखें और निकाली हैं।

विद्या से हो "लाभचन्द्र" पर सत विद्या को पाना है।

बिन विद्या के प्यारे मानुष पशु समाना है।

आर्यसमाज आशय

रागनी भैरवी) १७९ गीत (ताल दादरा

टेक—दुनियां में चारों वेदों का प्रचार करेंगे।

जो कुछ कहा ऋषि ने उसे सिर पै धरेंगे ॥

निश्चय हमारी कोशिशों का फल यह होवेगा।

ऐहले अर्ब ईरान में जा जा झंडे गड़ेंगे।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अमरीका आदि यूरप और जो देश हैं बचे।
बस वेद धर्म की सभी आ शरण पड़ेंगे।
अफरीका स्याम ब्रह्मा आदि जंगली जो देश।
कल्याणी वाणी वेद की सब दिल से पढ़ेंगे॥
सन्ध्या व अग्नि होत्र भी होंगे सुबह शाम।
पितर अतिथि बलिवैश्व देव यज्ञ करेंगे॥
होगा आनन्द शान्ति हर घर में फिर जरूर,
वैदिक धर्म पर सीत जब आ २ के चढ़ेंगे॥
ईश्वर ने वेद सब के लिये हैं दिये हुए,
सारे ही मान इनको फिर करने लगेंगे॥
प्रचार फंड को प्रथम हम करके खूब पुष्ट,
आगे ही आगे धर्म के मैदान में बढ़ेंगे॥

भजन १८०

उठो अब बान्ध अंा कमर को क्यों करते हो देर,
मित्रो धर्म के कार्य में होती जाय अबेर॥
बीड़ा उठावो धर्म का जगत् में वह फैलाय,
सत्य धर्म प्रचार करो पाखण्ड हटाय,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

टेक—अब धर्म का बीड़ा उठालो मत इस में देर करो तुम ।

छोड़ सभी जगत् का धंधा तोड़ो पोप जाल का फंदा । हरे०

यह मार्ग है बिलकुल मंदा गंदा इस से चित्त हटाय लो,

मत किसी से यार डरो तुम ॥ मत०

उठो मित्र कब तक सोवोगे, क्या यह वक्त वृथा खोवोगे । हरे०

फिर सिर धुन २ कर रोवोगे, अब भी मन समझाय लो ॥

नहीं ज्यादा दुःख मरो तुम ॥ मत०

बान्ध कमर नहीं करो देरी, आर्यवर्त्त में देदो फेरी । हरे०

तुम प्रार्थना सुनयो मेरी, सब को आर्य बनाय लो ।

भारत के क्लेश हरो तुम ॥ मत०

निर्भय हो उपदेश सुनावो, कभी किसी से मत घबरावो । हरे०

'वासुदेव' सत्य धर्म कमावो, इस अमृत को खाय लो ।

भव सागर पार उतारो तुम ॥ मत०

इति मिश्रित प्रकरणम् ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ सीता का पतिव्रत धर्म ॥

१८१ भजन

दोहा—जब सीता बन चलन को, होगई तुरत तयार।
रामचन्द्र समझाय के, कहते बारंबार ॥

टेक—दुलारी जनक की जाई, हठ छोड़ चलो मत बन को ॥

तुम हो जनक दुलारी, रंग महल की रहने हारी।
इस अंग कोमल पर दुख भारी, कैसे सहा जाई ॥
दुख लखा नहीं एक छिन को। हठ छोड़ ॥१॥

बनका जंगल खारदार है, जिसकी तीक्ष्ण तेज़ धार है।
लगते होजाय वार पार है, है अति दुखदाई।
कर चुभने ही बेकल तन को, हठ छोड़ ॥२॥

शेर आदि पशुओं का डर है, इसी से वहां रहना दुस्तर है।
सुख नहीं सर्व दुःखों का घर है हो व्याकुलताई।
करो कैसे स्थिर मन को हठ छोड़० ॥३॥

जो प्यारी वन को जाओगी, वहां जाकर के पछताओगी।
तेजसिंह कहे दुख पाओगी, जिस की यह कविताई।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तज इस आनन्द अमन को। हठ छोड़ ० ॥४॥

१८२ दादरा

सिया दुःख बन में उठाना होगा।
प्यारी मत जाओ पछताना होगा॥

राजपाट भूषण और वस्तर, सब कुछ तुम्हें गमाना होगा ॥१॥
कठिन भूमि में कोमल पैरों, बिना सवारी जाना होगा ॥२॥
वृक्ष तले धरणी पर सोना, बन तृणपत्र विछोना होगा ॥३॥
वकलवस्त्र अंग रक्षा हित, कन्द मूल फल खाना होगा ॥४॥
हाथ कमंडल गल मृग छाला, तन में राख लगाना होगा ॥५॥
हरदत्त कहे वोली यों सीता, जो कुछ होगा बिताना होगा ॥६॥

१८३ भजन

ख्याल

सुन पती के बचन सोच सीता के हुआ मन में भारी।
कल से वेकल हुई हुई वेहोश नीर नैनों से जारी॥
फिर सिया धरके धीर कलेजा पीर पकड़ के उचारी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पिया वियोग सम दुःख नहीं दूजा ऐसे कहे प्राणों प्यारी ।

टेक—मोहि सुर पुर नरक समान है, बिनु पती के ताबेदारी ॥

मात पिता सुत भगिनी भ्रात सुखदाई ।

गृह सासु बिनु पती के सब दुखदाई ॥

है जहां तलक जग माहिं रिश्ते और नाते ।

मुझे बिना पती के दर्श तराशे से ताते ॥

सब राज पाट परिवारा, बिनु पती लगे नहीं प्यारा ।

है भोग रोग संसारे, बिनु पिया दुख देने हारे ॥

बिनु पती जीव नहीं रहे, सिया यों कहै, अंग सब दहै, भ्रंग

में रहना मुश्किल प्राण है, यों कह रही जनक दुलारी ॥ १ ॥

है बिना जीव ज्यूं देह नदी बिनु बारी ।

बस ऐसे ही समझो बिना पती के नारी ॥

है यही हमारा धर्म धर्म नहीं दूजा ।

है इस में ही कल्याण करूं पति पूजा ॥

नहीं पातिव्रत धर्म बिसारूं लाखों विपता सिर धारूं ।

यही पतिव्रत धर्म हमारा, हम मानें हुक्म तुम्हारा ।

दे पतिव्रत धर्म बिसार, दुखी वही नार, सुखों का सार ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

मिलेगा उनको आज जहान में, जो हैं पतिव्रता नारी ॥२॥

अय पती मुझ वह जंगल रंग महल है।
जहां प्राणनाथ प्यारे की मुझ टहल है॥
भोजन है उत्तम मुझे कन्द मूलों के।
वो काटे मुझ को समान हैं फूलों के॥

हम तुम्हारे दर्श की प्यासी, हूं चरण कमल की दासी।
सब खिदमत बजा लाऊंगी, हरदम सुख पहुंचाऊंगी॥
कह रही रो रो के सिया, सुनो मेरे पिया, लरजता हिया।
आपके बेइन्तहा अहसान हैं, करो न अर्द्ध अंग को न्यारी॥३॥

जो प्राण जाय तो शरीर रहता नाहीं।
जो शरीर जाता रहे कहां परिछांहीं॥
हम हैं शरीर और आप हैं प्राण हमारे।
तुम शरीर में परिछांईं साथ तुम्हारे॥

तुम कैसे अलग करोगे, करो अलग तो दुःख भरोगे।
जो मैं न्यारी हो जाऊँगी, बच सकूं न मर जाऊँगी॥
रो २ सीता कह रही, चरण गह रही, दगन बह रही।
तेज सिंह जल धारा बेपरमान है, कर करके गिरिया ज़ारी॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१८४ भजन

टेक- पतीब्रत धर्म को री पालन किया नार सीता ने ॥
रामचन्द्र को वन की आज्ञा दीनी महतारी ने ॥
उसी वक्त पती संग गई नहीं छोड़ा धर्म नारी ने ।
पतीब्रत धर्म को री० ॥१॥

देर न करी गई पति के संग सीता पतीब्रता नारी ।
चौदह वर्ष पती के संग नंगे पैरों फिरी विचारी ॥
पतीब्रत धर्म को० ॥ २ ॥

वन में मिला दुष्ट एक राक्षस जिसने उसे चुराया ।
वियान मारग के बीच नार सीता को त्रास दिखाया ।
पती ब्रत धर्म को० ॥ ३ ॥

अस्त्र शस्त्र का भय दिखलाकर बहुतेरा धमकाया ।
अटल पतीव्रत कैसे डिगेगा यह दृढ़ धर्म दिखाया ॥
पतीब्रत धर्म को री० ॥ ४ ॥

सतवन्ती थी नार सिया जी नियम न अपना छोड़ा ।
मरना तक मंजूर किया पर धर्म से मुंह नहीं मोड़ा ॥
पतीब्रत धर्म को० ॥ ५ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१८५ भजन

॥ दोहा ॥

सीता बोली ज़ोर से ऐ पापी सुन बात ॥
पाप करे तज धर्म को क्या आवे तेरे हात ॥
थी कहां तलवार तेरी जब मेरी शादी हुई ।
अब भी पापी मानजा नहीं तेरी बरबादी हुई ॥

ए रावण तु धमकी दिखावे किसे,
मुझे मरने का खौफ़ खतर ही नहीं ॥
मुझे मारेगा क्या अपनी ख़ैर मना ।
तुझे होनी की अपनी खबर ही नहीं ॥
तु जो सोने की लंका का मान करे ।
मेरे आगे यह मिट्टी का घर भी नहीं ॥
मेरे दिल का सुमेरु डिगेगा कहां ।
मेरे मन में किसी का डर ही नहीं ॥
ए रावण० ॥ १ ॥

आवें इन्द्र नरेन्द्र जो मिलके सभी ।
क्या मजाल जो शील को मेरे हरें।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

तेरी हसती है क्या सिवा राम पिया ।
मेरी नज़रों में कोई बशर ही नहीं ॥
ए रावण० ॥२॥

तुने सहस्र अठारा जो रानी वरीं ।
तुझे इतने पे आया सबर ही नहीं ॥
तुने परातिरिया पर ध्यान दिया ।
ए निगोड़े नरक का ख़तर ही नहीं ॥
ए रावण० ॥३॥

मेरी चाहें जो दिल में थीं तेरे बसी ।
स्वयम्बर से जीत क्यों लाया नहीं ॥
मुझे यह तो बता तु था कौन शहर ।
जो स्वयम्बर की पहुंची खबर ही नहीं ॥
ए रावण० ॥४॥

जो हुआ सो हुआ अब भी ख़ैर मना ।
मुझे राम पे जल्दी से दे तु पठा,
कह सीता बगैर नहीं होवेगा क्या ।
चन्दरोज में तेरा यह सर ही नहीं ॥
ए रावण तु धमकी० ॥६॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वैराग्य

१८६ भजन

टेक—सब ऐंट निकल जावेगी, क्या फिरते तिरछे बांके ।
धन दौलत और माल खज़ाने, नहीं साथ यह तेरे जाने ।
निश्चय अब तूं समझ दिवाने, पड़े ठाठ रहें सब यहांके । क्या०
माता पिता भ्राता सुत दारा अन्त समय सब करें किनारा ।
मन से प्रभु तैंने बिसारा, यहां के रहे न वहां के ॥ क्या०२॥
फंसे रहे तुम विषय भोग में, ध्यान दिया नहीं जाप योग में ।
घिरा आन जब कराठ रोग में, लगे जुवां के टांके ॥ क्या० ३ ॥
क्या जीवन उद्देश तुम्हारा, कुछ भी खबर तुम्हें नहीं प्यारा ।
मुफत काल 'शर्मा' गया सारा, किस लिये आप यहां झांके ।
क्या फिरते तिरछे बांके ॥ ४ ॥

लावनी १८७ भजन

नरतन पायके यत्न कर ऐसा जिस से वही कर्तार मिले,
ऐसी उत्तम योनि पदार्थ फिर नहीं बारम्बार मिले ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

टेक—नरतन पाके उमर कहां गंवाई ।

लखचौरासी योनि भुगत कर ।
मुश्किल से यह मनुष्य देह पाई ॥ नरतन०

बाल अवस्था खेल में खोई ।
विषयों में बीती तरुणाई ॥ नरतन०

वृद्ध हुआ देह कम्पन लागी ।
इन्द्रियां थकित सभीत हो जाई । नरतन०

ग्रस्त किया रोगों ने आ कर,
रोवें हा हा कार मचाई । नरतन०

काल आन जब शेर गर्जे,
काम न देवे एक दवाई । नरतन०

एकल्ला लाद चला बनजारा,
छोड़ सकल सुख सम्पत भाई । नरतन०

भाई बन्धु हो माता सुत नारि,
रो रो कर सब देत दुहाई । नरतन०

यह शरीर जो सब से प्यारा,
इस की भी जल भुन होई छाई । नरतन०

साथ संग तु किस को लेना,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

धर्म बिना हो कौन सहाई। नरतन०

बांध लई पापों की गठड़ी,

दुनियां से ले चला है बुराई। नरतन०

हाए शोक यूंही जीवन खोया,

रोवे कर मल २ पछताई। नरतन०

जो चाहो तुम जन्म सुफल हो,

"वासुदेव" करो नेक कमाई। नरतन०

---

१८८ भजन

अजब है कुदरत इस ईश्वर की, देखो लावे घड़ी न पल,
पल में सूखी नदियां दीखें, पल में करदे जल और पल।
१, पल में सखियां सीस गुदावें, पलमें केश पड़ गये गल।
पल में पंछी चुगदे देखे, पलमें प्रान कटाए गल॥
पलमें देखें हरी २ खेतियां पलमें ऊपर चल गये हल।
पलमें दरया मौजें मारे, पलमें बन गये रेत के थल
पलमें नगर चैनसे बसते, पलमें होगये जल और थल, अजब है
२, पल में देखे कूद फांदते, पल में गिरे घुटनों के बल।
पल में नीले अम्बर देखें, पल में माईं आंधी के दल।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

पल में धूप और सूखी धर्ती, पलमें कीच हुआ दल दल।
पल में खेले बाल बच्चों में, पल में मौत ने धूटा गल।
पल में राजा राजगद्दी पर, पल में झाली पड़ गई गल, अजब है।
१, पल में बांधे जंग मारते, पल में गिरे गये सिर के बल।
पल में चेहरे भरे जवानी, पल में पड़ गये सौ २ बल।
पल में देखे मुलक के हाकम पल में संगल पड़ गये गल।
पल में हस्ति घोड़े पालकी, पल में चल घुटनों के बल।
पल में सो रहे फूल सेज पर, पल में सोते चितामेंचल। अजब है
२, पल में राज की थी त्यारी, पल में राम चले जंगल।
पल में सीता थी महारायी, पल में रोई हाथ दे गल।
पल में लक्ष्मण फिरें नाचते, पल में होगया चल भाई चल॥
पल को 'गोविन्ददास' न खो तूं, पल में छोड़ दुनियां दे चल
अजब है कुदरत इस ईश्वर की, देखो लावे घड़ी न पल॥

(प्रभाती) १८६ भजन

टेक-जिया को सोच भई अब किस विध उतरेंगे पार।
भवसागर में नाओ चलाई, आन पैड़ी मंझधार।
काम क्रोध की रात अन्धेरी, दीखत वार न पार॥ १॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

काली घटा मेघरा गरज, दुनियां घोर अन्धकार।
झूनी बेड़ी अमलां वाली, डोलत है हर बार ॥ २ ॥
न बल है न गुण है कोई, साईं न सरदार ॥
हुनतां सुर्त सम्भाल महाराया, डूबत है परिवार ॥ ३ ॥
अमलां वाले लंघ २ जावण, रह गये औंगुण हार।
हम अति दुर्बल डूबन लागे, रोवें हाथ पसार ॥ ४ ॥
ऋषि मुनि साधु जन लाखों, तारे तै कर्तार।
शरण पड़े की लाज हमारी, राखो पालन हार ॥ ५ ॥

होली काफ़ी) १९० भजन (ताल चंचल

मेरी आयु निष्फल गई मैंने सुध न लई।
बाली उमर गई खेल कूद में युवति विषयों की मई। मैंने०
खोटी संगत में आयु हारी, पल्ले न कौड़ी रही। मैंने०
गहरी नदिया नाओ पुराणी, इत की न उत की रही। मैं०
मौत खड़ी मेरा जीड़ा डारवे, आशा कछु न रही। मैं०
"वृजलाल प्रभु पार करेंगे, उन की शरण जिन लई। मैं०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागनी बरवा) १९१ भजन (ताल क़व्वाली

अन्त नूं पछतांवदे, जेड़े ईश्वर दे गुण नहीं गांवदे।
नदियां दे विच उपर गुज़ार, आख़र नूं दुःख पांवदे।
धन दौलत और गज रथ सेना, अन्त नूं सब छड जांवदे।
विक्रम भोज दधीच से भारी, देख नजर नहीं आंवदे।
हनुमान बाली और अर्जुन, मौत नूं सिर पये नवांवदे।
रामचन्द्र लंकेश बभीषण, लंका नूं खाली कर जांवदे।
मात पिता भ्राता सुत मोह, अन्त सभी मुड़ आंवदे।
यह तन तेरा सुन्दर प्यारे, अन्त नूं ख़ाक रुलांवदे।
तेरी नारि बहुत्त प्यारी, अन्त नूं सब डर जांवदे।
अन्त समय कम धर्म ही आवे, इस नूं कानूं गवांवदे।
'आर्य्य' उमर बीत दी जाय, ईश्वर दे क्यों नहीं गुण गांवदे॥

---

१९२ भजन

टेक—मन कहां कहां तु डोलता।
ईश्वर की ओर नहीं जाता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

जीते जी का है सब नाता, मात पिता दारा सुत भ्राता।
अन्त समय कोई काम न आता, निकल आये जब बोलता ॥
जिन में तु चित लगाता।
ईश्वर की ओर नहीं जाता।

रात दिन छल कपट करे तु, फिर कुटुम्ब का पेट भरे तु।
जाये अकेला नरक पड़े तु, क्यों अब कमती तोलता ॥
यहां वृथा पाप कमाता।
ईश्वर की ओरं नहीं जाता।

अपना खूब समझता स्वार्थ, कीना नहीं कभी परमार्थ।
कोई नहीं जावे साथ पदार्थ, क्यों नहीं आंखें खोलता।
एक धर्म काम ही आता।
ईश्वर की ओर नहीं जाता।

बन हाकिम नहीं न्याय चुकावे, रिशवत ले २ कर तू खावे।
कहे 'मुरारी' सुख नहीं पावे, अमृत में विष घोलता।
क्यों अब तू मौज उड़ाता।
ईश्वर की ओर नहीं जाता।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१९३ भजन

काया कैसे रोई चलत प्राण ।
चलत प्राण काया कैसे रोई, छोड़ चला नर मोहि ।
मैंने जाना मेरे संग चलेगी, ऐसे कार्या काया मल २ धोई ।
ऊंचे नीचे मन्दिर छोड़, गाय भैंस घर घोड़ी ।
तिरिया तो कुलवन्ती छोड़ी, पुत्रन की जोड़ी,
मोटी छोटी गज़ी मंगाई, बना काठ की घोड़ी ।
चार जणे जो मिलके गये हैं फूक दई फागण कैसी होई ।
भोली तिरया रोवण लागी, विछड़ चली मेरी जोड़ी ।
कहत 'कबीर' सुनो भाई साधो, जिन जोड़ी वाही न तोड़ी ।

---

१९४ भजन

कहां से आये मियां मुसाफिर, कहां को अब तुम जाओगे ।
कुछ तो अपना पता खुलासा, हम को भी बतलाओगे ।
कौन ग्राम और धाम आप का, नाम आपका क्या कहिये ।
कौन जाति कुल गोत्र आपका, यह भी बतलाना चाहिये ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यहां तुम्हारा किस से रिश्ता, सो भी समझना चाहिये।
कहिये दिल की बात रात दिन, किसी मंसूबे में रहिये।

---

१६५ भजन

मुए हज़ारों लोग जहां में, खुशी का दम भरते भरते।
कितने ही मरगये माल दौलत की हिरस करते करते।
रहे समझते यही उमर भर, सब ज़र माल हमारा है।
हमारा है परिवार यार सुत, बन्धु खूब रू दारा है।
अस्प फील, और शुतर महल, यह लशकर अपना सारा है।
यह कहते मरगये न समझे, कुछ भी सार असारा है।
हज़ारों पर कर जुल्म छीन जर, करोड़ों को धरते धरते।
कितनेक ही मरगये माल दौलत की हिरस करते करते ॥१॥
कितने ऐसे हुए शान अपनी में आपे से; बाहिर।
कितने ऐसे हुए कहें खुद होके खुदा हाज़िर नाज़िर।
कितने ही खूंखार हुए महमूद व चंगेज़ो नादिर।
कतल किये बे गुनाह लाखों कह करके काला काफिर।
नबी पैगम्बर बनके कोई जा बजा फिरे लड़ते भिड़ते।
कितने ही मरगये माल दौलत की हिरस करते करते ॥२॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रो १ कर मरगये जुल्मकर कितने जालिम और जल्लाद ।
कितने ही महबूब खूबरू कितने आलिम और उस्ताद ।
कितने योगी यती सती औ कितने सितमगर औ सैयाद ।
शूरवीर औ बली पहलवां हुए हज़ारों बे बुनियाद ।
कितने डाकू चोर उचक्के पर धन को हरते हरते ।
आख़िर को मरगये माल दौलत की हिरस करते करते ॥ ३ ॥
जहां को फ़ानी समझ के यारो नेक चाल चलना चाहिये ।
हैं चन्द रोज़ा ये जिन्दगानी बुराई से बचना चाहिये ।
जु म किसी पर रवा नहीं है ईश्वर से डरना चाहिये ।
धर्म कर्म को संभाल अपने भवसागर तरना चाहिये ।
तज बैरी को स्वांग वेगि 'बलदेव' समझ मरते करते ।
कितने ही मरगये माल दौलत की हिरस करते करते ॥४ ॥

११६ भजन

किसकी शादी ग़मी मानयें नाहक जिगर जलाना है ।
कोई दिन का महमान जान जिन्दगी का कौन ठिकाना है।
रहे नहीं बाली कर्ण युधिष्ठर राम लछमण दोनों भाई ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कहां गये रावण बानासुर कुम्भकरण से बलदाई।
कहां बालि सुग्रीव नील नल हनुमान कहां रघुराई।
धन्वन्तर अरु अफ़लातून मर गये ख़बर तक न पाई।
कहां गए कारूं कुवेर कहां उनका अटल ख़ज़ाना है।
कोई दिन का महमान जान जिन्दगी का कौन ठि० ॥२॥
जो पैदा दुनियां में हुए नापैद एक दिन हो।
जो सोते ग़फ़लत में एक दिन सभी मालो जर खोयेंगे।
रुलाते हैं दीनों का एक दिन जरूर वह भी रोवें गे।
खैरख्वाह बदख्वाह एक दिन सभी ज़मीं में सोयेंगे।
नेकी बदी के सिवा साथ एक पाई तक नहीं जाना है।
कोई दिन का महमान जान जिन्दगी का कौन० ॥३॥
मानुष जन्म अमूल्य यार दुर्लभ इसका पाना होगा।
करो कमाई नेक नहीं फिर पीछे पछताना होगा।
दुखाओगे दिल किसी का यारो तुम्हें भी दुःख पाना होगा।
भजन करो ईश्वर का फिर दुनियां में नहीं आना होगा।
तेरा यहां पर कौन अरे "बलदेव" ये मुल्क बिगाना है।
कोई दिनका महमान जान जिन्दगी का कौन ठिकाना है ॥४॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

१६७ भजन

सम्भल के बैठो ऐ सोने वालो देखो तो दुनियां का हाल क्या है। क्या रंग बदला ज़माना नये २ चमन से फस्ले बहार क्या है।

औ़र गुल्शन में चल के देखो खिले हैं गुल हर तरह २ के हैत में आकर बुलबुल हज़ारों निगह भी बदलें मजाल क्या है। मगर किसी को ख़बर न मुतलक सैय्याद फन्द लगा रहा है। खुशी का सामां है कोई दम का फिर आता सर पर बवाल क्या है। है फानी मुतलक जहां जी हरशें आशक होना न हम को लाज़िम। संयोग में क्या खुशी में नाना वियोग में फिर मलाल क्या है ॥४॥ ये हुस्नो दौलत बहार गुश्शन है चन्दरोज़ क़याम जग में गरूर दिल से न दूर करते फिर इससे बढ़ कर कुचाल क्या है ॥५॥ पसन्द करते विषय की लज्जत अख़ीर होगी ख़राब इज्ज़त करो न यारो फ़जूल हुज्जत बजाना गपशप में गाल क्या है॥६॥ मुफ्त का खाना मजे़ उड़ाना । जाना आना न कर दिवाना गुमराह करना बातें बनाना इससे भी बढ़ कर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कमाल क्या है ॥७॥ वहम को दिल से हटाके यारो बग़ैर वेदों को देखो भालो। है सब का मालिक वो सब से यारो जहां में उसकी मिसाल क्या है ॥८॥ सुर नर मुनि का उपास्य जो है, हरजा में हाज़िर अकाल सो है। 'बलदेव' दीगर दयाल को है उसके मुकाबिल तू माल क्या है ॥ ९ ॥

---

१९८ गीत

भोगानभुक्तावयमेवभुक्ता स्तपोनतप्तं वयमेवतप्ताः । कालोनयातोवयमेव याता स्तृष्णा न जीर्णा वयमेवजीर्णाः ॥ १ ॥ भ० वै०

गजल

हम न भोगे भोग भोगों ने हमें भुगता दिया,
तप नहीं तप ने दिये तापों ने ऐसा तपा दिया ॥
हम यही अब तक समझते थे विताते काल को।
वह नहीं बीता मगर आयु को उसने बिता दिया ॥१॥
हम समझते थे पुरानी होगा यह तृष्णा कभी।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

हाय वह तो नई रही हम को पुराना बना दिया ॥२॥
थी तमन्ना दिल में दिल काबू में अपना करेंगे ।
हाय वह तो हुआ न अपना हम को उलटा फ़सा दिया ॥३
ये कनक और कामनी दुनियां में दो घाटी विकट ।
'बलदेव' दोनों के पेच में पड़ नाम प्रभु का भुला दिया॥४॥

१११ भजन

चलना है मुसाफिर रहना नहीं ।

क्यों सोवे गफलत की नींद में यहां एक पल का ठिकाना नहीं ॥१॥ तेरे संबन्धी कितनें चले गये तेरी यहा कुछ थाना नहीं ॥२॥ इस सराय में चोर गत हैं उनसे गांठ कटाना नहीं ॥३॥ वली पहलवां हज़ारों आये चलते समय काहू जाना नहीं ॥ ४ ॥ जिस मालिक का है मुल्क दुनियां उसको तू गर पहिचाना नहीं ॥ ५ ॥ झख मारत फिर २ दुनियां में दिवाना है तू कुछ दाना नहीं ॥६। यम को जवाब दे किस मुख से है कोई बाकी बहाना नहीं ॥ ७ ॥ अजहूं जाग 'बलदेव' नीन्द से फिर २ नर तन पाना नहीं ॥ ८ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२०० भजन

बान्धो ना गठरिया अपयश की । है थोड़ी उमरि तोरी दिन दस की, बन्धावों गठरिया० ।

अकड़ जाव यहां कितने ही आये,
गये धरणा में सब धसकी ॥ १ ॥
कोई दिन का महिमान यौवन धन,
मत करे बात तू अनरस की ॥ २ ॥
नहीं कज़ा से चली है कज़ा की ।
ठसक रहेगी सब ठसकी ॥ ३ ॥
अजहूं सम्भार धर्म अपने को ।
धीरे २ उमरि जाति खिसकी ॥ ४ ॥
भज प्रभु को 'बलदेव' योगी ।
न तो काल लेत तोहि पब मसकी ॥ ६ ॥

---

२०१ भजन

दोहा—थोड़े दिन की जिन्दगी, सिर पर खेले काल ।
गर्व करे मत बावरे, फंपा भरम के जाल ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

टेक—सिर बजे काल का डंका, नर डर मरघट के ढोल से

बेन बली मानधाता कित है, हिरनकाशिपु दुखदाता कित है।

रावण कुंभ दो भ्राता कित हैं, लखों कुटम्ब के गोल से।

छुट गई हेम की लंका ॥ १ ॥

हरिश्चन्द्र से दानी कित हैं, राम लक्ष्मण से ज्ञानी कित हैं।

हनुमान बलवानी कित हैं, धरनी हिल सुन बोल से।

जो पहलवान था बंका ॥ २ ॥

साठ हज़ार सगर सुत कित हैं, यदुकुल कृष्ण श्रीयुत कित हैं।

रघु दशरथ नल अद्भुत कित हैं, प्रभुता अधिक अमोल से।

कर लिया मौत ने फंका ॥ ३ ॥

कंस कर्ण शिशुपाले कित हैं। करते जरासंध मतवाले कित हैं

कौरव मूढ़ निराले कित हैं। कुमति किलोल से।

कोई दूजा ना इस ढंका ॥ ४ ॥

भीषम से बलदाई कित हैं। पांचों पांडव भाई कित हैं।

पांचों पांडव भाई कित हैं, घीसा में सुघड़ाई कित हैं,

जांचों तुख की तोल से, जब करों सभा में शङ्का ॥ ४ ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२०२ कवित

सूख गयो गात बात बूझत न कोई अब झड़ने लगे दांत नैन हूं सो ना दिखात है। सुनिबे को शक्ति नहीं श्रवण शेष रही गिरन लगी लार मुख से निकसती न बात है। भये बन्धुनारी पुत्र शत्रु के समान कोई करत नहीं मान सब कटुम्ब अनखात है। तहूं 'बलदेव' नहीं धर्म की सुहात बात नाम सुनि मरि वे को चौंकि २ जात है ॥

कवित्त २०३ भजन

जितने जग भोग सब अनित्य चण भंगुर हैं उनके संग दुःख नेक ना डरात हो। भोग रूप भंवर में वृथा ही भ्रमो भोले जनों जन्म मरण रूप नाना क्लेश ही उठात हो ॥ पाय 'बलदेव' ऐसो नरोतन अमूल्य धन माटी मोल विषयने में व्यर्थ ही लुटात हो। शिव की शरण आओ कल्याण पद पाओ, क्योंकि नानारूप धारि २ यम को मार खात हो ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२०४ (कुण्डलिया)

नर शरीर को पायके, लियो न हरि को नाम ।
परमारथ कीन्हों नहीं, बिगारि गयो सब काम ॥
बिगारि गयो सब काम, धनी को नाम न लीन्हों ।
रत्न जन्म यह पाय हाय माटी करि दीन्हों ॥
अन्त समय 'बलदेव' बैठिहो किस की छाया ।
कियो न पर उपकार नाम हरि का बिसराया ॥९ ॥

---

२०५ भजन

टेक- न जाने कौनसी बिरियां बजेगा कूच डंका ।
यह दुनिया चार दिन भाई प्रभु को काहे बिसराई ।
जगत् सुख दुःख हैं प्यारे विषय में विष भरे सारे ।
सकल यह महल धन चेरे रहे न अन्त को तेरे ।
न मात पुत अर्द्धङ्गी, कभी हो अन्त को संगी ।
न मित्र स्नेही हितकारी, कभी हों परलोक सहकारी ।
धर्म की एक है बेड़ी, लंघावे अन्त की बेरी ।
धर्म की लीन हो प्यारे, यही इक तुझ को उद्धारे ।
प्रभु की शरण ले के तूं, उसी का नाम भज ले तू ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

वही है जगत आधारा, उसी से होवे निस्तारा।
उसी की आज्ञा पालन, धर्म है धर्म्म का पालन।
न जीवन पर तू रख निर्भर, टिके न अन्त को पल भर।
क्षण में काया यह तेरी, होजावे भस्म की ढेरी॥

२०६ भजन

न जाने कौनसी बिरियां, बजेगा कूच नकारा।
जगत दिन चार का मेला, करो कुछ धर्म्म है वेला।
विषय सुख देख मत भूलो, वृथा जंजाल में फूलो।
वृथा धन महल और माड़ी, छूटें सब अन्त की बारी।
सजन भ्रात नार सुत नाती, न होवे अन्त को साथी।
धर्म्म का ही लाभ सुन प्यारे, सहाई है अन्त के बारे।
धर्म धन जोड़ ले भाई, जो अन्त काम में आई।
भजन मन धार ले प्यारे, अधम अति पापीजन तारे।
खरा व्योपार इस जग में, भक्ति हरि कीजिये मन में।
तू संगी चाहे जे प्यारा, तो हरि को जान आधारा।
सकल यह रैन का सुपना, वतन तू याद कर अपना।

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

रागनी कौंसिया] २०७ भजन (ताल कवाली

टेक--एक पलक भलक दा मेला है।

एथों होना कूच अकेला है।

१, कई राजे राज कमा गये, कई राने नाच नचा गये।

कई खुद खुदा कहा गये, दित्ता मौत उन्हां नूं रेला है।

एह पलक भलक दा मेला है।

२, कई हाकम हुकम चलांवदेसी, कई हुकम वजाकर लांवदेसी

कई दानशमन्द कहांवदे सी, जांदीवार न पल्ले धेला है।

एह पलक झलक दा मेला है।

३, पा अजे समझ कुछ करना है, कीते अपने दा फल भरना है।

यह भवसागर तैं तरना है, क्यों फिरता मूढ़ अलबेला है।

एह पलक भलक दा मेला है।

४, यह जांदा वक्त विहाना है, न तू कमला न तूं अयाना है।

हुचंगा भला अकल स्याना है, हट धर्मी नवा न वेला है।

एह पलक भलक दा मेला है।

५, तज काम क्रोध दियां बातां नूं, क्यों मुफत गवावे रातां नूं

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

दे छोड़ अवलड़ी घातां नूं, कर खौफ "अधीन" कुवेला है
एह पलक झलक दां मेला है।

---

२०७ भजन

भूले क्यों परदेसियो यह नहीं देश तुम्हारा।
यह जग जान मुसाफर खाना दो घड़ियों का मेला।
रैन की रैन यहां सुख पाइयो।
अन्त को कूच अकेला, रे भाइयो॥ १ ॥
राजे महाराजे अनेक भवन पति इस दुनियां पर आए।
कर गये राज दो चार दिहाड़े अन्त काल ने खाए।
महाबली योद्धा जग में जो शूरवीर कहलाए।
जिन को देख डरी सब दुनियां वह भी रहने न पाए, रे० २
अनेक ऋषि मुनि सन्त जगत में हर के भक्त कहाए।
आयु बतावें हरि सिमरन में अन्त समय मर जांए।
देखे अनेक गुणी और ज्ञानी जग में चतुर कहाए।
सानी जिनका और न कोई वह भी नज़र न आए रे० ३
यह दुनियां है रैन बसेरा जासे प्रीति लगाए।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

चलन हारा सब संसारा जो कुछ नज़री आए।
यह जिंदगानी मिथ्या कहानी जल पर जान पताशा।
लाखों बरस जीओ चाहे प्राणी अन्त न जीनेकी आशा। रे० ४
भाई बन्धु कुटम्ब कबीला और जो साक कहावें।
झूठी प्रीति लगावें जग में अन्त काम न आवें।
यह दुनियां दिन चार का मेला अन्त सभी टल जावें।
न जाने वह कौनसा वेला काल बुलावा आवें। रे० ५
जिस स्वामी की यह सब रचना तिस शरणी चित्त लावो।
होगा अन्त सहाई ईश्वर नाथ नाथ कह बुलावो। रे० ६

२०९ भजन

टेक—कोई अंत समय का यार नहीं; यह वेला मानो विसार नहीं
हरिनाम बिना कुछ सार नहीं, दुःख का साथी संसार नहीं।
हरिभजन बिना आधार नहीं, कोई अन्त समय का यार नहीं
जो जैसा कर्म कमावेगा, वह वैसा ही फल पावेगा।
नर कर्म हीन पछतावेगा, कोई अन्त समय का यार नहीं
जब काल बुलावा आवेगा, तब संग न कोई जावेगा
सब ठाठ पड़ा रह जावेगा। कोई अन्त०

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

यह तन धन सम्पत्ति सारी जी, जो प्राणों से प्यारी जी,
चले न संग अन्त की बारी जी। कोई अन्त०
जब पंछी पिंजरा त्यागेगा, तब सब कोई डर कर भागेगा,
कब निद्रा से जागेगा। कोई अन्त०
जो पुण्य और पाप कमाया है, उस बिन सब माल पराया है,
जिस के हित जन्म गंवाया है। कोई अन्त०
जग में जितने हितकारी हैं, सुख में साथी संसारी हैं,
स्थिर जगत् न संसारी हैं। कोई अन्त०
बिन धर्म्म सभी कुछ छोड़ गए, जो कौड़ी २ जोड़ गये,
आख़िर जग से मुंह मोड़ गये। कोई अन्त०
जो जन शुभ कर्म कमावेगा, सोई मन ईश्वर के भावेगा,
'तुलसी' मन को समझावेगा। कोई अन्त०

(भैरवी) २१० भजन

काल की आज्ञा में कैसे २ ज़ोरावर चले,
क्या मजाल उस हुक्म की कोई अदूली कर सके।
राओ चले राने चले धनवान् और निर्धन चले,
कौन स्थिर रह सके जब काल का चक्र चले।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

छोड़ कर सारी हकूमत सिविल के अफसर चले,
सरिश्ता के मुनशी वा बाबू छोड़ कर दफ़तर चले।
सरदार सुबेदार और कपतान बल मेजर चले,
करनल चले जनरल चले लफटंट चले सरजन चले।
कारतूस और दारू सिका पेटियों में भर चले,
पलटन रसाले तोपखाने त्यागकर लशकर चले।
मुखतार और वुकला बैरिस्टर मुकद्दमा हर चले,
झूठ की तकरीर मंतिक इस जगह क्यों कर चले।
वैद्य और हुकमा यहां पर पढ़ के तिब्ब अकबर चले,
नुसखा न पाया मौत का हैरान हो डाक्टर चले।
जिमींदार पत्तीदार नंबरदार नंबर पर चले,
अन्त को बे दखल हो देखो वह धर्ती धर चले।
तज्जार साहूकार कोठीदार सौदागर चले,
खोटे सौदे में यह आयु अपनी जाया कर चले।
हल चल पड़ी जहां काल की सब कांपते थर २ चले,
आंसू बहाते चल पड़े न जोर चले न ज़र चले।
सूरज चले तारा चले चन्द्र चले नरनाह चले,

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

कालकी गरदश में प्रतिदिन पृथिवी महवर पर चले।
कलियुग चले सतयुग चले त्रेता चले द्वापर चले,
राम चले रावण चले 'अमीचन्द' नन्द कंवर चले ॥
खेचर चले भूचर चले जलचर चले चर अचर चले,
और सब चलायमान है न चले तो जगदीश्वर चले।

---

२११ भजन

जिन्हां घर झूलते हाथी, हज़ारों लाख थे साथी।
उन्हां को खा गई माटी, तू खुशकर नींद क्यों सोया ॥
नकारा कूच का बाजे, कि मारू मौत का बाजे,
ज्यों सावन मेघला गाजे, तूं खुशकर० ॥
कहां गए खान मद माते, जो सूरंजें चांन्दें सों जाते।
न देखे कहां वह जाते, तूं खुशकर०
जिन्हां घरें लाल और हीरे, सदा मुख पान के बीड़े।
उन्हां नूं खा गये कीड़े, तू खुशकर० ॥
जिन्हां घर पालकी घोड़े, ज़री ज़र बफत के जोड़े।
वही अब मौत ने तोड़े, तूं खुशकर० ॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

उन्हां दे बाल थे काले, मलाइयां दूध से पाले।
वह आखर खाक में डाले, तूं खुशकर० ॥
जिन्हां संग न्योता था तेरा, उन्हां किया खाक में डेरा।
न फिर वह करन गे फेरा। तूं खुशकर० ॥

---

२१२ भजन

हटड़ी छोड़ चला बनजारा।
सुत पित नार सहोदर बन्धु, अन्त करें हैं किनारा।
मरघट के सब हैं यह साथी, करें है हाय पुकारा।
चलती बेर चाहिये क्या प्राणी धर्म्म का एक सहारा।
जिन कारण अपराध बटोरे, पुण्य न पाप विचारा।
अन्त समय कोई काम न आवे, जब हो चरन पसारा।
सुफल जन्म केवल तिन ही का, नाम का करे हैं व्योरा।
तिन मुख उजल तिलक भाल यश, जिनने बनज है संवारा।

देव गंधारी [२१३ भजन

जगत में झूठी देखी प्रीति, जगत में।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

अपने ही सुख सों सब लागे, क्या दारा क्या मीत।
मेरी २ सभी कहत हैं, हित सों बान्ध्यो चीत।
अंतकाल संगी न कोऊ, यह अचरज है रीत।

इति वैराग्य प्रकरणम्

---

११४ अमूल्य दोहे।

कबीरा प्रीति एक नूं कीजिये आन वो बद्धा जाय।
भावें लंबे केस रख भावें घोट मुड़ाय ॥ १ ॥
कबीरा मरता मरतां जग मरा मर भी न जान्या कोय।
ऐसी जो मरनी मरे फेर न मरना होय ॥ २ ॥
कबीरा मानस जन्म दुर्लभ है मिले न बारंबार।
ज्यों फल पक्क के भौं गिरे न लागे डार ॥ ३ ॥
कबीर हाड़ जलें जूं लकड़ी केस जलें जूं घास।
एह जग जरता देख के भयो कबीर उदास ॥ ४ ॥
कबीर लूटना हो तो लूट ले राम नाम है लूट।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

फिर पीछे पछताएगा प्राण जांएगे छूट ॥ ५ ॥

कबीरा सब ते हम बुरे हम तज भलो सब कोय ।

जिन ऐसा कर जान्या मीत हमारा सोय ॥ ६ ॥

कबीरा सोई मारये जिस मुए सुख होय ।

भलो भलो सब को कहिये बुरा नं माने कोय ॥ ७ ॥

कबीरा दीन गंवाया दुनियां से दुनियां न चली साथ ।

पाओं कुल्हाड़ा मारया ग़ाफिल अपने हाथ ॥ ८ ॥

कबीरा माया डोलनी पवन झकोलन हार ।

सन्तां माखन खाया छाछ पिये संसार ॥ ९ ॥

कबीरा जिस मरने ते जग डरे मेरे मन आनन्द ।

मरने ही ते पाईए पूर्ण परमानन्द ॥ १० ॥

कबीरा अपनी काठ को क्या दिखलावे तोय ।

हृदय नाम न चेतया एह जपनी क्या होय ॥ ११ ॥

---

२१५ आरती

जय जगदीश हरे । भक्त जनन के शंकट ।

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

क्षण में दूर करे ।

जो ध्यावे फल पावे दुःख विनशे मनका,
सुख सम्मति घर आवे कष्ट मिटे तनका ॥१॥

मात पिता तुम मेरे शरण गहों किस की,
तुम बिन और न दूजा आश करूं जिसकी ॥२॥

तुम पूरण परमात्म तुम अन्तर्य्यामी,
परम ब्रह्म परमेश्वर तुम सब के स्वामी ॥ ३ ॥

तुम करुणा के सागर तुम पालन कर्ता,
मैं मूरख खलकामी कृपा करो भर्ता ॥४॥

तुम हो एक अगोचर सब के प्राणपति,
किस विध मिलुं गुसाईं तुम को मैं कुमाति ॥५॥

दीना बन्धु दुःख हर्ता तुम ठाकुर मेरे,
अपने हाथ उठाओ द्वार पड़ी तेरे ॥६॥

विषय विकार मिटाओ पाप हरो देवा,
श्रद्धा भक्ती बढ़ाओ सन्तन की सेवा ॥७॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

२१६ आरती

जय देव जय देव जय त्रिभुवन कर्ता, सब के आश्रय दाता
भय शङ्कट हरता : जय देव०

जड़ चेतन्य सब जेते महिमा तव गावें,
राजा परजा सब ही तुझ को सिरनावें ॥१॥ जय०

अतुल तुम्हारी करुणा बरणी नहीं जाई,
मङ्गल कीर्ति तुम्हारी गगण २ आई ॥२॥ जय०

तुम चेतन्य परमेश्वर तुम परिपूरण स्वामी,
पुण्य पाप मम देखो प्रभु अन्तर्यामी ॥३॥ जय

अटल ज्ञान की चौदस तुम ज्योति विस्तारी,
निरख २ हो चकृत जग के नर नारी ॥४॥ जय०

हे अनन्त तव शक्ति बर्णन किम कीजे,
करो गर्व प्रभु चरण निज आश्रय दीजे ॥५॥ जय०

भिक्षा यही हमारी है मंगल देवा,
निश दिन हो उत्साहित करें तेरी सेवा । ६॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

आरती २१७

हे त्रैलोक पति हे त्रैलोक पति ।
कृपा करके दीजे दान मुझे भक्ति ॥१॥
अद्भुत तेरी रचना अद्भुत प्रभुताई ।
मुख से जिस की शोभा बरणी नहीं जाई ॥२॥
तुम हो रोग बिनाशक संकट के हर्त्ता ।
तुम बिन और सहायक देख नहीं पड़ता ॥३॥
तुम हो सब के स्वामी व्यापक तन मन में ।
नहीं तुम्हारी महिमा आवे वर्णन में ॥४॥
ध्यान धरें तेरा योगी और जति ।
तेरी शरणा वह आवे जिन की शुद्ध मति ॥५॥
जो तुझे मन से ध्यावे सुख निंशि दिन पावे ।
दुःख के हैं जो बन्धन उन से छुट जावे ॥६॥
गावे तेरी महिमा इतनी नहीं शक्ति ।
ऐसा अनुग्रह कीजे जावे दुष्ट मति ॥७॥
सब के हो तुम बन्धु और पिता माता ।
जड़ चेतन के स्वामी बल बुद्धि दाता ॥८॥

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

शरण गही है 'केवल' है ईश्वर तेरी।

दुःख सागर से जल्दी पार करो बेड़ी ॥९॥

इति आर्यगायन समाप्तम् ॥

सूचना।

जिस महाशय को इस आर्य्यगायन की जो सब आर्य-गायनों से बड़ा है आवश्यक्ता है वह देख लें कि इसके ५०४ पृष्ठ केवल भजनों के हैं और सूची पृथक है यदि उस को अपने नगर में या दूसरे पुस्तक बेचनें वालों से न मिले तो वह सीधे नीचे लिखे पते पर एक पैसे का कार्ड लिखे दें कार्ड के पहुञ्चते ही पुस्तक उस की सेवा में पहुंच जावेगा—

पता—मैनेजर

भारतलिटरेचर पबलशिंग

ऐंड फिजिक ट्रेडिंग कम्पनी लिमेटिड

लाहौर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

॥ उन्नति का केंदर अर्थात ब्रह्मचर्य आश्रम ॥

यह किताब मास्टर लछमण जी ने बनाई है इस में ब्रह्मचर्य आश्रम की व्यवस्था को लिखते हुए वीर्य रक्षा, इस की आवश्यका, इसके साधन, विद्या प्राप्ति, इस के लिये देश में गुरु कुलों का होना, बतलाया है। बाल विवाह की हानियां भी लिखी हैं आज कल के युवकों के जो आचार भ्रष्ट हो जाते हैं उनके कारण बतला कर युर्पी तहजीब की स्वीकृत हानियां दर्शाई हैं वेद शास्त्र उपनिषद आदि और अन्य योग्य ग्रन्थ कारों के लेखों की पुष्टी दे कर इस विषय को निभाया है।

देश भर के समाचार पत्रों ने इस पुस्तक की प्रशंसा की है। देव नागरी के सुन्दर अक्षरों में मोटे कागज पर साफ हिन्दी भाषा में मुद्रित करवा कर इस कम्पनी ने प्रकाशित की है मूल्य ।'≈)

पता ☞

मैनेजर भारत लिटरेचर पबलशिङ्ग

ऐंड फिज़िक ट्रेडिंग कम्पनी लिमेटिड

लाहौर

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi

Digitization by eGangotri Funding by Arya Samaj Foundation, Chennai

Dr. Vivek Arya Vedic Library, Delhi